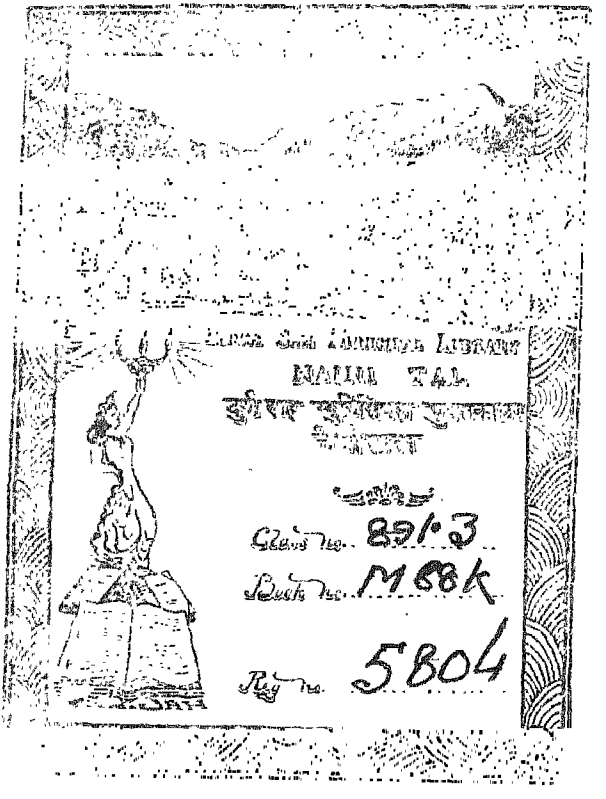

Durga Sah Municipal Library
Naini Tal
दुर्गासाह म्यूनिसिपल पुस्तकालय
नैनीताल

Class No. 891.3
Book No. M68K
Reg No. 5804

यह क़िस्सा !

'क़िस्सा चहार दर्वेश' प्रेम की कहानी है; विघ्नों, निराशाओं दुर्घटनाओं के साथ ही आशाओं, सफलताओं और दैवी सहायता के बल पर कामनाओं के पूर्ण होने की चमत्कार पूर्ण कथा है। रोमानियत, रंगीनी, मोहकता के वातावरण में चित्रित इन कहानियों का प्रभाव मानसपटल पर अंकित हुये बिना नहीं रहता। मनुष्य स्वप्न देखता है, कल्पनायें निखरती हैं, कामनाओं के पंख निकलते हैं, आशायें बलवती होती हैं और मनुष्य का जीवन किसी न किसी हदतक सुखमय होता है। 'क़िस्स चहार दर्वेश' ऐसी ही एक अज़ीमुश्शान साहित्यिक रचना है !

'क़िस्सा चहार दर्वेश' कितना मोहक और चित्ताकर्षक है इसका अनुमान तो इसे आद्योपान्त पढ़ने पर ही लगेगा। इसकी भाषा अत्यन्त सहज, सरल और मुहावरेदार तो है ही, कथा कहने की शैली में एक ऐसी जादूगरी है कि एक बार शुरु करनें पर कोई भी सहृदय पाठक बीच में कहानी को छोड़ नहीं सकता !

क़िस्सा चहार दर्वेश

लेखक

मीर अम्मन

भाषान्तरकार

डाक्टर सैयद एजाज़ हुसेन

संपादक

श्रीकृष्ण दास

मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रकाशक :
मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद।

Durga Sah Municipal Library,
NAINITAL.
दुर्गासाह म्युनिसिपल लाइब्रेरी
नैनीताल
Class No. 891.3
Book No. M68K
Received on ...-63

मूल्य
पाँच रुपये

मुद्रक
वीरेन्द्रनाथ घोष
माया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद।

भूमिका

हमारे देश की लोक कथाओं का इतिहास स्यात् संसार का सबसे प्राचीन इतिहास है। यों तो, मिस्र की सभ्यता को जो लोग सबसे प्राचीन मानते हैं, वे यह भी स्वीकार करते हैं कि वहां लिपि का प्रादुर्भाव भी सबसे पहिले हुआ। शाह ख़ाफ़री (४,५०० ई० पू०) के काल का एक पट्टलेख प्राप्त हुआ है जिसे संसार की सबसे पहिली लिखित कहानी माना जाता है। इसके बाद बाबुल के शासक हमरुबी के काल के कुछ लेख मिलते हैं। ये लेख वहाँ की लोककथा परंपरा के प्रमाण माने जा सकते हैं। चीन में भी १३०० ई० पू० की सुप्रसिद्ध कहानी 'ताऊचीन' मिलती है। दक्षिण अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया की आदिवासी जातियों में प्रचलित कुछ ऐसी कहानियाँ मिलती हैं जिनका इतिहास दस हज़ार वर्ष से कम पुराना नहीं है। परन्तु सभ्यता की जो अटूट परम्परा हमारे देश की मिलती है उसमें लोक कथाओं का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना प्राचीन ऋग्वेद है। वेद, तौरेत, इंजील, कुरान सब में लोक कथाओं का प्रभूत प्रयोग हुआ है। मौखिक एवं लिखित कथाओं का हमारा इतिहास ईसा के जन्म के सहस्रों वर्ष पहिले का है। हमारे देश की सीमाओं के बाहर जिस प्रकार कहानियों का प्राचुर्य था, उसी प्रकार हमारे देश में भी। परन्तु हमारे देश में उनका जितना उत्कर्ष हुआ, उतना अन्यत्र नहीं। फलतः हमारे देश की कहानियाँ सैकड़ों हज़ारों वर्ष पहिले ही देश की सीमाओं को पार करके दूसरे देशों में पहुँची और उन्होंने वहाँ के जन समाज को अनुप्राणित किया।

इन कहानियों के उद्गम स्थल के सम्बन्ध में, पिछली शताब्दी में और इस शताब्दी के प्रथमार्ध में काफ़ी विवाद चलता रहा है। एक वर्ग का यह विचार था कि इनका उद्गम स्थल उफ़रैतिस घाटी है। दूसरे वर्ग का कथन था कि इनका जन्म भारत में हुआ। बाबुलवादी विद्वानों का यह कहना था कि पुरानी हिब्रू बाइबिल में जो कथायें मिलती हैं उन्हीं की तरह की कहानियाँ पूरबी देशों में मिलती हैं। परन्तु ये विद्वान यह कभी भी साबित नहीं कर सके कि जितनी भी प्राचीन कहानियाँ मिलती हैं, उन सबका जन्म उफ़रैतिस घाटी में ही हुआ। जो लोग भारतवादी हैं, उनके कथन में पुष्टता और प्रामाणिकता अधिक है। बेनफ़े और बाद में कास्क्विन ने यह साबित कर दिया है कि योरुप में जो पशु-पक्षियों से सम्बन्धित और मनुष्य जीवन से सम्बन्धित कहानियाँ मिलती हैं, उनके स्रोत पूरब की प्राचीन कहानियों में मिल जाते हैं।

जो लोग इन कहानियों का उद्गम स्थल भारत को मानते हैं और कहते हैं कि भारत के प्राचीन धार्मिक साहित्य में ये कथायें अपने मूल रूप में अंकित हैं, उनके दावा की भी आलोचना की जाती है और कहा जाता है कि केवल इस उपर्युक्त कारण से ही भारत को इन सभी कहानियों का उद्गम स्थल मान लेना ठीक नहीं है। लिखने की कला न जानने वाले समाज में प्रचलित कहानियों का अध्ययन करने पर यह पता चला है कि यद्यपि वहाँ इन कहानियों को लिखित रूप में संरक्षित नहीं किया जा सका, परन्तु हज़ारों वर्षों से ये कहानियाँ इस समाज में अपने मूल मौखिक रूप में ही चली आ रही हैं। एस्किमो जातियाँ, भौगोलिक दृष्टि से एक दूसरे से बहुत दूर रहती हैं। फिर भी उनमें प्रचलित कहानियाँ, जो मौखिक रूप में ही जीवित हैं, सर्वत्र समान रूप से पायी जाती हैं। यह बात कि कुछ कहानियाँ सबसे पहिले किसी स्थान अथवा देश-विशेष में लिपिबद्ध हुईं, साहित्य के इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सकती है, परन्तु इससे यह साबित नहीं होता कि ये कहानियाँ सबसे पहिले

वहीं निर्मित भी हुई। जो हो, डिक्सन, फ्रेज़र, बोल्ते, पोलिवका, आर्ने, क्राहन, टेलर, थामप्सन आदि ने इन विवादग्रस्त परन्तु अनावश्यक बातों को नज़र अन्दाज़ करके, दूसरे दृष्टिकोणों से इस अध्ययन-अनुशीलन के काम को आगे बढ़ाया है।

लोक कथाओं एवं लोक में प्रचलित कहानियों का वर्गीकरण इस प्रकार हो सकता है (१) पुराण-कथा, (२) ऐतिहासिक आधार पर निर्मित कथा (३) साधारण कथा।

पुराण कथा एवं पौराणिक कथा में धरती और आकाश की विभिन्न प्रक्रियाओं, रूपों आदि का वर्णन रहता है। प्राकृतिक इतिहास की विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है, मानव जाति की सभ्यता के विकास और सामाजिक एवं धार्मिक रीतियों और आचारों के उद्भव तथा पूज्य तत्वों के स्वभाव और इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।

दूसरे प्रकार की कहानियाँ वे होती हैं जिनका आधार ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं घटनाओं के किसी भाग अथवा अंश का सहारा लेकर बनती हैं और बाद में उनका अपना अलग रूप खड़ा हो जाता है। यदि विभिन्न देशों में प्रचलित इस वर्ग की कहानियों में समानता होती है तो इसका कारण यह है कि इनके आधार-स्रोत में समानता होती है।

इन दोनों प्रकार की कहानियों के अतिरिक्त तीसरे वर्ग की कहानियाँ हैं जो आइसलैण्ड और भारत के बीच में प्रचलित हैं; इनमें घटनाओं और कथानकों की अद्भुत समानता दिखायी देती है। इसे आकस्मिक माना जाय, अथवा स्वतंत्र कल्पना की उपज समझा जाय अथवा यह मान लिया जाय कि इनका जन्म तो एक जगह हुआ, परन्तु कालक्रम से ये फैलती विकसित होती गयीं। जो भारत-वादी विद्वान हैं उनकी स्थिति स्पष्ट है। परन्तु जो विद्वान भारत-वादी नहीं हैं, उन्होंने भी यह तो माना ही है कि भारत के बृहद् कथा संग्रहों से योरुप की लोक कथायें प्रभावित हुई हैं। ये कहानियाँ अरबी और फ़ारसी के अनुवादों के द्वारा योरुप पहुँचीं और वहाँ के कथा साहित्य का अविभाज्य अंग बन गयीं।

हमारे देश में लोक कथाओं की परम्परा प्रायः प्रागैतिहासिक काल से चली आ रही है। वैदिक काल में तो इस प्रकार की लोक कथाओं के अगणित प्रमाण मिलने लगते हैं। वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, रामायण और महाभारत में इन कथाओं का प्राचुर्य स्पष्ट दीखता है। जैन और बौद्ध साहित्य में तो लोक कथायें भरी पड़ी हैं। जातक कथाओं के सम्बन्ध में कौन नहीं जानता? पंचतंत्र की कहानियाँ अत्यन्त प्राचीन हैं। वृहद् कथा मंजरी, कथा सरितसागर, हितोपदेश, शुक सप्तति आदि हमारी राष्ट्रीय निधि के रूप में समादृत हैं। बैताल पच्चीसी, सिंहासन बत्तीसी आदि नाम का प्रचार घर-घर में हैं। ये सब कथायें लिपिबद्ध हैं और हमारा इनसे प्रगाढ़ परिचय है।

कहते हैं कि मूल संस्कृत में पंचतंत्र की केवल चौरासी कहानियाँ थीं। परन्तु सहस्राब्दियों तक भारत के भीतर और बाहर इन कहानियों की अनन्त यात्रा चलती रही। इनका बाह्य और भीतरी रूप तो बदला ही, इनकी संख्या भी बढ़ती गई। योरुप में ये कहानियाँ सैकड़ों वर्ष पहिले अरब देश होते हुए पहुँची और धीरे-धीरे वहाँ की सभी महत्वपूर्ण भाषाओं में अनूदित भी हो गयीं। शेक्सपियर के ज़माने तक ये कहानियाँ इंगलैण्ड में अवश्य पहुँच चुकी थीं। पिछले दिनों में, १६२४ में, स्टैनली राइस ने पंचतंत्र का अनुवाद अंग्रेज़ी में किया। इसके बाद भारत विद्या विशारद आर्थर राइडर ने इसका जो अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया वह सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यह सही है कि योरुप में सैकड़ों वर्ष पहिले से इन कहानियों का प्रचार था। परन्तु थियोडोर बेनफ़े ने सन् १८५६ ई० में प्रथम बार पंचतंत्र के काश्मीर-पाठ का अनुशीलन एवं अनुवाद किया। सभी विद्वान पंचतंत्र के इस पाठ को सबसे अधिक महत्व प्रदान करते हैं और इसे ही सर्वाधिक शुद्ध मानते हैं।

पंचतंत्र के सम्बन्ध में राइडर ने कहा है—'पंचतंत्र की कहानियाँ संसार की सबसे अधिक प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। यह भी निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि पंचतंत्र ही संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियों का

संग्रह है। भारत में इन कहानियों के कई रूप बने, इनके अनुवादों तथा इन अनुवादों के भी अनुवादों ने फ़ारस, अरब, सीरिया होकर योरुप के सभ्य देशों की यात्रा की। अपनी यात्रा के दो हज़ार वर्षों में इन कहानियों ने लाखों-करोड़ों मनुष्यों को आनन्द प्रदान किया।' डाक्टर हर्टेल के अनुसार 'ये कहानियाँ २०० ई० पू० में काश्मीर में सर्वप्रथम रची गयीं। इनके पहिले ही अगणित कहानियाँ प्रचलित थीं। पंचतंत्र के कम से कम पचीस पाठ तो भारत में ही प्रचलित रहे हैं।' हर्टेल ने जिस पाठ का अनुवाद किया उसकी रचना ११९९ ई० में हुई थी। पंचतंत्र की कहानियों में ज्ञान एवं अनुभव का जो कोष संजोया हुआ था, इसके कारण उसे 'नीतिशास्त्र' की उपाधि दी गयी। विष्णु शर्मा मंत्रद्रष्टा के पद पर प्रतिष्ठित हो गये।

कहानियों की यह परम्परा अविच्छिन्न रूप से चलती रही है। संस्कृत के कवियों और नाटककारों ने अपने समय में प्रचलित कहानियों का भली-भांति उपयोग अपनी रचनाओं में किया। वेद, रामायण, महाभारत, पुराणादि में वर्णित कहानियों को अपनी आवश्यकता के अनुसार ढाल कर इन कवियों ने स्वयं अपनी रचनाओं को शोभा प्रदान की, उन्हें अमर बना दिया। दण्डिन् ने अपने समय में प्रचलित कहानियों से लाभ उठाया। कवि दण्डी ने 'दशकुमार चरित' और 'काव्यादर्श' की रचना की। इनका तीसरा ग्रंथ कौन सा था, इसके सम्बन्ध में मतभेद है। यद्यपि दण्डिन् महान् कवि के रूप में अक्सर श्रद्धा पूर्वक याद किये गये हैं, परन्तु उनकी सर्वाधिक ख्याति 'दशकुमार चरित' की रचना के ही कारण हुई। दण्डिन् ने इस रचना को तैयार करते समय बृहत्कथा का सहारा लिया था, इसमें कोई सन्देह नहीं। दण्डिन् अपनी रचना 'दशकुमार चरित' पूरी नहीं कर सके थे। उन्होंने अपनी मूल रचना में केवल आठ कुमारों के चरित्र एवं अनुभवों का वर्णन किया। आठवीं कहानी भी अपूर्ण रह गयी। 'दशकुमार चरित' की पूर्व पीठिका और पाद पीठिका बाद में जोड़ी गयी।

'दशकुमार चरित' में कुछ विशेषतायें हैं जो बरबस अपनी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि सारी कहानी समाप्त कर लेने के बाद दण्डिन् जन साधारण के जीवन के सभी अंगों का सजीव चित्र आँखों के आगे खींचकर रख देना चाहते थे। साथ ही वह आदर्श राजा को भी चित्रित करना चाहते थे। दण्डिन् ने सरल, सुबोध, रोचक, मनोहर शैली का प्रयोग करके अपनी कहानियों को हृदयग्राही बना दिया। इस तरह उन्होंने अपने पूर्वज और आदर्श कथाकार गुणाढ्य का अनुगमन किया। फलतः 'दशकुमार चरित' में न अलंकारों की बहुतायत है, न समासों की भरमार! भाषा मुहावरेदार, चलती हुई, चुटीली है। इन कहानियों में राजे-महाराजे, राजकुमार-राजकुमारियाँ, जादूगर, पाखंडी, चोर, कानुक, वेश्या, धूर्त, राक्षस सभी हैं। देवता नहीं हैं तो न सही, दानव तो उनकी जगह पूरी करने के लिये हैं ही।

दण्डिन् ने अपनी कहानियों में सब का भण्डाफोड़ किया है। राजा, ब्राह्मण, दिगम्बर जैन और बौद्ध किसी को भी अपने तीखे वाक् बाणों से छेद देने, नंगा कर देने में वह चूके नहीं। बौद्ध भिक्षुणियों को 'कुटनी' बनाने में दण्डिन् को कुछ भी संकोच न हुआ। देवताओं और ब्राह्मणों की खिल्ली उड़ाने और उनकी कटुतम आलोचना करने में वह कभी भी नहीं चूके। ब्राह्मणों को 'धरणितल तैतिल' अर्थात् धरती पर चलने वाला गैंडा कहा। देवताओं के सम्बन्ध में उनकी क्या आलोचना है यह काम-मंजरी के शब्दों में सुनिये—'प्राचीन ग्रंथों के अनुसार पितामह ही तिलोत्तमा को चाहने लगे थे। भवानी पति ने भी मुनि की एक हज़ार पत्नियों को कलंकित कर डाला था। भगवान् विष्णु सोलह हज़ार रानियों के साथ विहार करते थे। प्रजापति अपनी निज की लड़की पर मोहित हो गये थे। इन्द्र का गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या के साथ सम्भोग प्रसिद्ध ही है। चन्द्रमा ने गुरु की स्त्री तक से सहवास कर लिया था।.....देवताओं के ऐसे ऐसे कितने ही दुराचारों के उदाहरण हैं। वे लोग असुरों को अधर्मी और दुराचारी होने का जो दोष और उलहना दिया करते हैं वह बेकार ही है।

परन्तु देवता तो ज्ञानवान् थे, इसलिये ज्ञान की आड़ में ये सब बातें छिप गयी हैं। इन लोगों की ऐसी बातों से इनके धर्म-कर्म में कोई बाधा नहीं पड़ी। ये सब के सब सीमातीत विषय भोग करते हुये भी पहले जैसे देवता और ऋषि ही बने रहे।'

शिकार, जुआ, वेश्यागमन, शराबख़ोरी आदि को राजाओं के लिये निन्दनीय और वर्जित बताया गया है। परन्तु चन्द्रपालित का कथन है कि, 'शिकार से कसरत होती है, स्वास्थ्य अच्छा होता है। जंगली पशुओं को मार डालने से खेती, राहगीरों और जंगल में निवास करने वाले लोगों की रक्षा होती है। जुआ खेलने से त्याग की भावना बढ़ती है। हार-जीत में समभाव रहता है, मर्दानगी आती है, चित की एकाग्रता बढ़ती है, हिम्मत बढ़ती है। वेश्यागमन से नाशवान् धन का सदुपयोग होता है और अबला नारी की सहायता हो जाती है। कंजूसी की आदत समाप्त हो जाती है। कलाओं के प्रति अनुराग बढ़ता है। बातचीत करने, अच्छे कपड़े पहिनने और चार मित्रों में उठने-बैठने का ढंग आ जाता है। शराबख़ोरी से ग़म ग़लत होता है, स्वाभिमान जागता है, उदारता आती है।' इस शिक्षा का जो फल होना था वही हुआ। सारे विदर्भ में अराजकता, लूट-मार और अनैतिकता का बोल बाला हो गया। इस पतित समाज का अत्यन्त सजीव चित्र दण्डिन् ने खींच दिया।

चोरों, वेश्याओं, धूर्तों, कुटनियों, नगर रक्षकों का विस्तृत वर्णन तो है ही, मुर्गों की लड़ाई का भी विशद् वर्णन दण्डिन् ने किया है।

इस प्रकार 'दशकुमार चरित' में तत्कालीन भारतीय जन समाज के सम्पूर्ण जीवन की सम्यक् झाँकी मिल जाती है। रोचक वर्णन शैली के साथ ही व्यंग्य और हास्य का सहारा लेकर दण्डिन् ने समाज की कठोर आलोचना की और अच्छे समाज की कल्पना भी सामने रखी। 'दशकुमार चरित' के दसों राजकुमार विभिन्न दिशाओं में जाते हैं, नाना प्रकार के अनुभव प्राप्त करते हैं और फिर आपबीती सुनाते हैं। ये अनुभव रोमांचकारी हैं। इनमें कल्पना-शीलता अपनी चरम सीमा को पहुँच गयी है।

यहाँ से वहाँ तक रंगीनी है, रोचकता है, सजीवता है, सत्यता है।

'किस्सा चहार दर्वेश' इसी परम्परा की रचना है। आज उर्दू साहित्य में 'क़िस्सा चहार दर्वेश' और उसकी तरह के अन्य कथा-साहित्य को भी आदर और प्रतिष्ठा मिली हुई है। इस साहित्य का अध्ययन एवं मूल्यांकन भी अब वैज्ञानिक ढंग से होने लगा है। यह सही है कि आज जो भी इस प्रकार का साहित्य प्राप्त है, वह अरबी और फ़ारसी से होकर ही उर्दू में आया है। मगर अरबी और फ़ारसी में यह साहित्य कहाँ से आया? इसका उत्तर उपर्युक्त पंक्तियों में दिया जा चुका है। अलफ़ लैलः, अल्माअत लैलः व लैलः, अस्सिन्दबाद, अल् फ़रज़ः व सीमास इत्यादि अरबी की प्रसिद्ध कथायें हैं। इन सब कथाओं का रूपान्तर उर्दू साहित्य में हो चुका है।

अरब देशों में क़िस्सागोई को कला समझा जाता था। इस्लाम से पूर्व कहानियाँ सुनने का आम रिवाज था। अब्बासी ख़लीफ़ाओं के युग में इस कला की बड़ी उन्नति हुई। 'क़िस्सा हाजी बाबा' में कहानी सुनने वालों का हाल लिखा है। अरबी कथाओं में जिन्नातों और परियों की कहानियों के अलावा इस्लाम की सभ्यता का भी चित्रण मिलता है।

फ़ारसी क़िस्सों का उर्दू पर सबसे अधिक प्रभाव है। ईरानी भूत प्रेत की बातों में बड़ा विश्वास रखते थे। फ़ारसी क़िस्से ईरान में बहुत कम लिखे गये, भारत में अधिक। 'पंचतंत्र' का विशेष अनुवाद ईरान में भी हुआ और 'अनवार सुहेली' और 'अयारे दानिश' के नाम से ये संग्रह फ़ारसी साहित्य में विशेष महत्व रखते हैं। इसके अतिरिक्त 'गुलिस्ताँ' 'अख़लाक़े मुहसिनी', 'दास्ताने अमीर हमज़ा', 'बोस्ताने ख़याल', 'हफ़्त सैर' 'हातिम', 'गुल-बकावली', 'चहार दर्वेश' और 'गुले सनोबर' आदि में कथा साहित्य के अच्छे नमूने मिलते हैं।

किन्तु भारतवर्ष की कहानियों और ईरानी क़िस्सों में एक विशेष अन्तर है। हिन्दुस्तानी क़िस्सों में अधिकतर साधारण जीवन और भावनाओं का वर्णन मिलता है, किन्तु ईरानी क़िस्सों में दरबारों का चित्रण रहता है।

दक्षिण भारत में भी उस समय तक उर्दू क़िस्सों का प्रारम्भ हो चुका था। अधिकतर ये क़िस्से कविताओं के रूप में हैं। जितनी प्रसिद्ध मसनवियाँ हैं सब में परियों के मनोरंजक जीवन के चित्र हैं। क़िस्सों के प्लाट अधिकतर फ़ारसी से लिये गये हैं। सबसे पहले १६२५ ई० में ग़ौवासी की प्रसिद्ध मसनवी 'सैफ़ुलमुलूक व बदीउज्जमाल' लिखी गई। इसके बाद मुल्ला वज्ही की 'सबरस' है। मुक़ीमी की 'चन्द्रवदन', ग़ौवासी की दूसरी नज़्म 'तूती नामा', मलिक ख़ुशनूद की मसनवी 'हश्त बिहिश्त', इब्ने निशाती की मनोरंजक मसनवी 'फूल बन', नुसरती की मसनवी 'गुलशने इश्क़', अमीन की 'अबूशहमा', फ़ायज़ की 'रिज़वान शाह' व 'रूह अफ़ज़ा', ग़ुलाम अली की 'पद्मावत' जो मलिक मुहम्मद जायसी की पद्मावत के क़िस्से पर लिखी गई है, आजिज़ की 'मल्कए मिस्र', ज़ौक़ी की 'वसालुल्आशिक़ीन', और आगाह की 'गुल्ज़ारे इश्क़' दक्षिणी भारत की प्रसिद्ध उर्दू मसनवियाँ हैं। इनमें से अधिकतर अनुवाद की हुई हैं और इनकी कहानियों में परियों का मुख्य स्थान है।

प्रत्येक भाषा का प्रारम्भ कविता से होता है। संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी और दूसरे साहित्यों के उदाहरण हमारे सामने हैं। दक्षिणी भारत में कहानियाँ गद्य में इसलिए नहीं लिखी गईं कि उर्दू को फ़ारसी की भांति कोई साहित्यिक स्थान नहीं प्राप्त था। दक्षिण के गद्य को साहित्य समझना अत्यन्त कठिन था। पद्य को दरबारों की सरपरस्ती भी हासिल थी। गद्य में केवल धार्मिक पुस्तकें लिखी गयीं क्योंकि उन्हें साधारण जनता तक पहुँचाना था। वे साहित्य नहीं बल्कि प्रचार के दृष्टिकोण से लिखे गये थे।

उत्तरी भारत में भी बहुत सी कहानियाँ लिखी गयीं। किन्तु इन सारी कहानियों के दो बड़े संग्रह हैं जिनमें ये सब एक जगह कर दी गई हैं—(१) नौतर्ज़े मुरस्सा, (२) तोता कहानी। पहला संग्रह शुरू से अन्त तक एक ही क़िस्सा है। दूसरी में विभिन्न कहानियाँ हैं जो एक सूत्र में बाँध दी गई हैं।

उर्दू के प्राचीन साहित्य में जो कहानियाँ नज़र आती हैं उनमें सिवाय तीन क़िस्सों के शेष सभी संस्कृत, फ़ारसी और अरबी से अनुवाद की गई हैं। 'फ़सानए अजायब', 'सरोशे सुख़न' और 'तिलिस्मे हैरत' उर्दू की अपनी चीज़ें हैं। किन्तु 'अल्फ़ लैलः' और 'इख़्वानुस्सफ़ा' अरबी अनुवाद हैं। फ़ारसी से 'नौ तर्ज़े मुरस्सा', 'बाग़ोबहार', 'आराइशे महफ़िल', 'मज़हबे इश्क़', 'गुले सनोबर', 'शिगूफ़ए मुहब्बत', 'दास्ताने असीर हमज़ा' और 'बोस्ताने ख़याल' और संस्कृत से 'कलीलः व दिमनाः',[1] 'पंचतंत्र', हितोपदेश', 'कथासरित सागर' आदि के अनुवाद किये गए हैं।

'चहार दर्वेश' के उर्दू में बहुत से पाठ मिले हैं जिनमें से 'नौ तर्ज़े मुरस्सा' अज़ 'तहसीन', 'नौतर्ज़े मुरस्सा अज़ 'ज़रीन' और मीर अम्मन की 'बाग़ो बहार' (क़िस्सा चहार दर्वेश) विशेष महत्व रखते हैं। 'बाग़ो बहार' तहसीन की 'नौतर्ज़े मुरस्सा' से संगृहीत है, यद्यपि इस विषय में विभिन्न मत हैं। इस प्रश्न पर डाक्टर एजाज़ हुसेन साहब ने अपनी भूमिका में पूर्ण रूप से प्रकाश डाला है। इसलिए कुछ और लिखने की आवश्यकता नहीं रह जाती।

---

१. लगभग ५७० ई० में पहलवी पंचतंत्र का सीरिया देश की प्राचीन भाषा में अनुवाद हुआ। यह अनुवाद अचानक उन्नीसवीं शती के मध्य भाग में प्रकाश में आया। इसका सम्पादन और अनुवाद जर्मन विद्वानों ने किया है। यह अनुवाद मूल संस्कृत 'पंचतंत्र' के भाव और कहानियों के सबसे अधिक सन्निकट है। पहलवी अनुवाद के आधार पर दूसरा अनुवाद आठवीं शती में अब्दुल्ला-इब्न-उल-मुक़फ़्फ़ाने अरबी भाषा में किया, जिसका नाम है 'कलीलः व दिमनः', जो 'करटक व दमनक' इन दो नामों के रूप हैं।

—डा० वासुदेव शरण अग्रवाल, आमुख, पंचतंत्र' पृष्ठ ६–७

'बाग़ो बहार' के बाद इन्शाउल्ला ख़ाँ 'इन्शा' की 'रानी केतकी की कहानी' और 'मिल्के गौहर', मीर बहादुर अली हुसैनी की 'नस्ले बे नज़ीर', निहाल चन्द्र लाहौरी की 'मज़हबे इश्क़', रजब अली बेग 'सुरूर' की 'फ़सानए अजायब', मुंशी नेमि चन्द्र खत्री की 'गुले सनोबर', फ़ख़रुद्दीन हुसैन 'सुख़न' की 'सरोशे सुख़न', जाफ़र अली 'शैदन' की 'तिलिस्मे हैरत', 'दास्ताने अमीर हमज़ा', मीर मुहम्मद तक़ी 'ख़याल' की 'बोस्ताने ख़याल', काज़िम अली 'जवान' की 'शकुन्तला', बेनी नरायन 'जहाँ' की 'चार गुल्शन' और 'बागे इश्क़', सैयद मुहम्मद बख़्श 'महजूर' की 'इन्शाए नौरतन', कुन्दन लाल लाहौरी की 'क़िस्सए कामरूप व कामलता' और अमानत की 'शरह इन्दर सभा' उर्दू कथा साहित्य में विशेष स्थान रखती है।

'सुरूर' ने फ़सानए अजायब' की भूमिका में 'बाग़ो बहार' की साहित्यिकता और मीर अम्मन के महत्व पर व्यंग्य किया है। प्रत्येक साहित्य में साहित्यकारों की एक दूसरे को बुरा भला कहने और नीचा दिखाने के प्रयत्न करने की परम्परा बहुत प्राचीन है। 'फ़सानए अजायब' का प्रकाशित होना था कि उर्दू कथा साहित्य संसार में शोर मच गया। फ़ख़रुद्दीन हुसैन ने १८६० ई० में 'सरोशे सुख़न' लिखी और सुरूर द्वारा मीर अम्मन पर किए गए व्यंग्यों का उत्तर लिखा। 'सुरूर' के शागिर्द जाफ़र अली 'शैदन' ने १८७२ ई० में 'सरोशे सुख़न' का जवाब 'तिलिस्मे हैरत' लिख कर दिया। 'सुख़न' ने जाफ़र अली 'शैदन' के उस्ताद रजब अली बेग 'सुरूर' पर सभ्य और सुलझे हुए ढंग में व्यंग्य किए थे। किन्तु 'शैदन' ने बिगड़कर 'सुख़न' को बहुत कुछ बुरा भला कहा। यहाँ तक कि उन्होंने 'सुख़न' के उस्ताद महाकवि 'ग़ालिब' को भी नहीं छोड़ा। साहित्यिक प्रतिस्पर्धा का यह सिलसिला यहीं पर समाप्त हो जाता है क्योंकि इसके बाद हमें कोई ऐसी पुस्तक नहीं दिखाई देती जिसमें 'शैदन' को उत्तर देने का प्रयत्न किया गया हो।

हर देश में कथाएँ सुनाने का रिवाज रहा है। अरब में कथा को

समर और कथा सुनाने वाले को सामर कहते थे। इस्लाम से पहले इसका रिवाज बड़े मनोरंजक ढंग पर था। शाम के खाने के बाद चाँदनी रातों में सब लोग रेत पर बैठ जाते थे। सामर कथा सुनाता था और बेतन में उसे खजूरें दी जाती थीं। तत्पश्चात् क़हवाख़ानों और बाज़ारों में इसके अड्डे बन गए। ईरान में भी कथाएँ इतनी ही रुचि से सुनी जाती थीं।

भारतवर्ष में इसकी परम्परा उन्नीसवीं शताब्दी से प्रारम्भ होती है। लखनऊ, रामपुर और दिल्ली इसके मुख्य केन्द्र थे। १६ वीं शताब्दी के अन्तिम भाग में यह प्रथा ज़्यादा ज़ोरों पर थी। ख़्वाजा अमान ने 'बोस्ताने-ख़याल' के अनुवाद 'हदायके अन्ज़ार' में कथाओं की कुछ विशेषताएँ बताई हैं। उनके कथनानुसार दास्तानों की पहली विशेषता यह है कि उसका तात्पर्य मनोरंजक होना चाहिए, भाषा और शैली सरल और दिल-चस्प होनी चाहिए। कथा में इतिहास की सही झलकियाँ होनी चाहिए।

ये बातें दास्तानों की टेकनीक में बड़ा महत्व रखती हैं। कथाओं को मनोरंजक बनाने के लिये कथा सुनाने वाले को क़िस्से में क़िस्सा पैदा करना होता है। सुनने वाला अन्त जानने के लिये व्याकुल रहता है और कथा कहने वाला किसी जगह पर क़िस्से को रोक कर किसी एक बात को विस्तारपूर्वक बताता रहता है। इस क्रिया को उर्दू में दास्तान रोकना कहा जाता है।

लखनऊ में एक बार दो क़िस्सा सुनाने वालों का मुक़ाबला हुआ कि कौन कितनी देर तक क़िस्से को रोक सकता है। एक ने क़िस्से को इस जगह पर पहुँचा दिया कि प्रेमिका और प्रेमी मिलते हैं, किन्तु उन दोनों के बीच एक पर्दा है। पर्दा उठने पर दोनों का मिलन होता है। इसी जगह क़िस्सा रोक दिया गया। सुनने वाले व्याकुल थे कि कब पर्दा हटे और मिलन का वर्णन आए। किन्तु कथा सुनाने वाला अपने ज्ञान और वर्णन से पर्दे का और दोनों की मनोकामना का चित्र खींचता रहा। इसमें कई दिन लग गए। सुनने वाले रोज यह आशा लेकर आते कि आज अवश्य पर्दा उठ जायेगा। किन्तु रात को वे निराश वापस जाते और

मर्दा उठने में देर बनी रहती। क़िस्सागो एक सप्ताह तक इसी प्रकार क़िस्से को रोके रहा।

इन कथाओं में अधिकतर सम्राटों के क़िस्से होते हैं। उर्दू की प्रसिद्ध दास्तान 'अमीर हमज़ा' में क़बाद और नौशेरवाँ का वर्णन है। 'बोस्ताने ख़याल' में इमाम जाफ़र सादिक़ और उनकी औलादों से आरम्भ किया गया है। अमान ने दास्तानों की जो विशेषताएँ बताई हैं वे पूर्णरूप से उर्दू कथा साहित्य में मिलती हैं और अधिकतर कथाओं में ऐतिहासिक घटनाओं और व्यक्तियों का वर्णन मिलता है।

इन दास्तानों में अन्तर्गठन की कमी है। 'चहार दर्वेश', 'गुल बकावली', 'फ़सानए अजायब' और 'बोस्ताने ख़याल' सभी में प्रिय के मिलन की खोज का वर्णन मिलता है और मिलन के अन्त पर कथा समाप्त हो जाती है। इसमें कोई नवीनता नहीं है। यदि कथानक में सत्य और असत्य का द्वन्द्व दिखाया गया है तो नायक की जीत अवश्य दिखाई जाती है, गोकि जीवन में सदा ऐसा नहीं होता।

कथाओं की एक विशेषता यह भी है कि इसके अन्त को कुछ देर के लिए टाले रखा जाय। इस प्रकार पाठक के हृदय में एक उत्सुकता सी बनी रहती है। पुराने कथाकार इसके लिये क़िस्से में क़िस्सा पैदा करते चले जाते थे। यह तरकीब पुरानी संस्कृत की कहानियों में प्रचलित रही है। दूसरे देशों ने भी इसे भारतवर्ष से ही लिया। किन्तु क़िस्से में क़िस्सा पैदा करने की यह परम्परा कुछ अधिक जानदार नहीं है। कथा से यदि छोटे क़िस्से को निकाल दिया जाय तो इससे मुख्य कहानी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। 'बाग़ो बहार' (चहार दर्वेश) में हातिमताई के क़िस्से की मिसाल ऐसी ही है। इस क़िस्से का मुख्य कहानी से कोई सम्बन्ध नहीं है।

'चहार दर्वेश' में क़िस्से में क़िस्सा ख़्वाजा सगपरस्त से प्रारम्भ होता है। बादशाह आज़ादबख़्त ख़्वाजा सगपरस्त का क़िस्सा सुनता है और ख़्वाजा सगपरस्त ज़ेरबाद की रानी या सरान्दीप की राजकुमारी के क़िस्से

का वर्णन करना है। किन्तु ये क़िस्से कथा के प्लाट में बहुत महत्व रखते हैं। इन्हें किसी प्रकार अलग नहीं किया जा सकता।

इन कथाओं के प्लाट में एक और भी टेकनीक दिखाई जाती है जो उपन्यासों में नहीं होती। यह दैवी सहायता और संयोग का सहारा है। यह प्लाट की कमज़ोरी है। हमें नायक और उसके साथियों से हमदर्दी रहती है। उन्हें कठिनाइयों में देखकर हमारा हृदय व्याकुल हो उठता है। दास्तानगो हमारे भाव को तीव्र करने के लिए बड़ी से बड़ी कठिनाइयों में नायक को फँसा देता है और किसी वैज्ञानिक ढंग से उसे छुटकारा दिलाने का प्रयत्न नहीं करता बल्कि दैवी सहायता या किसी संयोग के सहारे उसे बचा लेता है। 'चहार दर्वेश' में हर दर्वेश आत्महत्या का इरादा करता है, किन्तु एक सवार हरे वस्त्रों में मुख पर पर्दा डाले आता है और उसे मिलन का सन्देश देकर क़ुस्तुन्तुनिया की ओर रवाना कर देता है। यह दैवी सहायता है। इसी प्रकार संयोग का भी सहारा लिया जाता है। 'चहार दर्वेश' में ख़्वाजा सगपरस्त को सूली दी जाने वाली है। संयोग वश उसी समय बादशाह के पेट में दर्द शुरू होता है। हरकारे दौड़े आते हैं और कहते हैं कि मुजरिम को छोड़ दिया जाय।

दास्तानों की मुख्यतम विशेषता उसमें लोकेतर तत्वों का प्रयोग है। भूत प्रेत हमारी कथाओं के लिये बड़ा महत्व रखते हैं। यह वैज्ञानिक युग है और लोग इन बातों को प्रकृति और जीवन की सच्चाइयों के विरुद्ध समझकर इनका विरोध करते हैं। विश्व साहित्य पर दृष्टि डालने से मालूम होता है कि यह विशेषता केवल भारतवर्ष के कथा साहित्य में ही नहीं बल्कि संसार के दूसरे साहित्यों में भी बड़ा महत्व रखती है। इलियड, ओडीसी, दान्ते की डिवाइन कामेडी, शेक्सपियर के नाटक, शाहनामा, रामायण, महाभारत, कालिदास के नाटक प्राचीन साहित्य की इन सारी महान रचनाओं में यह विशेषता मिलती है। सच तो यह है कि साहित्य केवल जीवन की सच्चाइयों का नाम नहीं है। उसमें जीवन के स्वप्न भी उतना ही महत्व रखते हैं। यदि हम संसार की कठोर सच्चाइयों को ही

अपना विषय बनायें तो साहित्य एक समाचार पत्र बनकर रह जायगा। बेकन ने एक जगह कहा है—

"As the creative world is inferio r to the rational soul, so fiction gives to mankind what history denies and in some measure satisfies the mind with the shadows when it cannot enjoy the substance. And as real history gives us not the success of things according to the deserts of vice and virtue fiction corrects it and presents us with the facts and fortunes of persons rewarded and punished according to merit."

सर रिचर्ड ब्रिटन अंग्रेज़ी अलफ़ लैलः के दसवें भाग के अन्तिम लेख में लिखते हैं—

"History paints or attempts to paint life as it is, a mighty mare with or without a plan . Fiction shows or would show us life as it should be, wisely ordered and laid down on fixed lines."

जीवन में उतनी रंगा-रंगी नहीं है, जितनी हमारे सपनों में है। हमारी कहानियाँ हमें सौन्दर्य, कल्पना और कामना का एक संसार दिखाती हैं। संगीत की लहरों पर हमारी भावनाओं को बहाती हैं।

प्रत्येक धर्म के ग्रन्थ भूत-प्रेतों की कथनी करनी से भरे हैं। हिन्दुओं में देवी, देवता, अप्सरा, भूत, राक्षस आदि का वर्णन है। पारसियों में अह्रमन सुप्रसिद्ध पात्र है। ईसाइयों में फ़रिश्तों और शैतानों का वर्णन है। मुसलमानों के यहाँ हदीसों में पाँच प्रकार के जिन बताये गए हैं—(१) जान (२) जिन (३) शैतान (४) अफ़रीत (५) मारीद। इस्लाम के अनुसार मनुष्य मिट्टी से बना है, फ़रिश्ते नूर और जिन अग्नि से।

यह तो धर्म की बात हुई। इसके अतिरिक्त आत्मा में विश्वास भी पाया जाता है। सर आलीवर लाज जैसा महान वैज्ञानिक भी इसके अस्तित्व से इन्कार नहीं करता। आजकल संसार के लगभग सभी देशों

में मिस्मेरीज़म और हिप्नाटिज़्म के ज्ञान को बड़ा महत्व दिया जा रहा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारी कथाओं में यह चीज़ें कुछ विचित्र अथवा असम्भावित नहीं हैं। साहित्यकार हर उस बात पर अपना क़लम उठाता है जिसके बारे में सोचा जा सकता है।

लगभग प्रत्येक देश के लोक साहित्य की यह परम्परा रही है कि उसके पात्र समाज के उच्च वर्ग से सम्बन्धित होते हैं। अधिकतर लोक कथाएँ सम्राटों के मन बहलाव के विचार से लिखी गई हैं। 'बोस्ताने ख़याल' मुहम्मद शाह और बंगाल के कुछ नवाबज़ादों के लिए लिखा गया। 'चहार दर्वेश' मुहम्मद शाह की फ़रमाइश थी। 'फ़सानए अजायब' नसीरुद्दीन हैदर को पेश किया गया। 'सरोशे सुख़न' और 'तिलिस्मे हैरत' उसकी नक़ल में लिखे गए। 'हातिम ताई' और 'गुल बकावली' के विषय में अभी तक कुछ मालूम नहीं हो सका। सारांश यह कि लगभग सभी श्रेष्ठ कथाएँ सम्राटों या नवाबों के दरबार में लिखी गईं। उनके लेखक स्वयं उच्चवर्ग के लोग थे। उन्नीसवीं शताब्दी से पहले भारतवर्ष में छापे-ख़ाने का रिवाज नहीं था। किताबें हाथ से लिखकर बेची जाती थीं। रईस ही उन्हें ख़रीद सकते थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि सारा प्राचीन साहित्य अमीरों की सरपरस्ती में पला है। उनका ध्येय मनोरंजन था। समय काटने का एक शुग़ल था। बड़े रईसों के यहाँ दास्तानगो नौकर रक्खे जाते थे जो रात को उन्हें कहानियाँ सुनाते थे और इस प्रकार सुनते-सुनते उन्हें नींद आ जाती थी, कलीमउद्दीन अहमद ने बहुत सही लिखा है कि दास्तानें नींद लाने वाली गोलियों का महत्व रखती थीं। उनका ध्येय किसी शिक्षा का प्रचार नहीं होता था। फिर सिवाय प्रेम कथाओं के क्या सुनाया जाता? साधारण लोगों के पास प्रेम, युद्ध और दूसरी ऐसी चीज़ों के लिये अवकाश नहीं था। उनके चौबीस घन्टे पेट पालने की चिन्ता में व्यय होते थे, और दास्तानों को रंगीन बनाना था। इसलिये उचित यही था कि सम्राटों का वर्णन किया जाय। साधारण जनता का जीवन इतिहास के हर युग में लगभग एक ही जैसा रहा है। किन्तु उच्च

वर्ग का जीवन आज भी और आज से पहले भी रंगीन था। राजकुमारियाँ सौन्दर्य की देवियाँ समझी जाती थीं। गाँव की परिश्रमी और रूपवती स्त्रियों को जीवन के लिये केवल मनोरंजन का साधन बनाया जा सकता था। वे कहानियों को जन्म नहीं दे सकती थीं और यदि ऐसा होता भी तो वे कहानियाँ उनके अपने जीवन की भांति संत्रस्त, पीड़ित, दुखी और उदास होतीं। समाज के निचले वर्ग का वर्णन हमारी कथाओं में जहाँ है भी वहाँ वह सीमित है। मुलाज़िम, ख़्वाजासरा, अन्ना, दाई, मुग़लानी, मेहरी, क़लमाक़नी, सेविकायें अमीरों के पास थीं। इसलिये उनका नाम आ जाता है। किन्तु उनके घरेलू जीवन पर प्रकाश डालने की कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। 'हातिम ताई' में एक बहेलिये और कुछ किसान, 'चहार दर्वेश' में एक लकड़हारा, 'गुल बकावली' में कुछ लकड़हारे और अन्त में किसान, 'फ़सानए अजायब' में एक बहेलिया, यही लोग निचले वर्ग की ओर धुंधले इशारे करते हैं। इन्हें कहानियों का पात्र कहा भी नहीं जा सकता।

कथाओं के नायक उच्च वर्ग से तो लिए ही जाते हैं; उनके साथ कुछ मुख्य विशेषताएं भी आवश्यक समझी जाती हैं। नायक सदैव बहुत रूपवान होता है। वह वीर और साहसी होता है। यदि कथा में किसी मुसलमानी वातारण का चित्रण किया जाता है तो नायक धर्म-संस्कार का बहुत पाबन्द होता है। वह सदा प्रेम करने का आदी होता है और यह भावना हमारे कथा लेखकों पर कुछ इतनी छायी हुई थी कि उन्होंने 'अमीर हमज़ा' के जैसे साधु व्यक्ति को भी प्रेम के बन्धनों में जकड़ कर छोड़ा। इसी प्रकार नायिकायें भी सच्चे प्रेम और अकलुष सौन्दर्य की देवियाँ होती हैं। वे अपने प्रेमी के लिए घर-बार, समाज-संसार सभी त्यागने के लिए तैयार रहती हैं।

नायक के शत्रु सदा ज़लील, घमन्डी, बुतपरस्त, काफ़िर और अक्सर जादूगर होते हैं। वे सदा गन्दगी में डूबे रहते हैं। उनका समाज और

वातावरण गन्दा होता है। वे शुरू से अन्त तक एक ही जैसे होते हैं। मानव प्रकृति के विरुद्ध उनमें कभी भी कोई परिवर्तन नहीं होता।

इन दास्तानों में मौजूद अश्लीलता उस समय की राजनीतिक और सांस्कृतिक अवस्था पर प्रकाश डालती है। सारी कहानियों में काम वासना बहुत स्पष्ट और प्रकट है। स्त्री के शारीरिक सौन्दर्य और संभोग शृङ्गार के वर्णन में कथाकार उपमाओं के ढेर लगा देता है। सच तो यह है कि जो भयानक अश्लीलता प्राचीन साहित्य में नज़र आती है वह आज के वैज्ञानिक युग की रचनाओं में नहीं दीखती। उस समय आम तौर पर अमीर ऐश-परस्ती के शिकार थे। शराब का आम रिवाज था। यही कारण है कि हर दास्तान में स्त्री-पुरुष सभी बिला झिझक मदिरा में डूबे हुए दिखाई देते हैं। यह वासना कुछ उर्दू शायरी के प्रभाव से भी जागी है। गज़लों में शराब पीना सदा अच्छा दिखाया गया है। उसी के प्रभाव से गद्य में भी शराब को महत्व दिया गया। किन्तु इस अश्लीलता के होते हुए भी उस समय लोग धर्म में बहुत विश्वास रखते थे। इसकी छाया कथाओं में भी नज़र आती है। 'बागो बहार' (चहार दर्वेश) में ख़्वाजा सगपरस्त के क़िस्से में गहरा धार्मिक रंग है। 'अमीर हमज़ा' और 'बोस्ताने ख़याल' में बड़े प्रकट ढंग से इस्लाम का प्रचार किया गया है। दैवी सहायता का उल्लेख हर जगह किया गया है।

प्रत्येक अच्छे और महान साहित्य की भांति उर्दू कथा साहित्य भी कहानियों के रूप में धर्म और शिक्षा का प्रचार करता है। नायक के चरित्र में ऐसी विशेषतायें होती हैं जो स्वयं हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। हम उसके साथ-साथ रोते हैं, हँसते हैं और इस प्रकार उसकी कल्पना एवं मनोकामना में हमें अपने स्वप्न भी दीख पड़ते हैं। उसके शत्रुओं के लिये हमारे हृदय में कोई स्थान नहीं होता क्योंकि उसका अस्तित्व नीचता और दुष्टता का प्रतीक होता है। मानवीय संवेदना के अतिरिक्त इन कहानियों में त्याग और बलिदान की शिक्षा भी दी जाती है। नायक उच्च वर्ग के लोग होते हैं। वे यदि चाहें तो सारा

जीवन ऐश से गुज़ार सकते हैं। किन्तु बैठे बिठाये अपने सर कठिनाई मोल ले लेते हैं। हातिम ताई एक पराए प्राणी के लिये कितनी कठिनाइयाँ उठाता है। 'बाग़ो बहार' (चहार दर्वेश) का दूसरा दर्वेश नीमरोज़ के राजकुमार के लिये अपनी मल्कए बसरा के पास वापस न जाकर बन-बन में घूमता रहता है, सगपरस्त अपने भाइयों की शरारतों का जवाब किस शराफ़त से देता है, गुल बकावली में हम्माला ताजुल्मुलूक के लिये कितना कष्ट सहन करती है ! एक दो क्या सैकड़ों उदाहरण ऐसे मिलेंगे जहाँ कहानियों की रचना करते समय लेखक के हृदय में मनुष्य की मौलिक सहानुभूति की भावना जाग उठती है।

ये कथाएँ अधिकतर ऐसे समाज में लिखी गई जो निर्जीव था, जिसमें साहस, प्रयत्न और कर्म का कोई चिन्ह नहीं था। किन्तु ये कथाएँ स्वयं जीवन और जीवन की विचित्र कामनाओं से ओत-प्रोत हैं। इनमें कहीं भी ठहराव नहीं हैं। नायक मुसीबत झेलता रहता है किन्तु उसका साहस दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है, जागता जाता है और भविष्य की ओर धीरे-धीरे बढ़ते उसके पदचिह्न स्पष्ट होते जाते हैं।

नवयुग के प्रगतिशील लेखक और विचारक प्राचीन साहित्य पर यह आरोप लगाते हैं कि उसमें समाज का चित्रण बड़े कमजोर ढंग से मिलता है। यह बात पूर्णतया सत्य नहीं है। इस हद तक तो माना जा सकता है कि इन दास्तानों में केवल उच्चवर्ग के जीवन पर प्रकाश पड़ता है। किन्तु यह भी सोचना चाहिये कि भारतीय इतिहास का वह युग सामन्तशाही का युग था। उस युग में उच्चवर्ग ही कहानियों को जन्म दे सकता था। साधारण लोगों की कहानियाँ पढ़ने वाला ही कौन था ? लेखक भी पेट पालने के हेतु उसी वर्ग के साथ-साथ चल रहा था और निस्सन्देह उसने उस वर्ग का चित्रण बड़ी सफलता पूर्वक किया है। 'बाग़ो बहार', 'फ़सानए अजायब', 'सरोशे सुख़न', 'तिलिस्मे हैरत' और 'दास्ताने अमीर हमज़ा' में समाज के अनेकानेक पहलुओं पर बड़ी निपुणता से प्रकाश डाला गया है। 'चहार दर्वेश' के लेखक मीर अम्मन ने मुहम्मद शाह रंगीले का युग देखा

था। साम्राज्य की जड़ें उस समय खोखली हो चुकी थीं। फिर भी कम से कम दरबार की चार दीवारी के अन्दर मुग़ल शानो शौक़त की परम्परा बाक़ी थी। अम्मन ने बड़ी सुन्दरता से उस पर क़लम उठाया है। खाने, वस्त्र, सेवक, चमक-दमक, शृङ्गार-सामग्री इन सब के उल्लेख में मीर अम्मन किसी महान् लेखक की भांति निपुण मालूम होते हैं। दिल्ली की सभ्यता का पूरा नक़्शा बसरे के नाम से खींचा गया है। इसी प्रकार 'गुल बकावली' में ब्याह के अवसर पर इस्लामी रईसों की चमक-दमक नज़र आती है। 'फ़सानए अजायब' की भूमिका में लखनऊ के पतनशील समाज का चित्रण किया गया है। 'तिलिस्मे हैरत' में अवध के गँवारों और ठगों के जीवन और अवध के समाज और बोली का उल्लेख किया गया है। 'अमीर हमज़ा' के लखनवी अनुवाद से यदि जादूगरी और चालाकी का भाग निकाल लिया जाय तो लखनऊ की सारी सभ्यता सामने आ जायगी। इसी प्रकार 'तिलिस्मे होशरुबा' और 'बोस्ताने ख़याल' में लखनऊ के मेलों-ठेलों का बड़ा अच्छा नक़्शा खींचा गया है। 'अल्फ़ लैलः' में अरब सभ्यता और इस्लामी शानो शौक़त का जो सच्चा और सादा वर्णन है वह और कहीं नहीं मिलता। इन्शा की 'रानी केतकी की कहानी' और 'सिंहासन बत्तीसी', 'बैताल पचीसी', 'माधवानल कामकन्दला' आदि में आज से लगभग हज़ार वर्ष पूर्व के भारत का वातावरण मिलता है। राजा, देवता, इन्द्र, पाताल, यक्षिणी, ब्राह्मण, दान, योगी, हवन आदि नामों और शब्दों से हिन्दू रंग का पता चलता है। इसी प्रकार नगरों और आदमियों के नाम भी विशेष प्रकार के होते हैं। 'आराइशे-महफ़िल' में यमन, 'चहार दर्वेश' में क़ुस्तुन्तुनिया, 'गुल-बकावली' में शरक़िस्तान (पूरब), 'फ़सानए-अजायब' में ख़ुतन, 'गुल-सनोबर' में तुर्किस्तान, 'बोस्ताने-ख़याल' में मिस्र के नाम मिलते हैं। इस्लामी नामों के इस प्रयोग का कारण उर्दू पर फ़ारसी साहित्य और भाषा का प्रभाव है।

इन कहानियों का वातावरण जीते जागते संसार से बहुत भिन्न है। इसमें एक प्रकार का रोमानी रंग मिलता है। ख़ुतन से हमें भौगोलिक ख़ुतन

और चीन से निगारख़ानए चीन का ध्यान आ जाता है। हमारी कामनाओं के ये नगर कल्पना के किसी संसार में बसते हैं। आदमियों के नाम में भी यही स्वप्निल और रोमानी छाया मिलती है। ताजुल्मुलूक, बकावली, आज़ादबख़्त, बेहज़ाद, नोमान, जाने आलम, ईरज, नूरज, बदीउज़्ज़मा हमें रंगीन और मधुर प्रतीत होते हैं। इन नामों से एक विचित्र वातावरण पैदा करने में कथाकार को सहायता मिलती है।

भाषा और शैली की दृष्टि से हमें दो रंग मिलते हैं। एक अत्यन्त सादा और सरल जिसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण 'चहार दर्वेश' है; और दूसरा बहुत रंगीन और कठिन जो 'फ़सानए अजायब' में नज़र आता है। 'चहार दर्वेश' के ढंग पर 'मज़हबे इश्क़', 'आराइशे महफ़िल', 'तोता कहानी', 'अख़्लाक़े हिन्दी', 'रानी केतकी की कहानी', 'अमीरे हमज़ा', 'बोस्ताने हिकमत' आदि लिखे गए हैं। 'गुल सनोबर', 'शबिस्ताने सुरूर' 'शगूफ़ए मुहब्बत', 'सरोशे सुख़न' और 'तिलिस्मे हैरत' में 'फ़सानए अजायब' की शैली को अपनाया गया है।

जहाँ तक वर्णन शैली का सम्बन्ध है उसकी बहुत सुन्दर मिसालें हमें कथाओं में मिलती हैं। जश्न, बज़्म, सवारी, बारात, नृत्य, संगीत, मेहमाँनवाज़ी और आखेट के वर्णन दास्तानों के प्रिय विषय हैं। इनके अतिरिक्त प्राकृतिक सौंदर्य, वन, उपवन, रेगिस्तान, हरियाली के कवित्वमय वर्णन भी ख़ूब मिलते हैं। दृश्यों के साथ-साथ भावनाओं का भी चित्रण किया गया है। किन्तु यह चित्रण बहुत कलात्मक नहीं है। इसमें बनावट अधिक है। इस चित्रण में गहराई नहीं है; विस्तार है। शब्दों में टकराव है, महावरों का प्रयोग है। किन्तु चित्रण सफल एवं रोचक नहीं कहा जा सकता। दास्तानगो विस्तार को पसन्द करता है और उसकी इस वृत्ति का प्रभाव कथानक, चित्रण और वर्णन सभी पर पड़ता है।

पिछले पृष्ठों में उर्दू कथा साहित्य के लगभग प्रत्येक मुख्य तत्व पर प्रकाश डाला गया है। अब हमें यह देखना है कि ये विशेष प्रकार की कथाएँ एक विशेष युग में क्यों लिखी गईं? इनकी उन्नति और पतन के

कारण क्या हैं ? इस विषय में हम केवल उन दास्तानों की चर्चा कर रहे हैं जो उर्दू भाषा और साहित्य की विभिन्न विशेषताओं की प्रतीक हैं। उर्दू के प्रसिद्ध क़िस्से १६ वीं शताब्दी में लिखे गए। उनके प्रकाशन का कारण निम्नलिखित है।

'अमीरे हमज़ा' (अश्क), 'हातिम ताई', 'चहार दर्वेश', 'गुल बकावली' —फ़ोर्ट विलियम कालेज के लिए।

'फ़सानए अजायब', 'शगूफ़ए मुहब्बत' —दोस्तों की फ़रमाइश पर।

'सरोशे सुख़न', 'तिलिस्मे हैरत' —'फ़सानए अजायब' का जवाब और फिर जवाब का जवाब।

'गुल सनोबर', 'अल्फ़ लैलः' के अधिकतर अनुवाद—अनुवादक की अपनी इच्छा पर।

'अमीरे हमज़ा', 'बोस्ताने ख़याल' (लखनऊ), 'अल्फ़ लैलए सर-शार'—नवल किशोर प्रेस के लिए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'फ़सानए अजायब' से पहले सभी प्रसिद्ध कथाएँ फ़ोर्ट विलियम कालेज के लिए अनूदित की गईं। ईस्ट इन्डिया कम्पनी के कर्मचारी अंग्रेजों को व्यापारिक आवश्यकताओं के हेतु उर्दू सीखना ज़रूरी था। फिर वे भारत के भविष्य को अपनी दूरदर्शी आँखों से देख रहे थे और राजनीतिक आवश्यकताओं ने भी उन्हें इस ओर झुकने पर मजबूर कर दिया था। उत्तरी भारत की उर्दू नस्र (गद्य) में फ़ोर्ट विलियम कालेज की स्थापना से पूर्व सन्नाटा था। कालेज वालों को नई रचनाओं के निर्माण की बजाय दूसरी भाषाओं से अनुवाद कराना अधिक आसान प्रतीत हुआ। अंग्रेजों को हिन्दुस्तानी भाषा सीखनी थी, साहित्य की ओर उनकी कोई रुचि नहीं थी। इसलिये उन्हें सबसे अधिक प्रभाव-शाली ढंग कथाओं का जान पड़ा क्योंकि इसी क्षेत्र में भाषा की रवानी दिखाने का अवसर अधिक से अधिक मात्रा में प्राप्त होता है। कालेज में ये कथाएँ पसन्द की गईं और इस प्रकार कालेज से बाहर भी लोग इनमें दिलचस्पी लेने लगे।

रामपूर के दरबार में दास्तानगो हमेशा रहे हैं। ये केवल दास्तानें सुनाते ही नहीं थे, लिखते भी थे। शाही पुस्तकालय रामपुर में 'अमीर हमज़ा' और 'बोस्ताने ख़याल' के सिलसिले की कई किताबें मौजूद हैं।

नवल किशोर प्रेस से बहुत क़िस्से छपे जिनमें से कुछ अनुवाद कराये गए थे और कुछ स्वयं नवल किशोर जी ने लिखवाये थे। उनमें 'अमीरे हमज़ा' या 'बोस्ताने ख़याल' मुख्य हैं। लोगों ने इन क़िस्सों को पसन्द किया और इस प्रकार कथाओं का प्रकाशन भी धीरे-धीरे बढ़ता गया। सबसे अधिक लोकप्रियता इसे लखनऊ में प्राप्त हुई। सरशार ने 'तिलिस्मे होशरुबा' की सातवीं जिल्द की भूमिका में लिखा है—"लखनऊ से बढ़ कर दास्तानगोई का चर्चा और कहीं कम होगा। बीस पचीस यारानेसादिक़ और दोस्तानें-मवाफ़िक़ शब के वक़्त कि पर्दादारे आशिक़ाँ हैं एक मक़ाम पर जमा हुए; कोई गन्ना छील रहा है, कोई पाँडे पर चाकू तेज़ कर रहा है। जावजा प्यालियों में अफ़्यून घुल रही है, हक़ीक़त तो यह है कि अफ़्यून का घोलना और गन्ने का छीलना भी लखनऊ वालों ही का हिस्सा है। कहीं चाय तैयार हो रही है और दास्तानगो साहब बलहने दाऊदी फ़रमा रहे हैं.....एक-एक फ़िक़रे पर सुबहानअल्लाह और वाह वा की तारीफ़ होती जाती है और दास्तानगो साहब का दिमाग़ अर्शे वरीं से गुज़र कर लामकाँ की ख़बर लाता है।"

लखनऊ में इस कला की बड़ी चर्चा थी। मिर्ज़ा तूर और उनके बाद मुंशी फ़िदाअली के चेले मुंशी मुहम्मद हुसैन 'जाह' ने होशरुबा की चार जिल्दें लिखी थीं जिन्हें मुंशी अहमद हुसैन 'क़मर' ने अन्त तक पहुँचाया। ख़्वाजा अब्दुर्रऊफ़ 'इशरत' ने शेख़ तसद्दुक़ हुसैन का भी वर्णन किया है जो बिलकुल अनपढ़ थे और कातिबों से लिखवाते थे।

दिल्ली में मीर अहमद अली शाही दास्तानगो थे। सन् ५७ के ग़दर के बाद मीर क़ाज़िम अली और उनके भान्जे मीर बाक़र अली देहलवी ने इस क्षेत्र में मुख्य स्थान प्राप्त किया।

रामपुर में मीर अहमद अली पुराने दास्तानगो थे। इनके दो चेले

बहुत प्रसिद्ध हुए। एक सैयद असग़र अली और दूसरे अम्बा प्रसाद 'रसा' लखनवी जिन्होंने वृद्धावस्था में इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। उनके लड़के मुहम्मद रज़ा 'रज़' ने अनेक कथाएँ लिखी हैं। यह उर्दू के प्रसिद्ध कवि ज़ामिन अली 'जलाल' के पिता थे। इन्होंने भी एक कथा लिखी है। इनके अतिरिक्त रामपुर के दास्तान-गोओं में मेहदी अली खाँ 'ज़की' मुरादाबादी, हैदर मिर्ज़ा 'तसव्वुर', मिर्ज़ा मुर्तज़ा हुसैन 'वसाल' और मिर्ज़ा अलीमुद्दीन 'हया' ने इस क्षेत्र में बड़ा नाम पाया है। स्वयं नवाब कल्ब अली खाँ ने दो तीन कथाएँ लिखी थीं।

१७५७ ई० में भारत को प्लासी के युद्ध में पराजित होने से बड़ा धक्का लगा। इसके बाद सौ वर्ष तक सारे देश में सामाजिक और राजनैतिक पतन के चिह्न दिखाई देते रहे। हिन्दुस्तान की सारी रियासतें दम तोड़ रही थीं। राजनैतिक पतन के कारण लोगों के दिल डूब गये थे। राष्ट्रीय भावनाएँ मुर्दा हो गई थीं। राज्य की बागडोर अंग्रेज़ों के हाथ में चली गई थी। राजा महाराजा सभी हाथ पर हाथ धरे बैठे थे। लखनऊ के राज्यकोष में अभी घोर अंधेरा नहीं हुआ था। वहाँ नसीरुद्दीन हैदर और नवाब वाजिद अली शाह पैदा हुए। देहली ने मुहम्मदशाह रंगीले को जन्म दिया।

१८ वीं शताब्दी में लोगों की रुचि केवल शायरी की ओर थी। गद्य को साहित्य संसार में नीचे स्तर का समझा जाता था। 'ग़ालिब' जैसा महान् कवि भी लगभग १८५० ई० तक पत्र व्यवहार फ़ारसी भाषा में करता रहा। गद्य की ओर रुचि उस समय हुई जब अंग्रेज़ों ने राजनैतिक और सामाजिक आवश्यकताओं के हेतु कलकत्ता में फ़ोर्ट विलियम कालेज की स्थापना की। दास्तानों का लिखना सबसे सरल था। इसलिये दास्तानें लिखी गईं। इसका एक और कारण भी था। लेखकों को उच्चवर्ग से दाद लेनी थी; और उस समय का उच्चवर्ग दर्शन और साहित्य से लगभग अपरिचित ही था। पतंग बाज़ी, बटेर बाज़ी, कबूतर बाज़ी, और ऐयाशी जाहिल और अनपढ़ नवाबों और ख़ानदानी रईसों के मनोरंजन का साधन थी।

फिर भला लेखक इस ओर क्यों न आकर्षित होते ? किसी का कथन है कि, 'कहानियाँ वहीं ज़्यादा तरक़्क़ी करती हैं जहाँ लोग ज़्यादा काहिल होते हैं।' यूनान में क़िस्से उस समय लिखे गये जब वह रोम के अधीन हो गया था। रोम में यह कला उस समय प्रसिद्ध हुई जब वहाँ तानाशाही राज्य स्थापित हो गया। चैम्बर्स इन्साइक्लोपीडिया में लिखा है कि, 'स्पेन में गोरों से युद्ध होने पर लोग बेकार हो गये थे, उस समय वहाँ रोमानी क़िस्से लिखे गये।'

इस समय की दिल्ली और लखनऊ की भी यही दशा थी। राजनैतिक शक्ति के छिन जाने से समाज निर्बल हो गया था, किन्तु अभी राज्य की लिप्सा बाक़ी थी। लोग बीते हुए सपनों से मन बहला रहे थे और दास्तानें इसका श्रेष्ठ साधन थीं।

एक और भावना ने इन कथाओं को उन्नति दी। कहानियों की दुनिया स्वप्नों की दुनिया है। जीवन की कठोर सच्चाइयों से घबराकर मनुष्य सपनों और कल्पनाओं के देश में शरण लेता है। इस काल्पनिक संसार में कोई भय नहीं। जो कठिनाइयाँ हैं उन पर नायक सफलता प्राप्त कर लेता है। संयोग और मिलन के भावुक दृश्य, सौन्दर्य, गौरव, वीरता, अभिमान सभी कुछ इस संसार में मिलते हैं।

अट्ठारवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में लोगों के मस्तिष्क पर राजनैतिक शोक छाया हुआ था। कुछ लोगों का अनुमान है कि इन कहानियों में भूत-प्रेतों के वर्णन का एक कारण यह भी है। किन्तु यह बिल्कुल ठीक नहीं मालूम होता क्योंकि भारत की परम्परा में भूत-प्रेत, टोने-टोटके का प्रमुख स्थान बहुत पहिले ही से नज़र आता है।

नज़ीर अहमद के पहले उपन्यास के प्रकाशन से दास्तान नवीसी का दौर समाप्त होता है। इसके पतन के अनेक कारण हैं।

भारतवर्ष में ग़दर के बाद वैज्ञानिक युग का आगमन होता है। कथा साहित्य को इस नई रुचि से बड़ा धक्का पहुँचा। धीरे-धीरे अंग्रेज़ी राज्य की उन्नति के साथ-साथ भारतवासी पश्चिमी कला और साहित्य से परि-

चित होते गये। उर्दू के प्रारम्भिक उपन्यासकार नज़ीर अहमद, सरशार, और शरर, अंग्रेज़ी भाषा और साहित्य का ज्ञान रखते थे। उन्होंने पश्चिमी देशों की सभ्यता और जीवन पर नज़र डाली और जब अपने जीवन की उससे तुलना की तो उन्हें दुख हुआ। भारतवर्ष उस समय झूठे विश्वासों में फँसा हुआ था। हमारे लेखकों ने इस चक्र से उसे बाहर निकालने का आयोजन किया। इस प्रकार साहित्य धीरे-धीरे वास्तविकता से निकट आता गया।

मुसलमानों की दशा यूँ भी ख़राब थी। ग़दर के बाद उन्हें और कठोरता से दबाया गया। उनके दिल टूट चुके थे। काल्पनिक दास्तानें कब तक उन्हें बहला सकती थीं? उनके सपने बिखर चुके थे। उन्होंने उस समय अपनी ओर दृष्टि डाली और अपने दुखों के विषय में सोचना प्रारम्भ किया। नज़ीर अहमद और रतननाथ सरशार ने जीवन के बदलते हुए रंग को देखकर नये विचार और नई शैली साहित्य को दी।

सर सैयद अपनी शताब्दी के महान् व्यक्ति थे। उन्होंने एक सम्प्रदाय सा क़ायम कर लिया था जिसमें शिब्ली, हाली, नज़ीर अहमद, मुहसिनुल्मुल्क और चिराग़ अली जैसे महान् साहित्यज्ञ थे। धर्म में घोर विश्वास की जड़ें कमज़ोर पड़ती जा रही थीं। इन महान् व्यक्तियों ने सभ्यता, दर्शन, इतिहास और विभिन्न कलाओं से साहित्य को मालामाल किया। सर सैयद और उनके साथियों ने 'तहज़ीबुल अख़लाक़' में निबन्ध लिखे और इस प्रकार अपने अथक प्रयत्नों से देश में जागृति की एक नई लहर दौड़ा दी।

१९ वीं शताब्दी के अन्त तक राजनीति की ओर लोगों की रुचि बढ़ती जा रही थी। देश के कल्याण और स्वतन्त्रता को हमारे पूर्वजों ने अपना ध्येय बना लिया था। वह लोग जिन्हें राजनीति से कोई लगाव नहीं था अधिकांश अनपढ़ थे और उन्हें भी अब वैज्ञानिक आविष्कारों की ख्याति के कारण कथाओं से अधिक जासूसी नाविलों में आनन्द मिलने लगा था।

दास्तानों के पतन में केवल इन्हीं का दोष नहीं था; बल्कि समय के बदलते हुए रंग का भी हाथ था। सच तो यह है कि कथाओं ने साहित्य को बहुत कुछ दिया है। साहित्य में कथाओं से पहले उत्तरी भारत में उर्दू गद्य लगभग था ही नहीं। दास्तानों ने इस कमी को पूरा किया। भाषा और शैली की उन्नति के लिए भी दास्तानों का बड़ा महत्व है। यदि साहित्य-संसार में इनका आगमन न होता तो नहीं कहा जा सकता कि कब तक फ़ज़ली की 'दह मजलिस', और तहसीन की 'नौतर्ज़े मुरस्सा' की भाषा और शैली में हमारा साहित्य फँसा रहता।

दास्तानों से एक बहुत बड़ा लाभ यह हुआ कि इनसे हमें उस समय के जीवन और सभ्यता के विषय में अच्छी जानकारी हो जाती है। देखने में तो इन दास्तानों में ईरान और तूरान के वासियों का वर्णन है किन्तु वास्तव में सारे चित्र दिल्ली और लखनऊ के होते हैं।

कथानक और शैली की दृष्टि से जो दिलचस्पी दास्तानों में है वह नाविलों में नहीं। हमारे दास्तान-नवीस भाषा के निपुण पंडित होते थे। अब भाषा से अधिक ध्येय पर ज़ोर दिया जाता है। यही कारण है कि भाषा और शैली के ज़ोर से दास्तानों में कहानी की दिलचस्पियाँ पैदा हो गई हैं। १६०० ई० से पहले गद्य की विशिष्ट शैली हमें कथाओं के रूप में नज़र आती है। इनके महत्व और महानता को प्रकट करने के लिए केवल 'चहार दर्वेश' को सामने रख देना ही काफ़ी होगा।

'क़िस्सा चहार दर्वेश' दण्डिन् कृत 'दशकुमार' चरित' की परम्परा की रचना है, यह हम कह चुके हैं। जब तक पूरा शोध न हो ले और बीच की कड़ियों को जोड़ना सम्भव न हो जाय तब तक इन दोनों में सीधा सम्बन्ध स्थापित करना अनुचित होगा। परन्तु दोनों के गढ़न और उद्देश्यों में इतनी समानता है कि 'क़िस्सा चहार दर्वेश' को 'दशकुमार चरित' की परम्परा में स्वीकार कर लेना समीचीन लगता है। 'दशकुमार चरित' में दस राजकुमारों की आपबीती का रोचक वर्णन है। ये राज-कुमार थे—राजवाहन, सोमदत्त, पुष्पोद्भव, अपहार वर्मा, उपहार वर्मा,

प्रमति, अर्थपाल, मित्रगुप्त, मन्त्रगुप्त और विश्रुत। यह दसो राजकुमार किन्हीं परिस्थितियोंवश विभिन्न क्षेत्रों में गए और वहाँ पर तरह-तरह के अनुभव प्राप्त किये। यद्यपि ये सभी राजकुमार सुशिक्षित, स्वस्थ और सुयोग्य थे परन्तु इनको जीवन के अनुभवों का अभाव था। उनको ऐसा अनुभव प्राप्त करने का अवसर भी मिल गया। अपने इन अनुभवों का विस्तृत वर्णन इन राजकुमारों ने किया और इन वर्णनों के आधार पर ही 'दशकुमार चरित' की रचना हुई। इनमें सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के समस्त सुन्दर और असुन्दर, शिव और अशिव तत्वों पर पूरा प्रकाश पड़ा। वर्णन में राजकुमारों ने किसी प्रकार का संकोच नहीं किया। फलतः सामाजिक जीवन के सभी तत्व अपने चटक रंग में उभर कर सामने आ गये।

कवि दण्डिन् ने अपनी कल्पना शक्ति को ऊंचे से ऊँचा उड़ान भरने के लिए पूरा अवसर दिया। फलतः इन कथाओं में आये लौकिक तत्व तो अच्छी तरह उभरे ही, अलौकिक तत्व भी साधारण स्तर पर आकर सहज बन गए और वे इन कहानियों के घटना-विधान के अनिवार्य अंग जैसे हो गये। इन कहानियों की सोद्देश्यता भी अत्यन्त स्पष्ट और मुखर होकर सामने आई।

'क़िस्सा चहार दर्वेश' में चार दर्वेशों के अनुभवों की अत्यन्त रोचक कहानी है। पहला दर्वेश मुल्क यमन के मशहूर सौदागर ख़्वाजा अहमद का बेटा था। चौदह वर्ष तक अपने बाप के घर में बहुत लाड़-प्यार से पला। पढ़ना लिखना, सिपहगरी और सौदागरी का काम सीखा। एका-एक साल भर के ही अन्दर माँ और बाप दोनों इन्तक़ाल कर गए। अपने को बरबाद करने के सारे रास्ते उसके सामने खुल गये। नतीजा जो होना था वही हुआ। खाने के लाले पड़ गए। लाचार होकर अपनी बहन की सीख स्वीकार कर सौदागरों के क़ाफ़िलों के साथ दमिश्क चला गया। उसके बाद उसकी ज़िन्दगी के ख़ूबसूरत और बदसूरत तर्जुबों का सिलसिला शुरू हुआ।

दूसरा दर्वेश मुल्क इसफ़हान का राजकुमार था। बचपन में उसे कामिल तालीम दी गई और चौदह बरस के सिन में वह सभी इल्मों में माहिर हो गया और बादशाहों के सीखने लायक जो कुछ था सब कुछ उसने हासिल किया। उसने एक बूढ़े से 'क़िस्सा हातिम ताई' सुना और उससे बहुत प्रभावित हुआ। उसने भी हातिम ताई की तरह दानशीलता और उदारता का परिचय देना शुरू किया। इसके बाद उसके अनुभवों और कार्यों का वह सिलसिला शुरू हुआ जिसका बयान उसने दूसरे दर्वेशों के सामने किया।

जब दूसरा दर्वेश अपनी कहानी कह चुका तो बादशाह आज़ादबख़्त जो कि रूम का बादशाह था और जिसकी राजधानी कुस्तुनतुनिया थी, और जो आड़ में छिप कर इन दर्वेशों की रामकहानी सुन रहा था, अपने महल को वापस आया और उन चारों दर्वेशों को अपने महल में बुलवाया। बादशाह अज़ादबख़्त ने पहले उन्हें ख़ुद अपनी कहानी सुनाई। आज़ादबख़्त की कहनी बहुत ही पुरलुत्फ़ और साहसिक कार्यों से पूर्ण थी।

अन्त में बादशाह आज़ादबख़्त ने कहा—"ऐ फ़क़ीरों मैंने इसलिए यह क़िस्सा तुम्हारे सामने कहा कि कल रात दो फ़क़ीरों का हाल मैंने सुना था। अब तुम दोनों जो बाक़ी रहे हो यह समझो कि हम उसी मकान में बैठे हैं और मुझे अपना नौकर और इस घर को अपना तकिया जानो। बेखटके अपनी सैर का हाल कहो और कुछ दिन मेरे पास रहो।"

इसके बाद तीसरा दर्वेश जोकि अज़म का राजकुमार था अपनी कहानी सुनाने लगा। 'शाहे इश्क़' ने उसके साथ जो सलूक किया था उसने उसका तफ़सीलवार बयान किया।

चौथे और अन्तिम दर्वेश ने रो-रोकर अपनी सैर का हाल बताया। वह चीन के बादशाह का बेटा था। कम उम्र का था कि उसका बाप मर गया। मरते समय बाप ने उसका हाथ उसके चचा के हाथ में दे दिया और सहेजा कि जब तक राजकुमार बालिग़ न हो चचा ही बादशाहत का इन्तज़ाम करे। राजकुमार के बालिग़ होने पर उसका राज उसे वापस कर

दे। मगर चचा की नीयत बिगड़ गई और यहीं से राजकुमार की बद-क़िस्मती और तुर्श व तल्ख़ तजरबों की कहानी आरम्भ हुई।

अन्त में ये चारों दर्वेश और बादशाह आज़ादबख़्त जीवन के समस्त अनुभवों को प्राप्त करने के बाद अपने उद्देश्य में सफल हुए। 'क़िस्सा चहार दर्वेश' ख़त्म हुआ। जैसे उनका राज-पाट लौटा वैसे सबका राज-पाट लौटे।

'क़िस्सा चहार दर्वेश' कितना मोहक और चित्ताकर्षक है इसका अनुमान तो इसे आद्योपान्त पढ़ने पर ही लगेगा। इसकी भाषा अत्यन्त सहज, सरल और मुहाविरेदार तो है ही, कथा कहने की शैली में एक ऐसी मोहकता और जादूगरी है कि एक बार शुरू करने पर कोई भी सहृदय पाठक बीच में कहानी को छोड़ नहीं सकता। 'क़िस्सा चहार दर्वेश', प्रेम की कहानी है, असफलताओं, विघ्नों, निराशाओं, दुर्घटनाओं के साथ ही आशाओं, सफलताओं और दैवी सहायता के बल पर कामनाओं के पूर्ण होने की चमत्कारपूर्ण कथा है। रोमानियत, रंगीनी, मोहकता के वातावरण में चित्रित इन कहानियों का प्रभाव मानस पटल पर अंकित हुये बिना नहीं रहता। मनुष्य स्वप्न देखता है और सपने चाहे सत्य हों या न हों उनसे फ़राग़दिली हासिल होती है, हृदय उत्कर्ष को प्राप्त होता है, कल्पनायें निखरती हैं, कामनाओं के पंख निकलते हैं, आशायें बलवती होती हैं और मनुष्य का जीवन किसी न किसी हद तक सुखमय होता है। 'क़िस्सा चहार दर्वेश' ऐसी ही एक अज़ीमुश्शान साहित्यिक रचना है। जिसे भाषांतरित करके डा० ऐजाज़ हुसैन साहब ने कथा प्रेमियों को उपकृत किया है।

यह रचना इस रूप में हमारे पाठकों के सामने न आ पाती यदि मुझे प्रत्येक अवसर पर स्वजन श्री शमीम हनफ़ी का सहयोग प्राप्त न होता। इसके लिए उनको धन्यवाद देता हूँ।

—श्रीकृष्ण दास

एक परिचय

मीर अम्मन जिन्होंने 'क़िस्सा चहार दर्वेश' को उर्दू के इस रूप में प्रस्तुत किया उनकी कहानी उन्हीं की ज़बानी सुनिए। लिखते हैं—"मेरे बुज़ुर्ग हुमायूँ बादशाह के ज़माने से हर बादशाह की रेकाब में पुश्त[1] ब पुश्त जाँफ़ेशानी[2] बजा लाते थे। वह भी परवरिश की नज़र से क़द्रदानी जितनी चाहिए फ़रमाते रहे। जागीर व मनसब और ख़िदमात की इनायात से सरफ़राज़[3] कर कर मालामाल और निहाल कर दिया और ख़ानाज़ाद[4] मौरूसी और मनसबदार क़दीमी[5] ज़बाने मुबारक से फ़रमाया। चुनाँचे यह लक़ब[6] बादशाही दफ़्तर में दाख़िल हुआ। जब ऐसे घर की यह नौबत पहुँची जो ज़ाहिर है—'आयां रा चे बयाँ?'[7] तब सूरजमल जाट ने जागीर ज़ब्त कर ली। अहमदशाह दुर्रानी ने घर बार ताराज किया। ऐसी-ऐसी तबाही खाकर वैसे शहर से (कि वतन और जन्म भूमि मेरा है और अनोल लाल वहीं गड़ा है) जिला वतन हुआ और ऐसा जहाज़ (कि जिसका नाख़ुदा बादशाह था) ग़ारत हुआ। मैं बेकसी के समुन्दर में गोते खाने लगा। डूबते को तिनके का आसरा बहुत है। कितने बरस अज़ीमाबाद (पटना) में दम लिया। कुछ बनी, कुछ बिगड़ी। आख़िर वहाँ से भी पाँव उखड़े। रोज़गार ने माफ़क़त[8] न की। अयाल

---

(१) पीढ़ी (२) जान देकर (३) ऊँचा (४) घर के पाले हुए को (५) प्राचीन सामंत (६) पदवी (७) जो कुछ ज़ाहिर है उसका क्या बयान (८) बर्बाद (९) साथ न दिया।

व अतफ़ाल[1] को छोड़कर तने तनहा[2] कश्ती पर सवार हो कलकत्ते आबदाने के ज़ोर से आ पहुँचा। चन्दे[3] बेकारी गुज़री। इत्तेफ़ाक़न नवाब दिलावर जंग ने बुलाकर अपने छोटे भाई मीर मुहम्मद काज़िम खाँ की अतालीक़ी[4] पर मुक़र्रर किया। क़रीब दो साल के वहाँ रहना हुआ। लेकिन अपना निबाह न देखा। तब मुंशी मीर बहादुर अली के वसीले से जान गिलक्राइस्ट साहब बहादुर तक पहुँचा। तक़दीर की खूबी से ऐसे जवाँमर्द का दामन हाथ लगा है कि चाहिए कि दिन कुछ भले आवें। नहीं तो यही क्या कम है कि एक टुकड़ा खाकर पाँव फैलाकर सो रहता हूँ और घर में दस आदमी छोटे बड़े परवरिश पाकर हुआ उस क़द्रदां की करते हैं। खुदा क़ुबूल करे!"

इस किताब की रचना के बारे में मीर अम्मन ने यह लिखा है कि, "जान गिलक्राइस्ट साहब ने कृपापूर्वक यह हुक्म दिया कि इस क़िस्से को ठेठ हिन्दुस्तानी ज़बान में, जो उर्दू कि लोग हिन्दू-मुसलमान, औरत-मर्द, लड़के-बाले, ख़ासोआम आपस में बोलते-चालते हैं, तरजुमा करो। माफ़िक़ हुक्म हुज़ूर के मैंने भी इसी महावरे से लिखना शुरू किया, जैसे कोई बातें करता है!"

प्रोफ़ेसर महमूद शीरानी ने लिखा है कि यह 'क़िस्सा चहार दर्वेश' दर असल मुहम्मदशाह बादशाह के ज़माने में एक शख्स मुहम्मद अली ने, जिनको लोग मासूम अली खां कहा करते थे, लिखा था। लेकिन हाल ही में एक ऐसी किताब भी मिली है जो फ़ारसी में है। उसमें भी यही क़िस्सा मिलता है। यह मासूम अली खां की किताब से पांच साल पहले की लिखी हुई है। मासूम अली खां ने अपनी किताब सन् १७३३ ई० में लिखी थी और दूसरे शख्स ने १७७५ ई० में लिखी। महमूद शीरानी के इस बयान में हमको शक इसलिए है कि मीर अम्मन खुद मुहम्मदशाह के ज़माने में

---

(१) लड़के बाले (२) अकेले (३) कुछ दिन (४) शिक्षक।

पैदा हुए थे, । अगर यह किताब उनकी लिखी हुई होती तो ज़रूर है कि मीर अम्मन इस मशहूर किताब के लेखक का नाम जानते होते। और, फिर किसी एक किताब का मिलना, जो इनसे पाँच वर्ष पहले की है इस बात का सबूत है कि मालूम अली खाँ इस किताब के पहले लेखक नहीं हैं । मीर अम्मन ने इस कहानी का लिखने वाला अमीर खुसरो को बताया है । यह बात भी सही नहीं मालूम होती । इसका कारण हम आगे बयान करेंगे । अभी तक यह यक़ीन के साथ नहीं कहा जा सकता कि इस किताब का लिखने वाला कौन है । अनुसन्धान बराबर जारी है। लेकिन इस समय तक कोई विश्वसनीय सुबूत नहीं है । हो सकता है कि चारों कहानियों का लिखने वाला कोई एक आदमी न हो बल्कि भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों ने लिखा हो। इसलिए कि इस किताब की चारो कहानियां अलिफ़ लैला की कुछ कहानियों से मिलती जुलती हैं। उसी मशहूर किताब से ये क़िस्से कुछ बदल बदला कर इस रूप में प्रस्तुत कर दिये गये हैं। लेकिन यह ध्रुव सत्य है कि मीर अम्मन ने अता हुसेन खां की उर्दू किताब सामने रखकर इस क़िस्से को दोबारा लिखा। मीर अम्मन के शब्द ये हैं—"तालीफ़ किया हुआ[1] मीर अम्मन दिल्ली वाले का, माख़ज़[2] उसका नौतर्ज़ मुरस्सा' कि वह तरजुमा किया हुआ अता हुसेन खां का है, फ़ारसी क़िस्सा 'चहार दर्वेश' से।"

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि इस किताब का असली नाम 'चहार दर्वेश' था। उर्दू वालों ने अनुवाद करने में नाम बदल दिया। लेकिन हमारे नज़दीक असली नाम इन नामों से बेहतर है इसलिए कि नाम से पता चल जाता है कि पुस्तक का विषय क्या है। 'चहार दर्वेश' के सम्बन्ध में अजीब बातें मशहूर थीं। उनमें से एक ख्याल

---

(१) संग्रह किया हुआ (२) स्रोत

यह हो गया था कि यह अमीर खुसरो की लिखी हुई है जो उन्होंने अपने पीर (धर्म गुरु) निज़ामुद्दीन औलिया की बीमारी की हालत में लिखी थी। क़िस्सा सुनने के बाद निज़ामुद्दीन औलिया अच्छे हो गये। यह ख्याल विश्वास की हद तक पहुँच गया था। इसीलिये मीर अम्मन ने खुद भी इसी को सच मान कर अपनी राय दी है। उन्होंने अपना ख्याल इस तरह बयान किया है। "यह क़िस्सा 'चार दर्वेश' का इब्तिदा- (आरम्भ) में अमीर खुसरो ने इस तक़रीब (मौक़ा) से कहा कि हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, जो उनके पीर थे और दरगाह उनकी दिल्ली में क़िले से तीन कोस लाल दरवाज़े के बाहर, मटिया दरवाज़े से आगे लाल बंगले के पास है उनकी तबीयत मांदी हुई। तब मुर्शिद (धर्म गुरु) के दिल के बहलाने के वास्ते अमीर खुसरो यह क़िस्सा हमेशा कहते और तीमारदारी (परिचर्या) में हाज़िर रहते। अल्लाह ने चन्द (कुछ) दिनों में शफ़ा (स्वास्थ्य लाभ) दी। तब उन्होंने ग़ुस्ले सेहत (स्वास्थ्य लाभ करने के बाद नहाने का उत्सव) के दिन यह दुआ दी कि जो कोई इस क़िस्से को सुनेगा खुदा के फ़ज़ल (कृपा) से तन्दुरुस्त रहेगा।" लेकिन बाद की खोज से यह मालूम हुआ कि यह क़िस्सा अमीर खुसरो का लिखा हुआ नहीं है, इसलिए कि उनकी किताबों में कहीं इसका ज़िक्र नहीं है! और फिर सब से बड़ी बात यह है कि इस किताब में ऐसे कवियों के शेर बीच-बीच में दिये गये हैं जो अमीर खुसरो के बहुत बाद के हैं। इसी तरह की कुछ और भी ऐसी चीज़ें हैं जो कि अमीर खुसरो के ज़माने में न थीं। उदाहरण स्वरूप अशरफ़ी का ज़िक्र। यह सिक्का मुग़लों के ज़माने में जारी हुआ और अमीर खुसरो लोदी बादशाहों के ज़माने में थे। इसी तरह एक क़िस्से में दूरबीन का ज़िक्र आता है। अमीर खुसरो के ज़माने तक दूरबीन यूरोप में भी अस्तित्व में नहीं आयी थी। ग़रज़ ऐसे बहुत से प्रमाण हैं जिनसे मालूम होता है कि ये अमीर खुसरो की कही हुई कहानियाँ नहीं हैं। जैसा हम ऊपर निवेदन कर चुके हैं यह किताब

मुग़ल बादशाह मुहम्मदशाह के ज़माने में लिखी गयी। तो यह भी खुद ब खुद ग़लत साबित हो जाता है कि निज़ामुद्दीन औलिया ने कहानियाँ सुनने के बाद दुआ दी होगी। लेकिन अब भी कुछ लोग इसको मानते हैं और अगले ज़माने में तो सभी इस ख़याल के थे। इसी वजह से इस किताब की लोकप्रियता और बढ़ गयी।

वजह कुछ भी रही हो, इसमें शक नहीं कि यह किताब एक मुद्दत तक बहुत ज्यादा पसन्द की जाती रही। लेकिन सिर्फ़ यही एक वजह इसकी लोकप्रियता की नहीं है, बल्कि उसकी साहित्यिक विशेषताएँ भी उसका महत्व बढ़ाने के लिए सहायक हुईं। इस किताब का मूल्यांकन करते वक्त हमें दो बातों का ख्याल रखना पड़ता है। एक तो यह कि यह मीर अम्मन की लिखी हुई नहीं है, विषय और वर्णन की ज़िम्मेदारी मीर अम्मन की नहीं है। मीर अम्मन का स्थान सिर्फ अनुवादक का है और सबसे पहले हम इसी बात पर ध्यान रख कर मीर अम्मन की देन के बारे में कहना चाहते हैं।

भाषा और शैली के लिहाज़ से जब हम इस किताब का मूल्यांकन करते हैं तो मालूम होता है कि मीर अम्मन का अनुवाद बाज़ हैसियतों से अपना जवाब नहीं रखता। सबसे पहली बात यह है कि उर्दू में इससे पहले इस गद्य शैली का कोई नमूना न था। जो कुछ लिखा गया था उसमें क़ाफ़िया, रदीफ़, उपमा-उत्प्रेक्षा के साथ-साथ रंगीनबयानी छायी हुई थी। लोगों को उस तरह सोचने-समझने में लुत्फ़ आता था। लेकिन उन्नीसवीं सदी के शुरू से ज़माना इस तेज़ी से बदला कि किसी लेखक को अब न इसकी फ़ुर्सत रह गयी थी और न इतना इत्मीनान ही कि वह सोच-सोचकर पुरानी लकीर में रंग भरता! कारबारी ज़िन्दगी का तक़ाज़ा था कि जल्द से जल्द आदमी अपनी बात कह दे, उपमा-उत्प्रेक्षा की भरमार और कठिन शब्दों के उतार-चढ़ाव को कम कर स्वाभाविक शब्दों में पेश कर दे। ज़माने को इसकी ज़रूरत भी थी और साहित्य

की मांग भी यही थी। लेकिन इस शैली में पहल करना सिर्फ़ मीर अम्मन का काम था।

पहले पहल किसी रास्ते पर क़दम उठाना और इस अन्दाज़ से कि आने वाली पीढ़ी के लिए वह चरण-चिह्न मार्गदर्शक दीपक का काम दे अपनी जगह पर खुद एक रचनात्मक काम है। मीर अम्मन ने पथ-प्रदर्शक के कर्तव्य का बड़ी खूबी से निबाह किया। उनकी स्वतंत्रवृत्ति हर सफ़ा पर नज़र आती है। एक अच्छे कलाकार की हैसियत से उन्होंने इसकी फ़िक्र नहीं की कि जिस किताब (नवतर्ज़मुरस्सा) को सामने रखकर उन्होंने अनुवाद किया था, उसके कठिन शब्दों के मानी लिख दें और फ़ुटनोट में फ़ारसी महावरों की व्याख्या कर दें! ऐसा करने से काम सरल हो जाता। मगर न वह इस किताब को नयी ज़िन्दगी दे सकते और न अपनी सूझ-बूझ का कोई निशान छोड़ सकते। उन्होंने दूरन्देशी से काम लिया। विषय और घटनाओं को सामने रखकर उन्होंने अपने तौर पर पूरी किताब को नये अन्दाज़ से सजाने की सफल कोशिश की। इस सिलसिले में पहली विशेषता उनकी लेखन शैली की यह नज़र आती है कि डेढ़ सौ बरस से ज़्यादा गुज़र गये, मगर आज भी उनकी ज़बान पुरानी नहीं मालूम पड़ती।

मीर अम्मन ने स्वाभाविक अभिव्यक्ति की शैली अपनायी। बनावट और तकल्लुफ़ से बहुत कम काम लिया। आमतौर से वही ज़बान लिखी जो दिल्ली में बोली जाती थी। गोया वह भाषा-विज्ञान के इस सिद्धांत को समझ गये थे कि भाषा आमतौर से जनता के बीच फलती-फूलती है। उन्हीं की ज़रूरत और ज़ुबान से वह फैलती है। जनता ही ज़रूरत के शब्द और काम के महावरे बनाती है। वह सोच-विचार के लिए वक्त का इन्तज़ार नहीं करती। मौक़े के लिहाज़ से ज़रूरतों को ज़बान और शब्दों को जीवन देती है। उसका दिमाग़ प्रकृति से ज़्यादा मदद लेता है। उसका व्यावहारिक ज्ञान उसका पथ-प्रदर्शन करता है। वह किसी किताब या विद्वान का मोहताज नहीं। इस तरह जो भाषा बढ़ती है वह

विद्या की आवाज़ हो या न हो, मगर ज़रूरत की पुकार ज़रूर है। इसमें मन्तव्य के पूर्ण होने की विशेषता है। ऐसी भाषा को समय की मदद सुलभ रहती है जिसके साया में वह विकसित होकर लोकप्रिय बन जाती है। मीर अम्मन ने यह किताब लिखते वक्त यही दृष्टिकोण अपनाया। नतीजा यह है कि वह आज भी लोकप्रिय और प्रसिद्ध है। उन्होंने अपने दृष्टिकोण को एक जगह खुद बता दिया है—"जो शख्स सब आफ़तें सहकर दिल्ली का रोड़ा होकर रहा और दस-पाँच पुश्तें उसी शहर में गुज़ारीं उसने दरबारे उमरा, मेले-ठेले, उर्स, छड़ियाँ, सैर-तमाशा, और कूचा-गर्दी उस शहर की मुद्दत तलक की होगी और वहाँ से निक-लने के बाद अपनी ज़बान को लिहाज़ में रक्खा होगा, उसी का बोलना अलबत्ता ठीक है। यह आजिज़ भी हर एक शहर की सैर करता और तमाशा देखता यहाँ[1] तक पहुँचा।" मीर अम्मन के कहने का मतलब यह है कि मेरी उर्दू टकसाली है क्योंकि मैं दिल्ली का रोड़ा बनकर यहाँ रहा हूँ। यहां के मेले-ठेले देखकर लोगों के बोलने-चालने का अन्दाज़ देखा है। ज़ाहिर है कि ऐसे मौक़े पर आम जनता की बातचीत ज़्यादा सुनने में आती होगी। शब्दों की दिलकशी और उनका सौन्दर्य वाक्यों को असरदार बनाता होगा और मीर अम्मन ने इसी को सही ज़बान और लहज़ा समझ कर अपना काम किया होगा।

मीर अम्मन की जनरुचि का सबूत इससे भी मिलता है कि उन्होंने अरबी-फ़ारसी के शब्दों के साथ-साथ अनगिनत ऐसे शब्द इस्तेमाल किये जो उनसे पहले उर्दू में इस तरह न देखे गये थे। उदाहरण स्वरूप 'बजिद' बजाय 'बज़िद' के, 'तक़ैयद' बजाय 'ताक़ीद' के, 'झाड़ा लेना' का प्रयोग 'तलाशी लेने' के अर्थ में। उन्होंने ज़्यादातर यह ख्याल रखा कि जनता इन शब्दों और मुहाविरों को किस तरह बोलती है। उनको इससे बहस न थी कि उच्चारण शब्दकोश के लिहाज़ से

---

(१) फ़ोर्ट विलियम कालेज, कलकत्ता।

सही है कि नहीं। उनकी नज़र सिर्फ़ आवाज़ की खूबसूरती और मतलब की स्पष्टता पर थी। अगर अच्छी आवाज़ के साथ अच्छी तरह मतलब स्पष्ट हो जाता है तो परम्परा और व्याकरण की हदों से बाहर क़दम रखने में उनको संकोच न था। वह कलाकार थे, मौलवी या पंडित न थे। ज़बान के प्रभावशाली होने के गुर से वाक़िफ़ थे। उन्होंने अपने इस सिद्धांत का इशारा किताब के शुरू में ही कर दिया था। साफ़-साफ़ बात तो नहीं की, मगर उनके लिखने के ढङ्ग से मालूम होता है कि उनका रवैया क्या होगा? लिखते हैं—"खुदा ने बाद मुद्दत के जान गिलक्राइस्ट साहब बहादुर सा दाना व नुक्तारस पैदा किया जिन्होंने अपने ज्ञान और उगत (?) से, तलाश व मेहनत से, क़ायदों की किताबें तसनीफ़ कीं।" ज्ञान और उगत (?) शब्दों को इस्तेमाल करके उन्होंने यह इशारा किया कि मेरी ज़बान में अरबी और फ़ारसी के साथ हिन्दी और संस्कृत के शब्द होंगे।

मीर अम्मन ने मीर तक़ी 'मीर' की रचनाओं को देखकर यह अन्दाज़ा किया होगा कि मीर ने मौक़े-मौक़े पर संस्कृत और हिन्दी के सैकड़ों शब्द उर्दू में पेश किये और दुनिया उनकी ज़बान को आदर्श समझती रही। जब कविता में ऐसे शब्द लाए जा सकते हैं और उनको जनता पसन्द भी करती है तो कोई वजह नहीं कि गद्य में यह चीज़ न सफल हो। हमारे इस ख्याल को इस बात से भी सहायता मिलती है कि उन्होंने अपने 'बाग़ोबहार' के अनुवाद में फ़ारसी शेर उद्धृत करने के बजाय हिन्दी के दोहे और कवित्त लिखे हैं। उदाहरण स्वरूप निम्नलिखित दोहा है—

चलती चक्की देखकर दिया 'कबीरा' रोय।
दो पाटन के बीच में साबित बचा न कोय॥

इसी तरह कवित्त का भी एक उदाहरण देखिये :—

नख बिन कटा देखे, सीस भारी जटा देखे,
जोगी कनफटा देखे, छार लाए तन में।

मौनी अनबोल देखे, सेवड़ा सिर छोल देखे,
करत कलोल देखे वनखन्डी वन में।
वीर देखे, सूर देखे, सब गुनी और कूर देखे,
माया के पूर देखे भूल रहे धन में।
आदि अन्त सुखी देखे, जनम ही के दुखी देखे,
पर वे न देखे जिनके लोभ नाहिं मन में।

एक अच्छे कलाकार की तरह मीर अम्मन की भाषा मौक़े के लिहाज़ से बदलती रहती है। पात्र की ज़बान से जो शब्द इस्तेमाल कराते हैं वे उसकी हैसियत के लिहाज़ से होते हैं। अगर दुख का मौक़ा होता है तो लहजे और शब्दों से दुख का सारा नक़शा सामने आ जाता है। सुख और आनन्द की घड़ियों का सविस्तर वर्णन शब्दों और वाक्यों से पूरी तरह कर देते हैं। दृश्य चित्रण के वक्त ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जो समां को दिल में उतार दे। भावनाओं और क्षमता का ख्याल करके भाषा और बातचीत की शैली उसी लिहाज़ से लिखते हैं। हमारे नज़दीक उनकी शैली की सबसे बड़ी विशेषता के सिलसिले में यह सबसे बड़ा और सफल गुर है जो इनको एक अच्छा लेखक बना देता है। उदाहरण के लिए कुछ उद्धरण दिये जाते हैं। पहला उदाहरण तो उस वक्त का है जब पहला दरवेश अपनी सारी दौलत लुटाकर बड़ी बहिन के पास खस्ता-हाल पहुँचा। उसको देखकर मां जाई का दिल भर आया। कुछ अर्से तक वह भाई की खातिर करती रही। आखिर एक दिन बुज़ुर्गाना अन्दाज़ में वह कहने लगी, "ऐ बीरन, तू मेरी आंखों की पुतली और मां-बाप की मुई माटी की निशानी है। तेरे आने से मेरा कलेजा ठंडा हुआ। जब तुझे देखती हूँ बाग़-बाग़ होती हूँ। तूने मुझे निहाल किया। लेकिन मर्दों को खुदा ने कमाने के लिए बनाया है। घर में बैठे रहना उनको लाज़िम नहीं। जो मर्द निखट्टू होकर घर सेता है उसको दुनिया के लोग ताना-मेहना देते हैं। खुसूसन इस

शहर के आदमी छोटे बड़े सब तुम्हारे रहने पर कहेंगे अपने बाप की दौलते-दुनिया खो-खाकर बहनोई के टुकड़ों पर आ पड़ा। यह निहायत बेग़ैरती और मेरी तुम्हारी हंसाई है। और मां-बाप के नाम को सबब लाज लगने का है। नहीं तो मैं अपने चमड़े की जूतियां बनाकर तुझे पहनाऊँ और कलेजे में तुझे डाल रखूँ। अब यह सलाह है कि सफ़र का क़स्द करो। चाहे तो दिन फिरें और इस हैरानी और मुफ़लिसी के बदले खातिरजमई और खुशी हासिल हो।"

बहिन और भाई की मुहब्बत मशहूर है। उसकी अभिव्यक्ति जिस अन्दाज़ व लबो-लहजे में यहाँ मीर अम्मन ने की है उससे बहन की मुहब्बत व ग़ैरत का बेपनाह अन्दाज़ा होता है। बुज़ुर्गाना नसीहत जिस खूबी से अदा हुई है, वह भी ज़ाहिर है। मुहब्बत और नारी की असली ज़िन्दगी के तजुर्बे, पास-पड़ोस वालों की नुक्ता चीनी, जो हमारे समाज का क़ायदा हो गया है, इन शब्दों में पूरी तरह ज़ाहिर हो जाती है। स्त्रियों के बात करने का ढंग और उनके खास-खास शब्दों को मीर अम्मन ने इस तरह अपनाया है कि बहिन की भावनाओं की इससे बेहतर अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। मौक़े के लिहाज़ से जो करुणा नसीहत में भर दी है उससे न सिर्फ़ नसीहत की तलखी दूर हो जाती है, बल्कि तासीर ज्यादा से ज्यादा उभर आती है।

हमने जिन बातों की तरफ़ ऊपर इशारा किया है—उनमें से एक बात के सबूत के लिए दूसरा उदाहरण देखिये। ख्वाजा सगपरस्त के सिलसिले में एक जगह यह बताया जाता है कि ख्वाजा को एक अन्धे कुएँ में क़ैद कर दिया गया जहाँ उन्हें न पानी मिलता था, न दाना। उसका वफ़ादार कुत्ता ख्वाज़ा की भूख-प्यास से बेचैन होकर इधर-उधर से रोटी का टुकड़ा लाकर कुएँ में डाल गया और पानी की तलाश में उसने एक बुढ़िया की ठिलिया पर हमला किया। बुढ़िया उसको मारने की कोशिश करती है। कुत्ता बुढ़िया को अपनी ज़रूरत बताने की कोशिश करता है। इस पूरी घटना को मीर अम्मन ने जिस नाटकीय अन्दाज़ में

बयान किया है वह मौक़ा पहचानने की बेहतरीन दलील है। उनका बयान सुनिये—"किसी गाँव के किनारे एक बुढ़िया की झोपड़ी थी। ठिलिया और बधना पानी से भरा हुआ धरा था और वह पीरज़न चर्खा कातती थी। कुत्ता कूजे के नज़दीक गया। चाहा कि लोटे को उठावे। औरत ने डांटा। लोटा उसके मुँह से छूटा। घड़े पर गिरा। मटका फूटा। बाक़ी बासन लुढ़क गये। पानी बह चला। बुढ़िया लकड़ी लेकर मारने को उठी। यह सग उसके दामन से लिपट गया। उसके पाँव पर मुँह मलने और दुम हिलाने लगा और पहाड़ की तरफ़ दौड़ गया। फिर उसके पास आकर कभू रस्सी उठाता, कभू डोल मुँह में पकड़ कर दिखाता और मुँह उसके क़दमों पर रगड़ता और चादर का आँचल पकड़ कर खींचता। खुदा ने उस औरत के दिल में रहम दिया। डोल रस्सी को लेकर वह उसके हमराह चली। वह उसका आंचल पकड़े घर से बाहर होकर आगे-आगे हो लिया।"

इस मौक़े पर अगर अलंकृत शैली से काम लिया जाता तो न उसका मतलब दिल में उतरता और न घटना चक्र तेज़ी से सामने आता। मीर अम्मन ने मौक़े को पहचाना। औरत का डांटना, कुत्ते के मुँह से लोटे का छूटकर गिरना, पानी का फ़ौरन गिरना, बुढ़िया का मारने को लकड़ी उठाना, यह सब कुछ जिस उजलत और घबराहट में हुआ होगा, उसके लिए ऐसे ही शब्दों और अंदाज की ज़रूरत थी, ताकि पूरा दृश्य उतनी ही अवधि में चित्रित हो जाय, जितनी देर में यह सब कुछ हुआ हो। शब्द भी वही हों जो घबराहट की स्थिति को आंखों के सामने हूबहू पेश कर दें। घबराहट में जिस तरह भावनाएँ तेज़ी से बदलती रहती हैं उसी तरह घटनाएँ भी लेखक से विद्युत गति की मांग करती हैं ताकि नक्शा प्रभावशाली हो जाय।

मीर अम्मन ने इस रहस्य को बखूबी समझ लिया था कि किस मौक़े पर कैसी शब्दावली की ज़रूरत है। ऐसा ही एक मौक़ा वह भी देखने के लायक है जब पहला दर्वेश नदी के किनारे अपनी प्रेमिका से बिछुड़

जाता है। ऐसे मौक़े पर जो एक सच्चे प्रेमी को पीड़ा होती है उसका चित्र मीर अम्मन के शब्दों में देखिये। लिखते हैं—"उस जगह एक दरख़्त पीपल का था, बड़ा छत्र बांधे हुये। अगर हज़ार सवार आयें तो धूप और मेंह में उसके तले आराम पावें। वहीं उसको (प्रेमिका) बिठा कर मैं चला। चारों तरफ़ देखता कि कहीं भी ज़मीन पर या दरिया में निशान इन्सान का पाऊँ। बहुतेरा सर मारा, पर कहीं न पाया। आख़िर मायूस होकर वहाँ से फिर आया तो उस परी को पेड़ के तले न पाया। उस वक़्त की हालत क्या कहूँ कि सुरति जाती रही। दीवाना, बावला हो गया। कभू दरख़्त पर चढ़ जाता और डाल-डाल और पात-पात फिरता। कभू हाथ-पाँव छोड़कर ज़मीन पर गिरता और दरख़्त की जड़ के आस-पास तसद्दुक़ होता[1]। कभू चिंघाड़ मार कर अपनी बेबसी पर रोता। कभू पच्छिम से पूरब को दौड़ता जाता। कभू उत्तर से दक्खिन को फिर आता। गरज़ बहुतेरी ख़ाक छानी लेकिन उस गौहरे-नायाब[2] की निशानी न पायी।" यह उद्धरण जिस तरह परेशानी और घबराहट की स्थिति पेश करता है वह टीका का मोहताज नहीं। बदहवासी का चित्रण इससे बेहतर क्या हो सकता है, दरख़्त पर चढ़ना, डाल-डाल पात-पात फिरना, हाथ पैर छोड़कर ज़मीन पर गिरना-जिन शब्दों और वाक्यों में बयान किया है उससे बेहतर तरीक़ा ज़ेहन में नहीं आता। इसके बाद एक वाक्य में सारी बात का सार यह कह कर बयान करना—'बहुतेरी ख़ाक छानी लेकिन उस गौहरे नायाब की निशानी न पायी!' ग़ालिबन मीर ने ऐसे ही वक़्त के लिये यह कहा था :—

पत्ता-पत्ता बूटा-बूटा हाल हमारा जाने है।
जाने न जाने गुल ही न जाने बाग़ तो सारा जाने है॥

कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि मीर अम्मन ने उर्दू गद्य

---

(१) निछावर होना (२) दुर्लभ मोती।

को नयी शैली दी और बड़ी दूरंदेशी से काम लिया। हिन्दी और फ़ारसी के शब्दों से भाषा को सजाया। एक बड़े कलाकार की तरह साहित्यिक आवश्यकताओं और उर्दू के मिजाज़ को देखते हुये उस कांटे के जंगल से बचकर निकलने की फ़िक्र की जिसमें उर्दू गद्य का दामन उलझ गया था। बीहड़ रास्ते को छोड़कर उसे समतल सड़क पर लाने की कोशिश की। यह सही है कि कहीं-कहीं उनके पांव डगमगा गये हैं। लेकिन आरम्भिक प्रयास में ऐसी लड़खड़ाहट हो ही जाती है। कलाकार का महत्व और श्रेष्ठता इन बातों से कम नहीं होती। उनका काम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा।

मीर अम्मन से हट कर जब हम असल किताब का अनुशीलन करते हैं तो महसूस होता है कि असल किताब लिखने वाले से अनुवाद करने वाला अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। निज़ामुद्दीन औलिया ने अमीर खुसरो को दुआ दी हो या न दी हो, क़िस्सा सुनने वालों को आशीर्वाद दिया हो या न दिया हो, लेकिन हमारे नज़दीक किसी बुज़ुर्ग ने यह दुआ ज़रूर दी है कि इस किताब का अनुवादक शोहरत का मालिक होगा। अता हुसेन खां तह-सीन ने 'नवतर्ज़मुरस्सा' की सूरत में इसे पेश करके अपनी जगह साहित्य के इतिहास में पैदा कर ली। उनके बाद मीर अम्मन इसी किताब की बदौलत अमर हो गये। हालाँकि विषय और शिल्प के लिहाज़ से क़िस्से बहुत कमज़ोर हैं, मगर लोकप्रियता का यह हाल है कि डेढ़ सौ बरस के बाद भी यह किताब हरदिल अज़ीज़ है।

इसके महत्व का एक रहस्य तो यह मालूम होता है कि यह पतन-काल की पैदावार है। मुफ़लिसी और परेशानी के ज़माने में ज़्यादातर लोग मज़हब की तरफ़ झुक जाते हैं। क़िस्मत का सहारा लेकर दिल बहलाते हैं। पारलौकिक सहायता की इच्छा करते हैं। अमीरों के दान की उम्मीद पर ज़िन्दगी की तल्ख़ी को खुशगवार बनाने की फ़िक्र में रहते हैं। बुज़ुर्गाने-दीन की प्र-

परस्ती का ख़्याल मीठी नींद का मज़ा देता है। और, यह किताब इन्हीं उम्मीदों और कल्पनाओं की सचित्र रचना है।

आज के आलोचना-सिद्धान्तों के आधार पर जब हम इस किताब को जांचते हैं तो इसकी कहानियों में बहुत सी ख़राबियां मिलती हैं। उदाहरण स्वरूप अलौकिक तत्व, कथानक और चरित्र-चित्रण में एकसानियत मिलती है। लेकिन जब हम यह सोचते हैं कि अगले ज़माने में आमतौर पर हर कहानी में ये बातें होती थीं तो एतराज़ कुछ हल्का हो जाता है और नज़र उसकी अच्छाइयों पर पड़ने लगती है। इस सिलसिले में सबसे पहली चीज़ जो हमको अपनी तरफ़ आकृष्ट करती है वह यह है कि कहानियों में हर जगह हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानी रस्मों की चर्चा है। इसमें शक़ नहीं कि लेखक ने क़िस्से को सनसनीखेज़ बनाने के लिए हिन्दुस्तान के बाहर के देशों और व्यक्तियों का ज़िक्र कर दिया है। लेकिन अपने वातावरण और अपने देश को किसी वक्त वह नहीं भूला। तमाम कहानियों में रहन-सहन और दूसरी बातें सब हिन्दुस्तानी हैं। लिबास को देखिए तो वही गुलरूदार लहर टँके हुए पल्लू और आंचल, वही पेशवाज़ और तहपोशी, चढ़ावा जूता और पगड़ी, वही सोलह अभरन, वही पालकी-नालकी नेवाड़े, वही शराब, वही गाने-बजाने वाले भांड़-कलावन्त जो मुहम्मदशाह रङ्गीले के ज़माने में और उसके बहुत बाद तक प्रचलित थे, सब आपको इस किताब में दिखाई देते हैं। टप्पे ठुमरियों के रचनाकार गवैयों के सरपरस्त, फ़क़ीर दर्वेशों के भक्त मुहम्मदशाह रङ्गीले ने जो वातावरण तैयार किया था वह आप को कहानियों के दरम्यान दिखाई देता है। उनके ज़माने में बल्कि बाद तक भी, क़िले की शहज़ादियां जवानी के नशे में बेपरदा दिखाई देती हैं। हर जगह शराब चल रही है और खाने-पीने का अमीराना ठाट महफ़िलों में मौजूद है। इसके अलावा आप को यह भी मिलेगा कि हिन्दुस्तान की औरत अपने पति और भाई की मुहब्बत में तमाम

दुनिया की औरतों से बढ़कर है। इसकी मिसाल आपने देखी होगी कि पहले दर्वेश की बहिन किस तरह अपने भाई से मुहब्बत की बातें करती है और रुपया पैसा देकर उसे फिर से कामकाजी बनाने की कोशिश करती है। दूसरी मिसाल आपको यह भी इस कहानी में मिलेगी कि ख्वाजा सगपरस्त की पत्नी बर्मा की कन्या जब सुनती है कि उसका पति मारा गया तो वह भी अपने सीने में खंजर मार कर मर जाती है। अजब नहीं कि यह सती प्रथा की तरफ़ इशारा हो। यह रस्म हिन्दुस्तान की विशेषता थी। और भी हिन्दुस्तान की रस्में हमको साफ़-साफ़ नज़र आती हैं। बहिन अपने भाई के आने पर काले टके और उर्द निछावर करती और जब रुखसत करती है तो दही का टीका माथे पर लगाती है। ये सब बातें पता देती हैं कि उस ज़माने का वातावरण इस किताब के लिखने वाले ने जिस तरह पेश किया है, वह हर लिहाज़ से सराहनीय है।

अगले ज़माने में हर कहानी लिखने वाला अपने सामने कोई उद्देश्य रखता था। 'चहार दर्वेश' के लेखक के सामने भी एक उद्देश्य था। वह इसका प्रचार करना चाहता है कि इन्सान को हर हाल में नेकी करते रहना चाहिये। रुपया-पैसा जमा करके कंजूस बनने के बरखिलाफ़ दानी होना चाहिए। और ज़ोर इसपर दिया गया है कि जो आदमी अपना सब कुछ मिटा कर मुहब्बत के रास्ते में भगवान् पर सच्चे दिल से भरोसा करता है, वह उसकी सहायता ज़रूर करता है। आशा है कि पाठक इस पुस्तक की दूसरी खूबियों को सामने रखते हुये इस उद्देश्य पर विशेष रूप से ध्यान देंगे।

आखीर में यह कहना है कि इस किताब को मीर अम्मन की उर्दू किताब का हिन्दी अनुवाद नहीं समझना चाहिये क्योंकि उन्होंने जिस भाषा में अपनी किताब लिखी वह इतनी सरल है कि उसे हिन्दी और उर्दू जानने वाले दोनों समझते हैं। प्रस्तुत पुस्तक अधिकांशतः उनकी

पुस्तक का नागरी लिप्यान्तर है। सिर्फ़ कहीं-कहीं आने वाले कठिन शब्दों का अर्थ दे दिया गया है। आशा है प्रेमी पाठकों द्वारा यह पुस्तक समादृत होगी।

'नशेमन'
७, मिन्टो रोड
इलाहाबाद

—एजाज़ हुसेन

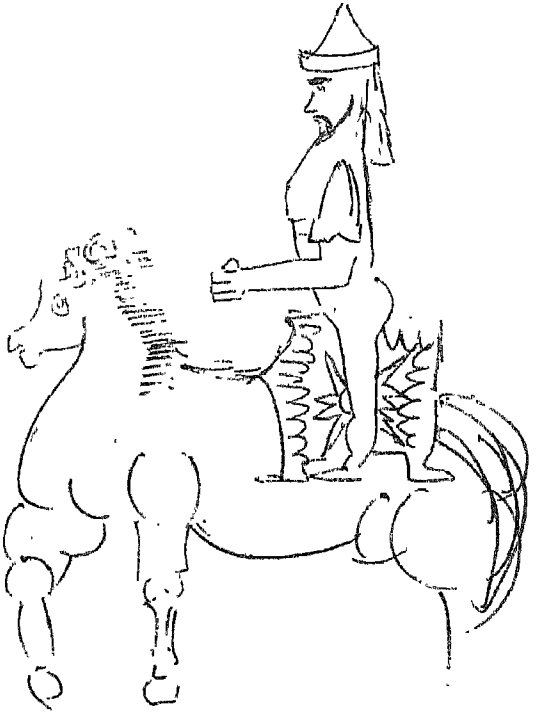

क़िस्सा चहार दर्वेश

कथाप्रवेश

अब क़िस्सा शुरू करता हूँ—ज़रा कान धरकर सुनो और मुन्सिफ़ी करो ! चार दर्वेश की सैर में यूँ लिखा है और कहने वाले ने कहा है कि रोम के मुल्क में कोई शहँशाह था। नौशेरवाँ की-सी अदालत और हातिम की सी दरियादिली उसकी ज़ात में थी। उसका नाम आज़ादबख्त और राजधानी क़ुस्तुनतुनिया थी जिसे अब इस्तम्बोल कहते हैं। उसके वक्त में रिआया आबाद, खज़ाना भरा हुआ, लश्कर खुशहाल, ग़रीब संतुष्ट, ऐसे चैन से गुज़र करते और खुशी से रहते कि हर एक के घर में दिन ईद और रात शबेरात थी। जितने चोर-चकार, जेबकतरे, उठाईगीरे और दग़ाबाज़ थे सबको नेस्त-नाबूद करके मुल्क-भर में नामो-निशान उनका न रखा था। सारी रात दरवाज़े घरों के बन्द न होते और दुकानें बाज़ारों की खुली रहतीं। राही मुसाफ़िर जंगल मैदान में सोना उछालते चले जाते। कोई न पूछता कि "तुम्हारे मुँह में कै दाँत हैं और कहाँ जाते हो ?"

उस बादशाह के अमल में हज़ारों शहर थे और कई सुल्तान नाल-बन्दे देते थे। ऐसी बड़ी सल्तनत होने पर भी एक घड़ी अपने दिल को खुदा की याद और बन्दगी से ग़ाफ़िल न करता। आराम दुनिया का जो चाहिये, सब मौजूद था। लेकिन बेटा, जो ज़िन्दगानी का फल है, उसकी क़िस्मत के बारा में न था। इसलिये अक्सर फ़िक्रमन्द रहता और पाँचों वक्त की नमाज़ के बाद अपने करीम से कहता कि "ऐ अल्लाह, मुझ आजिज़ को तूने अपनी मेहरबानी से सब कुछ दिया। लेकिन एक

इस अंधेरे घर का दिया न दिया। यही अरमान जी में बाक़ी है कि मेरा नामलेवा और पानीदेवा कोई नहीं। तेरी क़ुदरत के ख़ज़ाने में सब कुछ मौजूद है। एक बेटा जीता-जागता मुझे दे तो मेरा नाम और मेरी सल्तनत का निशान बाक़ी रहे!"

इसी उम्मीद में बादशाह की उम्र चालीस बरस की हो गई। एक दिन शीशमहल में नमाज़ पढ़कर वज़ीफ़ा पढ़ रहे थे। एकबारगी आईने की तरफ़ जो ख़याल किया तो देखा कि उसके सिर के बाल सुफ़ेद हो चले हैं। यह देखकर बादशाह की आँखें भर आईं, उसने ठंडी सांस भरी! फिर उसने दिल में सोचा—"अफ़सोस! तूने इतनी उम्र नाहक़ बरबाद की और दुनिया की लालच में एक ज़माने को ज़ेरो-ज़बर किया। इतना मुल्क जो लिया अब तेरे किस काम आवेगा? आख़िर यह सारा माल-असबाब कोई दूसरा उड़ा देगा। तुझे तो पैग़ाम मौत का आ चुका। अगर कोई दिन जिये भी तो बदन की ताक़त कम होगी। मालूम यही होता है कि तेरी तक़दीर में नहीं लिखा है कि वारिस छत्र और तख्त का पैदा हो। आख़िर एक रोज़ मरना है और सब कुछ छोड़ जाना है। इसीलिये यही बेहतर है कि तू ही इसे छोड़ दे और बाक़ी ज़िन्दगी अपने ख़ालिक़ की याद में काट।"

यह बात अपने दिल में ठहराकर, पाईं बाग़ में जाकर उन्होंने सब मुजराइयों को जवाब दे दिया। बादशाह ने फ़रमाया कि "कोई आज से मेरे पास न आवे, सब दीवाने-आम में आया-जाया करें और अपने काम में मुस्तैद रहें।" यह कहकर आप एक मकान में जा बैठे और जानमाज़ बिछाकर इबादत में मशग़ूल हुए। सिवा रोने और आह भरने के कुछ काम न था। इसी तरह बादशाह आज़ादबख्त को कई दिन गुज़रे। शाम को रोज़ा खोलने के वक़्त एक छुहारा खाते और तीन घूँट पानी पीते और तमाम दिन-रात जानमाज़ पर पड़े रहते। इस बात का बाहर चर्चा फैला। रफ़्ता-रफ़्ता सारे मुल्क में ख़बर फैल गई कि बादशाह ने

बादशाहत से हाथ खींचकर गोशानशीनी अख्तियार की। चारों तरफ दुश्मनों और फ़साद करने वालों ने सिर उठाया और क़दम अपनी हद से बढ़ाया। जिसने चाहा मुल्क दबा लिया और सरकशी शुरू कर दी। जहाँ कहीं हाकिम थे उनके हुक्म में खलल पैदा होने लगा। हर-एक सूबे से बदअमली की अर्ज़ी हुज़ूर में पहुँची। दरबारी अमीर जितने थे, जमा हुए और सलाह-मसलहत करने लगे।

आखिर यह तजवीज़ ठहरी कि नवाब वज़ीर अक़लमन्द और होशियार है, वह बादशाह को नज़दीक से जानता है, और बादशाह को उस पर भरोसा भी है। दर्जे में वज़ीर सबसे बड़ा है। उसकी खिदमत में चलें। देखें वह क्या मुनासिब जानकर कहता है!

सब अमीर और दरबारी मिलकर वज़ीर के पास आए और कहा—"बादशाह की यह सूरत और मुल्क की यह हक़ीक़त! अगर चन्द रोज़ और ग़फ़लत हुई तो इतनी मेहनत से लिया हुआ मुल्क, मुफ्त में जाता रहेगा? फिर हाथ आना बहुत मुश्किल है।"

वज़ीर पुराना नमकहलाल था, जैसा उसका नाम खिरदमन्द था वैसा ही वह अक़लमन्द था। यह हाल सुनकर बोला "अगरचे बादशाह ने अपने हुजूर में आने को मना किया है, लेकिन तुम चलो, मैं भी चलता हूँ। खुदा करे बादशाह की मर्ज़ी आवे और अपने सामने बुलावे।" यह कहकर सबको अपने साथ दीवाने-आम तलक लाया और उनको वहां छोड़कर खुद दीवाने-खास में आया और एक खिदमतगार के ज़रिये बादशाह की खिदमत में कहला भेजा कि, "यह पुराना गुलाम हाज़िर है। कई दिनों से जमाले-जहाँआरा नहीं देखा, उम्मीदवार हूँ कि एक नज़र देखकर क़दमबोसी (चरण स्पर्श) करूँ तो खातिरजमा हो।" यह अर्ज़ वज़ीर की बादशाह ने सुनी और चूँकि वह जानते थे कि वज़ीर पुराना खैरख्वाह है, उसकी होशियारी और जाँनिसारी की वजह से अक्सर बात उसकी मानते थे, इसीलिये बादशाह ने कुछ सोचकर फ़रमाया—"खिरदमन्द को बुला लो।"

बारे जब वज़ीर को हाज़िरी की इजाज़त मिली, वह बादशाह के हुज़ूर में आया, आदाब बजा लाया, और दस्तबस्ता (हाथ बाँधे हुये) खड़ा रहा। देखा कि बादशाह की अजीब सूरत बन गई है, ज़ार-ज़ार रोने और दुबलापे से आँखों में हलक़े पड़ गये हैं और चेहरा ज़र्द हो गया है।

ख़िरदमन्द को ताब न रही। बेअख़्तियार दौड़कर क़दमों परा जा गिरा। बादशाह ने हाथ से सिर उसका उठाया और फ़रमाया, "लो, मुझे देखा, ख़ातिरजमा हुई? अब जाओ। ज़्यादा मुझे न सताओ, तुम हुकूमत करो।"

ख़िरदमन्द यह सुनकर डाढ़ मारकर रोया और उसने अर्ज़ किया—"ग़ुलाम को आपके सदक़े और आपकी सलामती और इक़बाल से हमेशा बादशाही मयस्सर है। लेकिन जहाँपनाह की एकाएक इस तरह की गोशानशीनी से सारे मुल्क में तहलका पड़ गया है और अंजाम इसका अच्छा नहीं। यह क्या ख़याल मिज़ाजे-मुबारक में आया? अगर अपने घर के पले इस मौरूसी ग़ुलाम को भी इस राज़ में शरीक करें, तो बेहतर है। जो-कुछ मेरी नाचीज़ अक़्ल में आयेगा, अर्ज़ करूँगा। ग़ुलामों को जो इज़्ज़तें दी गई हैं वे इसी दिन के लिए कि बादशाह ऐशो-आराम करें और नमक पर पलनेवाले मुल्क की तदबीर में रहें। ख़ुदा-न-ख़्वास्ता अगर मिज़ाजे-आली में कोई फ़िक्र है तो ये शाही ग़ुलाम किस दिन काम आयेंगे?"

बादशाह ने कहा—"तू सच कहता है। पर जो फ़िक्र मेरे जी के अन्दर है, सो तदबीर के बाहर है! सुन ऐ ख़िरदमन्द! मेरी सारी ज़िन्दगी इसी मुल्कगीरी (मुल्क जीतने) के दर्देसर में कटी, अब ये सिनो-साल हुआ। आगे मौत बाक़ी है सो उसका भी पैग़ाम आया कि सियाह बाल सफ़ेद हो चले। कहावत है कि सारी रात सोये अब

सुब्ह को भी न जागें ? अब तलक एक बेटा पैदा न हुआ जो मेरी खातिरज़मा होती। इसलिए दिल सख्त उदास हुआ और मैं सब कुछ छोड़ बैठा। जिसका जी चाहे मुल्क ले या माल ले, मुझे कुछ काम नहीं। बल्कि कोई दिन में ये इरादा रखता हूँ कि सब छोड़-छाड़ जङ्गल और पहाड़ों में निकल जाऊ और मुँह अपना किसी को न दिखाऊँ, और इसी तरह यह चन्द रोज़ की ज़िन्दगी बसर करूँ। अगर कोई मकान अच्छा लगा तो वहाँ बैठकर बन्दगी अपने माबूद (विधाता) की बजा लाऊँगा। शायद परलोक ठीक हो जाय। और, दुनिया को तो खूब देखा कुछ मज़ा न पाया।" इतनी बात कहकर और एक आह भर कर बादशाह चुप हुए।

खिरदमन्द उनके बाप का वज़ीर था। जब यह शाहज़ादे थे, तब से मुहब्बत रखता था,। इसके अलावा अक़लमन्द और उनका भला चाहने वाला था, कहने लगा, "खुदा के दरबार से नाउम्मीद होना हरगिज़ मुनासिब नहीं। जिसने अस्सी हज़ार आलम को एक हुक्म में पैदा किया, आपको औलाद देना उसके नज़दीक क्या बड़ी बात है ? क़िबल-ए-आलम ! इस ग़लत खयाल को दिल से दूर कर दें नहीं तो तमाम आलम दरहम-बरहम हो जाएगा। यह सल्तनत (राज्य) किस-किस मेहनत और मशक्कत से आपके बुज़ुर्गों ने और आपने पैदा की है ? वह एक ज़रा में हाथ से निकल जाएगी और बेखबरी से मुल्क वीरान हो जायेगा। खुदानख्वास्ता बदनामी हासिल होगी। इसके बाद फिर क़यामत के दिन इसकी पूछ-गछ होगी कि तुझे बादशाह बनाकर अपने बन्दों को तेरे हवाले किया और तूने हमारी मेहरबानी से निराश होकर रैयत को हैरान, परेशान किया। इस सवाल का क्या जवाब देंगे ? फिर इबादत (आराधना) भी उस दिन काम न आएगी। इस वास्ते कि आदमी का दिल खुदा का घर है और बादशाह फक़त इंसाफ़ के वास्ते पूछे जाएँगे। गुलाम को बेअदबी माफ़ हो, घर से निकल जाना

और जङ्गल-जङ्गल फिरना काम जोगियों और फ़क़ीरों का है न कि बादशाहों का। तुम अपने लायक़ काम करो, ख़ुदा की याद और बन्दगी जंगल-पहाड़ पर मुनहसिर नहीं, आपने यह शेर सुना होगा—

ख़ुदा इस पास, ये ढूँढे जंगल में—
ढिंढोरा शहर में लड़का बग़ल में!

अगर मुन्सिफ़ी फ़रमाइये और इस नाचीज़ की अर्ज़ क़ुबूल कीजिए तो बेहतर यूँ है कि जहांपनाह हरदम और हर घड़ी ध्यान अपना ख़ुदा की तरफ़ लगाकर दुआ मांगा करें। उसकी दरगाह से कोई महरूम नहीं रहा। आप दिन का मुल्क का बन्दोबस्त, इंसाफ़, अदालत ग़रीब-ग़ुर्बा की फ़रमाएँ, तो ख़ुदा के बन्दे, ज़हांपनाह के साए में अमन, चैन और ख़ुशी की ज़िन्दगी गुज़ारें। रात को इबादत कीजिए और दरूद पैग़म्बर की पाक रूह को भेजकर, गोशानशीन फ़क़ीरों और दर्वेशों की मदद लीजिए और रोज़ बिना मां-बाप के बच्चों, मुहताजों, ग़रीब कुनबे वालों और रांड़-बेवाओं में खाना बँटवाइए। ऐसे अच्छे कामों और नेक नीयती की बरकत से, ख़ुदा चाहेगा तो पूरी उम्मीद है कि आपके दिल के मक़सद और मतलब पूरे हों और जिस बात के वास्ते मिज़ाजे-आली को इतनी परेशानी है, वह आर्ज़ू भी पूरी हो जाय। परवरदिगार की इनायत पर नज़र रखिए जो एक दम में जो चाहता है, सो करता है।" बारे ख़िरदमन्द वज़ीर के इस तरह अर्ज़-मारूज़ करने से आज़ादबख़्त के दिल को कुछ ढाढस बंधी। फ़रमाया "अच्छा, तू जो कहता है, भला, यह भी कर देखें। आगे जो अल्लाह की मर्ज़ी है, सो होगा।"

जब बादशाह के दिल को तसल्ली हुई, तब वज़ीर से पूछा कि, "और सब अमीरो-दबीर क्या करते हैं और किस तरह हैं?"

उसने अर्ज़ किया कि, "सब अमीरो-दबीर क़िबल-ए-आलम के जानो-माल की दुआ करते हैं। आपकी फ़िक्र से सब हैरानो-परेशान हो

हो रहे हैं। जमाले-मुबारक अपना दिखाइये तो सबकी खातिरजमा होवे। चुनान्चे सब इस वक्त दीवाने-आम में हाज़िर हैं।"

यह सुनकर बादशाह ने हुक्म किया, "इंशाअल्लाह कल दरबार करूँगा, सबको कह दो हाज़िर रहें।" खिरदमन्द यह वादा सुनकर खुश हुआ और दोनों हाथ उठाकर दुआ दी कि, "जब तलक यह ज़मीनो-आसमान अपनी जगह पर हैं हुज़ूर का ताजो-तख्त क़ायम रहे!" और हुज़ूर से रुखसत होकर खुशी-खुशी बाहर निकला और यह खुशखबरी सब अमीरों से कही। सब अमीर हंसी-खुशी घर को गए। सारे शहर में आनन्द की लहर दौड़ गई। प्रजा मगन हुई कि कल बादशाह दरबारे-आम करेगा। सुबह को सब खानाज़ाद आला-अदना, छोटे-बड़े सब अमीरो-दबीर अपने-अपने पाये और मरतबे पर आकर खड़े हुए और जलव-ए-बादशाही का इन्तज़ार करने लगे।

जब पहर दिन चढ़ा, एकबारगी पर्दा उठा और बादशाह ने बरामद होकर तख्ते-मुबारक पर जुलूस फ़रमाया, नौबतखाने में शादियाने बजने लगे, सभों ने मुबारकबादी की नज़रें भेंट कीं और मुजरेगाह में तसलीमात और कोरनिशात बजा लाए। अपने-अपने पाये और मरतबे के मुताबिक़ हर-एक को इज्ज़त मिली। सब के दिल को खुशी और चैन नसीब हुआ। जब दोपहर हुई दरबार बरख्वास्त हुआ। महल के अन्दर दाखिल हुये और खासा नोश फ़रमाके (भोजन करके) ख्वाबगाह में आराम किया। उस दिन से बादशाह ने यह दस्तूर बना लिया कि हमेशा सुबह को दरबार करना और तीसरे पहर किताब का शग़ल या वज़ीफ़ा पढ़ना और खुदा की बारगाह में तोबा इस्तग़फ़ार करके अपने मतलब की दुआ मांगना।

एक रोज़ किताब में भी लिखा देखा कि "अगर किसी शख्स को ग़म या फ़िक्र ऐसी हो कि उसका इलाज तदबीर से न हो सके तो चाहिए कि तक़दीर के हवाले करे और आप गोरिस्तान की तरफ़ रुजू करे और पैग़म्बर के तुफ़ैल में दरूद उनकी रूह को बख्शे और

ख़ुद को नेस्त-नाबूद समझकर दिल को दुनिया की ग़फ़लत से हुशियार रखे और इबरत से रो दे और ख़ुदा की क़ुदरत को देखे कि मुझसे पहले कैसे-कैसे मुल्क और ख़ज़ाने वाले इस ज़मीन पर पैदा हुये ? लेकिन आसमान ने सब को अपनी गर्दिश में लाकर मिटा दिया यह कहावत है—

चलती चक्की देखकर दिया कबीरा रोय।
दुइ पाटन के बीच में साबित बचा न कोय॥

अब जो देखिए सिवाय एक मिट्टी के ढेर के उनका कुछ निशान बाक़ी नहीं रहा और सब दुनिया की दौलत, घर-बार, आल-औलाद, आशना-दोस्त, नौकर-चाकर, हाथी-घोड़े छोड़कर अकेले पड़े हैं। यह सब उनके कुछ काम न आया, बल्कि अब कोई नाम भी नहीं जानता कि ये कौन थे और क़ब्र के अन्दर का हाल मालूम नहीं कि (कीड़े मकोड़े चूँटे, साँप उनको खा गए) उनपर क्या बीती और ख़ुदा से कैसी बनी। यह सारी बातें दिल में सोचकर सारी दुनिया को पीखने का खेल जाने, तब उसके दिल का ग़ुंचा हमेशा शिगुफ़्ता रहेगा, किसी हालत में पज़मुर्दा न होगा।" यह नसीहत जब किताब में पढ़ी, बादशाह को ख़िरदमन्द वज़ीर का कहना याद आया और दोनों को मुताबिक़ पाया। यह शौक़ हुआ कि इस पर अमल करूँ। लेकिन सवार होकर और भीड़-भाड़ को लेकर बादशाहों की तरह से जाना और फिरना मुनासिब नहीं। बेहतर यह है कि लिबास बदल कर रात को अकेले मक़बरों में या किसी गोशानशीन मर्दे-ख़ुदा की ख़िदमत में जाया करूँ और रात जागकर गुज़ारूँ। शायद इन मर्दों के वसीले से दुनिया की मुराद और आक़बत की निजात मयस्सर हो।

यह बात दिल में ठानकर, एक रोज़ रात को मोटे-झोटे कपड़े पहनकर कुछ अशर्फ़ी रुपये लेकर चुपके से क़िले से बाहर निकले और

मैदान की राह ली। जाते-जाते एक क़ब्रिस्तान में पहुँचे, निहायत सिदक़े-दिल से दरूद पढ़ रहे थे और उस वक्त तेज़ हवा चल रही थी, बल्कि आंधी कहना चाहिये। एक बारगी बादशाह को दूर से एक शोला-सा नजर आया कि सुबह के तारे की तरह रोशन है। उसने अपने दिल में ख़याल किया कि इस आँधी और अँधेरे में यह रोशनी किसी हिकमत से खाली नहीं या यह तिलिस्म है कि अगर फिटकिरी और गन्धक को चिराग़ की बत्ती के आस-पास छिड़क दीजिए तो कैसी ही हवा चले चिराग़ गुल न होगा। या किसी वली का चिराग़ है जो जलता है। जो कुछ हो, सो हो। चलकर देखा चहिये। शायद इस शमा के नूर से मेरे घर का चिराग भी रौशन हो और दिल की मुराद मिले। यह नीयत करके उस तरफ़ को चले। जब नज़दीक पहुँचे, देखा कि चार फक़ीर बेनवा कफ़नियाँ गले में डाले और सर ज़ानू पर धरे, बेहोशी के आलम में बैठे हैं और उनका यह आलम है जैसे कोई मुसाफ़िर अपने मुल्क और क़ौम से बिछुड़कर, बेकसी और मुफ़लिसी के रंजो-ग़म में गिरफ्तार होकर हैरान हो जाता है। इसी तरह ये चारों नक़्शे-दीवार हो रहे हैं और एक चिराग़ पत्थर पर धरा टिमटिमा रहा है। हरगिज़ हवा उसको नहीं लगती—गोया फ़ानूस उसकी आसमान बना है जो बेखतरे जलता है!

आज़ाद बख्त को देखते ही यक़ीन आया कि यक़ीनन तेरी आज़ू इन मर्दाने खुदा के क़दम की बरकत से पूरी होगी और तेरी उम्मीद का सूखा दरख्त उनकी तवज्जुह से हरा होकर फलेगा। इनकी खिदमत में चलकर अपना हाल कह और मजलिस का शरीक हो जा। शायद तुझ पर रहम खाकर दुआ करें जो खुदा क़ुबूल कर ले।

यह इरादा करके, उसने चाहा कि क़दम आगे धरे, वहीं अक़्ल ने समझाया कि 'ऐ बेवक़ूफ़! जल्दी न कर, ज़रा देख ले, तुझे क्या मालूम है कि ये कौन हैं और कहाँ से आए हैं? और किधर को जाते हैं? क्या मालूम ये देव हैं या राक्षस जो आदमी की सूरत बनाकर आपस में मिल

बैठे हैं। किसी तरह भी जल्दी करना और इनके दरमियान मुख़िल होना ठीक नहीं। अभी एक कोने में छुपकर इन दर्वेशों की हक़ीकत जानना चाहिये।

आख़िर बादशाह ने यही किया कि उस मकान के एक कोने में चुपका जा बैठा। किसी को उसके आने की आहट और ख़बर न हुई। अपना ध्यान उनकी तरफ़ लगाया कि देखें आपस में क्या बातचीत करते हैं। इत्तफ़ाक़न एक फ़क़ीर को छींक आई, उसने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और तीनों कलन्दर उसकी आवाज़ से चौंक पड़े। चिराग़ को उकसाया। ठेर तो रौशन था ही, उसके बाद अपने-अपने बिस्तरों पर हुक्के भरकर पीने लगे।

एक उन आज़ादों में से बोला, "ऐ यारानें-हमदर्द और रफ़ीक़ानें-जहाँगर्द! हम चार सूरतें आसमान की गर्दिश से, और लैलो-नहार के इन्क़लाब से दर-ब-दर और ख़ाक-ब-सर एक मुद्दत फिरीं। ख़ुदा का शुक्र है कि मुक़द्दर की मदद से और क़िस्मत की यावरी से आज इस मुक़ाम पर बाहम मुलाक़ात हुई। और कल का हाल कुछ मालूम नहीं कि क्या पेश आवे, एक-साथ रहें या जुदा-जुदा हो जावें। रात बड़ी पहाड़ होती है। अभी से पड़ रहना ठीक नहीं। इससे यह बेहतर है कि हर एक अपनी-अपनी सरगुज़श्त—जो इस दुनिया में जिस पर बीती हो (शर्त यह है कि झूठ उसमें कौड़ी भर न हो!) बयान करे तो बातों में रात कट जाय, जब थोड़ी रात बाक़ी रहे तब लोट-पोट रहेंगे।"

सभी ने कहा, "या हादी! जो कुछ इर्शाद होता है हमने क़ुबूल किया। पहले आप ही अपना हाल, जो आपने देखा है, शुरू कीजिये तो हम उससे फ़ायदा उठाएँ।"

सैर पहले दरवेश की

पहला दरवेश दोज़ानू होकर बैठा और अपनी सैर का क़िस्सा इस तरह कहने लगा—"ऐ ख़ुदा के बन्दो, ज़रा इधर तवज्जुह करो और इस बे-सरो-पा का हाल सुनो।

यह सरगुज़श्त मेरी ज़रा कान धर सुनो।
मुझको फ़लक ने कर दिया ज़ेरो-ज़बर सुनो।
जो कुछ कि पेश आई है शिद्दत मेरे तईं—
उसका बयान करता हूँ तुम सर-बसर सुनो!

ऐ यारो। मेरी जन्म-भूमि और बुज़ुर्गों का वतन मुल्क यमन है। इस नाचीज़ का बाप ख़्वाजा अहमद नाम का बड़ा सौदागर था। उस वक़्त का कोई महाजन या व्यापारी उनके बराबर न था। कई शहरों में कोठियाँ और गुमाश्ते लेन-देन के वास्ते मुक़र्रर थे और लाखों रुपये नक़द और मुल्क-मुल्क की जिन्स घर में पहले से मौजूद थी। उनके यहाँ दो बच्चे पैदा हुए। एक तो यही फ़क़ीर जो सैली कफ़नी पहने हुए मुर्शिदो की हुज़ूरी में हाज़िर आज बोलता है और दूसरी एक बहन जिसकी वालिद साहब क़िबला ने शादी अपने जीते-जी शहर के एक सौदागर बच्चे से कर दी थी। वह अपनी सुसराल में रहती थी। ग़रज़ जिसके घर में इतनी दौलत और एक लड़का हो, उसके लाड़-प्यार का क्या ठिकाना है? मुझ फ़क़ीर ने बड़े चाव-चोज़ से माँ-बाप के साए में परवरिश पाई और पढ़ना-लिखना, सिपहगरी का कस्बोफ़न-सौदागरी का बहीखाता और

रोज़नामा सीखने लगा। चौदह बरस निहायत खुशी और बेफ़िक्री में गुज़रे। दुनिया का अन्देशा दिल में न आया। एक-ब-एक एक साल के अन्दर ही माँ-बाप परलोक सिधारे।

अजब तरह का ग़म हुआ जिसका बयान नहीं कर सकता। एक बारगी यतीम हो गया। सर पर कोई बड़ा-बूढ़ा न रहा। इस मुसीबते-नागहानी से रात-दिन रोया करता। खाना-पीना सब छूट गया। चालीस दिन ज्यूँ-त्यूँ करके कटे। चेहल्लुम में अपने बेगाने, छोटे-बड़े सब जमा हुए। जब फ़ातिहा से फ़राग़त हुई, सबने फ़क़ीर को बाप की पगड़ी बँधवाई और समझाया, "दुनिया में सबके माँ-बाप मरते आए हैं। और खुद भी एक रोज़ मरना है। पस, सब्र करो, और अपने घर को देखो। अब बाप की जगह तुम सरदार हुये, अपने कारोबार और लेन-देन से हुशियार रहो।" तसल्ली देकर वे रुखसत हुए। गुमाश्ते, कारोबारी, नौकर-चाकर जितने थे आकर हाज़िर हुए, नज़रें दीं और बोले, "कोठी, नक़द और जिन्स अपनी नज़रे-मुबारक से देख लीजिये।"

एक बारगी जो इस बे-इन्तहा दौलत पर निगाह पड़ी, आँखें खुल गईं। दीवानखाने की तैयारी का हुक्म दिया। फ़र्राशों ने फ़र्श-फ़ुरूश बिछाकर छत, पर्दे, चिलमनें शानदार लगादीं और अच्छे-अच्छे ख़िदमतगारो-दीदार नौकर रखे। सरकार से ज़र्क-बर्क़ पोशाकें बनवादीं। फ़क़ीर मसनद पर तकिया लगाकर बैठा। वैसे ही आदमी गुण्डे-भाँकड़े, मुफ्त खाने-पीने वाले, झूठे खुशामदी आकर आशना हुए और मुसाहिब बने। उनसे आठ पहर सोहबत रहने लगी। हर-कहीं की बातें और ज़टलें, वाही-तवाही इधर-उधर की करते, और कहते, "इस जवानी के आलम में केतकी की शराब या गुले-गुलाब खिंचवाइये। नाज़नीन माशूक़ों को बुलवाकर उनके साथ पीजिये और ऐश कीजिये।"

ग़रज़ आदमी का शैतान आदमी है। हरदम के कहने सुनने से अपना भी मिज़ाज बँहक गया। शराब, नाच और जुए का चर्चा शुरू

हुआ। फिर तो यह नौबत पहुँची कि सौदागरी भूलकर तमाशबीनी और लेने-देने का सौदा हुआ। अपने नौकरों और साथियों ने जब यह ग़फ़लत देखी, तो जो जिसके हाथ पड़ा, अलग किया। गोया लूट मचादी। यहाँ कुछ ख़बर न थी कि कितना रुपया ख़र्च होता है, कहाँ से आता है, और किधर को जाता है! माले-मुफ्त, दिले बेरहम! इस फ़ुज़ूल ख़र्ची के आगे, अगर क़ारून का ख़ज़ाना होता तो वह भी वफ़ा न करता। कई बरस के अर्से में एकबारगी यह हालत हुई कि फ़क़त टोपी और लँगोटी बाक़ी रही। दोस्त-आशना जो दाँतकाटी रोटी खाते थे और और चमचा भर ख़ून अपना हर बात में ज़बान से निसार करते थे, काफ़ूर हो गए। बल्कि राह-बाट में अगर भेंट-मुलाक़ात हो जाती, तो आँखें चुराकर, मुँह फेर लेते। और नौकर चाकर, ख़िदमतगार, बहेलिये दलइत, ख़ासबर्दार, सब छोड़कर किनारे लगे। कोई बात पूछनेवाला न रहा, जो कहे "यह तुम्हारा क्या हाल हुआ है?" सिवाय राम और अफ़सोस के कोई रफ़ीक़ न रहा।

अब दमड़ी की ठड्डियाँ मयस्सर नहीं, जो चबाकर पानी पियूँ। दो-तीन फ़ाक़े, कड़ाके खींचे। भूक की ताब न ला सका। लाचार बेहयाई का बुर्क़ा मुँह पर डालकर यह क़स्द किया कि बहन के पास चलूँ। लेकिन यह शर्म दिल में आती थी कि बाप के मरने के बाद न बहन से कुछ सुलूक किया, न ख़त लिखा, बल्कि उसने जो ख़त मातमपुर्सी और इश्तेयाक़ के लिखे उनका भी जवाब इस ख़्वाबे-ख़रगोश में न भेजा। इस शर्मिन्दगी से जी तो न चाहता था पर सिवाए उस घर के कोई ठिकाना नज़र में न ठहरा। ज्यूँ-त्यूँ पा-पियादा, ख़ाली हाथ, गिरता-पड़ता हज़ार मेहनत से कई मंज़िलें काटकर बहिन के शहर में जाकर, उसके मकान पर पहुँचा। उस माँजाई ने मेरा यह हाल देखकर बलाएँ लीं और गले मिलाकर बहुत रोई। तेल-माश और काले टके मुझपर से सदक़े किये। कहने लगी. "अगरचे मुलाक़ात से दिल बहुत ख़ुश हुआ लेकिन भइया तेरी ये क्या सूरत बनी है!"

इसका जवाब मैं कुछ न दे सका। आँखों में आँसू डब-डबाकर चुपका हो रहा। बहन ने जल्दी-जल्दी अच्छी पोशाक सिलवाकर हम्माम में भेजा। नहा-धोकर वह कपड़े पहने। एक मकान अपने पास बहुत अच्छा, शानदार मेरे रहने को दिया। सुबह को, बहुत सी चीज़ें, जैसे हलवा सोहन, पिस्तामग़ज़ी, नाश्ते को और तीसरे पहर मेवे ख़ुश्को-तर, फल-फलारी मँगवाकर अपने सामने खिलाकर जाती। सब तरह ख़ातिरदारी करती। मैंने वैसी तकलीफ़ के बाद जो यह आराम पाया, ख़ुदा की दर्गाह में हज़ार-हज़ार शुक्र बजा लाया। कई महीने इस फ़राग़त से गुज़रे कि पाँव तनहाई से बाहर न रखा।

एक दिन वह बहन जो माँ की तरह मेरी ख़ातिर करती थी, कहने लगी, "ऐ बीरन! तू मेरी आंखों की पुतली और मां-बाप की मुई मिट्टी की निशानी है। तेरे आने से मेरा कलेजा ठंढा हुआ। जब तुझे देखती हूँ, बाग़-बाग़ होती हूँ। तूने मुझे निहाल किया। लेकिन मर्दों को ख़ुदा ने कमाने के लिए पैदा किया है, घर में बैठा रहना उनको लाज़िम नहीं। जो मर्द निखट्टू होकर घर सेता है, उसकी क़द्र नहीं। ख़ासकर इस शहर के आदमी छोटे-बड़े बेसबब तुम्हारे रहने पर कहेंगे, अपने बाप की दौलते-दुनिया खो-खाकर बहनोई के टुकड़ों पर पर आ पड़ा। यह निहायत बेग़ैरती और मेरी तुम्हारी हँसाई और मां-बाप के नाम को लाज लगने का सबब है, नहीं तो अपने चमड़े की जूतियां बनाकर तुझे पहनाऊँ और कलेजे में डाल रखूँ। अब यह सलाह है कि सफ़र का इरादा करो। ख़ुदा चाहे तो दिन फिरें और इस परेशानी और मुफ़लिसी के बदले इत्मीनान और ख़ुशी हासिल हो।

यह बात सुनकर मुझे भी ग़ैरत आई, उसकी सलाह पसन्द की। जवाब दिया, "अच्छा अब तुम मां की जगह हो, जो कहो, सो करूँ।"

उसने मेरी मर्ज़ी पाकर घर में जाके पचास तोड़े अशर्फ़ी के, असील लौंडियों के हाथों में लिवाकर मेरे आगे ला रखे और बोली,

"एक क़ाफ़िला सौदागरों का दमिश्क़ को जाता है। तुम इन रुपयों से तिजारत की जिन्स ख़रीद करो, और एक ईमानदार ताजिर के हवाले करके दस्तावेज़पक्की लिखवा लो और ख़ुद भी दमिश्क़ की तरफ़ रवाना हो जाओ। वहां जब ख़ैरियत से जा पहुँचो, अपने माल और नफ़ा समझ बूझ लो या आप बेचो?" मैं वह नक़द लेकर बाज़ार में गया और सौदागरी का सामान ख़रीद कर एक बड़े सौदागर के सुपुर्द किया। लिखा-पढ़ी से ख़ातिरजमा कर ली। वह ताजिर दरिया के राह से जहाज़ पर सवार होकर रवाना हुआ। मुझ फ़क़ीर ने ख़ुश्की की राह चलने की तैयारी की। जब रुख़सत होने लगा, बहन ने एक सिरी पाओ भारी और एक घोड़ा जड़ाऊ साज़ के साथ दिया और मिठाई पकवान एक ख़ासदान में भर कर हरने से लटका दिया और छागल पानी की शिकारबन्द में बंधवा दी, इमाम ज़ामिन का रूपया मेरे बाज़ू पर बांधा। दही का टीका माथे पर लगाकर, आंसू पीकर बोली, "सिधारो, तुम्हें ख़ुदा को सौंपा। पीठ दिखाये जाते हो, इसी तरह जल्द अपना मुँह भी दिखाइयो।" मैंने फ़ातिहा ख़ैर की पढ़कर कहा, "तुम्हारा भी अल्लाह हाफ़िज़ है, मैंने क़ुबूल किया।" वहां से निकल कर घोड़े पर सवार हुआ और ख़ुदा पर भरोसा करके दो मंज़िल की एक मंज़िल करता हुआ दमिश्क़ के पास जा पहुँचा।

ग़रज़ जब शहर के दरवाज़े पर गया, तो बहुत रात जा चुकी थी। दरबान और निगहबानों ने दरवाज़ा बन्द कर लिया था। मैंने बहुत मिन्नत की कि, "मुसाफ़िर हूँ, दूर से धावा मारे आता हूँ, अगर किवाड़ खोलदो, तो शहर में जाकर दाने-घास का आराम पाऊँ।"

अन्दर से घुड़ककर बोले, "इस वक़्त दरवाज़ा खोलने का हुक्म नहीं, क्यों इतनी रात गये तुम आये?"

जब मैंने साफ़ जवाब उनसे सुना, शहर-पनाह की दीवार के तले घोड़े पर से उतर कर ज़ीनपोस बिछाकर बैठा। जागने की ख़ातिर

इधर-उधर टहलने लगा। जिस वक़्त आधी रात इधर, और आधी रात उधर हुई, सुनसान हो गया। देखता क्या हूँ कि एक सन्दूक क़िले की दीवार से नीचे चला आता है। यह देखकर मैं अचम्भे में हुआ कि यह क्या तिलिस्म है? शायद ख़ुदा ने मेरी परेशानी व हैरानी पर रहम खाकर ग़ैब के ख़ज़ाने से इनायत किया। जब वह संदूक़ ज़मीन पर ठहरा, डरते डरते मैं पास गया। देखा तो, काठ का सन्दूक है लालच से उसे खोला। एक माशूक़ ख़ूबसूरत, कामिनी सी औरत (जिसके देखने से होश जाता रहे!) घायल, लहू में तर-बतर आँखें बन्द किये पड़ी कुलबुलाती है, धीरे-धीरे होंठ हिलते हैं और यह आवाज़ मुँह से निकलती है "ऐ कम्बख्त बेवफ़ा, ऐ ज़ालिम पुरजफ़ा! बदला इस भलाई और मुहब्बत का यही था जो तूने किया? भला एक ज़ख्म और लगा, मैंने अपना तेरा इंसाफ़ ख़ुदा को सौंपा।" यह कहकर उसी बेहोशी के आलम में दुपट्टे का आंचल मुँह पर ले लिया, मेरी तरफ़ ध्यान न किया।

फ़क़ीर उसको देखकर और यह बात सुनकर सुन्न हो गया। जी में आया, 'किसी बेहया जालिम ने क्यों ऐसी नाजनी को जख़्मी किया? क्या उसके दिल में आया, और हाथ इस पर क्यों कर चलाया, इसके दिल में तो मुहब्बत अब तलक बाक़ी है, जो इस जांकुन्दनी की हालत में उसको याद करती है।' मैं आप-ही-आप यह कह रहा था कि आवाज़ उसके कान में गई। एक मरतबा कपड़ा मुँह से सरकाकर मुझको देखा। जिस वक़्त उसकी निगाहें मेरी नज़रों से लड़ीं, मुझे ग़श आने और जी सनसनाने लगा। बड़ी कोशिश से अपने को सँभाला, और हिम्मत करके पूछा, "सच कहो, तुम कौन हो और यह क्या माजरा है? अगर बयान करो तो मेरे दिल को तसल्ली हो।" यह सुनकर, अगरचे ताक़त बोलने की न थी, उसने धीरे से कहा, "शुक्र है। मेरी हालत ज़ख्मों के मारे ऐसी हो रही है। क्या ख़ाक बोलूँ? कोई दम की मेहमान हूँ। जब मेरी जान निकल जाय तो ख़ुदा के

वास्ते जवाँमर्दी करके मुझ बदबख्त को किसी जगह गाड़ दीजियो, तो भले बुरे की जबान से छुटकारा पाऊँ और तुझे सवाब हो।" इतना बोलकर चुप हुई।

रात को मुझसे कुछ तदबीर न हो सकी। वह सन्दूक़ अपने पास उठा लाया और घड़ियाँ गिनने लगा कि कब इतनी रात तमाम हो तो सबेरे शहर जाकर जो-कुछ इलाज उसका हो सके अपने भरसक करूँ। वह थोड़ी रात ऐसी पहाड़ हो गई कि दिल घबरा गया। बारे खुदा-खुदा करके जब सुबह नजदीक हुई, मुर्ग़ बोला, आदमियों की आवाज़ आने लगी। मैंने सवेरे की नमाज़ पढ़कर सन्दूक़ को खोजी में कसा और ज्यों ही शहर का दरवाज़ा खुला, मैं शहर में दाखिल हुआ। हर-एक आदमी और दूकानदार से हवेली किराये की तलाश करने लगा। ढूँढते-ढूँढते एक नया खुशक़ता, फ़राग़त का मकान भाड़े पर लेकर जा उतरा। पहले उस माशूक़ को सन्दूक़ से निकालकर रुई के पहलों पर मुलायम बिछौना करके एक कोने में लिटाया और एतबारी आदमी वहाँ छोड़कर मैं जर्राह की तलाश में निकला। हर-एक से पूछता फिरता था कि इस शहर में कारीगर जर्राह कौन है, और कहां रहता है? एक शख्स ने "कहा एक हज्जाम जर्राही के फ़न और हकीमी के फ़न में पक्का है, और इस काम में तो निपट पक्का है। अगर मुर्दे को उसके पास ले जाओ, खुदा के हुक्म से ऐसी तदबीर करे कि एक बार वह भी जी उठे। वह उस मुहल्ले में रहता है और ईसा नाम है।"

मैं यह खुशखबरी सुन बेअख्तियार चला। तलाश करते-करते पते से उसके दरवाजे पर पहुँचा। एक आदमी को जिसकी डाढ़ी सफ़ेद थी, दहलीज़ पर बैठा देखा। वहाँ कई आदमी मरहम की तैयारी के लिए कुछ पीस-पास रहे थे। फ़क़ीर ने मारे खुशामद के अदब से सलाम किया और कहा, "मैं तुम्हारा नाम और खूबियां सुनकर आया

हूँ। माजरा यह है कि मैं अपने मुल्क से तिजारत के लिए चला। प्रेम के कारण क़बीले (परिवार) को भी साथ लिया। जब इस शहर के नज़दीक़ आया और थोड़ी दूर रहा था कि शाम पड़ गई। अनदेखे मुल्क में रात को चलना मुनासिब न जाना। मैदान में एक दरख्त के तले उतर पड़ा। पिछले पहर डाकू आया। जो-कुछ माल-असबाब पाया लूट लिया। गहने की लालच से उसने बीबी को भी घायल किया। मुझसे कुछ न हो सका। रात जो बाक़ी थी, ज्यों-त्यों कर काटी सवेरे ही शहर आकर एक मकान किराये पर लिया। उनको वहाँ रखकर मैं तुम्हारे पास दौड़ा आया हूँ। खुदा ने तुम्हें यह कमाल दिया है। इस मुसाफ़िर पर मेहरबानी करो। ग़रीबखाने पर तशरीफ़ ले चलो, उसको देखो। अगर उसकी ज़िन्दगी हुई तो तुम्हें बड़ा जस होगा और मैं सारी उम्र गुलामी करूँगा।

ईसा जर्राह बहुत रहमदिल और ईश्वर-भक्त था। मेरी ग़रीबी की बातों पर तरस खाकर हवेली तक आया। ज़ख्मों को देखते ही मेरी तसल्ली की। बोला कि, "खुदा की मेहरबानी से इस बीबी के ज़ख्म चालीस दिन में भर आवेंगे और सेहत का ग़ुस्ल करवा दूँगा।"

ग़रज़ उस मर्दे-खुदा ने सब ज़ख्मों को नीम के पानी से धो-धाकर साफ़ किया, जो टाँके के लायक़ पाए उनको सिया, बाक़ी घावों पर अपने खीसे से एक डिबिया निकालकर कितनों में पट्टी रखी और कितनों पर फाहे चढ़ाकर पट्टी से बाँध दिया, और निहायत मुहब्बत से कहा, "मैं दोनों वक्त आया करूँगा। तू खबरदार रहियो। ऐसी हरकत न करे जो टांके टूट जाएँ। ग़िज़ा के बजाए मुर्ग़ का शोरबा इसके हलक़ में चुवाइयो और अक्सर अर्क़े-बेद-मिश्क गुलाब के साथ दिया कीजो, जो ताक़त रहे।" यह कहकर उसने विदा चाही। मैंने बहुत मिन्नत की और हाथ जोड़कर कहा, "तुम्हारे तशफ़्फ़ी देने से मेरी भी ज़िन्दगी हुई, नहीं तो सिवाए मरने के कुछ न सूझता था। खुदा तुम्हें सलामत रखे।"

उसे इत्र-पान देकर रुख़सत किया। मैं रात-दिन उस परी की सेवा में हाज़िर रहता, आराम अपने ऊपर हराम किया, खुदा की दरगाह से रोज़-रोज़ उसके चंगे होने की दुआ मांगता।

इत्तफ़ाक़ से वह सौदागर भी आ पहुँचा और मेरा अमानत का माल मेरे हवाले किया। मैंने उसे औने-पौने बेच डाला और दवा-इलाज में खर्च करने लगा। वह जर्राह हमेशा आता-जाता। थोड़े अर्से में सब ज़ख्म भरकर अंगूर कर लाए। कई दिन बाद उसने सेहत का ग़ुस्ल किया। अजब तरह की खुशी हासिल हुई। खलअत और अशर्फ़ियाँ ईसा हज्जाम के आगे धरीं और उस परी को कलफ़दार फ़र्श बिछाकर मसनद पर बिठाया। फ़क़ीर ग़रीबों को बहुत-सी खैर-खैरात की। उस दिन गोया सात मुल्कों की बादशाहत इस फ़क़ीर के हाथ लगी और उस परी का रंग सेहत पाने से ऐसा निखरा कि मुखड़ा सूरज की तरह चमकने और कुन्दन की तरह दमकने लगा। नज़र की मजाल न थी जो उसके रूप पर ठहरे। यह फ़क़ीर तन-मन-धन से उसके हुक्म में हाज़िर रहता, जो फ़रमाती सो बजा लाता। वह अपने रूप के अभिमान और सरदारी के दिमाग़ में जो मेरी तरफ़ देखती तो फ़रमाती, "ख़बरदार, अगर तुझे हमारी खातिर मंज़ूर है तो हरगिज़ हमारी बात में दम न मारियो। जो हम कहें बिला-उज्र किये जाइयो। अपना किसी बात में दखल न करियो, नहीं तो पछताओगे।" उसकी वज़ा से यह मालूम होता था कि हक़ मेरी खिदमत गुज़ारी और फ़रमाबरदारी का उसे मंज़ूर है। फ़क़ीर भी उसकी बेमर्ज़ी एक काम न करता। उसका हर हुक्म सर आँखों पर रखता।

एक मुद्दत इसी तरह कटी। उसने जो फ़रमाइश की, वैसे ही मैंने लाकर हाज़िर की। इस फ़क़ीर के पास जो-कुछ जिन्स और नक़द मूल और नफ़े का था, सब सर्फ़ हुआ। उस बेगाने मुल्क में कौन एतबार करे जो क़र्ज़-दाम काम चले? आख़िर रोज़मर्रा के खर्च की तकलीफ़ होने लगी। इससे दिल बहुत घबराया, फ़िक्र से दुबला होता चला,

चेहरे का रंग कलभ्रवां हो गया। लेकिन किसमें कहूँ ? जो कुछ दिल पर गुज़री सो गुज़री, 'क़ह्र दर्वेश बर जाने दर्वेश !'

एक दिन उस परी ने अपनी समझ से मालूम करके कहा, "ऐ फ़लाने ! तेरी ख़िदमतों का हक़ हमारे जी में पत्थर की लकीर की तरह है। पर इसका एवज़ हमसे तन से नहीं हो सकता। अगर ज़रूरी ख़र्च के वास्ते कुछ जरूरत हो, तो अपने मन में चिन्ता न कर। एक टुकड़ा काग़ज़ और दवात-क़लम हाजिर कर।"

मैंने तब मालूम किया कि यह किसी मुल्क की राजकुमारी है जो इस दिलो-दिमाग़ से बातचीत करती है। फ़ौरन क़लमदान आगे रख दिया। उस नाज़नी ने एक रुक्क़ा अपने ख़ास दस्तख़त से लिखकर मेरे हवाले किया और कहा, "क़िले के पास त्रिपोलिया है। वहाँ उस कूचे में एक बड़ी-सी हवेली है। उस मकान के मालिक का नाम सैदी बहार है। तू जाकर इस रुक्क़े को उसके पास पहुँचा दे।"

यह फ़क़ीर उसके फ़र्माने के मुताबिक़ उसके नामो-निशान पर मंज़िले-मक़्सूद तक जा पहुँचा, दरबान की ज़बानी ख़त का हाल कहला भेजा। वैसे ही एक हबशी जवान ख़ूबसूरत, एक फेंटा तरहदार सजाए हुए, बाहर निकल आया। अगरचे रङ्ग सांवला था, पर गोया तमाम नमक से भरा हुआ। मेरे हाथ से ख़त ले लिया। न बोला, न कुछ पूछा। उन्हीं क़दमों फिर अन्दर चला गया। थोड़ी देर में ग्यारह किश्तियां ग़ुलामों के सर पर धरे बाहर आया। कहा, "इस जवान के साथ जाकर चौगोशे पहुँचा दो।"

मैं भी सलाम करके विदा हुआ। अपने मकान में आया। आदमियों को दरवाज़े के बाहर से रुख़सत किया। दो किश्तियां अमानत उस परी की हुजूरी में ले गया। उसने देखकर यह फ़र्माया, "यह ग्यारह किश्तियां अशर्फ़ियों की ले और ख़र्च में ला, ख़ुदा देने वाला है।"

फ़क़ीर इस नक़द को लेकर ज़रूरत की मद में ख़र्च करने लगा। अगरचे खातिरजमा हुई पर दिल में यह खटक रही, या इलाही! यह क्या सूरत है? बगैर पूछे-गछे इतना माल, बिना जान-पहिचान अजनबी ने एक पुरज़े काग़ज़ पर मेरे हवाले किया! अगर उस परी से यह भेद पूछूँ तो उसने पहले ही मना कर रखा था। मारे डर के दम नहीं मार सकता था।

आठ दिन के बाद वह माशूक़ा मुझसे मुख़ातिब हुई कि, "ख़ुदा ने आदमी को इंसानियत का लिबास दिया है कि न फटे, न मैला हो। अगरचे पुराने कपड़े से उसकी आदमीयत में फ़र्क नहीं आता, पर देखने में, दुनिया वालों की नज़रों में वह एतबार नहीं पाता। दो तोड़े अशर्फ़ियों के साथ लेकर चौक के चौराहे पर यूसुफ़ सौदागर की दूकान पर जा और कुछ क़ीमती जवाहिर और दो ज़र्क़-बर्क़ खलअतें मोल ले आ।"

यह सुनते ही यह फ़क़ीर सवार होकर उसकी दूकान पर गया, देखा एक ख़ूबसूरत जवान ज़ाफ़रानी जोड़ा पहने गद्दी पर बैठा है और उसका यह आलम है कि एक आलम देखने के लिये दुकान से बाज़ार तक खड़ा है। मेरा शौक़ भी बढ़ गया और नज़दीक जाकर सलाम करके बैठा और जिन-जिन चीजों की ज़रूरत थी, तलब की। मेरी बातचीत उस शहर के रहने वालों की सी न थी। उस जवान ने गर्मजोशी से कहा, "जो साहब को चाहिये, मौजूद है। लेकिन यह फ़र्माइये, किस मुल्क से आना हुआ? और इस अजनबी शहर में आने का क्या सबब है? अगर इस हक़ीक़त से बाख़बर कीजिये तो ख़ास मेहरबानी होगी।"

मुझे अपना हाल ज़ाहिर करना मंजूर न था। कुछ बात बनाकर, और जवाहिर, पोशाक लेकर और क़ीमत उसकी देकर चलने की इजाज़त चाही। उस जवान ने रूखे-फीके होकर कहा, "ऐ साहब! अगर तुमको ऐसी ही बेरुख़ी करनी थी तो पहले दोस्ती इतनी गर्मी से करने

की क्या ज़रूरत थी ? भले आदमियों में साहब-सलामत का बड़ा लिहाज़ होता है।" यह बात इस मज़े और अंदाज से कही गई कि बेअख़्तियार दिल को भाई और बेमुख्वत होकर वहां से उठना, इन्सानियत नहीं मालूम हुआ और उसकी खातिर फिर बैठ गया और बोला, "तुम्हारा फ़र्मान सर आंखों पर, मैं हाज़िर हूँ !"

इतना कहने से बहुत खुश हुआ, हँसकर कहने लगा, "अगर आज के दिन ग़रीबखाने पर तशरीफ़ लाने की मेहरबानी कीजिये तो आपकी बदौलत खुशी की मजलिस जमाकर दो-चार घड़ी दिल बहलावें और कुछ खाने-पीने का शग़ल एक-साथ बैठकर करें।" इस फ़कीर ने उस परी को कभी अकेला न छोड़ा था। उसकी तनहाई याद करके कई बहाने और उज्र किये। पर उस नौजवान ने हरगिज़ न माना। आखिर वादा उन चीज़ों को पहुँचाकर मेरे फिर आने का लेकर, और क़सम खिलाकर उसने मुझे चलने की इजाज़त दी। मैं दूकान से उठकर जवाहिर और खलअतें उस परी के पास लाया। उसने जवाहिर की क़ीमत और जौहरी की हक़ीक़त पूछी। मैंने सारा हाल मोल-तोल का और अपनी बेहद मेहमानी होने का कह सुनाया। वह फ़र्माने लगी, "आदमी को अपना कौल-क़रार पूरा करना वाजिब है। हमें खुदा की निगहबानी में छोड़कर अपना वायदा पूरा करो। दावत क़ुबूल करना पैग़म्बर की सुन्नत है।"

तब मैंने कहा, "मेरा दिल चाहता नहीं कि तुम्हें अकेला छोड़कर जाऊँ। पर हुक्म यूँ होता है तो लाचार जाता हूँ। जब तलक आऊँगा, दिल यहीं लगा रहेगा।" यह कहकर फिर उस जौहरी की दूकान पर गया। वह मोंढे पर बैठा मेरा इन्तज़ार खींच रहा था। देखते ही बोला, "आओ मेहरबान, बड़ी राह दिखाई।"

वहीं उठकर मेरा हाथ पकड़ लिया और चला। जाते-जाते एक बाग़ में ले गया। वह बड़ी बहार का बाग़ था। हौज़ और नहरों में फ़व्वारे

छूटते थे। मेवे तरह-तरह के फल रहे थे। हर एक दरख़्त मारे बोझ के झूम रहा था। रंग-बिरंग के पक्षी उन पर बैठे चहचहे कर रहे थे। और हर आलीशान मकान में सुथरा फ़र्श बिछा था। हम वहाँ नहर के किनारे एक बंगले में जाकर बैठे। एक दम के बाद आप उठकर चला गया। फिर दूसरी माक़ूल पोशाक पहनकर आया। मैंने देखकर कहा, "सुब्हानल्लाह! नज़र न लगे।"

"यह सुनकर मुस्कराया और बोला, "मुनासिब यह है कि साहब भी अपना लिबास बदल डालें।" उसकी ख़ातिर मैंने भी दूसरे कपड़े पहने। उस जवान ने बड़ी टीप-टाप से तैयारी दावत की की और सामान ख़ुशी का जैसा चाहिये मौजूद किया और फ़क़ीर से मुहब्बत गर्म करके मज़े की बातें करने लगा। इतने में साक़ी प्याला, सुराही बिल्लौर का लेकर हाज़िर हुआ और गज़क कई क़िस्म की लाके रखी, नमकदान चुन दिये और शराब का दौर शुरू हो गया। जब दो जाम की नौबत पहुँची, चार लड़के अमरद ख़ूबसूरत ज़ुल्फ़ें खोले हुए मजलिस में आए और गाने-बजाने लगे। यह आलम और ऐसा समाँ बँधा कि अगर तानसेन उस घड़ी होता, तो अपनी तान भूल जाता और बैजू बावरा सुनकर बावला हो जाता। इस मज़े में एक बारंगी वह जवान आँसू भर लाया। दो-चार क़तरे बेअख़्तियार निकल पड़े और मुझसे बोला, "अब हमारी-तुम्हारी दोस्ती जानी हुई और दिल का भेद दोस्तों से छिपाना किसी मज़हब में दुरुस्त नहीं। एक बात बेतकल्लुफ़ी से दोस्ती के भरोसे पर कहता हूँ। अगर हुक्म करो तो अपनी माशूक़ा को बुलवाकर इस मजलिस में अपने दिल की तसल्ली करूँ? उसकी जुदाई से दिल नहीं लगता।"

यह बात उसने ऐसी उत्सुकता से कही कि बग़ौर देखे-भाले इस फ़क़ीर का दिल भी उसे देखने को चाहने लगा। मैंने कहा, "मुझे तुम्हारी ख़ुशी चाहिये। इससे क्या बेहतर? सच है माशूक़ बिन कुछ अच्छा नहीं लगता।"

उस जवान ने चिलमन की तरफ़ इशारा किया। वैसे ही एक औरत काली-कलूटी भुतनी-सी जिसे देखने से ही इंसान बेअजल मर जावे, वह उस जवान के पास आ बैठी। मैं उसे देखने से डर गया। दिल में कहा, "यही बला महबूबा ऐसे परीज़ाद नौजवान की है, जिसकी इतनी तारीफ़, और जिसके लिए इतना शौक़ वह ज़ाहिर कर रहा था!" मैं लाहौल पढ़कर चुप ही रहा। उसी आलम में तीन दिन-रात मजलिस शराब और राग-रंग की जमी रही। चौथी रात को नशे और नींद का ज़ोर हुआ और बेअख्तियार बेखबर सो गया। जब सुबह हुई, उस जवान ने जगाया, और बदन टूटने और खुमार के आलम में कई प्याले पिलाकर अपनी माशूक़ा से कहा, "अब ज्यादा तकलीफ़ मेहमान को देनी मुनासिब नहीं।

दोनों हाथ पकड़ कर उठे। मैंने इजाज़त मांगी। खुशी-खुशी उसने इजाज़त दी। तब मैंने जल्द अपने पुराने कपड़े पहन लिये और अपने घर की राह ली और अपने परी की खिदमत में जा हाज़िर हुआ। मगर ऐसा इत्तफ़ाक़ कभू न हुआ था कि उसे अकेला छोड़कर रात कहीं गुज़ारी हो। इस तीन दिन की ग़ैर हाज़िरी पर निहायत शर्मिन्दा होकर उज्र किया और दावत का क़िस्सा और उसके इजाज़त देने का सारा हाल कह सुनाया। वह एक ज़माने की अक्लमन्द थी। मुस्कराकर बोली, "क्या हर्ज है, अगर एक दोस्त की खातिर रहना हुआ? हमने माफ़ किया, तेरा क्या क़ुसूर है? जब आदमी किसी के घर जाता है, तब उसकी मर्ज़ी से फिर आता है। लेकिन यह मुफ्त की मेहमानियां खा-पीकर चुपके हो रहोगे या इसका बदला भी उतारोगे। अब यह लाज़िम है कि जाकर उस सौदागर के बेटे को ले आओ और उससे दुगनी खातिर-मदारात करो। सामान, इन्तज़ाम की कुछ फ़िक्र नहीं। खुदा की मेहरबानी से एक दम में सब इन्तज़ाम हो जावेगा और बड़ी शान से दावत की यह मजलिस रौनक़ पावेगी।"

मैं उसका हुक्म पाकर जौहरी के पास गया और कहा, "तुम्हारा

फ़र्माना तो मैं सर-आँखों से बजा लाया। अब तुम भी मेहरबानी करके मेरी अर्ज़ क़ुबूल करो।"

उसने कहा, "मैं जानो-दिल से हाज़िर हूँ!"

तब मैंने कहा, "अगर इस बन्दे के घर तशरीफ़ ले चलो तो ऐन ग़रीबनवाज़ी हो।" उस जवान ने बहुत उज्र और हीले किये, पर मैंने पिंड न छोड़ा, जब तलक वह राज़ी न हुआ। साथ ही उसको अपने मकान पर ले चला। लेकिन राह में यही फ़िक्र करता था कि अगर आज अपना बस चलता तो इसकी ऐसी ख़ातिर-तवाज़ो करता कि यह भी ख़ुश होता। अब मैं इसे लिये जाता हूँ, देखिये क्या इत्तफ़ाक़ होता है।

इसी हैस-बैस में घर के नज़दीक पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि दरवाज़े पर धूम-धाम हो रही है। गलियारे में झाड़ू देकर छिड़काव किया गया है। यसावल और असाबदार खड़े हैं। मैं हैरान हुआ, लेकिन अपना घर जानकर अन्दर क़दम रखा। देखा तो तमाम हवेली में जा-बजा हर मकान के लायक़ फ़र्श बिछा है और मस्नदें लगी हैं। पानदान, गुलाबपाश, इत्रदान, पीकदान, चंगेरें, नरगिसदान क़रीने से धरे हैं। ताक़ों में रंगतरे, कँवले, नारंगियाँ और गुलाबियां रंग-बिरंग की चुनी हैं। एक तरफ़ रंगीन बर्क़ की टट्टियों में चिराग़ों की बहार है। एक तरफ़ झाड़ और सर्व कँवल के रौशन हैं और तमाम दालान और शहन-शीनों में सोने के शमादानों पर क़ाफ़ूरी शमएँ चढ़ी हुई हैं और जड़ाऊ फ़ानूसें ऊपर धरी हैं। सब आदमी अपने-अपने उहदों पर मुस्तैद हैं। बावर्चीख़ाने में देंगे ठनठना रही हैं। आबदारख़ाने की वैसी ही तैयारी है। कोरी-कोरी ठिलियां रुपे की घड़ौंचियों पर साफ़ियों और मुंकेरों से ढँकी रखी हैं। आगे चौकी पर डोंगे पर डोंगे कटोरे, थाली के साथ सरपोश धरे, बर्फ़ के आबख़ोरे लग रहे हैं और शोरे की सुराहियाँ हिल रही हैं।

ग़रज़ सब शाही सामान मौजूद है और कंचिनियां, भांड, भगतिये, कलावन्त, कव्वाल, अच्छी पोशाक पहने, साज़ के सुर मिलाए हाज़िर हैं।

फ़क़ीर ने उस जवान को ले जाकर मसनद पर बिठाया और दिल में हैरान था, कि 'या इलाही! इतने समय में यह सब तैयारी क्यों कर हुई?' हर तरफ़ देखता फिरता था लेकिन उस परी का निशान कहीं न पाया। इसी खोज में एक मर्तबा बावर्चीखाने की तरफ़ जा निकला। देखता हूँ तो वह नाज़नीन, गले में कुर्ती, पाँव में तहपोशी, बिना गहने-पाते सादी बनी हुई है—

नहीं मुहताज ज़ेवर का जिसे खूबी खुदा ने दी,
कि जैसे खुशनुमा लगता है चाँद बिन गहना।

वह बेचारी दावत की ख़बरगीरी में लगी हुई है और हर-एक खाने की ताकीद कर रही है कि, "ख़बरदार खाना मज़ेदार हो और नमक-पानी, बू-बास दुरुस्त रहे!" इस मेहनत से उसका गुलाब सा बदन पसीने-पसीने हो रहा है।

मैं पास जाकर सदक़े हुआ और इस समझ और लियाक़त को सराहकर दुआयें देने लगा। यह ख़ुशामद सुनकर, त्योरी चढ़ाकर वह बोली, "आदमी से ऐसे-ऐसे काम होते हैं कि फ़रिश्ते की मजाल नहीं। मैंने ऐसा क्या किया है, जो तू इतना हैरान हो रहा है? बस, बहुत सी बातें मुझे अच्छी नहीं लगतीं। भला, कह तो, यह कौन सी आदमीयत है कि मेहमान को अकेला बिठाकर इधर-उधर पड़ा फिरे? वह अपने जी में क्या कहता होगा? जल्द जा, मजलिस में बैठकर मेहमान की ख़ातिरदारी कर और उसकी माशूक़ा को भी बुलवाकर उसके पास बिठला।"

यह सुनते ही मैं उस जवान के पास गया, गर्म जोशी से उसका

स्वागत करने लगा। इतने में दो खूबसूरत गुलाम सुराही और जड़ाऊ जाम लिए रू-बरू आये और शराब पिलाने लगे। उसी समय मैंने उस जवान से कहा, "मैं सब तरह मुख़लिस और ख़ादिम हूँ। बेहतर यह है कि वह रूपवती जिसकी तरफ़ साहब का दिल है, तशरीफ़ लावे, तो बड़ी बात है। अगर फ़रमाओ तो आदमी बुलाने की ख़ातिर जावे।"

यह सुनते ही खुश होकर बोला "बहुत अच्छा, तुमने इस वक्त मेरे दिल की बात कही!" मैंने एक खोजे को भेजा। जब आधी रात गई, वह चुड़ैल खासे चौडोल पर सवार होकर बलाए-नागहानी सी आ पहुँची।

इस फ़क़ीर ने लाचार मेहमान का इस्तक़बाल करके निहायत तपाक से उस जवान के बराबर ला बिठाया। जवान उसे देखते ही ऐसा खुश हुआ जैसे दुनिया की नेमत मिली। वह भुतनी भी उस जवान परीज़ाद के गले लिपट गई। सच-मुच ऐसा तमाशा हुआ जैसे चौदहवीं के चाँद को गहन लगता है। मजलिस में जितने आदमी थे, अपनी-अपनी उंगलियाँ दांतो तले दाबने लगे कि क्या कोई बला उस जवान पर आ गई! सब की निगाह उसी तरफ़ थी। मजलिस का तमाशा भूलकर सभी उसका तमाशा देखने लगे। एक शख़्स किनारे से बोला, "इश्क़ और अक्ल में ज़िद है। जो कुछ अक्ल में न आवे, यह काफ़िर इश्क़ कर दिखावे। लैला को मजनूँ की आंखों से देखो।"

सभों ने कहा, "सच, यही बात है।"

यह फ़क़ीर उसके हुक्म के मुताबिक़ मेहमानदारी में हाज़िर था। हरचन्द वह नौजवान अपने साथ खाने-पीने पर मजबूर करता था। पर मैं हरगिज़ उस परी के डर के मारे अपना दिल खाने-पीने या सैर तमाशे की तरफ़ न लगाता था और मेहमानदारी का बहाना करके उसमें शामिल न होता था। इसी हालत में तीन दिन और तीन रातें गुज़रीं।

चौथी रात वह नौजवान निहायत जोश से बुलाकर कहने लगा, "अब हम भी रुखसत होंगे। तुम्हारी खातिर अपना सब कारोबार छोड़-छाड़कर तीन दिन से तुम्हारी खिदमत में हाज़िर हैं। तुम भी तो हमारे पास एकदम बैठकर हमारा दिल खुश करो।"

मैंने अपने जी में खयाल किया कि अगर इस वक्त इसका कहना नहीं मानता तो दुखी होगा। इस वास्ते नये दोस्त और मेहमान की खातिर रखनी ज़रूरी है। तब यह कहा, "साहब का हुक्म बजा लाना मंज़ूर है!"

इस बात को सुनते ही उस जवान ने प्याला सामने किया और मैंने पी लिया। फिर तो ऐसा दौर चला कि थोड़ी देर में सब आदमी मजलिस की हालत से बेखबर हो गए।

जब सुबह हुई और सूरज कुछ ऊपर चढ़ा, तब मेरी आँख खुली। मैंने देखा कि न वह तैयारी है, न वह मजलिस, न परी। फ़क़त खाली हवेली पड़ी है। मगर एक कोने में एक कम्बल लपेटा हुआ रखा है। जो उसको खोलकर देखा तो वह जवान और उसकी रखेल दोनों के सर कटे पड़े हैं।

यह हालत देखते ही हवास जाते रहे। अक्ल कुछ काम नहीं करती थी कि यह क्या था और क्या हुआ? हैरानी से हर तरफ़ तक रहा था। इतने में एक ख्वाजासरा, जिसे दावत के इन्तज़ाम में देखा था, नज़र पड़ा। मुझे उसके देखने से कुछ तसल्ली हुई। इस वारदात का हाल पूछा। उसने जवाब दिया, "तुझे इस बात की खोज करने से क्या हासिल, जो तू पूछता है?"

मैंने भी अपने दिल में ग़ौर किया कि "सच तो कहता है।" फिर ज़रा ताम्मुल करके मैं बोला, "खैर, न कहो, भला यह तो बताओ कि वह माशूक़ा किस मकान में है?"

तब उसने कहा, "जो मैं जानता हूँ सो कह दूँगा, लेकिन तुझ जैसे

अक्लमन्द आदमी ने हुज़ूर की मर्ज़ी बग़ैर दो-दिन की दोस्ती पर बेधड़क, बेतकल्लुफ़ होकर शराब पीना शुरू कर दिया, यह क्या मतलब रखता है ?"

मैं उसकी नसीहत सुनकर अपनी हरकत पर बहुत लज्जित हुआ। बारे महल्ली ने मेहरबान होकर उस परी के मकान का निशान बताया और मुझे रुख़सत किया। मैं उस फ़साद की तोहमत से अलग हुआ। मैं उस परी से मिलने की उत्सुकता में घबराया हुआ, गिरता-पड़ता, ढूँढ़ता-खोजता शाम के वक़्त उस कूचे में उसी पते पर जा पहुँचा और दरवाज़े के नज़दीक सारी रात इन्तज़ार में काटी। किसी के आने-जाने की आहट न मिली और किसी ने मेरा हाल न पूछा। उसी बेकसी की हालत में सुबह हो गई। जब सूरज निकला, उस मकान के कोठे की एक खिड़की से वह चन्द्रमुखी मेरी तरफ तरफ़ देखने लगी। उस वक़्त जो ख़ुशी का आलम मुझ पर गुज़रा, दिल ही जानता है। मैंने ख़ुदा का शुक्र अदा किया।

इतने में एक ख़ोजे ने मेरे पास आकर कहा, "उस मस्जिद में तू जाकर बैठ, शायद तेरा मतलब उसी जगह पूरा हो और तू अपने दिल की मुराद पावे।" मैं उसके कहने से वहाँ से उठकर मस्जिद में चला गया, लेकिन आंखें दरवाजे की तरफ़ लगी हुई थीं कि देखिए ग़ैब के पर्दे से क्या ज़ाहिर होता है ? जैसे रोज़ा रखने वाला सारे दिन शाम होने का इन्तज़ार करता है, मैंने भी दो दिन वैसी ही बेक़रारी में काटे। बारे जिस-तिस तरह से शाम हुई और दिन पहाड़-सा छाती से टला। एकबारगी वही ख़्वाजासरा, जिसने उस परी के मकान का पता बताया था, मस्जिद में आया, और मग़रिब की नमाज़ पढ़कर मेरे पास आया। उस मेहरबान ने, जो सारे भेद जानता था, निहायत तसल्ली देकर मेरा हाथ पकड़ लिया और अपने साथ ले चला। रफ्ता-रफ्ता एक बाग़ीचे में मुझे बिठाकर कहा, "जब तक तुम्हारी आशा पूरी न हो

यहाँ रहो ।" और वह रुख़सत होकर शायद मेरा हाल उस परी के हुज़ूर में कहने गया । मैं उस बाग़ के फूलों की बहार और चाँदनी का आलम, हौज़, नहरों में फ़व्वारे, सावन भादों के उछलने का तमाशा देख रहा था । लेकिन जब फूलों को देखता तो उस गुलबदन का ख़्याल आता । जब चांद पर नज़र पड़ती तब उस चन्द्रमुखी का मुखड़ा याद करता । उसके बग़ैर मेरी आंखों में सब बहार कांटे की तरह थी ।

बारे ख़ुदा ने उसके दिल को मेहरबान किया । एक दम के बाद वह परी दरवाज़े से चौदहवीं के चाँद की तरह बनाव-सिंगार किये, पेशवाज बादले की, संजाफ़ के मोतियों का दुर दामन में टँका हुआ था और सर पर ओढ़नी जिसमें आंचल पल्लू लहर गोखरू लगा हुआ था, सर-से-पांव तक मोतियों में जड़ी रविश पर आकर खड़ी हुई । उसके आने से, नए सिरे से तरो-ताज़गी उस बाग़ को और फ़क़ीर के दिल को हुई । एक दम इधर-उधर सैर करके शहनशीन में मसनद पर तकिया लगाकर बैठी ।

मैं दौड़कर जैसे परवाना शमआ के गिर्द फिरता है उसके सदक़े हुआ और ग़ुलाम की तरह दोनों हाथ जोड़कर खड़ा हुआ । इतने में वह ख़ोजा मेरी ख़ातिर सिफ़ारिश में अर्ज़ करने लगा । मैंने उसी ख़ोजे से कहा, "बन्दा गुनहगार और क़ुसूरवार है । जो-कुछ सज़ा मेरे लायक़ ठहरे, दी जाय ।" परी चूँकि बेहद नाख़ुश थी, बददिमाग़ी से बोली कि, "अब इसके हक़ में यही भला है कि सौ तोड़े अशर्फ़ी के लेवे और अपना असबाब दुरुस्त करके वतन को सिधारे ।"

मैं यह बात सुनते ही काठ हो गया और सूख गया कि अगर कोई मेरे बदन को काटे, तो एक बूँद लहू की न निकले । तमाम दुनिया आँखों के आगे अँधेरी लगने लगी । एक नामुरादी की आह बेअख़्तियार जिगर से निकली । आँसू भी टपकने लगे । सिवाए ख़ुदा की ज़ात के, उस वक़्त किसी से कोई आस न रही । बिलकुल निराश होकर सिर्फ़ इतना

बोला, "भला, ज़रा अपने दिल में ग़ौर फ़रमाइये, अगर मुझ कमनसीब को दुनिया का लालच होता तो अपना जानो-माल हुज़ूर में न खोता। क्या एकबारगी ख़िदमतगुज़ारी और जाँनिसारी का हक़ दुनिया से उठ गया, जो मुझ कमबख़्त से आप इतनी नाराज़ हैं। ख़ैर, अब मुझे ज़िन्दगी से कोई काम नहीं। माशूक़ की बेवफ़ाई से बेचारे नीमजाँ आशिक़ का निबाह नहीं होता।"

यह सुनकर, तीखी होकर, त्योरी चढ़ाकर ग़ुस्से से बोली, "ख़ूब, तो आप हमारे आशिक़ हैं! मेंढकी को भी ज़ुकाम हुआ? ऐ बेवक़ूफ़! अपने हौसले से ज्यादा बातें बनाना हवाई क़िला बनाना है। छोटा मुँह बड़ी बात। बस, चुप रह! यह निकम्मी बात मत कर। अगर किसी और ने ऐसी बेमतलब बात की होती तो, पर्वरदिगार की क़सम, उसकी बोटियाँ कटवाकर चीलों को बाँटती। पर क्या करूँ? तेरी ख़िदमत याद आती है। अब इसी में भलाई है कि अपनी राह ले। तेरी क़िस्मत का दाना-पानी हमारी सरकार में यहीं तलक था।"

फिर मैंने रोते-बिसूरते कहा, "अगर मेरी तक़दीर में यही लिखा है कि अपने दिल के मक़सद को न पहुँचूँ और जङ्गल-पहाड़ में सर टकराता फिरूँ तो लाचार हूँ।"

इस बात से भी दिक़ होकर कहने लगी, "मुझे ये फ़ुसहँदे, चोंचले और रहस्य की बातें पसन्द नहीं। इन इशारों की बातों के जो लायक़ हो, उसी से जाकर कर।" फिर उसी ग़ुस्से के आलम में उठकर अपने दौलतखाने को चली। मैंने बहुतेरा अपना सर पटका, उसने कोई ध्यान न दिया। लाचार मैं भी वहां से उदास और नाउम्मीद होकर निकला।

गरज़ चालीस दिन तक यही नौबत रही। जब शहर की कूचा-गर्दी से उकताता, जङ्गल में निकल जाता। फिर शहर की गलियों में दीवाना-सा आता। न दिन को खाता, न रात को सोता। जैसे धोबी

का कुत्ता, न घर का न घाट का । इन्सान की ज़िन्दगी खाने-पीने से है। आदमी अनाज का कीड़ा है। बदन में ताक़त बिल्कुल न रही, अपाहिज होकर उसी मस्जिद की दीवार तले जा पड़ा कि एक दिन वही ख़्वाजासरा जुमे की नमाज़ पढ़ने आया। मेरे पास से होकर गुज़रा मैं कमज़ोरी के आलम में यह शेर आहिस्ता से पढ़ रहा था—

इस दर्दे-दिल से मौत हो या दिल को ताब हो।
क़िस्मत में जो लिखा हो इलाही शिताब हो॥

अगरचे, ज़ाहिर में मेरी सूरत बिलकुल बदल गई थी, चेहरे की शक्ल ऐसी बनी थी कि जिसने मुझे पहले देखा था वह भी पहचान न सकता था कि यही वह आदमी है, लेकिन उस ख़्वाजा ने मेरी दर्दभरी आवाज़ सुनकर, मेरी तरफ़ ध्यान किया और मुझे ग़ौर से देखकर अफ़सोस करने लगा और मेहरबानी करके मेरी ओर मुख़ातिब हुआ कि, "आख़िर यह हालत अपनी कर डाली।"

मैंने कहा, "अब तो जो हुआ, सो हुआ। माल से भी हाज़िर था, जान भी सदक़े की। उसकी ख़ुशी यूँ ही तो क्या करूँ?"

यह सुनकर एक ख़िदमतगार मेरे पास छोड़कर वह मस्जिद में गया। नमाज़ और ख़ुतबे से फ़ारिग़ होकर जब बाहर निकला मुझे एक मेयाने में डालकर अपने साथ उस बेपर्वा परी की ख़िदमत में ले जाकर चिक़ के बाहर बिठाया। अगरचे मेरे चेहरे की रौनक़ कुछ बाक़ी न रही थी, पर मुद्दत तलक रात-दिन उस परी के पास रहने का इत्तफ़ाक़ हुआ था! फिर भी जान-बूझकर बेगानी होकर वह पूछने लगी, "यह कौन है?" उस आदमी ने कहा, "यह वही कमबख़्त बदनसीब है जो हुज़ूर की ख़फ़गी और ग़ुस्से में पड़ा था। उसी सबब से इसकी यह सूरत बनी है। इश्क़ की आग से जला जाता है। हरचन्द उस आग को आँसुओं के पानी से बुझाना चाहता है, पर वह दूनी भड़कती है। कुछ फ़ायदा नहीं। इसके अलावा अपने क़सूर के पछतावे से मरा जाता है।"

परी ने ठिठोली से फ़रमाया, "क्यों झूठ बकता है ? बहुत दिन हुए, उसके वतन पहुँचने की ख़बर, मुझे ख़बरदारों ने दी है। ख़ुदा जाने यह कौन है और तू किसका ज़िक्र करता है ?" उस दम ख़्वाजासरा ने हाथ जोड़कर अर्ज़ किया, "अगर जान से अमां पाऊँ तो अर्ज़ करूँ।" परी ने फ़रमाया, "तेरी जान तुझे बख़शी।"

ख़ोजा बोला, "आप की ज़ात क़द्रदान है। ख़ुदा के वास्ते चिलमन को दर्मियान से उठवाकर ज़रा पहचानिये और इसकी बेकसी की हालत पर रहम कीजिये। किसी का हक़ न पहचानना अच्छा नहीं। अब इसके हाल पर जो-कुछ तरस खाइये, बजा है। इससे सवाब होगा। इससे ज़्यादा कहना अदब से बाहर होगा। जो मिज़ाजे-मुबारक में आवे, वही बेहतर है।"

इतना कहने पर मुस्कराकर फ़रमाया, "भला कोई हो, उसे दारुशफ़ा में रखो। जब भला-चंगा होगा तब इसके हाल की पुरसिश की जाएगी।" ख़ोजा ने कहा, "अगर अपने दस्ते-ख़ास से इस पर गुलाब छिड़किये और ज़बान से कुछ फ़रमाइये तो इसको अपने जीने का भरोसा बँधे। नाउम्मीदी बुरी चीज़ है। दुनिया उम्मीद पर क़ायम है।" इस पर उस परी ने कुछ न कहा।

यह सवाल जवाब सुनकर मैं भी अपने जी से उकता रहा था। निधड़क बोल उठा, "अब इस तौर की ज़िन्दगी को दिल नहीं चाहता। पाँव तो क़ब्र में लटका चुका हूँ। मेरा इलाज राजकुमारी के हाथ में है, करें या न करें। बारे दिलों पर क़ुदरत रखने वाले ने उस पत्थरदिल को नर्म किया। मेहरबान होकर फ़र्माया, जल्द शाही हकीमों को हाज़िर करो।"

इस हुक्म के साथ ही हकीम आकर जमा हुए। नब्ज़ देखकर बहुत ग़ौर किया। आख़िर तशख़ीस यह ठहरी कि ये शख़्स कहीं आशिक़ हुआ। सिवाय माशूक़ से वस्ल (संयोग) के इसका कोई इलाज नहीं।

जिस वक़्त वह मिले, ये सेहत पावे। जब हकीमों की ज़बानी भी मेरा मर्ज़ यही साबित हुआ, उसने हुक्म दिया, "इस नौजवान को गर्मावे में ले आओ। नहलाकर, खासी पोशाक पहनाकर हुज़ूर में ले आओ।"

यह हुक्म मिलते ही मुझे बाहर ले गए। हम्माम करवाकर, अच्छे कपड़े पहनाकर उस परी की ख़िदमत में हाज़िर किया। तब वह नाज़नीन तपाक से बोली, "तूने मुझे बैठे-बिठाए नाहक़ बदनाम और रुसवा किया। अब और क्या किया चाहता है? जो तेरे दिल में है, साफ़-साफ़ बयान कर।"

ऐ फ़क़ीरो! उस वक़्त यह आलम हुआ कि ऐसा लगता था कि मैं खुशी के मारे मर जाऊँगा। ऐसा फूला कि जामे में न समाता था। सूरत-शक्ल बदल गई। खुदा का शुक्र किया और उससे कहा, "इस दम सारी हकीमी आप पर खत्म हुई कि मुझ-से मुर्दे को एक बात में ज़िन्दा किया। देखो तो, उस वक़्त से इस वक़्त तक मेरे हाल में कितना फ़र्क़ हो गया?" यह कहकर तीन बार उसके गिर्द फिरा और सामने आकर खड़ा हुआ। उसने कहा, "हुज़ूर से यह हुक्म होता है कि जो तेरे जी में है, सो कह!"

"बन्दे के लिये सात मुल्कों की बादशाहत से ज्यादा यह है कि ग़रीबनवाज़ी करके इस आजिज़ को क़ुबूल कीजिये और अपनी क़दम-बोसी से सरफ़राज़ी दीजिये।"

एक लमहा तो वह मेरी बात सुनकर ग़ोते में आ गई, फिर कनखियों से देखकर कहा, "बैठो, तुमने ख़िदमत और वफ़ादारी ऐसी ही की है, जो-कुछ कहो सो फबती है और अपने दिल पर भी नक़श है। खैर, हमने क़ुबूल किया!"

उसी दिन अच्छी सायत और शुभ लगन में चुपके-चुपके क़ाज़ी ने निकाह पढ़ दिया और इतनी मेहनत और आफ़त के बाद खुदा ने यह दिन दिखाया कि मैंने अपने दिल की मुराद पाई। लेकिन दिल में जैसी

आज़ू उस परी से हम बिस्तर होने की थी वैसी ही जी में बेकली उस अजीब वारदात को मालूम करने की भी थी, क्योंकि आज तक मैं यह न समझ सका था कि यह परी कौन है ? और वह साँवला, सजीला हब्शी कौन है जिसने काग़ज़ के एक पुर्ज़े पर इतनी अशर्फ़ियों के बदले मेरे हवाले किये थे ? और बादशाहों के लायक़ दावत की तैयारी एक ही पहर में क्योंकर हुई ? और वे दोनों बेगुनाह उस मजलिस में क्यों मारे गए और बावजूद खिदमतगुज़ारी और नाज़बर्दारी के, मेरे साथ ख़फ़गी और ग़ुस्से का सबब क्या हुआ ? और फिर एकबारगी मुझ आजिज़ को यूँ सर-बलन्द क्यों किया ? ग़रज़ इसी वास्ते निकाह की रस्म हो जाने के आठ दिन बाद भी संयोग का इरादा न किया, रात को साथ सोता, दिन को यूँहीं उठ खड़ा होता।

एक दिन ग़ुस्ल करने के लिये मैंने एक ख़ब्वास को कहा कि, "थोड़ा पानी गर्म करदे तो मैं नहाऊँ।" मल्का मुस्कराकर बोली, "किस बिरते पर तित्ता पानी ?" मैं ख़ामोश हो रहा। लेकिन वह परी मेरी हरकत से हैरान हुई। यहाँ तक कि एक रोज़ बोली, "तुम भी अजब आदमी हो, या इतने गर्म या ठंडे, इसको क्या कहते हैं ? अगर तुम में इतनी ताक़त न थी तो क्यों ऐसी कच्ची हवस पकाई ?"

उस वक़्त मैंने बेधड़क कहा, "ऐ, जानी मुन्सिफ़ी शर्त है। आदमी को चाहिये कि इंसाफ़ से न चूके।"

बोली, "अब क्या इंसाफ़ रह गया है ? जो कुछ होना था, सो हो चुका।"

मैंने कहा, "वाक़ई बड़ी आज़ू और मुराद मेरी यही थी, सो मुझे मिली। लेकिन मेरा दिल दुविधे में है और दोदिले आदमी की ख़ातिर परेशान रहती है। उससे कुछ नहीं हो सकता। वह इंसानियत से ख़ारिज हो जाता है। मैंने अपने दिल में क़ौल किया था कि इस निकाह के बाद (जो सही मानों में दिल की शादी है) बाज़ी-बाज़ी बातें, (जो ख़याल में

नहीं आतीं और नहीं खुलतीं) हुज़ूर से पूछूँगा ताकि ज़ुबाने-मुबारक से बयान उसका सुनूँ तो जी को तस्कीन हो।"

उसी परी ने चीं-बजबीं होकर कहा, "क्या ख़ूब! अभी से भूल गए! याद करो, बारहा हमने कहा है कि हमारे काम में हरगिज़ दख़ल न दीजियो और किसी बात में एतराज़ न कीजियो! मामूल के ख़िलाफ़ यह बेअदबी करना क्या लाज़िम है?"

फ़क़ीर ने हँसकर, "जैसे और बेअदबियाँ माफ़ करने का हुक्म है, एक यह भी सही?"

वह परी नज़रें बदलकर तेहे में आकर आग-बगूला बन गई और बोली, "अब तू बहुत सर चढ़ा! जा अपना काम कर, इन बातों से तुझे क्या फ़ायदा होगा?"

मैंने कहा, "दुनिया में अपने बदन की शर्म सबसे ज्यादा होती है। लेकिन एक दूसरे का वाक़िफ़कार हो जाता है। पस, जब ऐसी चीज़ों पर रवा रखी तो और कौन सा भेद छिपाने लायक़ है?"

मेरे इस रहस्य को वह परी अपनी सूझ-बूझ से मालूम करके कहने लगी, "यह बात सच है। पर जी में यह सोच आता है कि अगर मुझ निगोड़ी का राज़ फ़ाश हो तो बड़ी क़यामत मचे।"

मैं बोला, "यह क्या ज़िक्र है? बन्दे की तरफ़ से यह ख़याल दिल में न लाओ और खुशी से सारी कैफ़ियत जो बीती है, फ़रमाओ। हरगिज़ मैं दिल से ज़बान तक न लाऊँगा। किसी के कान पड़े क्या मजाल है?" जब उसने यह देखा कि अब सिवाय कहने के इस अज़ीज़ से छुटकारा नहीं तो लाचार होकर बोली, "इन बातों को कहने में बहुत-सी ख़राबियाँ हैं। तू ख़्वाह-मख़्वाह दर-पै हुआ। ख़ैर, तेरी ख़ातिर अज़ीज़ है, इसलिये अपनी सरगुज़श्त बयान करती हूँ। तुझे भी उसको पोशीदा रखना ज़रूरी है। ख़बर शर्त!"

ग़रज़ बहुत-सी ताकीद करके कहने लगी कि मैं बदबख्त मुल्क

दमिश्क़ के सुल्तान की बेटी हूँ और वह सारे सुल्तानों से बड़ा बादशाह है। सिवाय मेरे कोई लड़का-बाला उसके यहां नहीं हुआ। जिस दिन से पैदा हुई, माँ-बाप के साए में नाज़ो-नेम और ख़ुशख़ुर्रमी से पली। जब होश आया, अपने दिल को ख़ूबसूरतों और नाज़नीनों के साथ लगाया। चुनाँचे सुथरी-सुथरी परीज़ाद हमजोली अमीरज़ादियाँ मुसाहिबत में और अच्छी-अच्छी क़ुबूल सूरत हमउम्र ख़वासें सहेलियाँ ख़िदमत में रहती थीं। तमाशा-नाच और राग-रंग का हमेशा देखा करतीं, दुनिया के भले-बुरे से कुछ सरोकार न था। अपनी बेफ़िक्री के आलम को देखकर सिवाय ख़ुदा के शुक्र के कुछ मुँह से न निकलता था।

इत्तफ़ाक़न तबीअत ऐसी बेमज़ा हुई कि न किसी की भावे, न ख़ुशी की मजलिस ख़ुश आवे। सौदाई सा मिज़ाज हो गया, दिल उदास और हैरान; न किसी की सूरत अच्छी लगे, न बात कहने-सुनने को जी चाहे। मेरी यह हालत देखकर दाई-ददा, छूछूअंगा, सब की सब फ़िक्र में पड़ गईं और क़दम पर गिरने लगीं। यही नमकहलाल ख्वाजा-सरा बहुत पहले से मेरा राज़दार और वाक़िफ़कार है। इससे कोई बात छुपी नहीं। मेरी वहशत देखकर बोला कि अगर राजकुमारी थोड़ा सा शर्बत वर्क़ुल-ख़याल का पी लिया करें तो मुम्किन है कि तबिअत बहाल हो जाय और मिज़ाज में ठंडक आवे। उसके इस तरह कहने से मुझे भी शौक़ हुआ। तब मैंने फ़रमाया, 'जल्द हाज़िर कर।'

"खोजा बाहर गया और एक सुराही उसी शर्बत की तकल्लुफ़ से बनाकर बर्फ़ में लगाकर लड़के के हाथ लिवाकर आया और जो-कुछ फ़ायदा बयान किया था, वैसा ही देखा। उसी वक़्त उस ख़िदमत के इनाम में एक भारी ख़िलअत खोजे को इनायत की और हुक्म किया कि "एक सुराही हमेशा इसी वक़्त हाज़िर किया कर।" उस दिन से यह दस्तूर हो गया कि ख्वाजासरा सुराही उसी छोकरे के साथ लिवा-

लावे और बन्दी पी जावे। जब उसका नशा शुरू होता तो उसकी लहर में उस लड़के से ठट्ठा, मज़ाक़ करके दिल बहलाती थी। वह भी जब ढीठ हुआ, तब अच्छी-अच्छी मीठी-मीठी बातें करने लगा और अचम्भे की नक़लें करने लगा, बल्कि आहो-ज़ारी भी भरने लगा और सिसकियाँ भी लेने लगा। सूरत तो उसकी तरहदार, लायक़ देखने के थी। बेअख्तियार जी चाहने लगा। मैं दिल के शौक़ से और अट-खेलियों के ज़ौक़ से हर-रोज़ इनाम बख्शिश देने लगी। पर वह कम्बख्त उन्हीं कपड़ों में जो हमेशा से पहन रहा था, हुज़ूर में आता; बल्कि वह लिबास भी मैला-कुचैला हो जाता।"

"एक दिन पूछा कि 'तुझे सरकार से इतना-कुछ मिला, पर तूने अपनी सूरत वैसी की वैसी ही परेशान रखी। क्या सबब है ? वे रुपये कहां खर्च किये या जमा कर रखे ?" लड़के ने यह खातिरदारी की बातें जो सुनीं और मुझे हाल-पुर्सां पाया तो आंसू डबडबाकर कहने लगा, 'जो-कुछ आप ने इस गुलाम को इनायत किया, सब उस्ताद ने ले लिया। मुझे एक पैसा नहीं दिया। कहां से दूसरे कपड़े बनवाऊँ जो पहनकर हुज़ूर में आऊँ ? इसमें मेरा क़ुसूर नहीं, मैं लाचार हूँ।' उसके इस ग़रीबी के कहने पर तरस आया। उसी वक्त ख्वाजासरा से फ़रमाया कि 'आज से इस लड़के को अपनी सुहबत में तर्बियत कर और अच्छा लिबास तैयार करवाकर पहना और लौंडों में बेफ़ायदा खेलने-कूदने न दे। बल्कि अपनी खुशी यह है कि हुज़ूर की खिदमत के लायक़ आदाब सीखे और हाज़िर रहे।' ख्वाजासरा मेरे फ़रमाने के मुआफ़िक हुक्म बजा लाया और मेरी मर्ज़ी जो उधर देखी उसकी निहायत ख़बरगीरी करने लगा।

थोड़े दिनों में फ़रागत पाने और अच्छा खाने-पीने से उसका रंग-रौग़न कुछ-का-कुछ हो गया और कैंचुली सी डाल दी। मैं अपने दिल को हरचन्द संभालती पर उस काफ़िर की सूरत जी में ऐसी खुब गई

थी कि यही जी चाहता कि मारे प्यार के उसे कलेजे में डाल रखूँ और अपनी आंखों से एक पल जुदा न करूँ।

आखिर उसको मुसाहिबत में दाखिल किया और तरह-ब-तरह की खिलअतें और रंग-बिरंग के जवाहिरात उसे पहनाकर देखा करती। बारे उसके नज़दीक रहने से आँखों को सुख, और कलेजे को ठंडक हुई। हर दम उसकी खातिरदारी करती, आखिर को मेरी हालत यहाँ तक पहुँची कि अगर एक दम को कुछ ज़रूरी काम को मेरे सामने से हट जाता तो चैन न आता।

कई बरस के बाद जब वह बालिग़ हुआ, मसें भीगने लगीं, छब-तख्ती दुरुस्त हुई तब उसका चर्चा बाहर दरबारियों में होने लगा। दरबान, खन्ने, बारीदार, यसावल और चोबदार उसको महल के अन्दर आने-जाने से मना करने लगे। आखिर उसका आना-जाना बन्द हुआ। मुझे उसके बग़ैर कल न पड़ती थी, वक़्त एक दम पहाड़ सा गुज़रता। जब यह हाल नाउम्मीदी का सुना, ऐसी बदहवास हो गई गोया मुझ पर क़यामत टूटी और यह हालत हुई कि न कुछ कह सकती हूँ। कुछ बस नहीं चल सकता, इलाही क्या करूँ।

मुझे अजब तरह का क़लक़ हुआ और मारे बेक़रारी के उसी खोजे को जो मेरा भेदी था, बुलाकर कहा, "मुझे उस लड़के का ख़याल और उसकी परवरिश मंज़ूर है। इस वक़्त की मसलहत यह है कि एक हज़ार अशर्फ़ी पूँजी देकर चौक के चौराहे पर दुकान जौहरी की करवा दो जिससे तिजारत करके उसके नफ़े से अपनी गुज़र फ़राग़त से कर लिया करे और मेरे महल के क़रीब एक हवेली अच्छे नक्शे की उसके रहने के लिये बनवा दो। लौंडी-गुलाम, नौकर-चाकर जो ज़रूरी हों, मोल लेकर और तनख़्वाह मुक़र्रर करके उसके पास रखवा दो कि किसी तरह बेआराम न हो।"

उस ख़्वाजासरा ने उसके रहने-सहने और जौहरी का काम करने और

तिजारत की सब तैयारी कर दी। थोड़े अर्से में उसकी दूकान ऐसी चमकी और ऐसी तरक्क़ी हुई कि जो क़ीमती और शानदार ख़िलअतें और क़ीमती जवाहिरात, बादशाह की सरकार में और अमीरों के यहाँ दरकार होते, उसी के यहां मिलते। आहिस्ता-आहिस्ता यह दुकान ऐसी जमी कि जो तुहफ़ा हर-एक मुल्क का चाहिये, वहीं मिले। सब जौहरियों का रोज़गार उसके आगे मन्दा हो गया। ग़रज़ उस शहर में उसकी बराबरी कोई न कर सकता, बल्कि किसी मुल्क में कोई वैसा न था।

उस कारोबार में उसने तो लाखों रुपये कमाए। पर जुदाई उसकी रोज़-बरोज़ मेरे तन-बदन का नुक़सान करने लगी। कोई तदबीर न बन आई कि उसको देखकर अपने दिल की तसल्ली करूँ। सलाह की ख़ातिर उसी वाक़िफ़कार महल्ली (ख़ोजे) को बुलाया और कहा, "कोई ऐसी सूरत बन नहीं आती कि ज़रा उसकी सूरत देखूं और अपने दिल को सब्र दूँ मगर एक उपाय यह है कि एक सुरंग उस हवेली से खुदवा कर महल में मिलवा दो। हुक्म करते ही थोड़े दिनों में ऐसी नक़ब तैयार हुई कि सांझ होते ही चुपके ही वह ख़्वाजासरा उस जवान को उसी राह से ले आता। तमाम रात शराबो-कबाब और ऐशो-इशरत में कटती। मैं उससे मिलने से आराम पाती, वह मेरे देखने से ख़ुश होता। जब सुबह का तारा निकलता और मोअज़्ज़िन अज़ान देता, महल्ली उसी राह से उस जवान को उसके घर पहुंचा देता। इन बातों से सिवाय उस ख़ोजे के और दो दाइयों के (जिन्होंने मुझे दूध पिलाया और पाला था) चौथा आदमी कोई वाक़िफ़ न था।

मुद्दत तलक इस तरह से गुज़री। एक रोज़ यह इत्तफ़ाक़ हुआ कि हस्ब-मामूल ख़्वाजासरा उसको बुलाने गया। देखा तो वह जवान फ़िक्रमन्द सा चुपका बैठा है। महल्ली ने पूछा, "आज ख़ैर तो है, क्यों ऐसे रंजीदा हो रहे हो? चलो, हुज़ूर में याद फ़रमाया है।"

उसने हरगिज़ कुछ जवाब न दिया, न ज़बान हिलाई। ख़्वाजा-

सरा अपना-सा मुँह लेकर अकेला फिर आया और उसका हाल अर्ज़ किया। मुझे जो शैतान ने खराब किया, उसपर भी मुहब्बत उसकी दिल से न भूली। अगर यह जानती कि उस नमकहराम बेवफ़ा की इश्क़ और चाह आखिर को बदनाम और रुसवा करेगी और इज्ज़त, लाज सब ठिकाने लगेगी, तो उसी दम उस काम से बाज़ आती और तौबा करती। फिर उसका नाम न लेती, न अपना दिल उस बेहया को देती। पर होना तो यूँ था, इसलिए उसकी बेजा हरकत को खातिर में न लाई और उसके न आने को माशूक़ों का चोंचला और नाज़ समझा। उसका नतीजा यह देखा कि इस सरगुज़श्त से बग़ैर देखे-भाले तू भी वाक़िफ़ हुआ। नहीं तो मैं कहां और तू कहां? खैर जो हुआ, सो हुआ। इसकी खरदिमागी पर खयाल न करो।

दोबारा मैंने खोजे के हाथ पैग़ाम भेजा कि "अगर तू इस वक्त नहीं आवेगा तो मैं किसी न किसी ढब से वहीं आती हूँ। लेकिन मेरे आने में बड़ी क़बाहत है। अगर यह राज़ फ़ाश हुआ तो तेरे हक़ में बहुत बुरा है। तब ऐसा काम न कर जिसमें सिवाय रुसवाई के और कुछ फल न मिले। बेहतर यही है कि जल्द चला आ, नहीं तो मुझे पहुँचा जान। जब यह सन्देसा गया और मेरा निपट इश्तियाक़ देखा, भोंडी सी सूरत बनाए हुए नाज़-नखरे से आया।

जब मेरे पास बैठा तब मैंने उससे पूँछा कि "आज रुकावट और खफ़गी का क्या सबब है? इतनी शोखी और गुस्ताखी तूने कभी न की थी। हमेशा बिला-उज्र हाज़िर होता था।"

तब उसने कहा, "मैं गुमनाम ग़रीब हुज़ूर की तवज्जुह से, और आप की मेहरबानी के सबब इस हैसियत को पहुँचा। बहुत आराम से ज़िन्दगी कटती है। आप के जानो-माल को दुआ करता हूँ। यह क़ुसूर राजकुमारी के माफ़ करने के भरोसे पर मुझसे हुआ। माफ़ी का उम्मीदवार हूं।"

मैं तो जानो-दिल से उसे चाहती थी। उसकी बनावट की बातों को मान लिया और शरारत पर नज़र न की। बल्कि फिर दिल्दारी से पूछा "क्या तुझको ऐसी मुश्किल पेश आई जो ऐसा परेशान हो रहा है। उसको अर्ज़ कर, उसकी भी तदबीर हो जाएगी।"

ग़रज़ उसने अपनी ख़ाकसारी की राह से यही कहा, "मुझको सब मुश्किल है, आप के सामने सब आसान है।" आख़िर उसकी बातों के ढंग से और बतक़ल्लाव से यह खुला कि एक बाग़, निहायत सरसब्ज़ और इमारत आली, हौज़, तालाब कुएँ पुख्ता समेत, उसकी हवेली के नज़दीक बीच शहर में बिकाऊ है, और उसी बाग़ के साथ एक लौंडी भी, जो गायन और संगीत में ख़ूब सलीक़ा रखती है। ये दोनों एक-साथ बिक रहें हैं न अकेला बाग़, न अकेली लौंडी; जैसे ऊट के गले में बिल्ली। जो कोई वह बाग़ ले, कनीज़ की क़ीमत भी दे और तमाशा यह है कि बाग़ का मोल पांच हज़ार रुपये और उस बांदी का पांच लाख। मुझ नाचीज़ से इतनी बड़ी रक़म का बन्दोबस्त नहीं हो सकता

मैंने उसके दिल में उनकी ख़रीदारी का बहुत बेअख़्तियार शौक़ पाया और इसी वास्ते, उसके मन में उलझन और दिल में परेशानी थी। बावजूदे कि वह मेरे रू-बरू बैठा था, उसका चेहरा उतरा हुआ और जी उदास था। मुझे तो हर घड़ी और हर पल उसकी ख़ातिरदारी मंज़ूर थी। उसी वक़्त ख़्वाजासरा को मैंने हुक्म दिया कि 'कल सुबह को उस बाग़ की क़ीमत लौंडी समेत चुकाकर, क़िबाला बाग़ का और ख़त एनीज़ का लिखवाकर इस शख़्स के हवाले करो और मालिक को नक़द क़ीमत शाही ख़ज़ाने से दिलवा दो।

इस हुक्म के सुनते ही वह जवान आदाब बजा लाया और उसके मुँह पर रौनक़ आ गई। सारी रात उसी क़ायदे से जैसे हमेशा गुज़रती थी, हँसी-ख़ुशी से कटी। ख़ोजे ने मेरे कहने के मुताबिक़ उस बाग़ को

और लौंडी को ख़रीद दिया। फिर वह जवान हस्ब-मामूल रात को आया-जाया करता।

एक रोज़ बहार के मौसम में जब कि मकान भी दिलचस्प था, बदली उँमड़ रही थी, फुहारें पड़ रही थीं, बिजली भी कौंद रही और हवा नर्म-नर्म बहती थी। गरज़ अजब कैफ़ियत उस दम थी। जैसे ही रंग-बिरंग के हुबाब और गुलाबियाँ ताक़ पर चुनी हुई नज़र पड़ीं, दिल ललचाया कि एक घूँट लूँ, जब दो-तीन प्यालों की नौबत पहुँची, वैसे ही उस नए ख़रीदे हुए बाग़ का ख़याल गुज़रा। मेरा शौक़ बढ़ा कि इस आलम में कुछ देर वहाँ की सैर किया चाहिये।

कमबख्ती जो आवे, ऊँट चढ़े, कुत्ता काटे। बैठे-बिठाए जो दिल में यह समाई तो एक दाई को साथ लेकर सुरंग की राह से उस जवान के मकान को गई और वहाँ से बाग़ की तरफ़ चली। देखा तो सचमुच बाग़ की बहार स्वर्ग की बराबरी कर रही है। बारिश के क़तरे जो दरख्तों के सरसब्ज़ पत्तों पर पड़े हैं, तो गोया ज़मुर्रद की पटरियों पर मोती जड़े हैं, और उस बदली में फूलों की सुखी ऐसी लगती है जैसे शाम को धनुष फूली हो और नहरें लबालब, आईने के फ़र्श की तरह नज़र आती हैं और मौजें लहराती हैं!

गरज़ उस बाग़ में हर तरफ़ सैर करती फिरती थी कि दिन ढल गया, शाम की सियाही ज़ाहिर हुई। इतने में वह जवान एक रविश पर नज़र आया और मुझे देखकर बहुत अदब और गर्मजोशी से आगे बढ़के मेरे हाथ को अपने हाथ पर धरकर बारादरी की तरफ़ ले चला। जब मैं वहाँ गई तो वहाँ के आलम ने सारे बाग़ की कैफ़ियत को दिल से भुला दिया। रोशनी का यह ठाठ था, कि जा-बजा सर्वे-चिराग़ाँ, कँवल और फ़ानूसें रोशन थीं और फ़ानूसे-ख़याल और शमए मजलिस हैरान कि शबे-बरात चाँदनी और चिराग़ों के बावजूद उसके आगे अँधेरी लगती। एक तरफ़ आतशबाज़ी, फुलझड़ी, अनार दाऊदी, भुचनिया, मरवारीद,

महताबी हवाई चर्खी, हथ-फूल, जाही, जूही, पटाखे, सितारे छुटते थे।

इस अर्से में बादल फट गया और चाँद निकल आया, बिलकुल जैसे नाफ़रमानी जोड़ा पहने हुये कोई माशूक़ नज़र आता है। समाँ बँध गया, चाँदनी छिटकते ही जवान ने कहा कि, "अब चलकर बाग़ के बालाखाने पर बैठिये।"

मैं ऐसी अहमक़ हो गई थी कि जो वह निगोड़ा कहता, सो मान लेती। अब यह नाच नचाया कि मुझको ऊपर ले गया। वह कोठा ऐसा बलन्द था कि तमाम शहर और बाज़ार के चिराग़ उसके नीचे वाले बाग़ में शामिल मालूम होते थे।

मैं उस जवान के गले में बाँह डाले हुए ख़ुशी के आलम में बैठी थी। इतने में एक बेस्वा, निहायत भोंडी-सी, 'सूरत न शकल चूल्हे में से निकल,' शराब का शीशा हाथ में लिये हुए आ पहुँची। मुझे उस वक्त उसका आना बहुत बुरा लगा और उसकी सूरत देखने से दिल में हौल उठी।

तब मैंने घबराकर जवान से पूछा, "यह बला कौन है? तूने कहाँ से पैदा की? वह जवान हाथ बाँधकर कहने लगा कि यह वही लौंडी है, जो इस बाग़ के साथ हुज़ूर की इनायत से ख़रीद हुई।"

मैंने मालूम किया कि इस अहमक़ ने बड़ी ख्वाहिश से इसको लिया है, शायद इसका दिल उसपर मायल है। इसी वजह से पेचो-ताब खाकर मैं चुपकी हो रही।

लेकिन दिल उसी वक्त से मुक़द्दर हो गया, नाखुशी मिज़ाज पर छा गई, तिसपर क़यामत उस ऐसे-तैसे ने यह की कि साक़ी उस बेशरम को बनाया। उस वक्त मैं अपना लहू पीती थी और जैसे तूती को कोई कव्वे के साथ एक पिंजरे में बन्द करता है, न जाने की फ़ुर्सत पाती थी और न बैठने को जी चाहता था।

क़िस्सा मुख्तसर वह बूँद-की-बूँद ऐसी शराब थी, जिसके पीने से आदमी हैवान हो जावे। उसने दो चार जाम पै-दरपै उसी तेज़ पानी के, जवान को दिये और आधा प्याला जवान की मिन्नत से मैंने ज़हरमार किया। आख़िर वह बेहया भी बदमस्त होकर उस मरदूद से बेहूदा अदाए करने लगी और वह चिबिल्ला भी नशे में बेलिहाज़ हो चला और नामाक़ूल हरकतें करने लगा।

मुझे ऐसी ग़ैरत आई कि अगर उस वक़्त ज़मीन फटे तो मैं समा जाऊँ। लेकिन उसकी दोस्ती के कारण, मैं बिलल्ली उस पर भी चुप रही।

पर वह तो असल का पाजी था, मेरे इस दरगुज़र करने को न समझा। नशे की लहर में और भी दो प्याले चढ़ा गया कि रहता-सहता होश जो था, वह भी गुम हुआ और मेरी तरफ़ से बिलकुल धड़का जी से उठा दिया। न उस बेवफ़ा में वफ़ा न उस बेहया में हया। जैसी रूह वैसे फ़रिश्ते। मेरी उस वक़्त यह हालत थी कि ऊसर चौके डोमनी गावे, ताल बेताल अपने-ऊपर लानत करती थी कि 'क्यों तू यहाँ आई जिसकी यह सज़ा पाई?'

आख़िर कहाँ तक सहूँ? मेरे सर से पांव तक आग लग गई और अंगारों पर लोटने लगी। इस ग़ुस्से और तैश में यह कहावत 'बैल न कोवा को दे गौन, यह तमाशा देखे कौन!' कहती हुई वहां से उठी।

उस शराबी ने अपनी ख़राबी दिल में सोची कि अगर राजकुमारी इस वक़्त नाख़ुश हुई तो कल मेरा क्या हाल होगा और सुबह को क्या क़यामत मचेगी? अब यह बेहतर है कि राजकुमारी को मार डालूं। यह इरादा उस ग़ैबानी की सलाह से जी में ठहराकर, गले में पटका डालकर मेरे पांव पर गिर पड़ा और पगड़ी सर से उतारकर मिन्नतो-ज़ारी करने लगा।

मेरा दिल तो उस पर लट्टू हो रहा था, जिधर लिये फिरता था,

लिये फिरती थी। चकी की तरह उसके अख़्तियार में थी। जो कहता था सो करती थी। ज्यूँ-त्यूँ फुसला-बहलाकर फिर बिठलाया और उसी शराबे-दो आतशा के दो-चार प्याले आप भी पिये और मुझे भी पिलाए। एक तो ग़ुस्से के मारे जल-भुनकर कबाब हो रही थी, दूसरे ऐसी शराब थी कि जल्द बेहोश हो गई। कुछ हवास बाक़ी न रहे। तब उस बेरहम, नमकहराम, कट्टर, संगदिल ने तलवार से मुझे घायल किया, बल्कि अपनी दानिश्त में मार चुका। उस दम मेरी आंख खुली तो मुँह से यही यही निकला, "ख़ैर जैसा हमने किया वैसा पाया, लेकिन तू ख़ुद को मेरे ख़ूने-नाहक़ से बचाइयो—

मबादा हो कोई ज़ालिम तेरा गरीबांगीर।
मेरे लहू को तो दामन से धो, हुआ सो हुआ॥

किसी से यह भेद ज़ाहिर न कीजियो, हमने तो तुझसे जान तक दरगुज़र न की। फिर उसको ख़ुदा के हवाले करके मेरा जी डूब गया। मुझे अपनी सुध-बुध कुछ न रही।

शायद उस क़साई ने मुझे मुर्दा ख़याल करके क़िले की दीवार के तले लटका दिया। सो, तूने देखा, मैं किसी का बुरा न चाहती थी। लेकिन ये ख़राबियां क़िस्मत में लिखी थीं। मिटती नहीं कर्म की रेखा। इन आंखों के सबब यह कुछ देखा, अगर ख़ूबसूरतों के देखने का दिल में शौक़ न होता तो वो बदबख़्त मेरे गले का तौक़ न होता। अल्लाह ने यह काम किया कि तुझको वहां पहुँचा दिया और सबब मेरी ज़िन्दगी का किया। अब हया जी में आती है कि ये रुसवाइयां उठाकर ख़ुद को जीता रखूँ, या किसी को मुँह दिखाऊँ? पर क्या करूँ, मरने का अख़्तियार अपने हाथ में नहीं, ख़ुदा ने मारकर फिर जिलाया, आगे देखिये क़िस्मत में क्या बदा है।

ज़ाहिर मैं तो तेरी दौड़-धूप और ख़िदमत काम आई, जो वैसे

ज़ख्मों से शफ़ा पाई। तूने जानो-माल से मेरी खातिर की और जो कुछ अपनी बिसात थी हाज़िर किया। उन दिनों तुझे बेखर्च और परेशान देखकर वो रुक्का सैदी बहार को (जो मेरा खज़ांची है) लिखा, उसमें यही मज़मून था कि मैं खैरो-आफ़ियत से अब फ़लाने मकान में हूँ और मुझ बदक़िस्मत की खबर वालिदये-शरीफ़ा की खिदमत में पहुँचाइयो।

उसने तेरे साथ दो किश्तियां नक़द की खर्च की खातिर भेज दीं और जब तुझे खिलअत और जवाहिरात खरीदने को मुफ़्त सौदागर-बच्चे की दूकान को भेजा, मुझे यह भरोसा था कि वह कम-हौसला हर-एक से जल्द आशना हो बैठता है, तुझे भी अजनबी जानकर, मुमकिन है कि दोस्ती करने के लिए इतराकर दावत और ज़ियाफ़त करेगा। सो मेरा अन्दाज़ा ठीक निकला। जो-कुछ मेरे दिल में खयाल आया था, उसने वैसा ही किया। तू जब उससे कौल-क़रार फिर आने का करके मेरे पास आया, और मेहमानी का हाल और उसका बज़िद होना, तूने मुझे यह सब बताया, मैं दिल में खुश हुई कि जब तू उसके घर जाकर खाये-पियेगा, तब अगर तू भी उसको मेहमानी की खातिर बुलाएगा तो वो दौड़ा चला आएगा। इसलिए, मैंने तुझे जल्द रुखसत किया। तीन दिन पीछे, जब तू वहाँ से फ़रागत करके आया और मेरे रू-बरू ग़ैरहाज़िरी का उज़्र करने लगा, मैंने तेरी तसल्ली के लिए कहा, "कुछ हर्ज नहीं, जब उसने इजाज़त दी, तब तू आया। लेकिन बेशर्मी अच्छी नहीं कि दूसरे का एहसान अपने सर पर रखिए और उसका बदला न कीजिए। अब तू भी जाकर उससे यहाँ आने की दावत दे और अपने साथ ही साथ ले आ।" जब तू उसके घर गया तब मैंने देखा कि यहाँ कुछ असबाब मेहमानदारी का तैयार नहीं। अगर वह आ जाये तो क्या करूँ? लेकिन हमारे मुल्क में पुराने ज़माने से बादशाहों का यह दस्तूर है कि आठ महीने मुल्की और माली कारोबार के वास्ते मुल्कगीरी में बाहर रहते हैं और चार महीने बरसात के मौसम में क़िला-ए-मुबारक में जुलूस फ़रमाते हैं। उन दिनों दो-चार महीने से

बादशाह मुझ बदबख़्त के बन्दोबस्त की ख़ातिर मुल्क में तशरीफ़ ले गये थे।

जब तक तू उस जवान को साथ लेकर आवे कि सैदी बहार ने मेरा हाल बादशाह की ख़िदमत में (जो मुझ नापाक की वालिदा हैं) अर्ज़ किया, फिर मैं अपने क़ुसूर और गुनाह से शर्मिन्दा होकर उनके रू-बरू जाकर खड़ी हुई और जो हाल था, सब बयान कर दिया।

अगरचे उन्होंने दूरअन्देशी और ममता के कारण मेरे ग़ायब होने की ख़बर छुपा रखी थी कि ख़ुदा जाने इसका अंजाम क्या हो, अभी यह रुसवाई ज़ाहिर करना ठीक नहीं। इसीलिए मेरे ऐबों को उन्होंने अपने पेट में रख छोड़ा था। लेकिन मेरी तलाश में थीं। जब उन्होंने मुझे उस हालत में देखा और सब हाल सुना, आंख में आँसू भर लाईं और फ़रमाया कि, "ऐ कम्बख्त नाशुदनी! तूने जान-बूझकर बादशाह का नामो-निशान सारा खोया। हज़ार अफ़सोस! और अपनी ज़िन्दगी से भी हाथ धोया। काश कि तेरे एवज़ मैं पत्थर जनती तो सब्र आता। अब भी तौबा कर। जो क़िस्मत में था, सो हुआ। अब आगे क्या करेगी? जिएगी या मरेगी?

मैंने निहायत शर्मिन्दगी से कहा, "मुझ बेहया के नसीबों में यही लिखा था जो इस बदनामी और ख़राबी में ऐसी-ऐसी आफ़तों से बचकर जीती हूँ। इससे मरना ही भला था। अगरचे कलंक का टीका मेरे माथे पर लगा पर ऐसा काम नहीं किया जिसमें मां-बाप के नाम को ऐब लगे।"

मैंने कहा. "अब यह बड़ा दुःख है कि वे दोनों बेहया मेरे हाथ से बच जावें, और आपस मे रंग-रलियाँ मनावें और मैं उनके हाथों से यह कुछ देखूँ और अफ़सोस है कि मुझसे कुछ न हो सके। ये उम्मीदवार हूँ कि ख़ानसामाँ को हुक्म हो तो दावत का सामान अच्छी तरह इस कमबख्त के मकान पर तैयार करे तो मैं दावत के बहाने से उन दोनों बदबख्तों

को बुलवाकर उनके करतूत को सज़ा दूँ और अपना बदला लूँ। जिस तरह उसने मुझ पर हाथ छोड़ा और घायल किया, मैं भी दोनों के पुर्ज़े-पुर्ज़े करूँ, तब मेरा कलेजा ठंडा हो। नहीं तो इस ग़ुस्से की आग से फुँक रही हूँ। आख़िर जल-बलकर भूभल हो जाऊँगी।"

यह सुनकर अम्माँ ने आत्मा के दर्द से मेहरबान होकर, मेरी ऐबपोशी की और दावत का सारा इन्तज़ाम, इसी ख्वाजासरा के साथ जो मेरा राज़दार था, कर दिया। सब अपने-अपने कारख़ाने में आकर हाज़िर हुए। शाम के वक़्त तू उस मुये को लेकर आया, और बाद में तूने उसे भी बुलवाया।

जब वह भी आई और मजलिस जमी, शराब पीकर सब बदमस्त और बेहोश हुए और उनके साथ तू भी मस्त होकर मुर्दा-सा पड़ गया, मैंने एक हथियारबन्द औरत को हुक्म दिया, "उन दोनों का सर तलवार से काट डाल।"

उसने उसी वक़्त एक दम में तलवार निकालकर उन दोनों का सिर काट डाला और बदन लाल कर दिया। तुझ पर ग़ुस्से का कारण यह था कि मैंने तुझे दावत की इजाज़त दी थी, न कि दो-दिन की दोस्ती पर भरोसा करके साथ शराब पीने की। तेरी यह हिमाक़त मुझे पसन्द न आई। इस वास्ते कि जब तू पीकर बेहोश हुआ तब दोस्ती की उम्मीद तुझसे क्या रही? पर तेरी ख़िदमत के हक़ ऐसे ऐसे मेरी गर्दन पर हैं कि जो तुझसे ऐसी हरकत होती है, तो माफ़ करती हूँ।"

"ले, मैंने अपनी हक़ीक़त शुरू से आख़िर तक कह सुनाई। अब भी दिल में कुछ और हवस बाक़ी है? जैसे मैंने तेरी ख़ातिर करके तेरे कहने को हर तरह से क़ुबूल किया, तू भी मेरे कहने पर उसी सूरत से अमल कर। वक़्त की सलाह यही है कि अब इस शहर में रहना मेरे और तेरे हक़ में भला नहीं। आगे तू मालिक है!"

या माबूदल्लाह ! शहज़ादी तो इतना फ़र्मा कर चुप हो रही और यह फ़क़ीर तो दिलो-जान से उसके हुक्म को हर चीज़ पर मुक़द्दम जानता था और उसकी मुहब्बत के जाल में फसा था। मैं बोला, "जो मर्ज़ी-मुबारक में आवे, सो बेहतर है। यह ग़ुलाम बे-उज़्र बजा लावेगा।" जब राजकुमारी ने मुझे अपना पूरा फ़र्माबरदार और ख़िदमतगुज़ार समझा, तो कहा कि, "दो घोड़े चालाक और जाँबाज़ जो चलने में हवा से बातें करें, बादशाह के ख़ास अस्तबल से मँगवा कर तैयार रख।" मैंने वैसे ही परीज़ाद चार गुर्दे के घोड़े चुनकर ज़ीन बँधवाकर मँगवाए। जब थोड़ी-सी रात बाक़ी रही राजकुमारी मर्दाना लिबास पहनकर और पाँचों हथियार बाँधकर एक घोड़े पर सवार हुई और दूसरे घोड़े पर मैं असलहा सजाकर चढ़ बैठा और एक तरफ़ की राह ली।

जब रात तमाम हुई और सबेरा होने लगा, तब हम एक पोखर के किनारे पहुँचे। उतर कर मुँह-हाथ धोया। जल्दी-जल्दी कुछ नाश्ता करके फिर सवार होकर चले। कभी मल्का कुछ-कुछ बातें करती और यूँ कहती कि, "हमने तेरी खातिर, शर्म-हया, मुल्क-माल, माँ-बाप सब छोड़ा। ऐसा न हो कि तू भी उस ज़ालिम, बेवफ़ा की तरह मुलूक करे!"

कभी मैं कुछ हाल इधर-उधर का राह कटने के लिये कहता और उसकी बात का भी जवाब देता, "राजकुमारी, सब आदमी एक-से नहीं होते। उस पाजी के नुत्फ़े में कुछ ख़लल होगा जो उससे ऐसी हरकत हुई और मैंने तो जानो-दिल तुम पर सदक़े किया और तुमने मुझे हर तरह इज़्ज़त बख़्शी। अब मैं बन्दा बग़ैर दामों का हूँ। मेरे चमड़े की जूतियाँ अगर बनवाकर पहनो तो मैं आह न करूँ।"

ऐसी-ऐसी बातें आपस में होती थीं और रात-दिन चलने से काम था। कभी जो थकन के कारण कहीं उतरते तो जंगल के पशु-पक्षी शिकार करते, हलाल करके नमकदान से नून निकाल चकमक से आग

झाड़ भून-भानकर खा लेते और घोड़ों को छोड़ देते। वे अपने मुँह से घास-पात चर-चुगकर अपना पेट भर लेते।

एक रोज़ एक चटियल मैदान में जा निकले कि जहाँ बस्ती का नाम न था और आदमी की सूरत नज़र न आती थी। उस पर भी राजकुमारी के साथ रहने की वजह से दिन ईद और रात शब-बरात मालूम होती थी। जाते-जाते अनचित एक दरिया (कि जिसके देखने से कलेजा पानी हो) राह में मिला। किनारे पर जो खड़े होकर देखा तो जहाँ तलक निगाह ने काम किया, पानी ही पानी था। कुछ थल बेड़ा न पाया। या इलाही! अब इस समुन्दर से क्योंकर पार उतरें? एक दम इसी सोच में खड़ा रहा। आखिर दिल में यह लहर आई कि मल्का को यहीं बिठाकर मैं नाव-निवाज़ी की तलाश में जाऊँ। जब तलक असबाब गुज़ारे का हाथ आवे, उस समय तक वह नाज़नीन भी आराम पा ले।

तब मैंने कहा, "रानी! अगर हुक्म हो तो घाट-बाट इस दरिया का देखूँ!"

फ़र्माने लगी, "मैं बहुत थक गई हूँ और भूखी-प्यासी हो रही हूँ। मैं ज़रा दम ले लूँ, जब तक तू पार चलने की कुछ तदबीर कर।"

उस जगह एक दरख्त पीपल का था, बड़ा छत्तर बाँधे हुए कि अगर हज़ार सवार आएँ तो धूप और बारिश में उसके तले आराम पाएँ। वहाँ उसको बिठाकर मैं चला और चारों तरफ़ देखता था कि कहीं भी ज़मीन या दरिया पर निशान इंसान का पाऊँ। बहुतेरा सर मारा पर कहीं न पाया। आखिर मायूस होकर वहाँ से फिर आया तो उस परी को पेड़ के नीचे न पाया। उस वख्त की हालत क्या कहूँ कि होश जाता रहा। दीवाना-बावला हो गया। कभी दरख्त पर चढ़ जाता, और डाल-डाल, पात-पात फिरता। कभी हाथ-पाँव छोड़कर जमीन में गिरता और उस दरख्त की जड़ के आस-पास सदक़े होता, कभी चिंघाड़ मार-कर अपनी बेबसी पर रोता। कभी पच्छिम से पूरब को दौड़ा जाता, कभी

उत्तर से दक्खिन को फिर आता। ग़रज़ बहुतेरी ख़ाक छानी लेकिन उस नायाब मोती की निशानी न पाई। जब मेरा कुछ बस न चला, तब रोता और ख़ाक सर पर उड़ाता हुआ हर-कहीं तलाश करने लगा।

दिल में यह ख़याल आया कि कोई जिन उस परी को उठाकर ले गया और मुझे यह दाग़ दे गया, या उसके मुल्क से कोई उसके पीछे चला आया था, उस वक़्त अकेला पाकर मना-मनूकर फिर शाम की तरफ ले उड़ा। ऐसे ख़यालों से घबराकर कपड़े-वपड़े फेंक-फाँक दिये। नंगा-मंगा फ़क़ीर बनकर शाम के मुल्क में सवेरे से शाम तक ढूँढ़ता फिरता और रात को वहीं पड़ रहता।

सारा जहान रौंद मारा, पर अपनी राजकुमारी का नामो-निशान किसी से न सुना; न उसके ग़ायब होने का सबब मालूम हुआ। तब दिल में यह आया कि जब उस जान का तूने कुछ पता न पाया तो अब जीना भी बेकार है। किसी जंगल में एक पहाड़ नज़र आया, तब उसपर चढ़ गया और यह इरादा किया कि अपने को गिरा दूँ कि एक दम में सर-मुँह पत्थरों से टकराते-टकराते फूट जाएगा तो ऐसी मुसीबत से जी छूट जायेगा।

यह दिल में कहकर चाहता था कि अपने को गिराऊँ बल्कि पाँव भी उठ चुके थे कि किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया। इतने में होश आ गया, देखता हूँ तो एक सब्ज़पोश सवार मुँह पर नक़ाब डाले, मुझसे फ़र्माता है, "क्यों तू अपने मरने का इरादा करता है? ख़ुदा की मेहरबानी से नाउम्मीद होना कुफ़्र है। जब तलक साँस है, तब तलक आस है! अब थोड़े दिनों में रोम के मुल्क में तीन दरवेश तेरी तरह के ऐसी ही मुसीबत में फँसे हुए और ऐसे ही तमाशे देखे हुए, तुझसे मुलाक़ात करेंगे वहाँ के बादशाह का नाम आज़ादबख़्त है। उसके सामने भी एक बड़ी मुश्किल है, जब वह भी तुम चारों फ़क़ीरों से मिलेगा तो हर-एक के दिल का मतलब और मुराद जो भी है वह उसे बख़ूबी हासिल होगी।"

मैंने रकाब पकड़कर बोसा दिया और कहा, ऐ खुदा के वली! तुम्हारे इतने ही फ़र्माने से मेरे बेक़रार दिल को तसल्ली हुई। लेकिन खुदा के वास्ते ये फ़रमाइये कि आप कौन हैं और इस्मेशरीफ़ (शुभ नाम) क्या है? तब उन्होंने फ़र्माया की मुर्तज़ा अली मेरा नाम है और मेरा यही काम है कि जिसको जो कठिन मुश्किल पेश आये मैं उसको आसान कर दूँ।

इतना फ़र्माकर नज़रों से ओझल हो गये। बारे, इस फ़क़ीर ने अपने मौला मुश्किलकुशा की बशारत से ख़ातिरजमा होकर क़ुस्तुनतुनिया चलने का इरादा किया। राह में जो कुछ मुसीबतें क़िस्मत में लिखी थीं खींचता हुआ, उस राजकुमारी की मुलाक़ात के भरोसे पर खुदा की मेहरबानी से यहाँ तक आ पहुँचा और अपनी खुशनसीबी से तुम्हारी खिदमत में बैठने की इज्जत मिली। तुम लोगों से मुलाक़ात तो हुई, और बाहम सुहबत और बात-चीत मयस्सर हुई। अब चाहिये कि बादशाह आज़ाद बख्त से भी मुलाक़ात और जान-पहचान हो।

उसके बाद यक़ीनन हम पाँचों अपने दिली मक़सद तक पहुँचेंगे। तुम भी दुआ माँगो और आमीन कहो,। या हादी! इस परेशान और मुसीबत के मारे की यही सरगुज़श्त थी जो तुम दर्वेशों की हुज़ूरी में कह सुनाई। अब आगे देखिए कि कब इस मेहनत और ग़म के बाद हमें बादशाहज़ादी से मिलने की खुशी नसीब हो। आज़ादबख्त चुपका छुपा हुआ ध्यान लगाये पहले दर्वेश का हाल सुनकर खुश हुआ। फिर दूसरे दर्वेश का हाल सुनने लगा!

सैर दूसरे दर्वेश की

जब दूसरे दर्वेश के कहने की बारी आई, तो वह चार-ज़ानू हो बैठा और बोला —

ऐ यारो ! इस फ़क़ीर का टुक माजरा सुनो ।
मैं इब्तदा से कहता हूँ ता इन्तहा सुनो ।
जिसका इलाज कर नहीं सकता कोई हकीम ।
हैगा हमारा दर्द निपट लादवा सुनो ।

ऐ फ़क़ीरो ! यह नाचीज़ मुल्क फ़ारस का बादशाहज़ादा है । हर फ़न के आदमी वहाँ पैदा होते हैं । चुनानचे 'इस्फ़हान' निस्फ़ जहान मशहूर है । सातों मुल्कों में उसकी बराबरी करने वाला कोई दूसरा मुल्क नहीं क्योंकि उस देश का ग्रह सूर्य है और वह सातों ग्रहों में सबसे बड़ा है । आबो-हवा वहाँ की अच्छी और लोग समझदार और सलीक़ा रखने वाले होते हैं । मेरे क़िबलागाह (पिता) ने (जो उस मुल्क के बादशाह थे) लड़कपन से क़ायदे और सरकारी क़ानून की तर्बियत करने के वास्ते बड़े-बड़े अक्लमन्द उस्ताद हर-एक इल्म और क़स्ब के चुनकर मेरी तालीम के लिये मुक़र्रर किये थे, ताकि मैं हर तरह की कामिल (पूरी) तालीम पाकर क़ाबिल बनूँ । ख़ुदा के फ़ज़ल से चौदह बरस के सिनो-साल में सब इल्म से माहिर हुआ । बातचीत का ढंग माक़ूल उठने-बैठने का तरीक़ा सराहनीय, और जो-कुछ भी बादशाहों के लायक़ और दरकार है, सब हासिल किया ।

और रात-दिन यही शौक़ था कि क़ाबिलों की सुहबत में हर-एक मुल्क के क़िस्से, और बहादुर और नामवर बादशाहों का हाल सुनाऊँ।

एक दिन एक अक़्लमन्द मुसाहिब ने, जो दुनिया देखा और तारीख़ से अच्छी तरह वाक़िफ़ था, यह ज़िक्र किया कि अगरचे आदमी की ज़िन्दगी का कुछ भरोसा नहीं, लेकिन अक्सर वस्फ़ (गुण) ऐसे हैं कि उनके सबब इंसान का नाम क़यामत तक लोगों की ज़बानों पर बख़ूबी चला जायगा।

मैंने कहा कि "अगर उसका थोड़ा हाल मुफ़स्सल बयान करो तो मैं भी सुनूँ और उस पर अमल करूँ।"

तब वह हातिमताई का हाल इस तरह बयान करने लगा कि हातिम-ताई के वक़्त में एक बादशाह अरब में नोफ़िल नाम का था। हातिम की शोहरत के कारण उसे हातिम से बड़ी दुश्मनी हुई, और वह बहुत सा लश्कर और फ़ौज जमा करके लड़ाई की ख़ातिर चढ़ आया। हातिम तो ख़ुदा तरस और नेक मर्द था। उसने यह समझा कि अगर मैं भी जंग की तैयारी करूँ तो ख़ुदा के बन्दे मारे जायेंगे और बड़ी ख़ूँरेज़ी होगी और उसका अज़ाब मेरे नाम लिखा जायगा। यह बात सोचकर तन-तनहा अपनी जान लेकर एक पहाड़ की खोह में जा छुपा। जब हातिम के ग़ायब होने की ख़बर नोफ़िल को मालूम हुई उसने हातिम का सब असबाब, घर-बार क़ुर्क किया और मुनादी करवा दी कि जो-कोई ढूँढ-ढाँढ कर हातिम को पकड़ लावे पाँच सौ अशर्फ़ी बादशाह की सरकार से इनाम पावे। यह सुनकर सबको लालच आया और वे हातिम की खोज करने लगे।

एक दिन एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया, दो-तीन छोटे-छोटे बच्चे साथ लिये हुए लकड़ियाँ तोड़ने के वास्ते उस खोह के पास पहुँचे जहाँ हातिम छुपा हुआ था। उस जंगल से वे लकड़ियाँ चुनने लगे। बुढ़िया बोली कि, "अगर हमारे दिन कुछ भले आते तो हम हातिम को कहीं देख

पाते और पकड़कर नोफ़िल के पास ले जाते तो वह पाँच सौ अशर्फ़ी देता और हम आराम से खाते, इस दुःख-धन्धे से छूट जाते।"

बूढ़े ने कहा, "क्या टर-टर करती है? हमारी क़िस्मत में यही लिखा है कि रोज़ लकड़ियाँ तोड़ें और सर पर धरकर बाज़ार में बेचें। तब नून-रोटी मयस्सर आवे या एक रोज़ जंगल से बाघ ले जावे। ले, अपना काम कर, हमारे हाथ हातिम काहे को आवेगा और कब बादशाह इतने रूपे दिलावेगा?" औरत ने ठंडी साँस भरी और चुपकी हो रही।

उन दोनों की बातें हातिम ने सुनीं। उसने सोचा कि यह बात इंसानियत और मुरव्वत से बाहर है कि वह अपने को छुपाए और अपनी जान बचाए और उन दोनों बेचारों को उनका मतलब हासिल न हो। सच है कि अगर आदमी में रहम नहीं तो वह इन्सान नहीं और जिसके जी में दर्द नहीं, वह क़साई है।

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को।
वर्ना ताअ़त के लिये कुछ कम न थे करूबियाँ।

ग़रज़ हातिम की जवाँमर्दी ने यह गवारा न किया कि अपने कानों से सुनकर वह चुपका हो रहे। वैसे ही बाहर निकल आया और उस बूढ़े से कहा कि, "ऐ अ़ज़ीज़, हातिम मैं ही हूँ। मुझे नोफ़िल के पास ले चल। वह मुझे देखेगा और जो कुछ रुपये देने का इक़रार किया है, तुझे देगा।"

उस बूढ़े ने कहा कि यह सच है कि इस सूरत में भलाई और बहबूदी मेरी है, लेकिन क्या जाने वह तुझसे क्या सुलूक करे? अगर मार डाले तो मैं क्या करूँ? यह मुझसे हरगिज़ न हो सकेगा कि तुझको अपनी लालच की ख़ातिर दुश्मन के हवाले करूँ। वह माल कितने दिन खाऊँगा और कब तलक जिऊँगा? आख़िर मर जाऊँगा, तब ख़ुदा को क्या जवाब दूँगा?"

हातिम ने बहुतेरी मिन्नत की कि, "मुझे ले चल। मैं अपनी ख़ुशी से कहता हूँ। मैं हमेशा इसी आर्ज़ू में रहता हूँ कि मेरा जानो-माल किसी के काम आवे तो बेहतर है।" लेकिन वह बूढ़ा किसी तरह राज़ी न हुआ कि हातिम को ले जावे और इनाम पावे।

आख़िर लाचार होकर हातिम ने कहा, "अगर तू मुझे यूँ नहीं ले जाता तो मैं आप से आप बादशाह के पास जाकर कहता हूँ कि इस बूढ़े ने मुझे जंगल में एक पहाड़ की खोह में छुपा रखा था।"

वह बूढ़ा हँसा और बोला, "या नसीब, यह तो भलाई के बदले बुराई मिली।" इसी सवालो-जवाब में और आदमी भी आ पहुँचे। भीड़ लग गई। उन्होंने मालूम किया कि हातिम यही है, तुरन्त पकड़ लिया और उसे बादशाह के पास ले चले। वह बूढ़ा भी अफ़सोस करता हुआ पीछे-पीछे साथ हो लिया। जब हातिम को नोफ़िल के रू-बरू ले गए, उसने पूछा, "इसको कौन पकड़ लाया?" एक बदज़ात, संगदिल बोला कि, "ऐसा काम सिवाय हमारे कौन कर सकता है? यह फ़तह हमारे नाम है। हमने अर्श पर झण्डा गाड़ा है।"

एक और लनतरानी वाला डींग मारने लगा कि, "मैं कई दिन से दौड़-धूप कर जंगल से पकड़ लाया हूँ। मेरी मेहनत पर नज़र कीजिये, और जो क़रार है, सो दीजिये।"

इसी तरह अशर्फ़ियों की लालच से हर-कोई कहता था कि यह काम मुझसे हुआ। वह बूढ़ा चुपका एक कोने में लगा हुआ, सब की शेखियाँ सुन रहा था और हातिम की ख़ातिर खड़ा रोता था। जब अपनी-अपनी दिलावरी और मर्दानगी सब कह चुके तब हातिम ने बादशाह से कहा, "अगर सच बात पूछो तो वह यह है कि वह बूढ़ा जो सबसे अलग खड़ा है, मुझको लाया है। अगर क़ायफ़ा पहचानते हो तो मालूम कर लो और मेरे पकड़ने की ख़ातिर जो क़ौल किया है, उसे पूरा करो, क्योंकि आदमी के सारे डील में ज़बान हलाल है, मर्द को चाहिये जो कहे सो करे,

नहीं तो जीभ तो हैवान को भी ख़ुदा ने दी है, फिर हैवान और इंसान में क्या फ़र्क़ है ?"

नोफ़िल ने उस बूढ़े लकड़हारे को पास बुलाकर पूछा, "सच कह, अस्ल क्या है ? हातिम को कौन पकड़ लाया ?" उस बेचारे ने सर से-पाँव तक जो गुज़रा था, सच-सच कह सुनाया और कहा कि "हातिम मेरी ख़ातिर आप-से-आप चला आया है।"

नोफ़िल हातिम की यह हिम्मत सुनकर हैरत में आ गया। "वाह! तेरी सख़ावत कि अपनी जान का ख़तरा भी न किया!"

उसने हुक्म दिया कि "जितने आदमी भी हातिम को पकड़ लाने का झूठा दावा करते थे, उनकी टुंडियाँ कसकर पाँच सौ अशर्फ़ी के बदले पाँच-पाँच सौ जूतियाँ उनके सर पर लगाओ कि उनकी भी जान निकल पड़े।" यह हुक्म सुनते ही तड़-तड़ जूतियाँ पड़ने लगीं और एक दम में उनके सर गंजे हो गए। सच है, झूठ बोलना ऐसा ही गुनाह है कि कोई गुनाह उसके बराबर नहीं पहुँचता। ख़ुदा सबको इस बला से बचाए रखे। बहुत-से आदमी झूठ-मूठ बके जाते हैं लेकिन आज़माइश के वक़्त सज़ा पाते हैं।

ग़रज़ उन सब को उनके मुवाफ़िक़ इनआम देकर नोफ़िल ने अपने दिल में ख़याल किया कि हातिम ऐसे शख़्स से जिससे एक आलम का भला होता है और जो मुहताजों की ख़ातिर अपनी जान देने में उज्र नहीं करता, और जो ख़ुदा की राह में सर-से-पैर तक हाज़िर है, ऐसे आदमी से दुश्मनी रखना और उसे नुक़सान पहुँचाने के बारे में सोचना आदमीयत और जवाँमर्दी से दूर है। उसी वक़्त उसने हातिम का हाथ बड़ी दोस्ती और गर्मजोशी से पकड़ लिया, और कहा, "क्यों न हो, जब ऐसे हो तब ऐसे हो।" उसने बड़ी इज़्ज़त और तवाज़ो करके पास बिठलाया और हातिम का मुल्क, अमलाक, और माल-असबाब जो-कुछ ज़ब्त किया था, उसी वक़्त छोड़ दिया और नये सिरे से तै

क़बीले की सरदारी उसे दी और उस बूढ़े को पाँच सौ अशर्फ़ियाँ अपने खजाने से दिलवा दीं। वह दुआ देता हुआ चला गया।

जब मैंने हातिम का यह हाल सुना, जी में ग़ैरत आई और यह ख़याल गुज़रा कि हातिम तो फ़क़त अपनी क़ौम का रईस था जिसने सख़ावत की वजह से यह नाम पैदा किया कि आज तलक मशहूर है। मैं ख़ुदा के हुक्म से सारे ईरान का बादशाह हूँ और अगर इस नेमत से महरूम रहूँ तो बड़ा अफ़सोस है। वाक़ई, दुनिया में दान और देने से बड़ा कोई काम नहीं। इस वास्ते कि आदमी जो कुछ इस दुनिया में देता है उसका एवज़ दुनिया में लाता है। अगर कोई एक दाना बोता है तो उससे कितना कुछ पैदा होता है? यह बात दिल में ठहराकर मीरे-इमारत को बुलवाकर हुक्म किया कि जल्द शहर के बाहर एक आलीशान मकान बनवाओ, जिसके चालीस दरवाज़े बहुत बलन्द और निहायत कुशादा हों। थोड़े अर्से में ही, वैसी ही वसीय इमारत, जैसा दिल चाहता था, बनकर तैयार हुई और उस मकान में हर रोज़, हर वक़्त सवेरे से शाम तक मुहताजों और बेकसों को रुपये, अशर्फ़ियाँ देता और जो कोई जिस चीज़ का सवाल करता, मैं उसे मालामाल करता।

ग़रज़ चालीसों दरवाज़े से ज़रूरतमन्द आते और जो चाहते, सो ले जाते।

एक रोज़ का यह ज़िक्र है कि एक फ़क़ीर सामने के दरवाजे से आया, और सवाल किया। मैंने एक अशर्फी दी, फिर वही दूसरे दरवाज़े से होकर आया, दो अशर्फ़ियाँ माँगीं। मैंने पहचानकर दर-गुज़र किया और दो अशर्फ़ियाँ दीं। इसी तरह उसने हर-एक दरवाजे से आना और एक-एक अशर्फ़ी बढ़ाना शुरू कर दिया और मैं भी जान-बूझकर अनजान हुआ और उसके सवाल के मुवाफ़िक़ देता गया। आख़िर चालीसवें दरवाज़े की राह से आकर चालीस अशर्फ़ियाँ माँगी, वह भी मैंने दिलवा दीं। इतना कुछ लेकर वह दर्वेश फिर पहले दरवाजे से घुस आया और

सवाल किया, मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ। मैंने कहा, "सुन! ऐ लालची! तू कैसा फ़कीर है कि हरगिज़ फ़े क़ के तीनों अक्षरों से भी वाक़िफ़ नहीं? फ़कीर का अमल उन पर होना चाहिये।"

फ़क़ीर बोला, "भला ऐ सखी तुम्हीं बताओ।"

मैंने कहा, "फ़े से फ़ाक़ा से क़ाफ़ क़नाअत, और 'रे' से रियाज़त है। जिसमें ये बातें न हों वह फ़कीर नहीं। इतना जो तुझे मिला है, उसको खा-पीकर आइयो, और जो मांगोगे ले जाइयो। यह खैरात ज़रूरत पूरी करने के वास्ते है, न कि जमा करने के लिये। ऐ लालची! चालीस दरवाज़ों से तूने एक अशर्फ़ी से चालीस अशर्फ़ियाँ तक लीं। उसका हिसाब तो कर कि रिवड़ी के फेर की तरह कितनी अशर्फ़ियां हुईं। और उस पर भी, लालच फिर तुझे पहले दरवाजे से ले आई। इतना माल जमा करके क्या करेगा? फ़कीर को चाहिए कि एक रोज़ की फ़िक्र करे, और दूसरे दिन फिर नई रोज़ी। देने वाला दाता मौजूद है। अब हया और शर्म कर और सब्रो-क़नाअत से काम ले। ये कैसी फ़कीरी है, जो तुझे तेरे मुर्शिद (गुरू) ने बताई है?"

वह फ़कीर मेरी बात सुनकर खफ़ा और बददिमाग़ हुआ और जितना मुझसे लेकर जमा किया था, सब ज़मीन में डाल दिया, और बोला, "बस, बाबा! इतने गर्म मत हो। अपनी कायनात लेकर रख छोड़ो। फिर सखावत का नाम मत लीजो। सखी होना बहुत मुशकिल है। तुम सखावत का बोझ नहीं उठा सकते। इस मंज़िल को कब पहुँचोगे? अभी दिल्ली दूर है। 'सखी के भी तीन अक्षर हैं, पहले उन पर अमल करो।"

तब तो मैं डरा और कहा, "भला दाता! इसका मतलब मुझे समझाओ।"

वह कहने लगा, 'सीन' से समाई और 'खे' से खौफ़े-इलाही और 'ये' से याद रखना अपनी पैदाइश और मरने को। जब तलक इतना न

हो ले, तू सख़ावत का नाम न ले और सख़ी का यह दर्जा है कि अगर बदकार हो तब भी ख़ुदा का दोस्त है। इस फ़क़ीर ने बहुत मुल्कों की सैर की है लेकिन सिवाय बसरे की बादशाहज़ादी के कोई सख़ी देखने में न आया। सख़ावत का जामा ख़ुदा ने उसी औरत के लिये बनाया है। और सब नाम चाहते हैं पर वैसा काम नहीं करते।"

यह सुनकर मैंने बहुत मिन्नत की और क़स्में दीं कि "मेरा क़ुसूर माफ़ करो और जो चाहिये सो लो।"

पर उसने मेरा दिया हरगिज़ न लिया और यह बात कहता हुआ चला गया कि, "अब अगर तू अपनी सारी बादशाहत मुझे दे तो उस पर भी न थूकूँ और न धर मारूँ।"

वह तो चला गया पर बसरे की बादशाहज़ादी की तारीफ़ सुनने से दिल बेकल हुआ। किसी तरह कल न थी! अब यह आरज़ू हुई कि किसी सूरत से बसरे चलकर उसको देखा चाहिये।

इसी अर्से में बादशाह ने वफ़ात पाई और तख़्त पर मैं बैठा! सलतनत मिली पर वह ख़याल न गया। वज़ीरों और अमीरों से जो हुकूमत के ख़ास और अहम थे, मैंने सलाह ली कि "मैं बसरे का सफ़र करना चाहता हूँ तुम अपने काम से मुस्तैद रहो। अगर ज़िन्दगी है, तो सफ़र की उम्र थोड़ी होती है। जल्द वापस आता हूँ।" पर कोई मेरे जाने पर राज़ी न हुआ। लाचार, दिल तो उदास हो रहा था।

एक दिन वग़ैर सब के कहे-सुने, चुपके से अपने अक्लमन्द वज़ीर को बुलाया और उसे अपना कुल्ली वकील और मुख्तार बनाया और हुकूमत का कर्ता-धर्ता मुक़र्रर किया। फिर मैंने गेरुवा वस्त्र पहनकर, फ़क़ीरी भेस करके अकेले बसरे की राह ली। थोड़े दिनों में उसकी सरहद में जा पहुँचा। तब से यह तमाशा देखने लगा कि जहाँ रात को जाकर ठहरता, उसकी मल्का के नौकर-चाकर स्वागत करके एक अच्छे मकान

में उतारने और जितना इन्तज़ाम ख़ातिरदारी और दावत का होता है, बख़ूबी मौजूद करते और ख़िदमत में सारी रात हाथ बांधे खड़े रहते। दूसरे दिन दूसरी मंज़िल में यही सूरत पेश आती। इस आराम से महीनों की राह तै की। आख़िर बसरे में दाख़िल हुआ, उसी वक़्त एक ख़ूबसूरत जवान, अच्छे लिबास में अच्छी तबीअत वाला, मुरव्वतदार, जिसकी अक़्लमन्दी उसकी सूरत से ज़ाहिर थी, मेरे पास आया और बड़ी मीठी ज़बान से कहने लगा कि, "मैं फ़क़ीरों का ख़ादिम हूँ। हमेशा इसी तलाश में रहता हूँ कि जो कोई मुसाफ़िर, फ़क़ीर या दुनियादार इस शहर में आवे, मेरे घर की शोभा बढ़ावे, सिवाए एक मकान के यहां परदेसी के रहने की दूसरी जगह नहीं है। आप तशरीफ़ ले चलिये और उस मुक़ाम की रौनक़ बढ़ाइये और मुझे इज़्ज़त बख़िशये।"

मैंने पूछा, "साहब, आपका इस्मे-शरीफ़ क्या है?"

बोला "इस गुमनाम को बेदारबख़्त कहते हैं।" उसकी ख़ूबी देखकर और मीठी बातें सुनकर मैं उसके साथ चला और मकान उसके में गया। देखा तो एक आलीशान इमारत शाही इन्तज़ाम के साथ तैयार है। एक दालान में उसने लेजाकर बिठाया और गर्म पानी मँगवाकर हाथ-पाँव धुलवाए और दस्तरख़्वान बिछ्वाकर मुझ तन-तनहा के रू-बरू बक़ावल ने एक तोरे का तोरा चुन दिया, चार मश्क़ाब (थाल), एक में यख़नी-पुलाव, दूसरी में क़ोर्मा-पुलाव, तीसरी में मुतंजन-पुलाव और चौथी में क़ू-क़ू-पुलाव और एक क़ाब ज़र्दे की और कई तरह के क़लिये, दोप्याज़ा, नरगिसी, बादामी, रोग़न जोश और रोटियां कई क़िस्म की, बाक़रख़्वानी तिनकी, शीरमाल, गावदीदा, गावज़बान, नाने-नेमत, पराठे और कबाब क़ोफ़्ते के, तिक्के के, मुर्ग़ के, ख़ागीना, मल्गोबा, शबदेग, दमपुख़्त, हलीम, हरबसा, समोसे वर्क़ी, क़ुबूली, फ़िर्नी शीर-बिरंज, मलाई, हल्वा, फ़ालूदा, पनभत्ता, नमश, आबे-शोरा साक़े-उरूस, लूज़ियात, मुरब्बा, अचारदान, दही की क़ुल्फ़ियाँ, ये सारी नेमतें देखकर रूह भर गई।

जब एक-एक निवाला हर-एक से लिया पेट भी भर गया, तब हाथ खाने से खींचा।

उस शख्स ने कहा, कि "साहब ने क्या खाया? खाना तो सब अमानत धरा है। बेतकल्लुफ़ और नोशे-जान फ़रमाइये।"

मैंने कहा, "खाने में शर्म क्या है? खुदा तुम्हारा घर आबाद रखे। जो कुछ मेरे पेट में समाया, सो मैंने खाया और इसके ज़ाएक़े की क्या तारीफ़ करूँ? अब तक ज़बान चाटता हूँ और जो डकार आती है तो मुअत्तर! लो, अब बस करो।" जब दस्तरख्वान उठा, ज़ेर-अन्दाज़ काशानी मखमल का बिछाकर, चिलमची और सोने का लोटा लाकर खुशबूदार बेसनदान में से बेसन देकर गर्म पानी से मेरे हाथ धुलाए। फिर जड़ाऊ पानदान में गिलौरियां सोने की पखरोटों में बँधी हुई और चौघरों में खिलौरियाँ और चिकनी सुपारियां और लौंग इलाइचियां, रूपे के वर्क़ों में मँढी हुई लाकर रखीं। जब मैं पानी पीने को माँगता, तब सुराही बर्फ़ में लदी हुई, आबदार ले आता। जब तक शाम हुई, फ़ानूसों में काफ़ूरी शमएँ रौशन हुई, वह अज़ीज़ बैठा हुआ बातें करता रहा। जब एक पहर रात गई, बोला, "अब इस छपरखट में आराम कीजिये!"

मैंने कहा, "ऐ साहब! हम फ़कीरों को एक बोरिया मृगछाला बिस्तर के लिए बहुत है। खुदा ने यह तुम दुनियादारों के वास्ते बनाया है।"

कहने लगा, "यह सब असबाब दर्वेशों की खातिर है, कुछ मेरा माल नहीं।" उसके ज़िद करने से, उन बिछौनों पर, जो फूलों की सेज से भी नर्म थे, जाकर लेटा। दोनों पट्टियों की तरफ़ गुलदान और चंगेरें फूलों की चुनी हुई थीं, और ऊद, सोज़, और लखलखे रौशन थे। जिधर की करवट लेता, दिमाग़ मुअत्तर हो जाता। इस आलम में मैं सो रहा।

जब सुबह हुई नाश्ते को भी बादाम, पिस्ते, अंगूर, इंजीर, नासपाती,

अनार, किशमिश छुहारे और मेवे का शर्बत ला हाज़िर किया। इसी तरह से तीन दिन-रात रहा। चौथे रोज़ मैंने चलने की इजाज़त चाही। हाथ जोड़कर कहने लगा, "शायद इस गुनहगार से आप की ख़िदमत गारी में कोई क़ुसूर हुआ, जिसके कारण आप का मिज़ाज मुकद्दर हुआ।"

मैंने हैरान होकर कहा, "ख़ुदा के लिये बताओ कि यह क्या क़िस्सा है? लेकिन मेहमानी की शर्त सिर्फ़ तीन दिन तक है, सो मैं रहा, ज़्यादा रहना अच्छा नहीं और, इसके अलावा यह फ़क़ीर सैर के वास्ते निकला है। अगर एक ही जगह रह जाय तो मुनासिब नहीं। इसीलिए यह फ़क़ीर इजाज़त चाहता है, नहीं तो तुम्हारी, ख़ूबियाँ ऐसी नहीं जो तुमसे अलग होने को जी चाहे।"

तब वह बोला, "जैसी मर्ज़ी, लेकिन एक घड़ी तो ठहरिए कि बादशाह-ज़ादी के हुज़ूर में जाकर अर्ज़ करूँ, और तुम जो जाना चाहते हो, तो जो कुछ असबाब ओढ़ने-बिछाने का, और खाने के बासन, रुपे सोने के, और जड़ाऊ, इस मेहमानख़ाने में हैं, यह सब तुम्हारा माल है, उसके साथ ले जाने की ख़ातिर जो फ़रमाओ तदबीर की जाय।"

मैंने कहा, "लाहौल पढ़ो, हम फ़क़ीर न हुए, भाट हुए। अगर यही लालच दिल में होती तो फ़क़ीर काहे को होते? दुनियादारी क्या बुरी थी?"

उस अज़ीज़ ने कहा, "अगर यह हाल मल्का सुने तो ख़ुदा जाने मुझे इस ख़िदमत से हटाकर, क्या सुलूक करे। अगर तुम्हें ऐसी ही लापर्वाही है तो इन सब को एक कोठरी में अमानत बन्द करके दरवाज़े पर मुहर लगा दो, फिर जो चाहो सो कीजियो।"

मैं न क़ुबूल करता था। लाचार यही सलाह ठहरी कि सब असबाब बन्द करके क़ुफ़्ल लगा दिया जाय। अब मैं चलने की इजाज़त का इन्तज़ार करने लगा। इतने में एक मोतबर ख़्वाजासरा सर पर सर-

पेच, और गोशपेच, कमर में बन्दी बाँधे, एक जड़ाऊ सोने का असा हाथ में लिए उसके साथ कई ख़िदमतगार माक़ूल उहदे लिए हुए, इस शानो-शौकत से मेरे नज़दीक आया, ऐसी मेहरबानी और नर्मी से बात-चीत करने लगा कि जिसका बयान नहीं कर सकता। फिर बोला कि, "ऐ मियाँ, अगर तवज्जुह और मेहरबानी करके इस मुश्ताक़ के ग़रीबख़ाने को अपने क़दम की बर्कत से रौनक़ बख़्शो तो ख़ास मेहरबानी और ग़रीबनवाज़ी होगी। अगर शाहज़ादी सुने कि कोई मुसाफ़िर यहाँ आया था, उसकी ख़ातिर-मदारात किसी ने न की, और वह यूँही चला गया, उस वक़्त ख़ुदा जाने मुझपर क्या आफ़त ढाये और कैसी क़यामत उठावे! शायद जान दूभर हो जाय।" मैंने इन बातों को न माना, तब वह ख़्वाह-मख़्वाह मिन्नतें करके मुझे एक और हवेली (जो पहले मकान से बेहतर थी) ले गया। उसी पहले मेज़बान की तरह तीन दिन-रात दोनों वक़्त वैसे ही खाने, और सुबह और तीसरे पहर शर्बत पिलाए, और मेवे खिलाये, और चाँदी और सोने के बासन, फ़र्श वग़ैरह, और असबाब जो-कुछ वहाँ था, मुझसे कहने लगा, "इन सब के तुम मालिक मुख्तार हो; जो चाहो, सो करो।"

मैं यह बातें सुनकर हैरान हुआ और चाहा कि किसी न किसी तरह यहां से रुख़सत होकर भागूँ। मेरे चेहरे को देखकर वह महल्ली बोला, "ऐ ख़ुदा के बन्दे! जो तेरा मतलब या आर्ज़ू हो, सो मुझसे कह, तो मल्का के हुज़ूर में जाकर अर्ज़ करूँ।"

मैंने कहा, 'मैं फ़क़ीरी के लिबास में हूँ, दुनिया का माल क्या मांगूँ जो तुम बग़ैर मांगे देते हो, और मैं इंकार करता हूँ!" तब वह कहने लगा कि दुनिया की लालच किसी के जी से नहीं गई।

किसी कवि ने यह कवित्त कही है—

नख बिन कटा देखे, सीस भारी जटा देखे
जोगी कनफटा देखे, छार लागे तन में।

मौनी अनबोल देखे, सेवड़ा सिर छोल देखे
करत कलोल देखे, बन खन्डी बन में।
बीर देखे सूर देखे, सब गुनी और कूर देखे
माया के पूर देखे, भूले रहे धन में।
आदि अन्त सुखी देखे, जनम ही के दुखी देखे
पर वह न देखे, जिनके लोभ नहीं मन में।

मैंने यह सुनकर जवाब दिया कि, "यह सच है। पर मैं कुछ नहीं चाहता। अगर फ़रमाओ तो एक रुक्क़ा, मुहरबन्द अपने मतलब का लिखकर दूँ जो मल्का के हुज़ूर में पहुँचा दो, तो बड़ी मेहरबानी होगी। अगर ऐसा करोगे तो गोया तमाम दुनिया का माल मुझको दोगे।"

वह बोला, "आपका हुक्म सर आँखों पर, इसमें क्या हर्ज है।"

मैंने एक रुक्क़ा लिखा, पहले खुदा का शुक्र, फिर अपना हाल कि, 'यह खुदा का बन्दा, कई रोज़ से इस शहर में आया हुआ है, और आप की सरकार से हर तरह की ख़बरगीरी होती है। जैसी खूबियाँ और नेकनामियाँ, मल्का की सुनकर देखने का शौक़ हुआ था उससे चार-गुना ज्यादा ही पाया। अब आप के खिदमतगार यह कहते हैं कि जो मतलब और तमन्ना तेरी हो, सो ज़ाहिर कर, इस वास्ते बेझिझक जो दिल की आरज़ू है सो अर्ज़ करता हूं कि मैं दुनिया के माल का मुहताज नहीं। अपने मुल्क का मैं भी बादशाह हूँ! यहाँ तलक आना, और मुसीबत उठाना सिर्फ़ आपको देखने के शौक़ की वजह से हुआ, जो तन-तनहा इस सूरत से आ पहुँचा हूँ। अब उम्मीद है कि हुज़ूर की तवज्जुह से यह नाचीज़ अपने दिल की मुराद को पहुँचे, तो बड़ा अच्छा होगा। आगे जो आप की मर्ज़ी में आवे। लेकिन अगर यह मेरी नाचीज़ दरख्वास्त कुबूल न होगी, तो यह फ़क़ीर इसी तरह खाक छानता रहेगा, और इस बेक़रार जान को आपके इश्क़ में निछावर करेगा। मजनूँ और फ़रहाद की तरह जङ्गल या पहाड़ पर जाकर मर रहेगा॥'

यही आज़ू लिखकर उस खोजे को दिया, उसने मेरा रुक्का बादशाहज़ादी तलक पहुंचाया। कुछ देर बाद फिर आया और मुझे बुलाया, और अपने साथ महल की डेवढ़ी पर ले गया। वहाँ जाकर देखा, तो एक बूढ़ी-सी औरत, देखने में क़ाबिल, सुनहरी कुर्सी पर गहना-पाता पहने बैठी है और कई खोजे, खिदमतगार, भड़कीला लिबास पहने हुए, हाथ बाँधे सामने खड़े हैं। मैं उसे पुरानी खास मुख़्तार समझकर आदर के लिए अपना हाथ सर तक ले गया। उस मामा ने बड़ी मेहरबानी से सलाम किया और हुक्म दिया, आओ बैठो, बड़ा अच्छा हुआ कि तुम आये। तुम्हीं ने मल्का से मिलने का शौक़ अपने रुक्के में ज़ाहिर किया था?" मैं शर्म से चुप हो रहा, और सर नीचा करके बैठ गया।

कुछ देर के बाद बोली, "ऐ जवान, बादशाहज़ादी ने सलाम कहा है और फ़रमाया है कि मुझे शौहर करने में ऐब नहीं। तुमने मेरे लिए दरख़्वास्त की, लेकिन अपनी बादशाहत का बयान करना, और इस फ़क़ीरी में अपने को बादशाह समझना और उसका घमण्ड करना बेजा है। इस वास्ते कि सब आदमी आपस में दरअस्ल एक हैं। लेकिन इस्लाम-धर्म की बड़ाई अपनी जगह पर है। और, मैं भी एक मुद्दत से शादी करने की ख्वाहिश रखती हूँ। जैसे तुम दुनिया की दौलत से लापर्वाह हो, मुझको भी ख़ुदा ने इतना माल दिया है जिसका कुछ हिसाब नहीं, पर एक शर्त है कि पहले महर अदा कर दो, और शाहज़ादी की महर एक बात है जो तुमसे हो सके।"

मैंने कहा कि "मैं हर तरह हाज़िर हूं, जान-माल किसी तरह भी पीछे नहीं रहूँगा, वह बात क्या है, कहो तो मैं भी सुनूँ।"

तब उसने कहा, "आज के दिन रह जाओ, तो कल तुम्हें बतादूँगी।"

मैंने खुशी से मंज़ूर कर लिया और रुखसत होकर बाहर आ गया।

दिन गुज़र गया, जब शाम हुई तो मुझे एक ख़्वाजासरा महल में बुलाकर ले गया। जाकर देखा तो बड़े-बड़े आलिम और फ़ाज़िल जमा हैं। मैं भी उसी जल्से में जाकर बैठा, कि इतने में दस्तरख़्वान बिछाया गया और तरह-तरह के खाने मीठे और नमकीन लगाए गए। वे सब खाने लगे और मुझे भी इसरार करके शामिल कर लिया। जब खाने से फ़ुर्सत हुई तो एक दाई अन्दर से आई और बोली कि। "बहरावर कहां है, उसे बुलाओ।" यसावलों ने वैसे ही उसे हाज़िर किया। उसकी सूरत मर्दों-जैसी थी और कमर में बहुत-सी सोने-चाँदी की कुंजियाँ लटकाये हुये था। मुझको सलाम करके मेरे पास आकर बैठा और वही दाई कहने लगी कि, "ऐ बहरावर! तूने जो कुछ देखा है, तफ़सील से बयान कर।"

बहरावर ने यह क़िस्सा कहना शुरू किया और मुझसे मुख़ातिब होकर बोला, 'ऐ अज़ीज़! हमारी राजकुमारी की सरकार में हज़ारों ग़ुलाम हैं जो सौदागरी के काम पर लगे हुए हैं, उनमें से मैं भी एक घर का पला मामूली नौकर हूँ। शहज़ादी उनको हर मुल्क की तरफ़ लाखों रुपयों का सामान और जिन्स देकर भेजती हैं। जब वे वहाँ से वापस आते हैं, तो उनसे उस देश का हाल, अपनी हुज़ूर में पूछती हैं और सुनती हैं।

एक बार ऐसा इत्तफ़ाक़ हुआ कि यह ग़ुलाम तिजारत के लिये चला और शहर 'नीमरोज़' पहुँचा। वहाँ के रहने वालों को देखा कि सबका लिबास सियाह है और वे हर वक़्त आह भरते हैं और फ़रियाद करते हैं। ऐसा मालूम होता था कि उन पर कोई बड़ी मुसीबत पड़ी है। मैं जिससे पूछता, कोई मेरे सवाल का जवाब न देता। इसी हैरत में कई रोज़ गुज़रे। एक दिन जैसे ही सुबह हुई, सारे आदमी छोटे-बड़े लड़के-बूढ़े, ग़रीब-अमीर शहर बाहर चले और एक मैदान में जाकर जमा हुए। इस मुल्क का बादशाह भी सब अमीरों को साथ लेकर सवार हुआ और वहाँ गया। सब बराबर क़तार बाँधकर खड़े हुए।

मैं भी उनके दरमियान खड़ा तमाशा देखता था। पर यह मालूम होता था कि वे सब किसी का इन्तज़ार कर रहे हैं। एक घड़ी के अर्से में दूर से एक जवान, परीज़ाद, खूबसूरत, पन्द्रह-सोलह बरस के सिनो-साल का ग़ुल और शोर करता हुआ और जिसके मुँह से कफ़ जारी, ज़र्द बैल की सवारी, एक हाथ में कुछ लिये हुए, मजमे के सामने आया और अपने बैल पर से उतरा। एक हाथ में नाथ और एक हाथ में नंगी तलवार! घुटने तोड़कर बैठा, एक फूल-सा खूबसूरत जवान उसके साथ था, उसको उस जवान ने वह चीज़ जो हाथ में थी, दे दी। वह यतीम उसे लेकर एक सिरे से हर-एक को दिखाता जाता था, लेकिन हालत यह थी कि जो कोई देखता था, बेअख्तियार रो पड़ता था। इसी तरह सबको दिखाता हुआ और रुलाता हुआ सबके सामने होकर अपने मालिक के पास वापस चला गया।

उसके जाते ही वह जवान उठा और उस ग़ुलाम का सर तलवार से काटकर और सवार होकर जिधर से आया था, उधर ही को चला गया। सब खड़े देखते रहे, जब वह नज़रों से ग़ायब हुआ, लोग शहर की तरफ़ वापस चले।

मैं हर-एक से इस मामले की हक़ीक़त पूछता था, बल्कि रुपयों की लालच देता और खुशामद मिन्नत करता कि मुझे बता दो कि जवान कौन है और उसने यह क्या हर्कत की और कहाँ से आया और कहाँ गया। लेकिन हरगिज़ किसी ने न बताया और न कुछ मेरी समझ में आया। यह अजूबा देखकर जब मैं यहाँ आया और मल्का के रू-बरू मैंने वाक़या बयान किया, तब से राजकुमारी भी हैरान हो रही है और उसकी छान-बीन के लिये उतावली हो रही है। इसीलिये उसने यही अपना महर मुक़र्रर किया है कि जो उस अजूबी की पूरी और सहीं खबर लावे, उसी को वह पसन्द करेगी और वही सारे मुल्क-माल और मल्का का मालिक होगा।

यह सारा क़िस्सा तुमने सुना, अब अपने दिल में सोच लो कि अगर तुम उस जवान की ख़बर ला सकते हो तो मुल्क 'नीमरोज़' जाने का इरादा करो और जल्द रवाना हो जाओ, नहीं तो इन्कार करके अपने घर की राह लो।'

मैंने जवाब दिया कि "अगर ख़ुदा ने चाहा तो जल्द-से-जल्द उसका हाल शुरू से आख़िर तक मालूम करके बादशाहज़ादी के पास आता हूँ और कामियाब होता हूँ। और अगर मेरी क़िस्मत ही ख़राब है तो इसका कोई इलाज नहीं। लेकिन मल्का इसका वादा करें कि अपनी बात से न फिरेंगी। और सच पूछो तो एक बात का खटका बार-बार मेरे दिल में पैदा होता है। अगर मल्का ग़रीबनवाज़ी और मुसाफ़िरपर्वरी से अपने हुज़ूर में बुलाएँ और पर्दे के बाहर बिठाएँ और मेरी गुज़ारिश अपने कानों से सुनें, और उसका जवाब अपनी ज़बान से फ़र्माएँ, तो मुझे इत्मीनान हो और मुझसे सब-कुछ हो सके।" यह बात मामा ने उस ख़ूब-सूरत राजकुमारी से अर्ज़ की, उसने मेरी बात की क़द्रदानी की और हुक्म दिया, "उन्हें बुला लो।"

दाई फिर बाहर आई और मुझे अपने साथ राजकुमारी के महल में ले गई। देखता क्या हूँ कि दोनों तरफ़ क़तार में, हाथ बाँधे हुए सहेलियाँ लौंडियाँ, ख्वासें और शाही महल में पहरा देने वाली हथियार-बन्द औरतें, तुर्किनियां, हबशिनियां, उज़बेकिनियां, कश्मीरिनियां, जवाहिर में जड़ी उहदे लिये खड़ी हैं। इन्दर का अखाड़ा कहूँ या परियों का उतारा। बेअख्तियार एक आह बेख़ुदी से ज़बान तक आई, और कलेजा धड़कने लगा, पर मैंने कोशिश करके अपने को सँभाला। उनको देखता-भालता और सैर करता आगे चला। लेकिन पांव सौ-सौ मन के हो गए। जिसको देखूँ फिर न जी चाहे कि आगे जाऊँ। एक तरफ़ चिलमन पड़ी थी और जड़ाऊ मोंढ़ा रखा हुआ था, और सन्दल की एक चौकी भी बिछी थी। दाई ने मुझे बैठने का इशारा किया। मैं मोंढ़े पर बैठ गया और वह

चौकी पर और मुझसे बोली कि अब जो-कुछ कहना है जी-भर के कहो।

मैंने मल्का की खूबियों की, उसके इंसाफ़ की उसके दान देने की तारीफ़ की। फिर मैंने कहा, "जबसे मैं इस मुल्क की सरहद में आया हर शहर में यही देखा कि जगह-जगह मुसाफ़िरखाने और ऊँची-ऊँची इमारतें बनी हुई हैं और हर-एक उहदे पर आदमी मुक़र्रर हैं, जो मुसफ़िरों और मुहताजों की खबरगीरी करते हैं। मैंने भी तीन-तीन दिन हर मुक़ाम पर गुज़ारे और, चौथे रोज़ जब रुख़सत होने लगा तब भी किसी ने खुशी से न कहा कि जाओ। और जितना सामान उस मकान में होता, शतरंजी, चाँदनी, क़ालीन, सीतलपाटी, मंगल कोटी, दीवारगीरी, छत के पर्दे, चिलमनें, साएबान, नमगीरे, छपरखट, गिलाफ़ समेत, तोशक लिहाफ़ समेत, बालापोश, सोजबन्द चादर, तकिये, तकैनी, गुल तकिये, गुल मसनद, गाव तकिये, देग, देगची; पतीखा-पतीली, तबाक़, रकाबी बादिये, तश्तरी, चमचे, बकावली, कफ़गीरी, तआमबख़्श, सरपोश, सेनी, ख्वानपोश, तोरापोश, आबख़ोरे, बजरे, सुराही, लगन, पानदान, चौघड़े, चंगेर, गुलाबपाश, ऊदसोज़, आफ़्ताबा, चिलमची, सब मेरे हवाले करता कि यह सब माल तुम्हारा है, चाहो तो अभी ले जाओ वर्ना एक कोठरी में बन्द करके अपनी मुहर लगा दो, जब तुम्हारी खुशी हो वापस आकर ले जाना। मैंने ऐसा ही किया। पर यह हैरत है कि जब मुझ तनहा फ़क़ीर से यह सुलूक हुआ तो ऐसे हज़ारों ग़रीब आपके मुल्क में आते-जाते रहते होंगे। सो अगर इसी तरह हर-एक की मेहमानदारी होती होगी तो बेहिसाब रुपया खर्च होता होगा; इतनी दौलत खर्च के लिए, कहां से और कैसे आती होगी, इस तरह तो क़ारून का खजाना हो तो भी पूरा न पड़े और अगर मल्का की सल्तनत देखिये तो ज़ाहिर में उसकी आमदनी सिर्फ़ बावर्चीखाने का खर्च भी न संभाल पाती होगी। दूसरे खर्चों का तो ज़िक्र ही क्या। इसका हाल मल्का की ज़बान से सुनूँ तो इत्मीनान हो, और मुल्क 'नीमरोज़' के सफ़र

का इरादा करूं और ज्यूँ-त्यूं वहां पहुँचूं, फिर सब हाल मालूम करके अगर ज़िन्दगी होगी, तो मल्का की खिदमत में हाज़िर हूँगा और अपने दिल की मुराद पाऊंगा ।"

यह सुनकर मल्का ने खुद अपनी ज़बान से कहा कि, "ऐ जवान अगर तुझे यह हाल मालूम करने की तमन्ना है तो आज के दिन भी ठहर, शाम को तुझे अपने हुज़ूर में तलब करके जो-कुछ हाल इस न घटने वाले धन का है, पूरा-पूरा और सही-सही कह दूँगी ।"

मैं यह तसल्ली पाकर, उसी जगह लौट आया जहां मैं ठहरा था और इन्तज़ार करने लगा कि कब शाम हो और मेरा मतलब पूरा हो । इतने में ख्वाजासरा कई चौगोशे, तोरापोश, भुइयों के सर पर धरे आकर मौजूद हुआ और बोला "सरकार ने ख़ास खाना भेजा है, उसको खा लीजिये ।" जिस वक़्त मेरे सामने खाना खोला गया, बू-बास से दिमाग मुअत्तर हुआ और रूह भर गई । जितना खा सका, खा लिया, बाक़ी उन सभों को दे दिया और शुक्रिया कहला भेजा । जब तमाम दिन का थका हुआ मुसाफ़िर गिरता-पड़ता अपने महल में दाखिल हुआ और चाँद अपने हमजोलियों के साथ अपने दीवानखाने में आकर बैठा, उस वक़्त दाई आई और मुझसे बोली, 'चलो, राजकुमारी ने याद फ़रमाया है ।"

मैं उसके साथ हो लिया । वह मुझको खिल्वते-खास में ले गई । रोशनी का यह आलम था कि वहां शबे-क़द्र की क़द्र न थी और बादशाही फ़र्श पर ऐसी मसनद लगी हुई, जिस में जवाहिरात टँके हुए थे, जड़ाऊ तकिया लगा हुआ और उस पर एक शामियाना मोतियों की झालर का जड़ाऊ खम्भों पर खड़ा हुआ और मसनद के सामने जवाहिरात के दरख्त, फूल-पात लगे हुये (जैसे कि बिलकुल क़ुदरती हों, सोने की क्यारियों में जमे हुए) और दोनों तरफ, दाहने और बायें शागिर्द-पेशे, और मुजराई हाथ-बांधे अदब के साथ, आंखें नीचे किये हुए हाज़िर थे । नर्तकियाँ और गायिकायें साज़ों के सुर मिलाए इन्तज़ार में खड़ी

थीं। यह समाँ और यह तैयारी, और यह ठाठ देखकर अक्ल ठिकाने न रही।

दाई से मैंने यह पूछा, "दिन की यह ज़ेबाइश और रात की यह आराइश, ऐसी कि दिन को ईद रात को शबे-बरात कहना चाहिये। शायद दुनिया के सात मुल्कों के बादशाह को भी यह ऐश मयस्सर न होगा। क्या हमेशा यही सूरत रहती है?"

दाई कहने लगी कि "हमारी रानी का जितना कारख़ाना तुमने देखा, यह सारा-का-सारा हमेशा इसी सूरत बना रहता है, इसमें कोई कमी नहीं होती, बल्कि यह बढ़ता जाता है। तुम यहाँ बैठो, रानी दूसरे मकान में तशरीफ़ रखती हैं, मैं जाकर ख़बर कर दूँ।"

दाई यह कहकर गई, और कुछ ही देर में पलट आई, और कहने लगी, "चलो हुज़ूर में!"

मैं उस मकान में जाते ही भौचक्का रह गया। यह न मालूम हुआ कि दरवाज़ा कहाँ और दीवार किधर है, इस वास्ते कि चारों तरफ़ पूरे-क़द के हलब्बी आईने लगे हुये थे। उनकी परदाज़ों में हीरे और मोती जड़े थे। एक का अक्स एक में नज़र आता तो यह मालूम होता कि जवाहिर का सारा मकान है। एक तरफ़ पर्दा पड़ा था। उसके पीछे मल्का बैठी थीं। वह दाई पर्दे से लगकर बैठी और उसने मुझे भी बैठने को कहा। उसके बाद मल्का के हुक्म से दाई इस तरह बयान करने लगी कि, "ऐ अक्लमन्द जवान सुन! इस मुल्क का सुल्तान बड़ा बादशाह था, उसके घर में सात बेटियां पैदा हुईं। एक रोज़ बादशाह ने जश्न किया, और सातों लड़कियाँ सोलह-सिंगार, बारह अभरन, बाल-बाल गज मोती पिरो कर उसके हुज़ूर में खड़ी थीं, सुल्तान के जी में कुछ आया तो बेटियों की तरफ़ देखकर फ़र्माया, "अगर तुम्हारा बाप बादशाह न होता, तो तुम्हें मल्का और बादशाह-ज़ादी कौन कहता? खुदा का शुक्र अदा करो कि राजकुमारी कहलाती हो। तुम्हारी यह सारी इज्ज़त मेरे दम से है।"

छः लड़कियाँ एक ज़बान होकर बोलीं कि "जहाँ पनाह जो फ़र्माते हैं, बजा है और आपकी सलामती में ही हमारी भलाई है।" लेकिन हमारी मल्का जो सब बहनों से छोटी थीं, पर अक़्ल और समझ में उस उम्र में भी अपनी सब बहनों से बड़ी थीं, यह चुपकी खड़ी रहीं और बहनों की बातचीत में शामिल न हुईं। इस वास्ते कि ऐसी बात कहना मज़हब के ख़िलाफ़ था।

बादशाह ने ग़ुस्से की नज़र से उनकी तरफ़ देखा और कहा, "क्यों बेटी, तुम कुछ न बोलीं, इसका क्या सबब है?"

तब मल्का ने अपने दोनों हाथ रूमाल से बांधकर अर्ज़ किया कि "अगर जानबख़्शी हो, और क़ुसूर माफ़ हो तो यह लौंडी अपने दिल की बात अर्ज़ करे।"

हुक्म हुआ, "कह! कह! क्या कहती है?" मल्का ने कहा, "क़िबलए आलम! आपने सुना है कि सच्ची बात कड़वी लगती है, सो इस वक़्त मैं अपनी ज़िन्दगी से हाथ धोकर अर्ज़ करती हूँ और जो-कुछ मेरी क़िस्मत में लिखने वाले ने लिखा है, उसका मिटाने वाला कोई नहीं, वह किसी तरह नहीं टलने का—

ख़्वाह तुम पाँव घिसो, कि रखो सर बसजूद!
बात पेशानी की जो कुछ है सो पेश आती है!

"जिस ताक़त वाले बादशाह ने आप को बादशाह बनाया, उसी ने मुझे भी बादशाहज़ादी कहलवाया। उसकी क़ुदरत के कारख़ाने में किसी का अख़्तियार नहीं चलता। आप की ज़ात हमारी वली-ए-नेमत और क़िबला-व-काबा है। आप के मुबारक क़दम की ख़ाक को अगर सुर्मा बनाऊँ तो बजा है। मगर नसीब हर-एक का हर-एक के साथ है।"

बादशाह को यह सुनकर ग़ुस्सा आया और यह जवाब उसके दिल को बहुत बुरा मालूम हुआ। बेज़ार होकर बादशाह ने फ़र्माया, "छोटा मुँह बड़ी बात! अब इसकी यही सज़ा है कि गहना-पाता जो-कुछ

इसके हाथ और गले में है, सब उतार लो और एक मियाने में चढ़ाकर ऐसे जंगल में फेंक आओ, जहाँ आदमी-आदमज़ाद का नामो-निशान न हो। देखा जाय कि इसके नसीबों में क्या लिखा है?"

बादशाह के हुक्म के मुताबिक़, आधी रात में, और ऐसी रात जो घोर अंधेरी थी, मल्का को, जो निरे भौंरे-भौंरे में पली थी और जिसने सिवाय अपने महल के दूसरी जगह न देखी थी, उसे भुँइ ले जाकर एक ऐसे मैदान में जहाँ परिन्दा पर न मारता था, इंसान का तो ज़िक्र ही क्या, छोड़कर चले आये।

मल्का के दिल पर अजब हालत गुज़रती थी कि एक दम में क्या था, और क्या हो गया? फिर अपने खुदा के हुज़ूर में शुक्र अदा करतीं और कहतीं, "तू ऐसा ही बेनयाज़ है जो चाहा सो किया, और जो चाहता है, सो करता है, और जो चाहेगा सो करेगा। जब तलक नथनों में दम है, तुमसे नाउम्मीद नहीं होती।"

इसी खटके में आँख लग गई। जिस वक्त सुबह होने को आई, मल्का की आँख खुल गई। मल्का ने पुकारा, "वज़ू को पानी लाना।" फिर एकबारगी रात की बातचीत याद आई, कि तू कहाँ और यह बात कहाँ? यह कहकर उठकर तैमूम किया, और नमाज़ शुक्र की पढ़ी। ऐ अज़ीज़! मल्का की इस हालत के सुनने से छाती फटती है, उस भोले-भाले जी से पूछा चाहिए कि क्या कहता होगा।

ग़रज़ उस मयाने में बैठी हुई, खुदा से लौ लगाए हुए थीं और यह कवित्त उस दम पढ़ती थीं—

जब दाँत न थे तब दूध दियो, जब दाँत दिये काह अन्न न देहैं।
जो जल में, थल में पंछी, पशु की सुध लेत सो तेरी भी लेहैं।
काहे को सोच करे मन मूरख, सोच करे कुछ हाथ न अइहै:
जान को देत, अजान को देत, जहान को देत सो तोको भी दइहैं।

सच है, जब कुछ बन नहीं आता, तब खुदा याद आता है। नहीं

तो, अपनी-अपनी तदबीर में हर-एक लुक़मान और बू अली सेना है। अब ख़ुदा के कारख़ाने का तमाशा सुनो। इसी तरह तीन दिन-रात साफ़ गुज़र गए कि मल्का के मुँह में एक खील भी उड़कर न गई। वह फूल-सा बदन सूखकर काँटा हो गया और वह रंग जो कुन्दन-सा दमकता था, हल्दी-सा बन गया। मुँह में फेफड़ी बन गई, आँखें पथरा गईं। मगर सिर्फ़ दम अटक रहा था और वह आता-जाता था। जब तलक साँस, तब तलक आस!

चौथे रोज़ सुबह को एक दर्वेश, ख़िज़्र की सी सूरत, नूरानी चेहरा, रौशन दिल, वहाँ आया।

मल्का को उस हालत में देखकर बोला, 'ऐ बेटी, अगरचे बाप बादशाह है, लेकिन तेरी क़िस्मत में यह भी बदा था। अब इस फ़क़ीर बूढ़े को अपना नौकर समझ और अपने पैदा करने वाले का ध्यान रख। ख़ुदा जो करेगा, अच्छा करेगा और फ़क़ीर के कश्कोल में जो टुकड़े भीख के मौजूद थे, मल्का के सामने रखे और पानी की तलाश में फिरने लगा। देखा तो एक कुआँ तो है पर डोल-रस्सी कहाँ जिससे पानी भरे! थोड़े पत्ते दरख्त से तोड़कर दोना बनाया और अपनी पगड़ी खोलकर उसमें बांध कर निकाला और मल्का को कुछ खिलाया-पिलाया। बारे उसे कुछ होश आया और मर्दे-ख़ुदा ने बेबस और बेकस जानकर बड़ी तसल्ली दी और ढारस दी और ख़ुद भी रोने लगा। मल्का ने जब उसकी हमदर्दी और दिलदारी देखी तब उनकी तबीअत भी कुछ बहाल हुई। उस दिन से उस बूढ़े आदमी ने यह दस्तूर बना लिया कि सुबह को भीख मांगने के लिए निकल जाता, जो टुकड़ा-पार्चा पाता मल्का के पास ले आता और खिलाता।

इस तरह थोड़े दिन गुज़रे। एक दिन मल्का ने सर में तेल डालने और कंघी-चोटी करने का इरादा किया, जैसे ही मुबाफ़ खोला, चुटले में से एक मोती का दाना गोल, आबदार निकल पड़ा। मल्का ने उस दर्वेश को दिया और कहा शहर में इस को बेच लाओ। वह फ़क़ीर उस मोती क

बेचकर उसकी क़ीमत राजकुमारी के पास ले आया। तब मल्का ने हुक्म दिया कि एक मकान गुज़र के लायक़ इस जगह बनाओ।

फ़क़ीर ने कहा, 'ऐ बेटी, दीवार की नींव खोदकर थोड़ी सी मिट्टी जमा करो। एक दिन मैं पानी लाकर, गारा बनाकर घर की बुनियाद दुरुस्त कर दूँगा।"

मल्का ने उसके कहने से मिट्टी खोदनी शुरू की। जब एक गज़ गहरा गड्ढा खुद गया तो ज़मीन के नीचे से दरवाज़ा दिखाई दिया, और मल्का ने उस दर को साफ़ किया। एक बड़ा घड़ा जवाहिरात और अशर्फियों से भरा हुआ दिखाई दिया। मल्का ने पाँच-चार मुट्ठी अशर्फ़ियों को लेकर, फिर दरवाजा बन्द कर दिया और मिट्टी देकर ऊपर से बराबर कर दिया। इतने में फ़क़ीर आया। मल्का ने उससे फ़र्माया कि, "राज और मेमार, कारीगर और अपने काम के उस्ताद और मज़दूर जल्द से जल्द बुलाओ जो इस मकान पर एक बादशाही शान की इमारत बनाई जाय और इसके साथ-साथ शहर-पनाह और क़िला, बाग़, बावली और एक मुसाफ़िरखाना जो अपनी मिसाल न रखता हो, यह सारी चीज़ें जल्द तैयार करें, लेकिन पहले उनका नक़शा एक काग़ज़ पर तैयार करें, और मेरे सामने लावें, जिसे पसन्द किया जा सके।"

फ़क़ीर ने ऐसे ही कारीगर, मिस्तरी, अपने काम के माहिर लाकर हाज़िर किये। बादशाहज़ादी के फ़र्माने के मुताबिक़ इमारत बनना शुरू हो गई, और हर काम के लिये नौकर-चाकर रखे गए। उस आलीशान इमारत की तैयारी की खबर धीरे-धीरे बादशाह (जो मल्का के पिता थे) तक भी पहुँची। यह सुनकर बादशाह को बड़ा ताज्जुब हुआ और हर एक से पूछा कि "यह कौन शख्स है, जिसने ये महल बनवाने शुरू किये हैं?" उसके हाल से कोई वाक़िफ़ न था, जो अर्ज़ करता। सभों ने कानों पर हाथ रखे कि हममें से कोई गुलाम नहीं जानता कि इसको बनवाने वाला कौन है? तब बादशाह ने एक अमीर को भेजा और पैग़ाम दिया कि "मैं इन मकानों को देखने को आना चाहता हूँ और

यह भी मालूम नहीं कि तुम कहाँ की राजकुमारी हो, और किस ख़ानदान से हो। मुझे यह सारी बातें जानने की ख़्वाहिश है।"

जैसे ही मल्का ने यह ख़ुशख़बरी सुनी, दिल में बहुत ख़ुश हुई, और उसने यह अर्ज़ी लिखी कि, 'जहाँ पनाह सलामत ? हुज़ूर के ग़रीबख़ाने की तरफ़ तशरीफ़ लाने की ख़बर सुनकर निहायत ख़ुशी हासिल हुई, और इस नाचीज़ की इज़्ज़त बढ़ने का सबब हुई। वाह रे नसीब उस मकान का, जहाँ आप के मुबारक क़दमों के निशान पड़ें, और जहाँ के रहने वालों पर आप की मुबारक छाया पड़े, और वह दोनों आप की तवज्जुह से सरबलन्द होवें। यह लौंडी उम्मीदवार है कि कल जुमेरात का मुबारक दिन है, और मेरे लिए यह दिन नौरोज़ से भी बेहतर है। आप की ज़ात सूरज के समान है,। आप यहाँ तशरीफ़ लाकर अपनी रोशनी से इस नाचीज़ ज़र्रे को इज़्ज़त और मर्तबा बख़्शिये और जो कुछ इस लौंडी को मयस्सर हो सके, नोश फ़रमाइये। यह ख़ास ग़रीबनवाज़ी और मुसाफ़िरपर्वरी होगी। ज़्यादा अदब और लिहाज़ की वजह से नहीं लिख सकती।" मल्का ने उस पैग़ामबर को भी ख़ातिर-तवाज़ो करके रुख़सत किया।

बादशाह ने अर्ज़ी पढ़ी और कहला भेजा कि, "हमने तुम्हारी दावत क़ुबूल की, ज़रूर आवेंगे।" मल्का ने नौकरों और कारिन्दों को हुक्म दिया कि दावत का इन्तज़ाम इस सलीक़े से हो कि बादशाह देखकर और खाकर ख़ुश हो और छोटे-बड़े जो बादशाह की रकाब में आवें, सब खा-पीकर ख़ुश होकर जावें।"

मल्का के फ़र्माने और ताकीद करने से, सब क़िस्म के खाने, सलोने और मीठे इस ज़ायक़े के तैयार हुए कि अगर ब्राह्मण की बेटी खाती तो कलमा पढ़ती। जब शाम हुई, बादशाह मुंडे तख़्त पर सवार होकर मल्का के मकान की तरफ़ तशरीफ़ लाए और मल्का अपनी ख़ास-ख़ास सहेलियों को लेकर स्वागत के वास्ते चलीं। जैसे ही मल्का की नज़र

बादशाह के तख्त पर पड़ी, उसने इतने अदब के साथ मुजरा अर्ज़ किया कि यह क़ायदा देखकर बादशाह को और भी हैरत हुई। उसी अन्दाज़ से जलवा करके बादशाह को सोने के तख्त पर ला बिठाया। मल्का ने सवा लाख रुपये का चबूतरा तैयार करवा रखा था और एक सौ किश्ती जवाहिर, अशर्फ़ी और पश्मीना और नूरबाफ़ी, तिलाबाफ़ी और ज़दोंज़ी की लगा रखी थी और दो सजे हुए हाथी और दस इराक़ी और यमनी साज़-रास से सुसज्जित घोड़े बादशाह को भेंट किये और खुद दोनों हाथ बाँधे सामने खड़ी रही। बादशाह ने बड़ी मेहरबानी से पूछा कि, 'तुम किस मुल्क की राजकुमारी हो और यहाँ किस तरह आना हुआ?'

"मल्का ने आदाब बजा लाकर अर्ज़ किया कि, 'यह लौंडी वही गुनहगार है जो जहाँपनाह के गुस्से की वजह से इस जंगल में पहुँची और यह सब तमाशे खुदा के हैं जो आप देखते हैं।' यह सुनते ही बादशाह के लहू ने जोश मारा। उसने उठकर राजकुमारी को मुहब्बत से गले लगा लिया और हाथ पकड़कर अपने तख्त के पास कुर्सी बिछवाकर बैठने का हुक्म दिया। लेकिन बादशाह हैरान और ताज्जुब में बैठे थे। बादशाह ने फ़र्माया कि बेगम को कहो कि राजकुमारियों को अपने साथ लेकर जल्द आवें। जब वे सब आईं तो बहनों ने पहिचाना, खूब गले मिलकर रोईं और शुक्र किया। मल्का ने अपनी माँ और छहों बहनों के सामने इतनी नक़दी, सोना और जवाहिर रखे कि सारे आलम का खज़ाना उसके पासंग में न चढ़े। फिर बादशाह ने सबको साथ बिठाकर खाना खाया।

"जब तलक बादशाह जीते रहे, इसी तरह गुज़री। कभी-कभी आप आते और कभी मल्का को भी अपने साथ महलों में ले जाते। जब बादशाह परलोक सिधारे तब इस मुल्क की बादशाहत मल्का को मिली क्योंकि सिवाय इनके कोई दूसरा इस काम के लायक़ न था।

"ऐ अज़ीज़! यही सरगुज़श्त मल्का की है जो तूने सुनी। इससे ज़ाहिर

होता है कि खुदा की दी हुई दौलत में हरगिज़ कमी नहीं होती, लेकिन आदमी की नीयत साफ़ होनी चाहिये। ऐसे धन को जितना खर्च करो, उतनी ही उसमें बरकत होती है।

"खुदा की क़ुदरत पर ताज्जुब करना किसी मज़हब में जायज़ नहीं।"

दाई ने यह बात पूरी कहकर कहा कि, "अब अगर वहाँ जाने और वहाँ की खबर लाने का दिल में पूरा इरादा रखते हो, तो जल्द रवाना हो जाओ।"

मैंने कहा "इसी वक्त जाता हूँ और खुदा चाहेगा तो जल्द वापस आता हूँ।" और आखिर वहाँ से रुखसत होकर खुदा की मेहरबानी पर नज़र रखकर उस दिशा में चल पड़ा।

एक बरस के अर्से में हर तरह की कठिनाइयाँ झेलता हुआ, शहर 'नीमरोज़' में जा पहुँचा और देखा कि जितने आदमी हज़ारी और बज़ारी वहाँ नज़र पड़े, सब काले कपड़े पहने हुए थे। जैसा हाल सुना था वैसा अपनी आँखों देखा। कई दिनों के बाद चाँद रात हुई। पहली तारीख को उस शहर के सारे लोग, छोटे-बड़े, लड़के-बाले, अमीर बादशाह, औरत-मर्द एक मैदान में जमा हुये। मैं भी अपनी हालत में हैरान परीशान, अपने माल-मुल्क से दूर, फ़क़ीर की सूरत बनाए हुए उसी भीड़ के साथ खड़ा तमाशा देखता था कि देखिए आज क्या होता है? इतने में, एक जवान, बैल पर सवार, मुँह में कफ़ भरे जोश-खरोश करता हुआ जंगल से बाहर निकला। मैं, जो इतनी मुसीबत उठाकर उसका हाल जानने के लिए गया था, उसे देखते ही हवास खोकर हैरान खड़ा रह गया।

वह जवान मर्द अपने पुराने क़ायदे पर जो काम किया करता था, करके वापस चला गया और शहर की खिलक़त शहर की तरफ़ पलट पड़ी। जब मुझे होश आया, तब मैं पछताया कि यह तुझसे क्या हरकत हुई। अब महीना भर फिर राह देखनी पड़ी। और मैंने उस महीने को रोज़े के महीने की तरह एक-एक दिन गिनकर काटा।

बारे दूसरी चाँद-रात आई। मेरे लिए जैसे ईद हो गई। पहले की तरह फिर बादशाह आम जनता के साथ, वहीं जाकर इकट्ठे हुए। तब मैंने अपने दिल में मज़बूत इरादा कर लिया कि अबकी बार, जो हो सो हो, इस अजीब मामले को मालूम किया चाहिये।

अचानक अपने दस्तूर के मुताबिक़ वही जवान ज़र्द बैल पर सवार, उस पर ज़ीन बाँधे आ पहुँचा और उतरकर घुटने मोड़कर बैठा। एक हाथ में नंगी तलवार और एक हाथ में बैल की नाथ पकड़ी और मर्तबान गुलाम को दिया।

गुलाम मर्तबान हर-एक को दिखाकर ले गया। आदमी उसे देखकर रोने लगे। उस जवान ने मर्तबान फोड़ा और गुलाम को एक तलवार ऐसी मारी कि उसका सर अलग हो गया और आप सवार होकर मुड़ा।

मैं उसके पीछे-पीछे तेज़ क़दम उठाकर चलने लगा। शहर के आदमियों ने मेरा हाथ पकड़ा और कहा कि, "यह क्या करता है? क्यों जान-बूझ कर मरता है? अगर ऐसा तेरा दम नाक में आया है तो बहुतेरे तरीक़े मरने के हैं, मर रहियो।"

हरचन्द मैंने मिन्नत की और ज़ोर भी किया कि किसी सूरत से उनके हाथ से छूटूँ, पर छुटकारा न हुआ। दो-चार आदमी लिपट गए और पकड़े हुए बस्ती की तरफ़ ले आये। अजब तरह के क़लक़ में फिर महीना-भर गुज़रा।

जब वह महीना भी ख़त्म हुआ और चाँद-रात आई, सुबह से उसी सूरत से वहाँ सारा आलम इकट्ठा होने लगा। मैं सबसे अलग नमाज़ के वक़्त उठकर आगे ही जङ्गल में जो उस जवान के रास्ते में था, घुसकर छुप रहा कि वहाँ तो कोई मेरी राह नहीं रोकेगा। वह जवान उसी क़ायदे से आया और वही हरकतें करके सवार हुआ और वापस चला।

मैंने उसका पीछा किया और दौड़ता-धूपता साथ हो लिया। उस जवान ने आहट से मालूम किया कि कोई चला आता है। एक बारगी बाग मोड़कर एक नारा मारा और मुझे घुड़का। तलवार खींच कर वह मेरे सर पर आ पहुँचा। चाहता था कि हमला करे। मैंने निहायत अदब से झुक कर सलाम किया और दोनों हाथ बाँधकर खड़ा रह गया। वह क़ायदा और तौर-तरीक़ा जानने वाला जवान बोला, "ऐ फ़क़ीर! तू नाहक़ मारा गया होता, पर बच गया। तेरी ज़िन्दगी कुछ बाक़ी है। जा, कहाँ आता है?" और जड़ाऊ खंजर मोतियों का और आवेज़ा लगा हुआ, कमर से निकाल कर मेरे आगे फेंका और कहा, "इस वक़्त मेरे पास नक़द कुछ मौजूद नहीं, जो तुझे दूँ। इसको बादशाह के पास ले जा। जो तू मांगेगा, मिलेगा।" उसका ऐसा डर और ऐसा रोब मुझपर छाया, न बोलने की क़ुदरत, न चलने को ताक़त, मेरी घिग्घी बंध गई, पांव भारी हो गए।

इतना कहकर वह ग़ाज़ी मर्द नारा भरता हुआ चला। मैंने दिल में कहा कि जो कुछ होगा देखा जाएगा। अब यहाँ रह जाना तेरे हक़ में बुरा है। फिर ऐसा मौक़ा न मिलेगा। अपनी जान से हाथ-धोकर मैं भी रवाना हुआ। फिर वह मुड़ा और बड़े ग़ुस्से से मुझे डांटा और यक़ीनन इरादा मेरे क़त्ल का किया। मैंने सर झुका दिया और क़सम दी कि, "ऐ रुस्तमे-ज़माँ। ऐसी तलवार मार कि साफ़ दो टुकड़े हो जाऊँ। एक तस्मा बाक़ी न रहे और मैं इस परेशानी और तबाही से छूट जाऊँ। मैंने अपना ख़ून माफ़ किया।"

वह बोला कि, "ऐ शैतान की सूरत! क्यों अपना ख़ून नाहक़ मेरी गर्दन पर चढ़ाता है और मुझे गुनहगार बनाता है? जा, अपनी राह ले। क्या जान भारी पड़ी है?"

मैंने उसका कहना न माना और क़दम आगे धरा। फिर उसने जान-बूझकर आना कानी दी और मैं पीछे लग लिया। जाते-जाते

दो कोस झाड़ी जंगल तै किया। एक चहारदीवारी नज़र आई। वह जवान दरवाज़े पर गया और एक डरावना नारा मारा। वह दरवाज़ा आप से आप खुल गया। वह अन्दर पैठा। मैं बाहर का बाहर खड़ा रह गया।

इलाही अब क्या करूँ! हैरान था। बारे एक दम के बाद एक ग़ुलाम आया और पैग़ाम लाया कि "चल! तुझे अपने रू-बरू बुलाया है। शायद तेरे सर पर मौत का फ़रिश्ता आया है। क्या तुझे कमबख्ती लगी थी?"

मैंने कहा, "मेरी क़िस्मत जागी है।" और, मैं बेधड़क उसके साथ बाग़ के अन्दर चला गया।

आख़िर वह मुझे एक मकान में ले गया, जहाँ वह बैठा था। मैंने उसे देखकर फ़र्शी सलाम किया। उसने बैठने को इशारा किया। मैं अदब से घुटने मोड़कर बैठा। क्या देखता हूँ कि वह जवान अकेला एक मसनद पर बैठा है और सोना बनाने के औज़ार आगे धरे हैं और एक झाड़ ज़मुर्रद का तैयार कर चुका है। जब उसके उठने का वक्त आया, जितने ग़ुलाम उस शाहनशीन के चारों तरफ़ आगे-पीछे हाज़िर थे, सब-के-सब कोठरियों में छुप गये। मैं भी डर के मारे एक कोठरी में जा घुसा।

वह जवान उठकर सब कोठरियों की कुंडियाँ चढ़ाकर बाग़ के कोने की तरफ़ चला और अपनी सवारी के बैल को मारने लगा। उसके चिल्लाने की आवाज़ मेरे कान में आई। कलेजा काँपने लगा। लेकिन इसी मामले की हक़ीक़त जानने के लिए तो यह सब आफ़तें सही थीं। मैं डरते-डरते दरवाज़ा खोलकर एक दरख्त के तने की आड़ में जाकर खड़ा हुआ और देखने लगा। कुछ देर के बाद जवान ने वह सोंटा जिससे बैल को मारता था, हाथ से डाल दिया और एक मकान का ताला कुंजी से खोला और अन्दर गया। फिर

फ़ौरन ही बाहर निकल कर बैल की पीठ पर हाथ फेरा और मुँह चूमा और दाना-घास खिलाकर इधर को चला। मैं देखते ही जल्द दौड़कर फिर कोठरी में जा छुपा।

उस जवान ने सब दरवाज़ों की ज़ंजीरें खोल दीं। सारे ग़ुलाम बाहर निकले, ज़ेर-अंदाज़ सिलफ़ची, आफ़ताबा लेकर हाज़िर हुये। वह वज़ू करके नमाज़ की ख़ातिर खड़ा हुआ। जब वह नमाज़ अदा कर चुका तो पुकारा कि, "वह दर्वेश कहां है।"

अपना नाम सुनते ही मैं दौड़कर रू-बरू जा खड़ा हुआ। उस जवान ने फ़रमाया "बैठो!"

मैं तस्लीम करके बैठा। खाना आया। उसने खाना खाया, मुझे भी खिलाया। जब दस्तरख्वान बढ़ाया और हम दोनों ने हाथ धो लिया, तो उसने ग़ुलामों को छुट्टी दी कि "जाकर सो रहो।" जब कोई उस मकान में न रहा, तब मुझसे बातें करने लगा। उसने मुझसे पूछा कि, "ऐ अज़ीज़, तुझपर क्या ऐसी आफ़त आई है, जो अपनी मौत को ढूँढता फिरता है?" मैंने अपना हाल शुरू से आख़िर तक जो कुछ गुज़रा था, तफ़सील से बयान किया और कहा कि, "आपकी तवज्जुह से उम्मीद है कि अपनी मुराद को पहुँचूँगा।" उसने यह सुनते ही एक ठंडी सांस भरी और बेहोश हुआ और कहने लगा, "ख़ुदाया! इश्क़ के दर्द से तेरे सिवा कौन वाक़िफ़ है! जिसके पांव न फटी बवाई, वह क्या जाने पीर पराई? इस दर्द की क़द्र जो दर्दमन्द हो सो जाने—

आफ़तों को इश्क़ की आशिक़ से पूछा चाहिए।
क्या ख़बर फ़ासिक़ को है सादिक़ से पूछा चाहिये॥

एक लमहे के बाद उसे होश आया और एक कलेजे को छेदने वाली आह भरी। सारा मकान गूँज गया। तब मुझे यक़ीन हुआ कि यह भी इसी इश्क़ की बला में गिरफ्तार है और इसी मर्ज़ का बीमार

है। तब तो मैंने दिल चलाकर कहा कि, "मैंने अपना सब हाल अर्ज़ किया। आप भी तवज्जुह करके अपने हाल से मुझे आगाह कीजिए। तो मैं भी, जहां तक मेरा बस चले, अपने मतलब तक पहुँचने से पहले आप के लिए कोशिश करूँ और शायद कोशिश से दिल का मतलब हाथ में लाऊँ।" क़िस्सा यह कि वह सच्चा आशिक़ मुझको अपना हमराज़ और हमदर्द जानकर अपना हाल इस तरह बयान करने लगा—"सुन ऐ अज़ीज़! मैं दिल-जला इसी मुल्क 'नीमरोज़' का हूँ। बादशाह सलामत ने मेरे पैदा होने के बाद नजूमी, ज्योतिषी और रम्माल और पण्डित जमा किये और फ़रमाया कि शाहज़ादे की क़िस्मत का हाल देखो और जांचो और जन्मपत्री बनाओ और जो-कुछ होना है, पल-पल, घड़ी-घड़ी और पहर-पहर, दिन-दिन, महीने-महीने और बरस-बरस का मुफ़स्सल हाल बताओ।

"बादशाह के हुक्म के मुताबिक़, सब ने मिलकर, अपने-अपने इल्म से जांचकर और साधकर अर्ज़ किया कि खुदा की मेहरबानी से शाहज़ादे का जन्म ऐसी अच्छी घड़ी और शुभ लग्न में हुआ है कि होना यह चाहिए कि सिकन्दर सी बादशाहत करे और नौशेरवां की तरह इंसाफ़ करने वाला हो और जितने इल्म और हुनर हैं, उनमें पूरा उतरे और जिस काम की तरफ़ उसका दिल मायल हो वह उसे अच्छी तरह हासिल करे। दान देने में और बहादुरी में ऐसा नाम पैदा करे कि लोग हातिम और रुस्तम को भूल जायँ। लेकिन चौदह बरस तलक सूरज और चांद को देखने से एक बड़ा खतरा नज़र आता है; बल्कि यह खटका है कि पागल, सौदाई होकर बहुत आदमियों का खून करे और बस्ती से घबराये और जंगल में निकल जाए। इसलिए यह क़ैद रहे कि रात-दिन चांद-सूरज को न देखे बल्कि रात-दिन आसमान की तरफ़ निगाह भी न करने पाये। जो इतनी मुद्दत ठीक-ठिकाने से कटे तो फिर सारी उम्र सुख और चैन से बादशाहत करे।

"यह सुनकर बादशाह ने एक बाग़ की नींव डाली और हर-एक नक्शे

के कई मकान बनवाए और मेरे तहख़ाने में पलने का हुक्म दिया और उसके ऊपर एक बुर्ज नमदे का तैयार करवा दिया ताकि धूप और चाँदनी उसमें से न छने। मैं दाई, दूध पिलाई और अंगा छूछू और कई ख़ासों के साथ, उस आलीशान मकान में हिफ़ाज़त के साथ पलने लगा। एक तजर्बेकार, अक्लमन्द उस्ताद को मेरी तालीम-तर्बियत के लिये मुक़र्रर किया और मैं हर इल्म और हुनर की तालीम और सातों क़लम लिखने की मश्क़ करने लगा। जहाँपनाह हमेशा मेरी खबरगीरी किया करते और पल-पल और घड़ी-घड़ी का हाल बादशाह के हुज़ूर में अर्ज़ किया जाता। मैं उस मकान को सारी दुनिया जानकर खिलौनों और रंग-बिरंग के फूलों से खेला करता और सारी दुनिया की नेमतें खाने के वास्ते मौजूद रहतीं। जो चाहता सो खाता। दस बरस तक जितनी कलाएँ और विद्यायें थीं, सब मैंने हासिल कर लीं।

"एक दिन उसी गुंबद के नीचे, रोशनदान से एक अचंभे का फूल नज़र पड़ा। मैंने चाहा कि हाथ से पकड़ लूँ। जैसे-जैसे मैं हाथ लंबा करता जाता था वह और ऊँचा होता जाता था। मैं हैरान होकर उसे तक रहा था। वैसे ही एक क़हक़हे की आवाज़ मेरे कान में पड़ी। मैंने उसे देखने को गर्दन उठाई तो देखा कि नम्दे को चीरकर एक चाँद-सा मुखड़ा निकल रहा है। उसे देखते ही मेरे होश-हवास ठिकाने न रहे।

"मैंने अपने को फिर सँभालकर देखा तो एक सोने का तख्त परियों के कन्धों पर टिका हुआ खड़ा है और एक परी जवाहिरात का ताज पहने और झलाझोर खिलअत बदन पर पहने, हाथ में याक़ूत का प्याला लिये और शराब पिये हुए उस सोने के तख्त पर बैठी है। वह तख्त ऊँचाई से धीरे-धीरे नीचे उतरकर उस बुर्ज में आया। तब परी ने मुझे बुलाया और अपने नज़दीक बिठाया और प्यार की बातें करने लगी और मुँह से मुँह मिलाकर एक जाम गुलाब की शराब का मुझे पिलाया और

कहा, 'आदमीज़ाद बेवफ़ा होता है। लेकिन हमारा दिल तुझे चाहता है' एक दम में ऐसी नाज़ो-अन्दाज़ की बातें कीं कि मेरा दिल फ़रेफ्ता हो गया और ऐसी खुशी मिली कि ज़िन्दगी का मज़ा पाया और यह समझा कि आज तू दुनिया में आया है।

"कहने का हासिल यह है कि मैं तो क्या हूँ किसी ने यह आलम न देखा न सुना होगा। उस मज़े में डूबे हम दोनों इत्मीनान से बैठे थे कि कुरियाल में गुलेला लगा। अब उस अचानक हादिसे का हाल सुनो।

"उसी वक्त चार परीज़ादों ने आसमान से उतरकर उस माशूक़ा के कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही उसके चेहरे का रंग बदल गया और मुझसे बोली कि, 'ऐ प्यारे! दिल तो यही चाहता था कि कुछ देर तेरे साथ बैठ कर दिल बहलाऊँ और इसी तरह हमेशा आऊँ या तुझे अपने साथ ले जाऊँ। पर यह आसमान दो चाहने वालों को एक जगह आराम से और खुशी से रहने नहीं देता। ले जानाँ! अब तेरा खुदा निगहबान है।' यह सुनकर मेरे हवास जाते रहे और तूती हाथ की उड़ गई। मैंने कहा कि, 'अजी! अब फिर कब मुलाक़ात होगी? यह तुमने क्या ग़ज़ब की बात सुनाई? अगर जल्द आओगी तो मुझे जीता पाओगी, नहीं तो पछताओगी। या, अपना ठिकाना और नामो-निशान बताओ, कि मैं ही उस पते पर ढूँढते-ढूँढते अपने को तुम्हारे पास पहुँचाऊँ।'

"यह सुनकर बोली, 'दूर पार शैतान के कान बहरे! तुम्हारी उम्र एक सौ बीस साल की होवे। अगर ज़िन्दगी है तो फिर मुलाक़ात होगी। मैं जिन्नों के बादशाह की बेटी हूँ और 'कोह काफ़' पर रहती हूँ।' इतने में परियों ने तख्त उठाया और वह जिस तरह उतरा था वैसे ही ऊँचा होने लगा। जब तलक सामने था मेरी और उसकी आँखें चार हो रही थीं। जब तख्त नज़रों से गायब हुआ, यह हालत हो गई जैसे परी का साया होता है। अजब तरह की उदासी दिल पर छा गई। अक्ल और होश रुखसत हुए। दुनिया आँखों तले अंधेरी हो गई। हैरान, परेशान, ज़ार-

ज़ार रोना और सर पर ख़ाक उड़ाना, कपड़े फाड़ना; न खाने की सुध, न भले-बुरे की बुध।

इस इश्क़ की बदौलत क्या-क्या ख़राबियाँ हैं!
दिल में उदासियाँ हैं और इज़्तेराबियां हैं!

"इस ख़राबी से दाई और उस्ताद आगाह हुए। डरते-डरते बादशाह के रूबरू गए कि मालूम नहीं अपने-आप यह क्या ग़ज़ब टूटा, जवान शहज़ादे का आराम और खाना-पीना सब छूटा। तब बादशाह, वज़ीर, अमीर, सूझ-बूझ वाले हकीम, तबीब, मुल्ला, सयाने, पहुँचे फ़क़ीर, दर्वेश, सालिक, मजज़ूब इन सबको साथ लेकर बाग़ में तशरीफ़ लाए और मेरी बेक़रारी और नाला-ओ-ज़ारी देखकर उनकी हालत भी बेक़रारी की हो गई। आंख में आंसू भरकर बेअख्तियार गले से लगा लिया और इस मर्ज़ के इलाज की तदबीर करने का हुक्म दिया।

"हकीमों ने दिल की ताक़त और दिमाग़ की ख़राबी के वास्ते नुस्ख़े लिखे और मुल्लाओं ने नक़्श-तावीज़ पिलाने और पास रखने को दिये। दुआएँ पढ़-पढ़ कर फूँकने लगे। नजूमी बोले कि सितारों की गर्दिश से यह सूरत पैदा हुई है। ग़रज़ हर कोई अपने-अपने इल्म की बातें कहता था। पर मुझ पर जो गुज़रती थी, मेरा दिल ही सहता था। किसी की कोशिश, तदबीर मेरी बुरी तक़दीर के काम न आई। दिन-ब-दिन पागलपन का ज़ोर बढ़ता गया और मेरा बदन बग़ैर आबो-दाने के कमज़ोर हो चला। रात-दिन चिल्लाना और सर पटकना ही बाक़ी रहा। इसी हालत में तीन साल गुज़रे। चौथे बरस एक सौदागर सैरोसफ़र करता हुआ आया और हर-एक मुल्क के अजीबो-ग़रीब तुहफ़े जहांपनाह के हुज़ूर में लाया, मुलाज़िमत हासिल की।

"बादशाह ने उस पर तवज्जुह फ़रमाई और उसका हाल पूछने के बाद उससे पूछा कि, 'तुमने बहुत मुल्क देखे, कहीं कोई माहिर हकीम भी पड़ा या किसी का ज़िक्र तुमने कहीं सुना?' उसने अर्ज़ किया, 'जहां-

पनाह ! ग़ुलाम ने बहुत सैर की है। हिन्दुस्तान में दरिया के बीच एक पहाड़ी है। वहाँ एक जटाधारी गोसांइं ने बड़ा मण्डप महादेव का और संगत और बड़ी बहार का बाग़ बनाया है। वह उसी में रहता है और उसका यह क़ायदा है कि हर बरस शिवरात्रि के दिन अपने स्थान से निकलकर दरिया में पैरता है और क्रीड़ा करता है। स्नान के बाद जब वह अपने आसन पर जाने लगता है तब बीमार दुःखी और पीड़ित लोग जो देस-देस और मुल्क-मुल्क के दूर-दूर से आते हैं, उनकी बड़ी भीड़ होती है।

'वह महन्त (जिसे उस ज़माने का अफ़लातून कहा चाहिये) क़ारूरा और नब्ज़ देखता हुआ और हर-एक को नुस्खा लिखकर देता हुआ चला जाता है। ख़ुदा ने ऐसा दस्ते-शफ़ा उसको दिया है कि दवा पीते असर होता है और मर्ज़ बिलकुल जाता रहता है। यह बात मैंने खुद अपनी आँखों से देखी और मैंने खुदा की क़ुदरत को याद किया कि ऐसे-ऐसे बन्दे पैदा किये हैं। अगर हुक्म हो तो राजकुमार को उसके पास ले जावें, उसको एक नज़र दिखावें। काफ़ी उम्मीद इस बात की है कि जल्द ही राजकुमार बिलकुल अच्छा हो जायेगा। और ज़ाहिर में भी यह तदबीर अच्छी है कि हर-एक मुल्क की हवा खाने से और जगह-जगह के आबो-दाने से मिज़ाज में ठंडक आती है।'

बादशाह को उसकी सलाह पसन्द आई और खुश होकर फ़र्माया: 'बहुत बेहतर, शायद उसी का हाथ रास आये और मेरे बेटे के दिल से वहशत चली जाय।' एक मोतबर, दुनिया-देखे और तजर्बेकार अमीर को और उस सौदागर को मेरे साथ के लिये मुक़र्रर किया और ज़रूरी असबाब साथ कर दिया। निवाड़ी बजरे, मोरपंखी, पनवार, कचके, खेलने, इलाक़, पटेलियों पर दूसरे सामान समेत सवार करके रुख़सत कर दिया। मंज़िल-मंज़िल चलते-चलते उस ठिकाने पर जा पहुँचे। नई हवा और नया दाना-पानी खाने-पीने से कुछ मिज़ाज ठहरा। लेकिन

ख़ामोशी का वही आलम था और रोने से काम। किसी वक़्त भी उस परी की याद दिल से न भूलती थी। अगर कभी भूलता तो यह शेर पढ़ता—

ना जानूँ किस परी-रू की नज़र हुई।
अभी तो था भला-चंगा मेरा दिल॥

बारे जब दो-तीन महीने गुज़रे, उस पहाड़ पर क़रीब चार हज़ार मरीज़ जमा हुए। लेकिन सब यही कहते थे कि अब ख़ुदा ने चाहा तो गोसांईं अपने मठ से निकलेंगे और सबको उनके हाथों पूरी-पूरी सेहत होगी।

क़िस्सा यह कि जिस दिन वह दिन आया, सुबह को वह जोगी सूरज की तरह निकल आया और दरिया में नहाया और पैरा। पार जाकर पलट आया, और सारे बदन में भभूत-भस्म लगाया और वह गोरा बदन अंगारे की तरह राख में छुपाया और माथे पर मलागीर का टीका दिया, लंगोट बांधकर, अंगोछा कांधे पर डाला। बालों का जूड़ा बांधा, मूछों पर ताव देकर चढ़ौवां जूता उड़ाया।

उसके चेहरे से यह मालूम होता था कि सारी दुनिया, उसके नज़दीक कुछ क़द्र नहीं रखती थी! एक जड़ाऊ क़लमदान बग़ल में लेकर एक-एक की तरफ़ देखता और नुस्ख़ा देता हुआ मेरे नज़दीक आ पहुँचा। जब मेरी और उसकी आंखें चार हुईं, खड़ा होकर सोच में पड़ गया। उसके बाद कहने लगा, 'मेरे साथ आओ।' मैं साथ हो लिया।

जब सब की बारी हो चुकी तो मुझे बाग़ के अन्दर ले गया और एक ख़ूबसूरत छोटे से अकेले कमरे को मुझे दिखाकर कहा कि 'तुम यहां रहा करो!' और ख़ुद अपने स्थान पर वापस चला गया। जब चालीस दिन गुज़रे तो मेरे पास आया और पहले से मुझे ज़्यादा ख़ुश पाया। तब मुस्कराकर कहने लगा कि 'इस बाग़ीचे में सैर कर लिया

करो, और जिस मेवे पर जी चले खा लिया करो।' और एक क़ुल्फ़ी चीनी की माजून से भरी हुई दी कि 'इसमें से छः माशे हमेशा बिला नाग़ा राज़ खा लिया करो।' यह कहकर वह तो चला गया। मैंने उसके कहने पर अमल किया। हर रोज़ दिल को ताक़त और जी को ठंडक महसूस होने लगी। लेकिन इश्क़ के मर्ज़ पर कुछ असर नहीं हुआ। उस परी की सूरत नज़रों के आगे फिरती थी।

एक रोज़ ताक़ पर एक किताब नज़र आई। उतारकर देखा तो उसमें लोक-परलोक के सारे इल्म जमा किये गये थे, गोया दरिया को कूज़े में भर दिया गया था। हर घड़ी उसे पढ़ा करता। मैंने इस तरह दवा-इलाज की विद्या और आत्माओं को क़ाबू में करने में काफ़ी होशियारी हासिल की। इसी अर्से में एक बरस का दिन गुज़र गया। फिर वही ख़ुशी का दिन आया। जोगी अपने आसन से उठकर बाहर निकला। मैंने सलाम किया। उसने क़लमदान मुझे देकर कहा, 'मेरे साथ चलो।' मैं साथ हो लिया।

जब दरवाज़े से बाहर निकला, एक आलम दुआ देने लगा। बे अमीर और सौदागर मुझे साथ देखकर गोसाईं के क़दमों पर गिरे और शुक्रिया अदा करने लगे कि 'आप की तवज्जुह से बारे इतना तो हुआ।' वह अपनी आदत के मुताबिक़ दरिया के घाट तक गया और स्नान-पूजा जिस तरह हर साल करता था, किया। लौटते वक़्त बीमारों को देखता चला आता था कि इत्तफ़ाक़ से पागलों के गोल में एक ख़ूबसूरत जवान नज़र पड़ा, जिसमें क़मज़ोरी के कारण खड़े होने की ताक़त न थी। मुझसे कहा, 'इसको साथ ले आओ।' सबकी दवा-दारू करके जब अपने अकेले कमरे में गया। जोगी ने चाहा कि थोड़ी सी खोपड़ी उस जवान की छील कर, उस कनखजूरे को जो उसके भेजे पर बैठा था, चिमटी से उठा लेवे।

मेरे मन में एक बात आई और मैं बोल उठा कि, 'अगर चिमटी

आग पर गर्म करके कनखजूरे की पीठ पर रखिये तो अच्छा है, अपने-आप निकल जायेगा। अगर इस तरह से खींचा जाएगा तो भेजे के गूदे को न छोड़ेगा। इसके साथ-साथ इस उपाय में इसकी जान के जाने का डर भी है।'

यह सुनकर जोगी ने मेरी तरफ़ देखा और चुपके से उठकर बाग़ के कोने में जाकर एक दरख्त को पकड़ कर, जटा के लट से गले में फाँसी लगा लिया। मैंने पास जाकर देखा तो जो धक् से हो गया कि अरे! यह तो मर गया! यह अचम्भा देखकर बहुत अफ़सोस हुआ। आख़िर मैंने सोचा कि उसे गाड़ दूँ। जैसे ही दरख्त से अलग करने लगा, दो कुंजियां उसकी लटों में से गिर पड़ीं। मैंने उनको उठा लिया और उस महात्मा को ज़मीन में गाड़ दिया। दोनों कुंजियां लेकर सब तालों में लगाने लगा। इत्तफ़ाक़ से दो कोठरियों के ताले उन कुंजियों से खुल गये और ज़मीन से छत तक जवाहिर भरे हुए दिखाई दिये। एक मख़मल की पेटी जिसमें सोने के पत्तर लगे हुए और ताला बन्द था, एक तरफ़ रखी थी। उसको जो खोला तो एक किताब देखी जिसमें इस्मेआज़म और जिन और परी को बुलाने की तरकीब और आत्माओं से मुलाक़ात और सूरज को अपने क़ाबू में करने की विधि लिखी थी।

ऐसी दौलत के हाथ लगने से बहुत खुशी हुई और मैंने उन पर अमल करना शुरू किया। बाग़ का दरवाज़ा खोल दिया और अपने उस अमीर और साथ वालों से कहा कि, 'किश्तियां मंगवाकर ये सब जवाहिरात, नक़दी, जिन्स और किताबें उन पर लाद लो।' और, एक निवाड़ी पर सवार होकर, एक बजरे को रवाना किया। जब अपने मुल्क के नज़दीक पहुँचा तो बादशाह को खबर हुई और वह सवार होकर स्वागत को आए और इश्तियाक़ से बेक़रार होकर कलेजे से लगा लिया। मैंने उनके क़दमों को छूकर कहा कि 'इस नाचीज़ को पुराने बाग़

में रहने का हुक्म हो, उन्होंने कहा कि, 'ऐ बेटे ! वह मकान मेरे खयाल में मनहूस है। इसलिए उसकी मरम्मत और तैयारी रोक दी गई। अब वह मकान आदमी के रहने लायक़ नहीं रहा। इसलिए और जिस महल में चाहो रहो। बल्कि ज्यादा अच्छा यह है कि कोई जगह पसन्द करके मेरी आंखों के सामने रहो और जैसा बाग़ चाहो तैयार करके सैर-तमाशा देखा करो।'

मैंने बहुत ज़िद और हठ करके उस बाग़ को नये सिरे से बनवाया और जन्नत की तरह सजाकर उसमें रहने लगा। फिर इत्मीनान से जिनों को कब्ज़े में करने के लिए चिल्ले में बैठा और गोश्त खाना बन्द करके अमल पढ़ने लगा। जब चालीस दिन पूरे हो गये तो आधी रात को एक ऐसी आँधी आई कि कि बड़ी-बड़ी इमारतें गिर पड़ीं और पेड़ जड़ से उखड़ कर कहीं से कहीं जा पड़े और एक परीज़ादों का लश्कर दिखाई पड़ा। एक तख्त हवा से उतरा जिस पर एक शख्स मोतियों का शानदार ताज और खिलअत पहने बैठा था। मैंने देखते ही बहुत अदब से सलाम किया। उसने मेरे सलाम का जवाब दिया और कहा कि, 'ऐ अज़ीज़, तूने नाहक़ यह तूफ़ान उठाया। हमसे तुझे क्या गरज़ है ?'

मैंने अर्ज़ किया 'यह नाचीज़ एक मुद्दत से तुम्हारी बेटी पर आशिक़ है। इसीलिए कहाँ से कहां खराब और तबाह हुआ और जीते जी मरा। अब ज़िन्दगी से तङ्ग आया हूँ और अपनी जान से खेला हूँ। इसलिये यह काम किया है। अब आपकी ज़ात से उम्मीद रखता हूँ कि मुझ हैरान और परेशान को अपनी मेहरबानी से इज्ज़त दीजिए और उसके दर्शन से ज़िन्दगी और आराम दीजिए, तो बड़ा सवाब होगा।'

मेरी यह अर्ज़ सुनकर वह बोला कि, 'आदमी मिट्टी का और हम आग के, इन दोनों का मेल होना मुश्किल है।'

मैंने क़सम खाई कि मैं सिर्फ़ उनको देखने का मुश्ताक़ हूँ और कुछ मतलब नहीं। फिर उस तख्त पर बैठे हुए जिन ने जवाब दिया कि, 'आदमी अपने क़ौल-क़रार पर नहीं रहता। ग़रज़ के वक्त सब-कुछ कहता है, लेकिन याद नहीं रखता। यह बात मैं तेरे भले के लिए कहता हूँ कि अगर तूने कभी कुछ और इरादा किया तो वह भी और तू भी दोनों खराब और तबाह होंगे, बल्कि जान जाने का डर भी है।' मैंने फिर अपनी क़सम दुहराई कि, 'जिसमें दोनों की बुराई हो, ऐसा काम हर्गिज़ न करूँगा, सिर्फ़ एक नज़र देखता रहूँगा।'

ये बातें हो ही रही थीं कि अचानक वह परी, जिसका ज़िक्र था, बड़े ठस्से से बनाव सिंगार किये आ पहुँची और बादशाह का तख्त वहाँ से चला गया। तब मैं बेअख्तियार उस परी को जान की तरह बग़ल में ले आया और यह शेर पढ़ा—

कमाने अब्रू मेरे घर क्यों न आवे।
कि जिसके वास्ते खींचे हैं चिल्ले॥

उसी खुशी के आलम में हम दोनों उस बाग़ में साथ-साथ रहने लगे। मारे डर के कुछ और खयाल जी में न करता। ऊपरी मज़े लेता और सिर्फ़ देखा करता। वह परी मेरे क़ौल-क़रार के निबाहने पर दिल में हैरान रहती और बाज़ वक्त कहती कि, 'प्यारे, तुम भी अपनी बात के बड़े सच्चे हो। लेकिन मैं एक सलाह दोस्ती की खातिर देती हूँ कि अपनी किताब के बारे में सावधान रहना, क्योंकि जिन किसी न किसी दिन तुम्हें ग़ाफ़िल पाकर चुरा ले जाएँगे।'

मैंने कहा, 'मैं इसे अपनी जान के बराबर रखता हूँ।'

इत्तफ़ाक़ से एक रात को शैतान ने बहकाया। काम वासना के प्रवाह में यह बात दिल में आई कि जो-कुछ हो, सो हो, कहाँ तक अब अपने-आपको सँभालूँ! मैंने जैसे ही भोग करने का इरादा किया, वैसे ही एक आवाज़ आई कि 'यह किताब मुझको दे, क्योंकि इसमें इस्मे-आज़म

है। बेअदबी न कर।' उस मस्ती के आलम में कुछ होश न रहा, किताब बग़ल से निकाल कर बग़ैर जाने-पहचाने हवाले कर दी और अपने काम में लगा। वह नाज़नीन मेरी यह नादानी की हरकत देखकर बोली, 'ऐ ज़ालिम, आख़िर तू चूका और मेरी सलाह भूला।'

यह कहकर बेहोश हो गई और मैंने उसके सिरहाने एक देव को देखा कि किताब लिये खड़ा है। मैंने चाहा कि उसको पकड़कर खूब मारूँ और किताब छीन लूं। मैंने जो मंत्र याद किये थे, पढ़ना शुरू किया और वह जिन जो खड़ा था बैल बन गया। लेकिन अफ़सोस कि परी ज़रा भी होश में न आई और वही हालत बेहोशी की रही। तब मेरा दिल घबराया और सारा ऐश कड़ुवा हो गया। उस दिन से आदमियों से नफ़रत हुई। इस बाग़ के एक कोने में पड़ा रहता हूँ और दिल बहलाने के लिये यह मर्तबान ज़मुर्रद का झाड़दार बनाया करता हूँ और हर महीने उस मैदान में उसी बैल पर चढ़कर जाया करता हूँ। मर्तबान को तोड़कर ग़ुलाम को मार डालता हूँ, इस उम्मीद पर कि सब मेरी हालत को देखें और अफ़सोस खावें। शायद कोई ऐसा ख़ुदा का बन्दा मेहरबान हो कि मेरे हक़ में दुआ करे और मुझे भी अपना मतलब हासिल हो।

ऐ दोस्त, यही मेरे पागलपन का क़िस्सा है, जो मैंने तुझे कह सुनाया।

यह क़िस्सा सुनकर मेरी आंखें भर आईं, और मैंने कहा कि, "ऐ शहज़ादे, वाक़ई तूने इश्क़ में बड़ी मुसीबत उठाई। लेकिन मैं ख़ुदा की क़सम खाता हूँ कि मैंने अब तेरे लिये अपनी ग़रज़ को छोड़ा। अब तेरे लिये जंगल पहाड़ों में फिरूंगा और जो मुझसे हो सकेगा करूँगा।" यह वादा करके मैं उस जवान से बिदा हुआ और पांच बरस तक पागलों सा वीराने में खाक छानता फिरा। लेकिन कुछ पता न चला। आखिर उकताकर एक पहाड़ पर चढ़ गया और चाहा कि अपने को गिरा दूँ

कि हड्डी, पसली कुछ साबित न रहे कि वही बुर्क़ापोश सवार आ पहुँचा और बोला, "अपनी जान मत खो। थोड़े दिनों के बाद तू अपनी ग़रज़ में कामियाब होगा। या साईं, तुम्हारे दर्शन तो मयस्सर हुए! अब ख़ुदा की मेहरबानी से उम्मीद रखता हूँ कि सब को ख़ुशी मिले और सब नामुराद अपनी मुराद को पहुँचे।"

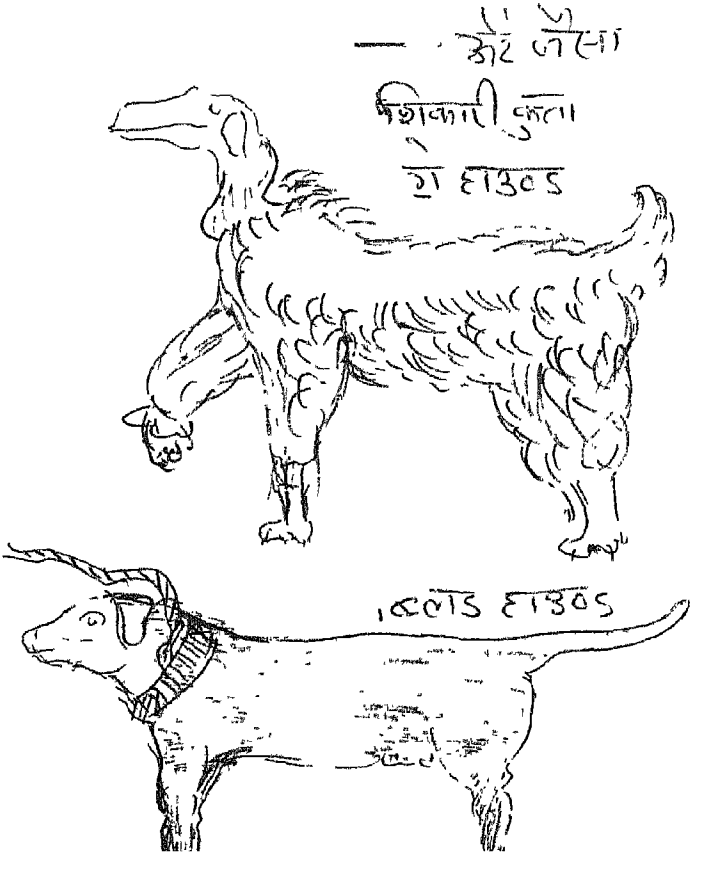

हाल आज़ादबख़्त बादशाह का

जब दूसरा दर्वेश भी अपनी सैर का क़िस्सा कह चुका, रात आख़िर हो गई और सुबह का वक़्त शुरू होने को आया। आज़ादबख़्त बादशाह चुपका अपने दौलतख़ाने की तरफ़ रवाना हुआ। महल में पहुँचकर उसने नमाज़ पढ़ी, फिर ग़ुसलख़ाने में जा शानदार ख़िलअत पहनकर दीवाने-आम में आया और तख़्त पर बैठा। हुक्म दिया कि यसावल जावे और चार फ़क़ीर फ़लाने मकान पर आए हुए हैं, उनको इज़्ज़त के साथ ले आवे। बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ चोबदार वहाँ गया, देखा तो चारों फ़क़ीर हाथ-मुँह धोकर चाहते हैं कि अपनी-अपनी राह लें। चोबदार ने कहा, "शाह जी! बादशाह ने आप चारों को तलब फ़रमाया है, मेरे साथ चलिये।"

चारो दर्वेश आपस में एक-एक को तकने लगे और चोबदार से कहा, "बाबा, हम अपने दिल के बादशाह हैं। हमें दुनिया के बादशाह से क्या काम है?"

उसने कहा, "मियाँ, कुछ हर्ज नहीं, अगर चलो तो अच्छा है।"

इतने में चारों को याद आया कि मौला मुर्तज़ा ने जो फ़रमाया था, सो अब सामने आया। ख़ुश हुये और यसावल के साथ चले। जब क़िले में पहुँचे और बादशाह के सामने गए, चारो फ़क़ीरों ने दुआ दी कि, "बाबा! तेरा भला हो।"

बादशाह दीवाने-ख़ास में जा बैठे। दो-चार ख़ास-ख़ास अमीरों को बुलाया और फ़रमाया कि चारो गुदड़ी पोशों को बुलाओ। जब वहाँ गए बैठने का हुक्म दिया, हाल पूछा कि "तुम्हारा कहाँ से आना हुआ, और कहाँ का इरादा है? मकान मुर्शिदों के कहाँ हैं?"

उन्होंने कहा कि, "बादशाह की उम्र और दौलत बढ़े। हम फ़क़ीर

हैं, एक मुद्दत से इसी तरह सैरो-सफ़र करते फिरते हैं। वह मसल है कि फ़क़ीर को जहाँ शाम हुई, वहीं घर है और जो कुछ इस बदलने वाली दुनिया में देखा है, कहाँ तक बयान करें?"

आज़ादबख्त ने बहुत तसल्ली और दिलासा दिया और खाने की चीज़ें मँगवाकर अपने सामने नाश्ता कराया। जब वे फ़ारिग़ हो चुके तो बादशाह ने फ़रमाया कि, "अपना हाल पूरा-पूरा और सही-सही कहो, जो मुझसे तुम्हारी मदद हो सकेगी उससे इन्कार नहीं करूँगा।" फ़क़ीरों ने जवाब दिया कि, "हम पर जो कुछ बीता है, न हमें बयान करने की ताक़त है और न बादशाह को सुनने की फ़ुरसत होगी। इसलिये माफ़ कीजिये।" तब बादशाह ने मुस्कराकर कहा, "रात को जहाँ तुम बिस्तरों पर बैठे-बैठे अपना-अपना हाल कह रहे थे, वहाँ मैं भी मौजूद था। चुनांचे दो दर्वेशों का हाल सुन चुका हूँ। अब चाहता हूँ कि दोनों जो बाक़ी हैं, वह भी कहें और कुछ दिन इतमीनान से मेरे पास रहें क्योंकि दर्वेशों का क़दम बलाओं को दूर करता है।" बादशाह की यह बात सुनते ही फ़क़ीर डर के मारे काँपने लगे और सर नीचे करके चुप हो रहे। बात करने की ताक़त न रही।

आज़ादबख्त ने जब यह देखा कि अब इनके रोब के मारे हवास नहीं रहे कि जो कुछ बोले तो फ़रमाया, "इस दुनिया में कोई ऐसा शख़्स न होगा जिस पर एक न एक अजीबो-ग़रीब वारदात न गुज़री हो। बावजूद इसके कि मैं बादशाह हूँ, मैंने भी ऐसा तमाशा देखा है। पहले मैं ही उसका बयान करता हूँ। तुम इत्मीनान से सुनो।"

दर्वेशों ने कहा, "बादशाह सलामत! आपकी मेहरबानी हम फ़क़ीरों के हाल पर है। ज़रूर इर्शाद फ़रमाइये।" आज़ादबख्त ने अपना हाल कहना शुरू किया। कहा—

ऐ शाहो! बादशाह का अब माजरा सुनो।
जो कुछ कि मैंने देखा है और है सुना सुनो।

कहता हूँ मैं फ़क़ीरों की ख़िदमत में सर-बसर।
अहवाल मेरा ख़ूब तरह दिल लगा सुनो॥

मेरे क़िबलागाह (पिता) ने जब वफ़ात पाई और मैं तख़्त पर बैठा, जवानी का दौर था और सारे मुल्क रूम पर मेरी बादशाहत थी और मेरा हुक्म चलता था। इत्तफ़ाक़ से एक साल कोई सौदागर मुल्क बदख़्शाँ से आया और तिजारत का असबाब लाया। ख़बरदारों ने मेरे हुज़ूर में ख़बर की कि इतना बड़ा ताजिर आज तक शहर में नहीं आया। मैंने उसको तलब किया। वह हर-एक मुल्क के तुहफ़े मुझे भेंट करने के लायक़ लेकर आया और वाक़ई हर-एक चीज़ जो उसके पास थी, लाजवाब नज़र आई। एक डिबिया में एक लाल नज़र आया, बहुत ख़ुशरंग और आबदार, क़द्दो-क़ामत में दुरुस्त और वज़न में पाँच मिस्क़ाल का। मैंने बादशाहत के बावजूद ऐसा जवाहिर न कभी देखा था और न कभी सुना था। मैंने उस लाल को पसन्द किया और सौदागर को बहुत सा इनआम-इकराम दिया और राहदारी की सनद लिख दी कि 'इससे हमारी बादशाहत में कोई महसूल न लिया जाय और जहाँ वह जाय, उसे आराम से रखा जाय। चौकी पहरे वाले हाज़िर रहें और इसके नुक़सान को अपना नुक़सान समझें।'

वह ताजिर मेरे हुज़ूर में दरबार के वक़्त हाज़िर रहता। दरबार के तौर तरीक़ों से वह अच्छी तरह वाक़िफ़ था और बातें उसकी सुनने के लायक़ होती थीं। मैं उस लाल को हर रोज़ जवाहिरख़ाने से मँगवाकर दरबार में देखा करता था।

एक रोज़ दीवाने-आम किये बैठा था और सब अमीर और दरबारी अपनी-अपनी जगह पर खड़े थे। सभी मुल्कों के बादशाहों के दूत जो मुबारकबाद देने के लिए आए थे, वे भी सब हाज़िर थे। उस वक़्त मैंने दस्तूर के मुताबिक़ उस लाल को मँगवाया। जवाहिरख़ाने का दारोग़ा उसे लेकर आया। मैं उसे हाथ में लेकर तारीफ़ करने लगा। वह उसे देखकर मुस्कराया और मेरा दिल रखने के लिए उसने भी तारीफ़ की।

इसी तरह हाथों हाथ हर-एक ने उसे लिया और देखा। सब एक ज़बान होकर बोले कि, "बादशाह सलामत के इक़बाल के सबब ऐसा बेनज़ीर लाल मयस्सर हुआ है और अब तक ऐसा लाजवाब जवाहिर किसी बादशाह के हाथ नहीं लगा।"

उस वक्त वह वज़ीर जो मेरे वालिद का वज़ीर था और अब भी उसी ओहदे पर था और बड़ा तजर्बेकार और अक्लमन्द आदमी माना जाता था, वज़ारत की चौकी पर खड़ा हुआ आदाब बाजा लाया और कहा कि, "अगर जान बख्शी जाय तो मैं भी कुछ अर्ज़ करना चाहता हूं।"

मैंने हुक्म दिया, "कह!" वह बोला, "किबलए आलम! आप बादशाह हैं और बादशाहों पर यह बात सजती नहीं कि वह एक पत्थर की इतनी तारीफ़ करें। अगरचे, रंग-ढंग-संग में लासानी है, लेकिन पत्थर है और इस वक्त सब मुल्कों के दूत दरबार में हाज़िर हैं। जब ये अपने-अपने शहर जाएँगे तो जाकर यहीं कहेंगे कि अजब बादशाह है जिसने एक लाल कहीं से पाया है; उसे ऐसा तोहफ़ा बनाया है कि हर रोज़ अपने सामने मँगाता है और खुद उसकी तारीफ़ करके सब को दिखाता है। अब जो बादशाह या राजा यह हाल सुनेगा, अपनी मजलिस में हँसेगा। जहांपनाह! नेशापुर में एक मामूली सौदागार है, जिसने बारह दाने लाल के और हर-एक दाना सात-सात मिस्क़ाल का है, पट्टे में लगवाकर, कुत्ते के गले में डाल दिये हैं।" मुझे यह सुनते ही गुस्सा चढ़ आया और खिसियाने होकर हुक्म दिया कि, "इस वज़ीर की गर्दन मारो।"

जल्लादों ने उसी वक्त उसका हाथ पकड़ लिया और चाहा कि बाहर ले जावें कि विलायत के बादशाह का दूत हाथ बांधकर सामने आ खड़ा हुआ। मैंने पूछा, "तू क्या चाहता है? क्या मतलब है?"

उसने अर्ज़ किया, "बादशाह सलामत! मैं वज़ीर का क़ुसूर जानना चाहता हूँ।"

मैंने कहा, "झूठ बोलने से बड़ा और कौन सा गुनाह है और ख़ुसूसन बादशाहों के सामने।"

दूत ने कहा, "उसका झूठ अभी साबित नहीं हुआ, शायद जो कुछ उसने अर्ज़ किया हो, सच हो। अभी बेगुनाह को क़त्ल करना मुनासिब नहीं।"

इस बात का मैंने यह जवाब दिया कि "हर्गिज़ यह बात अक़्ल में नहीं आती कि एक ताजिर जो नफ़े के वास्ते, शहर-शहर और मुल्क-मुल्क मारा-मारा फिरता है और कोड़ी-कोड़ी जमा करता है, किस तरह, बारह दाने लाल के जो वज़न में सात-सात मिस्काल के हों कुत्ते के पट्टे में लगा दे।"

उसने कहा, "ख़ुदा की क़ुदरत में कोई चीज़ अजीब नहीं। शायद ऐसा हो। ऐसे तोहफ़े अक्सर सौदागरों और फ़कीरों के हाथ आते हैं। इस वास्ते कि दोनों हर एक मुल्क में जाते हैं और जहां से जो कुछ पाते हैं, ले आते हैं। इसलिए मुनासिब सलाह यह है कि अगर वज़ीर ऐसा ही क़ुसूरवार है तो उसे क़ैद का हुक्म हो। इसलिए कि वज़ीर बादशाहों की अक़्ल होते हैं और यह हरकत बादशाहों को ज़ेब नहीं देती कि एक ऐसी बात पर जिसका-झूठ सच अभी साबित नहीं हुआ उसके क़त्ल का हुक्म फ़रमायें और उसकी सारी उम्र की ख़िदमत और नमकहलाली भूल जांय।

"बादशाह सलामत! अगले बादशाहों ने क़ैदख़ाना इसीलिए बनाया कि बादशाह या सरदार अगर किसी पर ग़ुस्सा हों, तो उसे क़ैद करें। कुछ दिन में ग़ुस्सा जाता रहेगा और उसका बेगुनाह होना ज़ाहिर होगा तो बादशाह एक बेगुनाह के ख़ून से बचे रहेंगे क़यामत के दिन इसका जवाब न देना पड़ेगा।" मैंने उसे क़ायल करना चाहा, पर उसने ऐसी माक़ूल बातें की कि मुझे लाजवाब कर दिया। तब मैंने कहा, "ख़ैर, तेरा कहा मैंने क़ुबूल किया। मैंने अभी इसका ख़ून माफ़ किया। लेकिन यह क़ैदख़ाने में बन्द रहेगा। अगर एक साल के अर्से में

इसकी बात सच्ची हुई कि ऐसे लाल कुत्ते के गले में हैं तो इसे छोड़ दिया जायगा, नहीं तो बड़ी बुरी तरह मारा जायगा।" मैंने हुक्म दिया कि, "वज़ीर को क़ैदखाने में ले जाओ।" यह हुक्म सुनकर दूत ने सामने की ज़मीन चूमी और सलाम किया।

जब यह ख़बर वज़ीर के घर गई, आह-वावैला वहाँ मची और कुहराम मच गया। उस वज़ीर की एक बेटी थी, चौदह-पन्द्रह बरस की, बहुत ख़ूबसूरत और लिखने पढ़ने में बहुत क़ाबिल। वज़ीर उसको बहुत प्यार करता था और जान से अज़ीज़ रखता था। इसलिए, उसने अपने दीवान खाने के पीछे अपनी बेटी के लिये एक रंग महल बनवा दिया था। अमीरों की लड़कियां उसके साथ खेलने के लिये वहां आती थीं और ख़ूबसूरत ख़ासें, उसकी ख़िदमत में हाज़िर रहती थीं और वह उनके साथ हँसी-ख़ुशी खेला करती थी।

इत्तफ़ाक़न जिस दिन वज़ीर को क़ैदखाने में भेजा, वह लड़की अपनी हमजोलियों में बैठी थी और उसने बड़ी ख़ुशी से गुड़िया का ब्याह रचाया था और ढोलक-पखावज लिये हुये रतजगे की तैयारी कर रही थी और कड़ाही चढ़ाकर, गुलगुले, रहम तलती वग़ैरह बना रही थी कि एकबारगी उसकी मां रोती-पीटती, खुले सर, नंगे पांव घर में आ गई और दोहत्तड़ उस लड़की के सर पर मारा और कहने लगी, "काश! ख़ुदा तेरे बदले अन्धा बेटा देता, तो मेरा कलेजा ठंढा होता और बाप का साथ देता।"

वज़ीरज़ादी ने पूछा, "अन्धा बेटा तुम्हारे किस काम आता? जो कुछ बेटा करता, मैं भी कर सकती हूँ।"

मां ने जवाब दिया, "ख़ाक तेरे सर पर! यह विपता बीती है कि तेरे बाप ने बादशाह के सामने कुछ ऐसी बात कही कि वह क़ैदखाने में बन्द कर दिया गया।"

लड़की ने पूछा, "वह क्या बात थी? ज़रा मैं भी सुनूँ।" तब वज़ीर की बीबी ने कहा, "शायद तेरे बाप ने कहा कि नेशापुर में कोई सौदागर है, जिसने बारह अदद बेबहा लाल कुत्ते के पट्टे में टांके हैं।

बादशाह को इस बात पर यक़ीन न आया, उसे झूठा समझा और उसे क़ैद कर दिया। अगर आज के दिन बेटा होता तो हर तरह से कोशिश करके इस बात की खोज करता और बादशाह से आरज़ू-मिन्नत करके मेरे शौहर को क़ैदख़ाने से रिहाई दिलाता।

वज़ीर की बेटी बोली, "अम्माँ जान, तक़दीर से नहीं लड़ा जाता। जब अचानक कोई मुसीबत आये तो इंसान को सब्र करना चाहिये और ख़ुदा की मेहरबानी से उम्मीद रखना चाहिये। वह रहम करने वाला है और किसी की मुश्किल अटकी नहीं रखता। ज़्यादा रोना-धोना अच्छा नहीं। ऐसा न हो कि दुश्मन किसी और तरह से चुग़ली खावें और लुतरे लगाई-बुझाई करें। ऐसा न हो कि बादशाह का ग़ुस्सा और ज़्यादा बढ़े। बल्कि अच्छा यह होगा कि हम बादशाह के हक़ में दुआ करें। हम उसके नौकर हैं, वह हमारा मालिक है। वही ग़ुस्सा हुआ है। वही मेहरबान होगा।" उस लड़की ने अक़्लमन्दी से ऐसी-ऐसी तरह माँ को समझाया कि कुछ उसको सब्र और क़रार आया। तब वह अपने महल में गई और चुपकी हो रही।

जब रात हुई, वज़ीर की बेटी ने दादा को बुलाया। उसके हाथ-पाँव पड़ी, बहुत मिन्नत और ख़ुशामद की, रोने लगी और कहा कि, "मैं यह इरादा रखती हूँ कि अम्माँ जान का ताना मुझ पर न रहे और मेरा बाप रिहाई पाये। जो आप मेरा साथ दें तो मैं नेशापूर चलूँ और उस सौदागर को जिसके कुत्ते के गले में ऐसे लाल हैं, जिस तरह भी बने लेकर आऊँ और अपने बाप को छुड़ाऊँ।"

पहले तो उस आदमी ने इन्कार किया। आख़िर बहुत कहने-सुनने से राज़ी हुआ। तब वज़ीर की बेटी ने कहा, "चुपके-चुपके सफ़र का असबाब ठीक करो। तिजारत का सामान और बादशाहों को भेंट करने लायक़ चीज़ें और जितने ग़ुलाम, नौकर-चाकर ज़रूरी हों साथ ले लो। लेकिन यह बात किसी पर न खुले।"

दादा ने इसे क़ुबूल किया और सफ़र की तैयारी में लगा। जब सब असबाब मुहैया हो गया तो ऊँटों और खच्चरों पर लादकर रवाना हुआ और वज़ीर की बेटी भी मर्दाना लिबास पहनकर साथ जा मिली। हर्गिज़ किसी को घर में ख़बर न हुई। जब सुबह हुई तो वज़ीर के महल में चर्चा हुआ कि वज़ीर की बेटी ग़ायब है, मालूम नहीं क्या हुई!

आख़िर बदनामी के डर से मां ने बेटी का गुम होना छुपाया और उधर वज़ीर की बेटी ने अपना नाम सौदागर बच्चा रखा। मंज़िल-बमंज़िल चलते-चलते नेशापूर पहुँची, ख़ुशी-ख़ुशी कारवां-सराय में जा उतरी और अपना सब असबाब उतारा। रात को रही। सबेरे हम्माम में गई और नहा धोकर ऐसी साफ़-सुथरी पोशाक पहनी जैसी रूम के रहने वाले पहनते हैं और उसके बाद सैर को निकली। आते-आते जब चौक में पहुँची, चौराहे पर खड़ी हुई तो एक तरफ़ जौहरी की दूकान नज़र पड़ी, जहां बहुत से जवाहिरात का ढेर लग रहा था और भड़कीले लिबास पहने हुए ग़ुलाम हाथ बांधे खड़े थे। उसने देखा कि एक शख़्स जो सरदार है, और पचास बरस की उम्र का मालूम होता है, अमीरों की सी खुली आस्तीन की ख़िलअत पहने हुए बैठा है और कई भले मानस दोस्त उसके नज़दीक कुर्सियों पर बैठे हैं और आपस में बातें कर रहे हैं।

वह वज़ीर की बेटी जिसने अपने को सौदागर-बच्चा मशहूर किया था, उस जौहरी को देखकर हैरान हुई और दिल में यह सोचकर ख़ुश हुई कि ख़ुदा झूठ न करे, जिस सौदागर का मेरे बाप ने बादशाह से ज़िक्र किया है, मुमकिन है यही हो। प्यारे ख़ुदाया! इसका हाल मुझ पर ज़ाहिर कर।

इत्तफ़ाक़ से एक तरफ़ जो देखा तो एक दूकान है, उसमें दो लोहे के पिंजरे लटके हुए हैं और उन दोनों में दो आदमी क़ैद हैं। उनकी पागलों की सी सूरत हो रही है। सिर्फ़ हड्डी और चमड़ा बाकी है और सर के बाल और नाख़ून बढ़े हुए हैं। वे सर औंधाये बैठे हैं और दो

बदसूरत हब्शी, हथियार लिये हुए दोनों तरफ़ खड़े हैं। सौदागर-बच्चे को ताज्जुब हुआ। लाहौल पढ़कर दूसरी तरफ़ जो देखा तो एक दूकान में क़ालीन बिछे हैं। उन पर एक चौकी हाथीदांत की रखी हुई है। उस पर मख़मल का गद्दा पड़ा हुआ और उस पर एक कुत्ता जवाहिरात का पट्टा गले में डाले और सोने की ज़ंजीर से बँधा हुआ बैठा है और दो ख़ूबसूरत ग़ुलाम उसकी ख़िदमत कर रहे हैं। एक तो जड़ाऊ दस्ते का मुर्छल लिये झलता है और दूसरा तारकशी का रूमाल हाथ में लेकर उसका मुँह और पाँव पोंछ रहा है।

सौदागर-बच्चे ने जब ख़ूब ग़ौर करके देखा तो कुत्ते के पट्टे में बारहों दाने लाल के जैसे सुने थे, मौजूद हैं। उसने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और इस सोच में पड़ गया कि किस तरह उन लालों को बादशाह के पास ले जाऊँ और दिखाकर अपने बाप को छुड़ाऊँ। वह तो इस सोच में था और चौक के सारे लोग रास्ते में उसकी ख़ूबसूरती और हुस्न देखकर हैरान थे और हक्का-बक्का हो रहे थे। सब आदमी आपस में यही चर्चा कर रहे थे कि आज तलक इस सूरत और शक्ल का इतना ख़ूबसूरत इन्सान नज़र नहीं आया। उस सौदागर ने भी देखा और एक ग़ुलाम को भेजा कि, "तू जाकर मिन्नत और ख़ुशामद् से उस सौदागर-बच्चे को ले आ।"

वह ग़ुलाम आया और सौदागर का पैग़ाम लाया कि, "मेहरबानी करके हमारे मालिक के पास चलिये। वह आपसे मुलाक़ात करना चाहता है।"

सौदागर-बच्चा तो यही चाहता ही था। बोला, "क्या हर्ज!"

जैसे ही वह सौदागर के नज़दीक आया और उस पर सौदागर की नज़र पड़ी, एक बर्छी इश्क़ की सीने में गड़ी। उसकी इज़्ज़त करने के लिये उठ खड़ा हुआ, लेकिन हवास खोए हुए! सौदागर-बच्चे ने यह समझ लिया कि अब यह फंदे में आया। दोनों एक दूसरे से गले मिले। सौदागर ने उस सौदागर-बच्चे के माथे को चूमा और अपने बराबर बिठाया। बहुत मुलायमियत से और ख़ुशामद के लहजे में पूछा,

"अपने नाम-ख़ानदान से मुझे आगाह करो। कहाँ से आना हुआ और कहां का इरादा है?"

सौदागर-बच्चा बोला, "इस कमतरीन का वतन रूम है। मेरे बाप भी सौदागर हैं। अब बुढ़ापे की वजह से सैरो-सफ़र की ताक़त नहीं रही। इस वास्ते मुझे रवाना किया है ताकि कारोबार और तिजारत के तरीक़े सीखूँ। आज तलक मैंने घर से बाहर क़दम न निकाला था। ज़िन्दगी में यह पहला सफ़र ही किया है। दरिया की राह से मुवाफ़िक़ हवा न मिली, इसीलिये ज़मीन के रास्ते से सफ़र किया। लेकिन इस अजम के मुल्क में आपके एख़लाक़ और ख़ूबियों का जो शोर है उसे सुनकर सिर्फ़ आपसे मुलाक़ात के शौक़ में यहां तक आया हूँ। ख़ुदा की मेहरबानी से आपसे मुलाक़ात की इज़्ज़त नसीब हुई और जितना सुना था, उससे ज़्यादा पाया। दिल की तमन्ना पूरी हुई। ख़ुदा आपको सलामत रखे, अब यहां से कूच करूँगा।"

यह सुनते ही सौदागर के अक़्ल और होश जाते रहे। बोला, "ऐ बेटे, ऐसी बात मुझे न सुनाओ। कुछ दिन मेरे ग़रीबख़ाने पर रहो। भला, यह तो बताओ कि तुम्हारा असबाब और नौकर-चाकर कहाँ हैं?"

सौदागर-बच्चे ने कहा, "मुसाफ़िर का घर सराय है, उन्हें वहाँ छोड़कर मैं आपके पास आया हूँ। सौदागर ने कहा, "भटियारख़ाने में रहना मुनासिब नहीं। इस शहर में मेरी बड़ी साख है और बड़ा नाम है, जल्द उन्हें बुलवा लो। मैं एक मकान तुम्हारे असबाब के लिये ख़ाली कर देता हूँ। जो कुछ सामान लाए हो, मैं भी ज़रा उन्हें देखूँ। ऐसी तरकीब करूँगा कि यहीं से तुम्हें बहुत-सा नफ़ा मिले, तुम भी ख़ुश होगे और सफ़र की तकलीफ़ और मुसीबत से बचोगे। मेरे साथ चन्द रोज़ रहने से मुझ पर भी बड़ा एहसान होगा। सौदागर-बच्चे ने ऊपरी दिल से उज्र किया। लेकिन सौदागर ने उसकी एक बात न सुनी और अपने गुमाश्ते से कहा, "कुली को जल्द भेजो और कारवाँ सराय से इनका असबाब जल्द मँगवाकर फ़लाने मकान में रखवाओ।"

सौदागर-बच्चे ने एक हब्शी ग़ुलाम को सब समझाकर यह हुक्म दिया कि सब माल-असबाब लदवाकर ले आए और ख़ुद शाम तक सौदागर के साथ बैठा रहा। जब कारोबार का वक़्त ख़त्म हुआ और सौदागर ने दुकान बढ़ाई और घर को चला तब दोनों ग़ुलामों में से एक ने कुत्ते को बग़ल में लिया। दूसरे ने कुर्सी और क़ालीन उठा लिया और उन दोनों हब्शी ग़ुलामों ने उस पिंजरे को मज़दूरों के सर पर रख दिया और आप पाँचों हथियार बाँधे साथ हुए। सौदागर सौदागर-बच्चे का हाथ हाथ में लिये, बातें करता हुआ हवेली में आया।

सौदागर-बच्चे ने देखा कि बादशाहों या अमीरों के लायक़ आली-शान मकान है। नहर के किनारे चाँदनी का फ़र्श बिछा है और मसनद के सामने ऐश का सारा सामान चुना है। कुत्ते की सन्दली भी उसी जगह बिछाई और सौदागर सौदागर-बच्चे को लेकर जा बैठा। बेतकल्लुफ़ शराब से ख़ातिर की, दोनों पीने लगे। जब कुछ मस्त हुए, तो सौदागर ने खाना माँगा, दस्तरख्वान बिछा और दुनिया की नेमत चुनी गई। पहले एक लँगरी में खाना लेकर सोने का सरपोश ढाँपकर कुत्ते के वास्ते ले गए और ज़रबफ़्त का एक दस्तरख्वान बिछाकर उसके आगे धरी गई। कुत्ता सन्दली से नीचे उतरा, जितना चाहा, उतना खाया और सोने की लगन में पानी पिया, फिर हाथीदाँत की चौकी पर जा बैठा। ग़ुलामों ने रुमाल से हाथ-मुँह उसका पाक किया। फिर उस थाली और लगन को ग़ुलाम आदमियों के पिंजरे के नज़दीक ले गए और सौदागर से कुंजी माँगकर पिंजरे का ताला खोला। उन दोनों आदमियों को बाहर निकालकर कई सौंटे मारकर, कुत्ते का झूठा उन्हें खिलाया और वही पानी पिलाया। फिर ताला बन्द करके कुंजी सौदागर के हवाले की। जब यह सब हो चुका, तब सौदागर ने ख़ुद खाना शुरू किया।

सौदागर-बच्चे को यह हरकत पसन्द न आई। घिन खाकर, हाथ खाने में न डाला। हरचन्द सौदागर ने मिन्नत-ख़ुशामद की पर उसने

इन्कार ही किया। तब सौदागर ने इसका कारण पूछा। सौदागर-बच्चे ने कहा "तुम्हारी यह हरकत बुरी मालूम हुई, इसलिये कि इन्सान का दर्जा सबसे ऊँचा है और कुत्ता सबसे नीच और गन्दा समझा जाता है। ख़ुदा के दो बन्दों को कुत्ते का झूठा खिलाना किस धर्म और मज़हब में जायज़ है। सिर्फ़ इतनी बात को ग़नीमत नहीं जानते कि वह तुम्हारी क़ैद में हैं, नहीं तो तुम और वह बराबर हैं। अब मेरे दिल में यह शक पैदा हुआ कि तुम मुसलमान नहीं, क्या जाने तुम कौन हो, कुत्ते को पूजते हो? मेरे लिये तुम्हारा खाना उस वक्त तक जायज़ नहीं है, जब तलक यह शक दिल से दूर न हो।"

सौदागर ने कहा, "ऐ बाबा! जो कुछ तू कहता है, मैं सब समझता हूँ। मैं इसीलिये बदनाम हूँ। इस शहर के लोगों ने मेरा नाम ख्वाजा सग परस्त (कुत्ते को पूजनेवाला सौदागर) रखा है। वे इसी नाम से मुझे पुकारते हैं और इसी नाम से मुझे मशहूर किया है। सौदागर ने सौदागर बच्चे को इतमीनान दिलाने के लिये कलमा पढ़ा। तब सौदागर-बच्चे ने कहा कि अगर तुम दिल से मुसलमान हो, तो इसका क्या कारण है? ऐसी हरकत करके क्यों अपने को बदनाम किया है?"

सौदागर ने कहा, "ऐ बेटे, मेरा नाम बदनाम है और दुगुना महसूल इस शहर में भरता हूँ। इसी वास्ते कि यह भेद किसी पर ज़ाहिर न हो। अजीब क़िस्सा है कि जो-कोई सुने सिवाय ग़म और ग़ुस्से के उसे कुछ और हासिल न हो। मुझे माफ़ रख क्योंकि न मुझमें क़ुदरत कहने की और न तुझमें ताक़त कहने सुनने की रहेगी।" सौदागर-बच्चे ने अपने दिल में ग़ौर किया कि मुझे अपने काम से काम है, क्या ज़रूरत है कि इस बात पर ज्यादा ज़ोर दिया जाय। बोला, "ख़ैर, नहीं कहने के लायक़ है तो न कहिये।" यह कहकर खाने में हाथ डाला और निवाला उठाकर खाने लगा।

दो महीने सौदागर-बच्चे ने इस होशियारी और अक्लमन्दी के साथ गुज़ारे कि किसी पर हरगिज़ यह भेद न खुला कि यह औरत है। सब

यही जानते थे कि मर्द है। सौदागर को उससे दिन-ब-दिन इतनी मुहब्बत बढ़ती गई कि एक पल के लिये भी वह अपनी आँखों से उसे ओझल न करता।

एक दिन साथ में शराब पीते वक़्त सौदागर-बच्चे ने रोना शुरू कर दिया। सौदागर ने उसे रोता देखते ही ख़ातिरदारी की, रुमाल से आंसू पोछने लगा और रोने का सबब पूछा।

सौदागर-बच्चे ने कहा, "ऐ क़िबला क्या कहूँ? काश! आपसे यह लगाव न पैदा होता और आपने इतनी मेहरबानी जो मेरे साथ करते हैं न की होती। अब दो मुश्किलें मेरे सामने हैं। न आप से अलग रहने को जी चाहता है और न अब यहां ज्यादा रहना मुमकिन है। अब जाना ज़रूरी है लेकिन आपसे अलग रहकर ज़िन्दगी की उम्मीद नज़र नहीं आती।"

यह बात सुनकर बेअख़्तियार सौदागर ऐसा रोने लगा कि हिचकी बँध गई और बोला कि "ऐ मेरी आंख के तारे, इतनी जल्दी अपने इस बूढ़े ग़ुलाम की ख़िदमत से तबीअत भर गई कि उसका दिल तोड़कर चले-जाते हो! जाने का ख़याल दिल से दूर करो, जब तलक मेरी ज़िन्दगी है। तुम्हारे जाने के बाद मैं एक पल जीता न रहूँगा। बिना मौत मर जाऊंगा। वैसे इस मुल्क की आबहवा बहुत अच्छी और मुवाफ़िक़ है। बेहतर यह होगा कि एक मातबर आदमी भेजकर मां-बाप को अतबाव के साथ यहीं बुलवा लो, जो-कुछ सवारी, कुली, मज़दूर और जिस सामान की ज़रूरत हो हाज़िर करूं। जब तुम्हारे मां-बाप और तुम्हारा घर-बार सब आजाय तो अपनी ख़ुशी मर्ज़ी से कारोबार, व्यापार किया करना। मैंने भी इस उम्र में ज़माने की बड़ी मुसीबतें उठाई हैं और देस-विदेस घूमता फिरा हूँ। अब बूढ़ा हुआ और कोई औलाद नहीं है। मैं तुझे बेटे से ज्यादा समझता हूँ और तुझे अपना वली-वारिस और मुख़्तार करता हूँ। मेरे कारख़ाने और कारोबार की देख-रेख भी तुम्हीं को करना है। जब तलक जीता हूँ एक टुकड़ा खाने को अपने हाथ से दो। जब मर जाऊंगा गाड़-दाब दीजो और तब माल असबाब मेरा ले लीजो।"

तब सौदागर बच्चे ने जवाब दिया, "बाक़ई, आपने बाप से ज्यादा मेरी हमदर्दी और ख़ातिरदारी की कि मुझे मां-बाप भूल गए। लेकिन इस गुनाहगार के बाप ने इसे सिर्फ़ एक साल की छुट्टी दी थी। अगर देर लगाऊंगा तो वह इस बुढ़ापे में रोते-रोते मर जाएँगे। बाप-मां की खुशी से ख़ुदा भी ख़ुश रहता है और मैं डरता हूँ कि अगर वे मुझसे नाराज़ हुये और कहीं उन्होंने मुझे बददुआ दे दी तो मैं लोक-परलोक दोनों में ख़ुदा की मेहरबानी से महरूम हो जाऊँगा।

"अब आपकी यही मेहरबानी होगी कि मुझे हुक्म दीजिए कि अपने बाप का हुक्म पूरा करूँ और इस तरह बाप का हक़ अदा करूं और जहाँ तक आपकी मेहरबानी का शुक्र अदा करने की बात है, जब तलक दम में दम है, आप का एहसान मेरी गर्दन पर है। अगर अपने मुल्क भी जाऊँगा, तो हर दम दिलो-जान से याद किया करूंगा। ख़ुदा बड़ा कारसाज़ है, शायद फिर कोई ऐसा मौक़ा आये, जो आप से मुलाक़ात का सुख मिले।"

ग़रज़ सौदागार-बच्चे ने ऐसी-ऐसी बातें नमक-मिर्च लगाकर सौदागर को सुनाईं कि वह बेचारा लाचार होकर होंठ चाटने लगा और चूंकि इस लड़के पर फ़रेफ्ता था और उससे बहुत ज्यादा मुहब्बत रखता था, कहने लगा कि, "अगर तुम नहीं रहते तो मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। मैं तुझको अपनी जान के बराबर जानता हूँ और जब जान चली जावे, तो खाली बदन किस काम आवे ? अगर तू इसी में राज़ी है तो चल और मुझे भी ले चल।" सौदागर- बच्चे से यह कहकर अपने सफ़र की भी तैयारी करने लगा और गुमाश्तों को हुक्म दिया कि सामान ले जाने का इन्तज़ाम जल्दी से करो।

जब सौदागार के चलने की ख़बर मशहूर हुई तो वहां के सौदागरों ने भी सफ़र का इरादा किया। ख़्वाजा सगपरस्त (सौदागर) ख़ज़ाना, बेशुमार जवाहिरात, अनगिनत गुलाम और नौकर और बहुत सा शाहाना सामान साथ लेकर शहर के बाहर तम्बू, क़नात, बेचोबे, सरापर्दे और

कुन्दले खड़े करवाकर उनमें दाख़िल हुआ। जितने दूसरे सौदागार थे अपनी-अपनी हैसियत के हिसाब से सौदागरी का माल लेकर साथ हो लिये और अपनी जगह पर यह क़ाफ़िला एक अच्छा ख़ासा लश्कर बन गया। एक शुभ दिन मुक़र्रर करके वे वहां से रवाना हुए। हज़ारों ऊँटों पर असबाब के थैले और ख़च्चरों पर नक़दी और जवाहिरात के सन्दूक़ लदे हुए, पाँच सौ ग़ुलाम अनेक मुल्कों की तलवारें लिए हुए हथियार बन्द, ताज़ी, तुर्की, इराक़ी और अरबी घोड़ों पर सवार होकर चले। सब के पीछे सौदागर और सौदागर-बच्चा भड़कीली पोशाक में सुखपाल पर सवार हो चले। एक ऊंट पर एक बरादादी तख़्त कसा गया। उस पर कुत्ता मसनद पर सोया हुआ चला। ग़ुलाम खाना उन दोनों क़ैदियों के पिंजरे को एक ऊंट पर लटकाए हुये था। हर मंज़िल पर वे खाना खाते, शराब पीते और सौदागर, सौदागर-बच्चे के साथ होने की ख़ुशी में ख़ुदा का शुक्र अदा करते। इसी तरह क़ाफ़िला मंज़िल-मंज़िल तै करता हुआ चला जाता था। बारे, वे ख़ैरियत से क़ुस्तुनतुनिया के नज़दीक आ पहुँचे और उन्होंने शहर के बाहर पड़ाव किया। सौदागर-बच्चे ने कहा, "ऐ क़िब्ला! अगर इजाज़त दीजिये तो मैं जाकर मां-बाप को देखूं और आप के वास्ते मकान ख़ाली कराऊं। इसके बाद जब मिज़ाज में आए, शहर में दाख़िल होइयेगा।"

सौदागर ने कहा, "तुम्हारी ख़ातिर तो मैं यहां आया। अच्छा! जल्द मिल-जुलकर मेरे पास आओ और अपने घर के नज़दीक उतरने को मकान दो।" सौदागर-बच्चा विदा होकर अपने घर में आया। सब वज़ीर के महल के आदमी हैरान हुए कि यह कौन मर्द घुस आया। सौदागर-बच्चा (यानी वज़ीरज़ादी) अपनी मां के पैरों पर जा गिरा और बोला कि, "मैं तुम्हारी बेटी हूँ।" यह सुनते-ही वज़ीर की बीवी गालियां देने लगी कि "ऐ तितली! तू बड़ी हर्राफ़ा निकली। अपना मुँह तूने काला किया और ख़ानदान को बदनाम किया। हम तो तेरी जान को रो-पीटकर, सब्र करके तुझसे हाथ धो बैठे थे। जा दूर हो।"

तब वज़ीरज़ादी ने सर से पगड़ी उतारकर फेंक दी और बोली, "ऐ अम्मा जान ! मैं बुरी जगह नहीं गई, कुछ बदी नहीं की। तुम्हारे कहने के मुताबिक़ बाबा को क़ैद से छुड़ाने की खातिर ये सारे पापड़ बेले। खुदा का शुक्र है कि तुम्हारे आशीर्वाद से और खुदा की मेहरबानी से पूरा काम करके आई हूं और नेशापुर से उस सौदागर को उस कुत्ते के साथ जिसके गले में वे लाल पड़े हैं अपने साथ लाई हूँ। तुम्हारी अमानत की भी मैंने पूरी तरह हिफ़ाज़त की है। इसीलिए सफ़र के वास्ते मर्दाना भेस किया है। अब एक रोज़ का काम और बाक़ी है। उसे करके अपने बाप को क़ैदखाने से छुड़ाती हूँ और अपने घर में आती हूँ। अगर हुक्म हो तो वापस जाऊँ और एक रोज़ बाहर रहकर आप के पास आऊँ।"

माँ को जब यह मालूम हुआ कि मेरी बेटी ने मर्दों का काम किया है और अपने को सब तरह सलामत और पाक रखा है और कोई धब्बा अपने ऊपर आने नहीं दिया, तो उसने खुदा की दर्गाह में नकधिसनी की और खुश होकर बेटी को छाती से लगा लिया। मुंह चूमा, बलाएं लीं और यह कहकर रुखसत किया कि, "तू जो मुनासिब जान, सो कर। मुझे इत्मीनान हो गया।"

वज़ीरज़ादी फिर सौदागर-बच्चा बनकर ख्वाजा सगपरस्त के पास चली। वहाँ सौदागर को उसकी जुदाई इतनी दूभर हुई कि बेअख्तियार होकर चल पड़ा। इत्तफ़ाक़ से शहर के नज़दीक, इधर से सौदागर-बच्चा जाता था, उधर से सौदागर आता था। रास्ते में मुलाकात हुई। ख्वाजा ने देखते ही कहा, "बाबा ! मुझ बूढ़े को अकेला छोड़कर कहाँ चला गया था ?"

सौदागर-बच्चे ने कहा, "आप से इजाज़त लेकर अपने घर गया था। आखिर आपकी खिदमत के शौक़ ने वहां रहने न दिया। आकर हाज़िर हुआ।"

शहर के दरवाज़े पर, दरिया के किनारे एक सायादार बाग़ देखकर खेमे लगाये गये और सब वहीं उतरे। ख्वाजा और सौदागर-बच्चा साथ बैठकर शराब-कबाब पीने और खाने लगे। जब तीसरे पहर का वक़्त हुआ, सैर-तमाशे की ख़ातिर खेमे से निकलकर सब्दलियों पर बैठे। इत्त-फ़ाक़ से एक शाही सिपाही उधर आ निकला। उनका लश्कर और उठना-बैठना देखकर उसे बड़ा अचम्भा हुआ और उसने अपने दिल में कहा, "शायद किसी बादशाह का दूत आया है।" वह खड़ा तमाशा देखता रहा।

ख्वाजा के एक चालाक सिपाही ने उसे आगे बुलाया और पूछा "तू कौन है?" उसने कहा, "मैं बादशाह का शिकार का दारोग़ा हूँ।" ख्वाजा के सिपाही ने अपने मालिक से उसका हाल कहा। ख्वाजा ने एक ग़ुलाम से कहा, "जाओ, उनसे कहो कि हम मुसाफ़िर हैं, अगर जी चाहे तो आओ बैठो, क़हवा-क़लियान हाज़िर है।" जब दारोग़ा ने सौदागर का नाम सुना, उसे बड़ा ताज्जुब हुआ और ग़ुलाम के साथ ख्वाजा की मजलिस में आया। वहाँ का सारा सामान शान-शौकत, सिपाही, ग़ुलाम देखे, ख्वाजा और सौदागर-बच्चे को सलाम किया। पर जब कुत्ते के ठाठ पर उसकी नज़र पड़ी तो उसके होश जाते रहे, हक्का-बक्का सा हो गया।

ख्वाजा ने उसे बिठाकर क़हवे से ख़ातिर की। दारोग़ा ने ख्वाजा का नामो-निशान पूछा। जब उसने ख्वाजा से चलने की इजाज़त माँगी, ख्वाजा ने कई थान और कुछ तोहफ़े उसे देकर इजाज़त दी। दूसरे दिन सुबह को जब बादशाह के दरबार में हाज़िर हुआ, दरबारियों ने ख्वाजा सौदागर का ज़िक्र करने लगा। रफ्ता-रफ्ता मुझको ख़बर हुई। दारोग़ा को मैंने सामने तलब किया और सौदागर का हाल पूछा।

उसने जो-कुछ देखा था अर्ज़ किया। कुत्ते की यह इज्ज़त और दो आदमियों के पिंजरे में क़ैद होने की ख़बर सुनकर मुझे ग़ुस्सा आया। मैंने कहा कि, "वह मर्दूद सौदागर क़त्ल करने लायक़ है।" लश्कर का

इन्तज़ाम करने वाले चोबदार को हुक्म दिया कि, "जल्द जाओ और उस बेदीन (अधर्मी) का सर काट लाओ।" इत्तफ़ाक़ से वही विलायत का दूत दरबार में हाज़िर था। वह मुस्कराया। मुझे और ज़्यादा ग़ुस्सा आया। मैंने कहा, "ऐ बेअदब! बादशाहों के हज़ूर में बिला वजह दांत खोलना अदब से बाहर है। बेमौक़ा हँसने से रोना बेहतर है।" उसने अर्ज़ किया, "कई बातें ख़याल में आईं, जिनकी वजह से यह ग़ुलाम मुस्कराया। पहली बात यह है कि वज़ीर सच्चा है और अब रिहाई पायेगा। दूसरे यह कि बादशाह उस वज़ीर के नाहक़ ख़ून से बचे। तीसरे यह कि जहाँ-पनाह ने बिला वजह, बिला क़ुसूर उस सौदागर के क़त्ल का हुक्म दिया। इन हरकतों पर मुझे ताज्जुब हुआ कि बिला खोज किये और सुबूत माँगे एक बेवक़ूफ के कहने से आप हर किसी के क़त्ल का हुक्म दे बैठते हैं। खुदा जाने अस्लियत में उस सौदागर का हाल क्या है? उसे हुज़ूर में तलब कीजिए और उसकी वारदात सुनिये। अगर क़ुसूरवार साबित हो, तब आप मालिक मुख्तार हैं, जो मर्ज़ी में आये सो उससे सुलूक कीजिये।"

जब दूत ने इस तरह से समझाया, मुझे भी वज़ीर का कहना याद आया और मैंने हुक्म दिया कि "जल्द सौदागर को उसके बेटे के साथ और वह कुत्ता और पिंजरा हाज़िर करो।" सिपाही उसके बुलाने को दौड़ गये। थोड़ी ही देर में सब को हुज़ूर में ले आये। मैंने सामने तलब किया। पहले ख्वाजा और उसका बेटा आया। दोनों भड़कीली पोशाक में थे। सौदागर-बच्चे की ख़ूबसूरती देखकर सब छोटे बड़े हैरान और भौंचक्के हुए। सौदागर-बच्चा सोने का एक थाल जवाहिरात से भरा हुआ हाथ में लिये आया और मेरे तख्त के आगे निछावर किया। इनमें से हर रत्न ऐसा था, जिसकी चमक ने सारे मकान को रौशन कर दिया। सौदागर-बच्चा, आदाब कोरनिश करके खड़ा हो गया। ख्वाजा ने भी ज़मीन चूमी और दुआ करने लगा और इतनी रवानी और मिठास से बोलता था जैसे बुलबुले हज़ार दास्तान है। मैंने इसकी लियाक़त को

बहुत पसन्द किया। लेकिन-गुस्से से कहा, "ऐ शैतान! आदमी की सूरत! तूने यह क्या जाल फैलाया है और अपनी राह में कुआँ खोदा है? तेरा क्या धर्म-ईमान है और यह क्या तरीक़ा तूने अख्तियार किया है? किस पैग़म्बर का मानने वाला है? अगर अधर्मी है, तब यह ढंग क्या है? तेरा क्या नाम है और यह क्या काम है?"

उसने कहा, "जहाँपनाह की उम्र और दौलत बढ़ती रहे! ग़ुलाम का ईमान यह है कि ख़ुदा एक है, उसका कोई शरीक नहीं और मुहम्मद मुस्तफ़ा का कल्मा पढ़ता हूँ और उसके बाद बारह इमाम को अपना पेशवा (मार्ग-दर्शक) जानता हूं। मेरा तरीक़ा यह है कि पाँचों वक्त की नमाज़ पढ़ता हूँ, रोज़ा रखता हूँ और हज भी कर आया हूँ। अपने माल में से पाँचवाँ हिस्सा ज़कात (दान) देता हूं और मुसलमान कहलाता हूँ। लेकिन ज़ाहिर में ये सारे ऐब मुझमें भरे हैं जिनकी वजह से आप नाख़ुश हुए हैं। मैं भी सारे लोगों में बदनाम हो रहा हूँ। इसकी एक वजह है, जो ज़ाहिर नहीं कर सकता, अगरचे मैं कुत्ता पूजने वाला मशहूर हूँ और दुगुना महसूल देता हूँ। मैंने यह सब क़ुबूल किया है। पर दिल का भेद किसी से नहीं कहा।"

उसके इस बहाने से मेरा ग़ुस्सा ज़्यादा हुआ और कहा, "मुझे तू बातों में फुसलाता है! मैं उस वक्त तलक़ नहीं मानने का, जब तक तू अपनी गुमराही की कोई माक़ूल दलील न दे, जो मेरे दिल में बैठ जाय! तब तो तू जान से बचेगा, नहीं तो इस जुर्म की सज़ा में तेरा पेट चाक कराऊँगा, ताकि दूसरों को सबक़ मिले और आगे कोई धर्म-ईमान में इस तरह की दख़लअन्दाज़ी न करे।"

ख़्वाजा ने कहा, "ऐ बादशाह! मुझ कमबख़्त के ख़ून से दरगुज़र कर और जितना मेरा माल है जो गिनती और शुमार से बाहर है सब ज़ब्त करले और सिर्फ़ मुझे और मेरे बेटे को अपने तख़्त के सदक़े में छोड़ दे और जान-बख़्शी कर दे।"

मैंने मुस्कराकर कहा, "ऐ बेवक़ूफ, अपने माल की लालच मुझे देता है! अब सिवाय सच बोलने के तेरे बचने का कोई रास्ता नहीं।" यह सुनते ही ख्वाजा की आँखों से बेअख्तियार आँसू टपकने लगे। अपने बेटे की तरफ़ देखकर उसने एक आह भरी और बोला, "मैं तो बादशाह की नजर में गुनहगार ठहरा। मारा जाऊँगा। अब क्या करूँ? तुझे किसको सौंपू?"

मैंने उसे डाँटा कि, "ऐ मक्कार! बस, अब बहुत बहाने हो चुके, जो कहना है सो जल्द कह।"

तब तो उस मर्द ने क़दम बढ़ाकर, तख्त के पास आकर तख्त के पाए को चूमा और खुदा की तारीफ़ करने लगा। इसके बाद उसने कहा, "ऐ शहनशाह! अगर क़त्ल का हुक्म मेरे हक़ में न होता तो सब-कुछ सहता और अपना हाल न कहता। लेकिन जान सब से अज़ीज़ है। कोई आपसे आप कुएँ में नहीं गिरता। इसलिये जान की हिफ़ाज़त करना वाजिब है। जो बात वाजिब है उसके खिलाफ़ जाना खुदा के हुक्म के खिलाफ़ जाना है। अगर आप की मर्ज़ी यही है तो इस बूढ़े का हाल सुनिये। पहले हुक्म हो, वे दोनों पिंजरे जिनमें वे दोनों आदमी क़ैद हैं, हुज़ूर में लाकर रखे जायँ। मैं अपना हाल कहता हूँ। अगर मैं कहीं झूठ कहूँ तो इन से पूछकर मुझे क़ायल किया जाय और इन्साफ़ किया जाय।" मुझे उसकी यह बात पसन्द आई और पिंजरों को मँगवाया और उन दोनों को निकलवाकर ख्वाजा के पास खड़ा किया।

ख्वाजा ने कहा—ऐ बादशाह, यह आदमी जो मेरे दाहनी तरफ़ है, मेरा बड़ा भाई है और जो बाईं तरफ़ खड़ा है, मेरा मंझला भाई है। मैं इन दोनों से छोटा हूं। मेरा बाप मुल्क फ़ारस में सौदागर था। जब मैं चौदह बरस का हुआ, तो मेरे बाप परलोक सिधारे। जब कफ़न-दफ़न से फ़राग़त हुई और फूल उठ चुके, तो एक दिन दोनों भाइयों ने मुझसे कहा कि 'अब बाप का माल जो-कुछ है, आपस में बाँट लें और जिसका जो दिल चाहे करे।' मैंने सुनकर कहा कि, 'ऐ भाइयो! मैं

तुम्हारा ग़ुलाम हूँ, भाईचारे का दावा नहीं रखता। एक बाप मर गया तो क्या, तुम दोनों मेरे बाप की जगह मेरे सर पर क़ायम हो। एक सूखी रोटी चाहता हूँ जिसमें ज़िन्दगी बसर करूँ और तुम्हारी ख़िदमत में हाज़िर रहूँ। मुझे हिस्से-बखरे से क्या काम है? तुम्हारे आगे के जूठे से अपना पेट भर लूँगा और तुम्हारे पास रहूँगा। मैं लड़का हूँ। कुछ पढ़ा, लिखा भी नहीं, मुझसे क्या हो सकेगा? अभी तुम मुझे तरबियत करो।'

यह सुनकर इन्होंने जवाब दिया कि, 'तू चाहता है कि अपने साथ हमें भी ख़राब और मुहताज करे।' मैं चुपका एक कोने में जाकर रोने लगा। फिर दिल को समझाया। भाई आख़िर बड़े हैं, मेरी तालीम की ख़ातिर आँखें दिखाते हैं कि कुछ सीखे; इसी चिंता में सो गया। सुबह को एक प्यादा क़ाज़ी के पास से आया और मुझे उसकी अदालत में ले गया। वहाँ जाकर देखा तो ये दोनों भाई हाज़िर हैं। क़ाज़ी ने कहा, 'अपने बाप का बिरसा बाँट क्यों नहीं लेता?' मैंने घर पर जो कहा था, वहाँ भी वही जवाब दिया। इस पर भाइयों ने कहा कि 'अगर यह बात दिल से कहता है, तो काग़ज़ पर लिख दे कि बाप के माल-जायदाद पर मेरा कोई दावा नहीं।' तब भी मैंने यही समझा कि ये दोनों मेरे बड़े हैं, मेरे भले और मुझे सीख देने के लिये कहते हैं कि बाप का माल ले जाकर बेजा ख़र्च न करे। उनकी मर्ज़ी के मुताबिक मैंने फ़ारिग़खती लिख दी और क़ाज़ी ने अपनी मुहर कर दी। ये लोग राज़ी हो गए और मैं घर आया।

दूसरे दिन मुझसे कहने लगे कि, 'ऐ भाई! यह मकान जिसमें तू रहता है, हमें इसकी ज़रूरत है। तू अपने रहने के लिये किसी और जगह का इन्तज़ाम कर।' तब मैंने सोचा कि ये लोग मेरे बाप की हवेली में रहने से भी ख़ुश नहीं हैं। लाचार होकर उठ जाने का इरादा किया। जहाँपनाह! जिस वक़्त मेरा बाप ज़िन्दा था, जिस वक़्त सफ़र से आता था, हर-एक मुल्क का तोहफ़ा, सौग़ात के तौर पर लाता और मुझे देता था, इसलिये कि छोटे बेटे को हर-कोई ज़्यादा प्यार करता है। मैंने उन तोहफ़ों को बेच-बेचकर थोड़ी सी अपनी निजी पूंजी बना ली थी,

इसीसे कुछ लेन-देन करता। एक बार मेरा बाप तुर्किस्तान से मेरी खातिर एक लौंडी लाया था और एक बार घोड़े लाया था। उनमें से एक होनहार बछड़ा जो सिखाया हुआ नहीं था, वह भी मुझे दिया। मैं उसे अपने पास से दाना-घास खिलाता था।

आखिर उनकी बेमुख्वती देखकर एक हवेली खरीदी और वहाँ जाकर रहने लगा। यह कुत्ता भी मेरे साथ चला आया। ज़रूरत का घर-गृहस्थी का सामान जमा किया और खिदमत के लिये दो ग़ुलाम मोल लिये और बाक़ी पूंजी से बजाज़ा की एक दूकान करके खुदा के भरोसे पर बैठा। अपनी क़िस्मत पर राज़ी था। अगरचे भाइयों ने बुरा सुलूक किया था पर खुदा मेहरबान था। इसलिये तीन बरस के अर्से में ऐसी दूकान जमी कि मेरी साख बन गई। अमीरों को और शाही सरकार में जिस तोहफ़े की ज़रूरत होती, मेरी ही दूकान से जाता। इस दूकान से मैंने बहुत रुपये कमाए और बहुत इत्मीनान से गुज़र होने लगी। हरदम खुदा का शुक्र अदा करता और आराम से रहता। यह कवित्त अक्सर अपने हाल पर पढ़ता —

रूठे क्यों न राजा? बातें कुछ नहीं काजा,
एक तोसे महाराजा और कौन को सराहिए?
रूठे क्यों न भाई! बातें कुछ न बसाई,
एक तू ही है सहाई और कौन पास जाइये?
रूठे क्यों न मित्र-शत्रु, आठों जाम बस
एक सांवरे के चरन के नेह को निभाइये।
संसार है रूठा, एक तू है अनूठा,
सब चूमेंगे अंगूठा, एक तू न रूठा चाहिये।

एक रोज़ जुमा को मैं अपने घर बैठा था और मेरा एक ग़ुलाम सौदा-सुलुफ़ लेने बाज़ार गया था। वह थोड़ी देर बाद रोता हुआ आया। मैंने सबब पूछा कि 'तुझे क्या हुआ?' खफ़ा होकर बोला, "तुम्हें क्या? तुम खुशी मनाओ, लेकिन क़यामत में क्या जवाब दोगे?'

मैंने कहा, 'ऐ हब्शी ! ऐसी क्या बला तुझपर नाज़िल हुई ?' उसने कहा, 'यह ग़ज़ब है कि एक यहूदी ने चौक के चौराहे पर तुम्हारे बड़े भाइयों की मुश्कें बांधी हैं। वह उनको कुमचियां मारता है और कहता है कि 'अगर मेरा रुपया न दोगे तो मारते-मारते मार ही डालूँगा। भला मुझे सवाब तो होगा।' तुम्हारे भाइयों की यह नौबत है और तुम बेफ़िक्र हो। क्या यह बात अच्छी है ? लोग क्या कहेंगे ?' यह बात ग़ुलाम से सुनते ही लहू ने जोश मारा। नंगे पांव बाज़ार की तरफ़ दौड़ा और ग़ुलामों से कहा, 'जल्द रुपये लेकर आओ।' जैसे ही वहां पहुँचा तो देखा कि जो-कुछ ग़ुलाम ने कहा था सच है। उन पर मार पड़ रही है। हाकिम के सिपाहियों से कहा, 'ख़ुदा के वास्ते ज़रा ठहर जाओ ! मैं यहूदी से पूछूँ तो कि इन्होंने ऐसा क्या क़ुसूर किया है जिसके बदले यह सज़ा दी जा रही है ?'

यह कहकर मैं यहूदी के नज़दीक गया और कहा 'आज जुमा का दिन है। तू इनको क्यों लकड़ी से इस बुरी तरह मार रहा है ?' उसने जवाब दिया, 'अगर हिमायत करते हो, तो पूरी तरह करो। इनके एवज़ रुपये मेरे हवाले करो, नहीं तो अपने घर की राह लो।' मैंने कहा, 'कितने रुपये ? दस्तावेज़ निकाल, मैं रुपये गिन देता हूँ।' उसने कहा 'दस्तावेज़ हाकिम के पास दे आया हूँ।'

इतने में मेरे दोनों ग़ुलाम रुपये की दो थैलियां लेकर आए। हज़ार रुपये मैंने यहूदी को दिये और भाइयों को छुड़ाया। उनकी हालत ख़राब हो रही थी। बदन से नंगे, भूखे-प्यासे थे। उनको अपने साथ घर ले आया। घर पहुंचते ही हम्माम में नहलवाया, नए कपड़े पहनाए, खाना खिलाया। हरगिज़ उनसे यह न पूछा कि बाप का इतना माल तुमने क्या किया ? मैंने इसलिये उनसे पूछना मुनासिब न समझा कि शायद वे शर्मिन्दा हों। ऐ बादशाह, ये दोनों मौजूद हैं। पूछिये कि सच कहता हूँ या कोई बात झूठ है ? ख़ैर, जब ये कई दिनों में मार की कोफ्त से बहाल हुए तो एक दिन मैंने कहा, 'ऐ भाइयो ! अब इस शहर में तुम

बेएतबार हो गए हो। बेहतर यह है कि कुछ दिन सफ़र करो।' यह सुनकर ये चुप हो रहे। मैंने समझा कि राज़ी हैं। मैं इनके सफ़र की तैयारी करने लगा। ख़ेमे, सामान, जानवर और सवारी की फ़िक्र करके बीस हज़ार रुपये का तिजारत का सामान ख़रीदा। एक क़ाफ़िला सौदागरों का बुख़ारा जाता था, उसके साथ इन्हें भी कर दिया।

एक साल के बाद वह क़ाफ़िला वापस आया। इनकी ख़ैर-ख़बर कुछ न पाई। आख़िर एक जानने वाले से बड़ा क़सम देकर पूछा। उसने कहा, 'जब बुख़ारा पहुँचे, तो उनमें से एक जुएख़ाने में अपना सारा माल हार गया। अब वहाँ झाड़ू देता है। फड़ को लीपता-पोतता है। जुवारी जो जमा होते हैं, उनकी ख़िदमत करता है। वे ख़ैरात समझकर जो कुछ दे देते हैं वह खा लेता है और वहां कुत्ता बना पड़ा रहता है। दूसरा भाई एक शराब बेचने वाले की लड़की पर आशिक़ हुआ। अपना सारा माल वहां सर्फ़ किया। अब शराबख़ाने को टहल किया करता है। क़ाफ़िले वाले ये सारी बातें इसलिए नहीं कहते कि तू शर्मिन्दा होगा।'

यह हाल उस शख़्स की ज़बानी सुनकर मेरी अजब हालत हुई। मारे फ़िक्र के नींद-भूख जाती रही। सामान और रुपये लेकर बुख़ारा चलने का इरादा किया। वहाँ पहुँचकर ढूँढ-ढाँढ़ कर दोनों को निकाला। अपने मकान में लाया। नहलवाकर नए कपड़े पहनवाये और इस डर से कि इनका दिल न दुखे और इन्हें शर्म न घेरे, मैं एक बात ज़बान तक नहीं लाया। फिर सौदागरी का माल इनके वास्ते ख़रीदा और घर चलने का इरादा किया। जब अपने वतन नेशापूर के नज़दीक आया तो एक गाँव में इनके साथ साथ माल-असबाब छोड़कर घर आया, इसलिये कि मेरे आने की किसी को ख़बर न हो। दो दिन के बाद मैंने मशहूर किया कि मेरे भाई सफ़र से आये हैं। कल मैं उनके स्वागत को ख़ातिर जाऊँगा। सुबह को चाहा कि जाऊँ। इतने में एक गृहस्थ उसी मौज़े का मेरे पास आया और फ़रियाद करने लगा। मैं उसकी आवाज़ सुनकर बाहर आया। उसे रोता देखकर पूछा कि 'भाई, क्यों रोता है?'

वह बोला, 'तुम्हारे भाइयों के कारण हमारे घर भी लूटे गए। काश कि उनको तुम वहां छोड़ न आते !'

मैंने पूछा, 'क्या मुसीबत गुज़री ?' बोला, 'रात को डाका पड़ा, उनका माल-असबाब लूटा और हमारे घर भी लूट ले गए।' मैंने अफ़सोस किया और पूछा कि 'अब वे दोनों कहां हैं ?' उसने कहा, 'शहर के बाहर नंगे-भूंगे, खराब खस्ता बैठे हैं।' यह सुनते ही दो जोड़े कपड़ों को साथ लेकर गया। पहनाकर घर में लाया। लोग सुनकर उनको देखने को आते थे और वे मारे शर्मिन्दगी के बाहर न निकलते थे। तीन महीने इसी तरह गुज़रे। तब मैंने अपने दिल में गौर किया कि कब तलक ये कोने में दुबके बैठे रहेंगे। बन पड़े तो इनको अपने साथ सफ़र में ले जाऊँ।

भाइयों से मैंने कहा, 'अगर फ़रमाइये तो यह ग़ुलाम आप के साथ चले।' ये खामोश रहे। फिर सफ़र का सारा सामान और सौदागरी की जिन्स तैयार करके चला और इनको साथ लिया। जिस वक्त माल को ज़कात देकर असबाब किश्ती पर चढ़ाया और लंगर उठाया, नाव चली। यह कुत्ता किनारे सो रहा था। जब चौंका और जहाज़ को मँझधार में देखा तो यह हैरान होकर भूँकने लगा, दरिया में कूद पड़ा और पैरने लगा। मैंने एक छोटी किश्ती दौड़ाई। बारे कुत्ते को लेकर किश्ती में पहुँचाया। एक महीना खैर-खैरियत से दरिया में गुज़रा। इत्तफ़ाक़ से कहीं मँझला भाई मेरी लौंडी पर आशिक़ हुआ। एक दिन बड़े भाई से कहने लगा, 'छोटे भाई का एहसान उठाने से बड़ी शर्मिन्दगी हासिल हुई। अब उससे बचने के लिये क्या करें ?' बड़े ने जवाब दिया कि 'एक बात दिल में आई है, अगर बन आये तो बड़ी बात है।' आखिर दोनों ने सलाह करके तजवीज़ की कि मुझे मार डालें और सारे माल-असबाब पर क़ब्ज़ा करके खर्च करें।

एक दिन मैं जहाज़ की कोठरी में सो रहा था और लौंडी पाँव दाबती थी कि मँझला भाई आया और जल्दी से मुझे जगाया। मैं हड़बड़ाकर

चौंका और बाहर निकला। यह कुत्ता भी मेरे साथ हो लिया। देखा तो बड़ा भाई जहाज़ की बाड़ पर हाथ टेके निहुड़ा हुआ दरिया का तमाशा देख रहा है और मुझे पुकारता है। मैंने पास जाकर कहा, 'ख़ैरियत तो है?' बोला, 'अजब तरह का तमाशा हो रहा है कि दरियाई आदमी, मोती की सीपियां और मूँगे के दरख्त हाथ में लिये हुये नाचते हैं।' अगर कोई और ऐसी अक्ल के ख़िलाफ़ बात कहता, तो मैं शायद कभी न मानता। लेकिन बड़े भाई के कहने को सच जाना। देखने को सर झुकाया। बहुतेरी नज़र दौड़ाई। कुछ नज़र न आया। पर वह यही कहता रहा, 'अब देखा?' लेकिन कुछ हो तो देखूं। इतने में मुझे ग़ाफ़िल पाकर मँझले भाई ने अचानक पीछे से आकर ढकेला। मैं बेअख्तियार पानी में गिर पड़ा और वे रोने-धोने लगे कि 'दौड़ियो! हमारा भाई दरिया में डूबा।'

इतने में नाव बढ़ गई और दरिया की लहर मुझे कहीं से कहीं ले गई। गोते पर गोते खाता था और मौजों में चला जाता था। आख़िर मैं थक गया। बस ख़ुदा को याद करता था और कुछ बस न चलता था। एकबारगी किसी चीज़ पर हाँथ पड़ा। आँखें खोलकर देखा तो यही कुत्ता था। शायद जिस दम मुझे दरिया में डाला, मेरे साथ यह भी कूदा और पैरता हुआ मेरे साथ लिपटा चला जाता था। मैंने उसकी दुम पकड़ ली। अल्लाह ने उसको मेरी ज़िन्दगी का सबब कर दिया। सात दिन और रात यही सूरत गुज़री। आठवें दिन किनारे जा लगे। ताक़त बिलकुल न थी। लेटे-लेटे करवटें खाकर ज्यों त्यों, अपने को ख़ुश्की में डाला। एक दिन मैं बेहोश पड़ा था। दूसरे दिन कुत्ते की आवाज़ कान में गई। होश में आया। ख़ुदा का शुक्र किया। इधर-उधर देखने लगा। दूर से शहर दिखाई देने लगा। लेकिन इतनी ताक़त कहां कि चलने का इरादा करूँ! लाचार दो क़दम चलता फिर बैठता। इसी हालत से शाम तक कोस भर राह काटी।

बीच में एक पहाड़ मिला। रात को वहीं गिर रहा। सुबह को

शहर में दाखिल हुआ। जब बाज़ार में गया नानबाई और हलवाइयों की दुकानें नज़र आईं। दिल तरसने लगा, न पास पैसा जो खरीदूं, न जी चाहे कि मुफ्त मांगू। इसी तरह अपने दिल को तसल्ली देता हुआ कि अगली दूकान से लूँगा; चला जाता था। आखिर ताक़त न रही और पेट में आग लगी थी। नज़दीक था कि रूह बदन से निकले कि अचानक दो जवानों को देखा जो अज़म का लिबास पहने और हाथ पकड़े चले आते थे। उनको देखकर खुश हुआ कि ये अपने मुल्क के इन्सान हैं, शायद जान-पहचान के हों। उनसे अपना हाल कहूँगा। जब नज़दीक आये तो देखा दोनों मेरे सगे भाई थे। देखकर बहुत खुश हुआ। खुदा का शुक्र किया कि उसने आबरू रख ली। ग़ैर के आगे मैंने हाथ न पसारा। नज़दीक जाकर सलाम किया और बड़े भाई का हाथ चूमा। उन्होंने मुझे देखते ही शोर-गुल किया। मझले भाई ने ऐसा तमाचा मारा कि मैं लड़खड़ाकर गिर पड़ा। बड़े भाई का दामन पकड़ा कि शायद यह हिमायत करेगा। उसने लात मारी।

ग़रज़ दोनों ने मुझे खूब चूर-चूर किया और हज़रत यूसुफ़ के भाइयों का सा काम किया। हरचन्द मैंने खुदा के वास्ते दिये और बिंधियाया। मगर हरगिज़ किसी ने रहम न खाया। एक मजमा इकट्ठा हुआ। सबने पूछा, 'इसका क्या गुनाह है?' तब भाइयों ने कहा, 'यह हरामज़ादा हमारे भाई का नौकर था। सो उसको दरिया में डाल दिया और माल-असबाब सब इसने ले लिया। हम मुद्दत से इसकी तालाश में थे। आज यह इस सूरत से नज़र आया।' और, मुझसे वे पूछते थे कि 'ऐ ज़ालिम! यह क्या तेरे दिल में आया, जो हमारे भाई को मार खपाया? उसने तेरा क्या क़ुसूर किया था? उसने तुझ से क्या बुरा सुलूक किया था, जो अपना मुख्तार बनाया था?' फिर उन दोनों ने अपने गरेबान चाक कर डाले और बेअख्तियार झूठ-मूठ भाई की खातिर रोते थे और मुझे लात-मुक्के मारते थे।

इतने में हाकिम के सिपाही आए और इनको डाँटा कि, 'क्यों मारते

हो ?' और वे मेरा हाथ पकड़कर कोतवाल के पास ले गए। वे दोनों भी साथ चले और हाकिम से भी कुछ कहा और कुछ रिश्वत देकर अपना इन्साफ़ चाहा और ख़ूने-नाहक़ का दावा किया।

मेरी यह हालत थी कि मारे भूख और मार-पीट के कारण बोलने की ताक़त बिलकुल न थी। हाकिम ने मुझसे पूछा तो मैं सर नीचा किये खड़ा था, कुछ मुंह से जवाब न निकला। हाकिम को भी यक़ीन हुआ कि मैं सचमुच ख़ूनी हूं। उसने हुक्म दिया, 'इसे मैदान में जाकर सूली दो।' जहाँपनाह! मैंने रुपये देकर इनको यहूदी की क़ैद से छुड़ाया था। इसके एवज़ इन्होंने भी रुपये ख़र्च करके मेरी जान लेने की ठानी। ये दोनों हाज़िर हैं, इनसे पूछिये जो इसमें बाल बराबर भी फ़र्क़ हो। ख़ैर, सिपाही मुझे ले गए। जब मैंने सूली को देखा तो अपनी ज़िन्दगी से हाथ धोए।

सिवाय इस कुत्ते के कोई मेरा रोनेवाला न था। इसकी यह हालत थी कि हर-एक आदमी के पाँव में लोटता और चिल्लाता था। कोई लकड़ी, कोई पत्थर से मारता। लेकिन यह उस जगह से न सरकता। और मैं काबे की तरफ़ मुंह करके खड़ा होकर ख़ुदा से कहता था कि 'ऐसे वक्त में तेरी ज़ात के सिवा मेरा कोई नहीं जो आड़े आवे और बेगुनाह को बचावे। अब तू ही बचावे तो बचता हूं!' यह कहकर कलमा शहादत का पढ़कर तेवराकर गिर पड़ा।

ख़ुदा की हिकमत से उस शहर के बादशाह को क़ौलंज की बीमारी हुई। अमीर और हकीम जमा हुए। ये इलाज करते थे, पर कोई फ़ायदा न होता था। एक बुज़ुर्ग ने कहा कि 'सबसे बेहतर दवा यह है कि मुहताजों को कुछ ख़ैरात करो और क़ैदियों को आज़ाद करो। दवा से दुआ में बड़ा असर है।' यह सुनते ही शाही सिपाही कैदखानों की तरफ़ दौड़े।

इत्तफ़ाक से एक सिपाही उस मैदान की तरफ़ आ निकला। भीड़ देखकर समझ गया कि किसी को सूली चढ़ाते हैं। यह सुनते ही घोड़े को सूली के नज़दीक लाकर तलवार से तनाबें काट दीं। हाकिम के

सिपाहियों को डाँटा और सावधान किया कि, 'ऐसे वक्त में जब बादशाह की हालत यह है, तुम खुदा के बन्दे को क़त्ल करते हो!' और उसने मुझे छुड़ा दिया। तब ये दोनों भाई फिर हाकिम के पास गए और मेरे क़त्ल के वास्ते कहा। कोतवाल ने तो रिश्वत खाई थी। जो ये कहते थे, सो करता था।

कोतवाल ने इनसे कहा, 'खातिरजमा रखो। अब मैं ऐसा क़ैद करता हूं कि आप-से-आप, मारे भूखों के, बे आबो-दाना मर जावे और किसी को खबर न होवे।' मुझे पकड़ लाए और एक कोने में रखा। उस शहर से बाहर, एक कोस की दूरी पर, एक पहाड़ था जहाँ देवों ने हज़रत सुलैमान के वक्त में एक बहुत छोटे मुँह का, अधियारा कुआँ उसमें खोदा था। उसको ज़िन्दाने सुलैमान कहते थे। जिस पर बादशाह का बहुत ज्यादा गुस्सा होता, उसे वहां क़ैद करते और वह अपने आप मर जाता। क़िस्सा यह कि रात को ये दोनों भाई और कोतवाल के सिपाही मुझे उस पहाड़ पर ले गए और उस कुएं में डालकर, अपनी खातिरजमा करके वापस चले गए। ऐ बादशाह! यह कुत्ता भी मेरे साथ चला गया। जब मुझे कुएं में गिराया तब यह उसकी मेंड पर लेट रहा। मैं अन्दर बेहोश पड़ा था। ज़रा ताक़त आई तो मैंने अपने को मुर्दा खयाल किया और उस मकान को क़ब्र समझा। इतने में दो आदमियों के बात करने की आवाज़ कान में पड़ी। मैं यही समझा कि मुनकर-नकीर हैं। मुझसे सवाल करने आए हैं। और मैंने रस्सी की सरसराहट सुनी, जैसे किसी ने वहाँ लटकाई हो। मैं हैरत में था। ज़मीन को टटोलता था, तो हड्डियाँ हाथ में आती थीं।

एक घड़ी के बाद चिपड़-चिपिड़ मुँह चलाने की आवाज़ मेरे कान में आई, जैसे कोई कुछ खाता है। मैंने पूछा कि 'ऐ खुदा के बन्दों, तुम कौन हो? खुदा के वास्ते बताओ।' वे हँसे और बोले, 'यह ज़िन्दाने सुलैमान है और हम क़ैदी हैं।' मैंने उनसे पूछा कि, 'क्या मैं जीता हूँ?' वे फिर खिलखिलाकर हंसे और कहा कि, 'अब तलक तो तू

ज़िन्दा है, पर अब मरेगा।' मैंने कहा, 'तुम खाते हो। बड़ा अच्छा हो जो मुझे भी थोड़ा सा दो।' तब उन्होंने झुँझलाकर खाली जवाब दिया और खाने को कुछ न दिया। वे खा-पीकर सो रहे और मैं कमज़ोरी और नातवानी के मारे ग़श में पड़ा रोता था। बादशाह सलामत! सात दिन मैं दरिया में रहा और अपने भाइयों के झूठे इलज़ाम के कारण दाना मयस्सर न आया। इसके अलावा खाने के बदले मार-पीट खाई और ऐसे क़ैदखाने में फँसा, जहाँ से छूटने की सूरत बिलकुल खयाल में भी न आती थी।

आखिर जान निकलने की नौबत आ पहुँची। कभी दम आता, कभी निकल जाता था। लेकिन कभी-कभी आधी रात को एक आदमी आता और रुमाल में रोटियाँ और पानी की सुराही डोरी में बाँधकर लटका देता और पुकारता। वे दोनों आदमी जो मेरे साथ क़ैद में थे, ले लेते और खाते-पीते।

ऊपर से कुत्ते ने हमेशा यह देखते-देखते यह अक्ल दौड़ाई कि जिस तरह यह शख्स पानी और रोटी कुएँ में लटका देता है, तू भी ऐसी फ़िक्र कर कि कुछ उस बेकस को भी, जो मेरा मालिक है, रोज़ी पहुँचे, तो उसकी जान बचे। यह खयाल करके शहर में गया। नानबाई की दूकान पर गुर्दे चुने हुए धरे थे। ज़स्त मारकर उसने एक कुल्चा मुँह में लिया और भागा, लोग पीछे दौड़े। वे ढेले मारते थे, लेकिन उसने रोटी को न छोड़ा। आदमी थक कर वापस हुए। शहर के कुत्ते पीछे लगे। उन से लड़ता-भिड़ता, रोटी को बचाए, उस कुएँ पर आया और रोटी को अन्दर डाल दिया। दिन था, मधिम रोशनी में, मैंने रोटी को पास पड़ा देखा और कुत्ते की आवाज़ सुनी। मैंने रोटी को उठा लिया और यह कुत्ता रोटी को फेंककर पानी की तलाश में गया।

किसी गाँव के किनारे, एक बुढ़िया की झोपड़ी थी, ठिलिया और बधना पानी से भरा हुआ धरा था और वह बुढ़िया चर्खा कातती थी। कुत्ता बँधने के नज़दीक गया। चाहा कि उसे उठावे। औरत ने डाँटा

लोटा उसके मुँह से छूटा, घड़े पर गिरा, मटका फूटा, बाक़ी बासन लुढ़क गए, पानी बह चला। बुढ़िया लकड़ी लेकर मारने को उठी। यह कुत्ता उसके दामन में लिपट गया, उसके पाँव पर मुँह मलने और दुम हिलाने लगा और पहाड़ की तरफ़ दौड़ गया। फिर उसके पास आकर कभी रस्सी उठाता और कभी डोल मुँह में पकड़कर दिखाता और मुँह उसके क़दमों पर रगड़ता और आँचल चादर का पकड़कर खींचता। ख़ुदा ने उस औरत के दिल में रहम दिया कि डोल-रस्सी लेकर उसके साथ चली। यह उसका आँचल पकड़े घर से बाहर होकर आगे-आगे हो लिया।

आख़िर उस बुढ़िया को पहाड़ पर ले ही आया। औरत के जी में कुत्ते की हरकत से यह बात आई कि ज़रूर इसका मालिक, इस कुएँ मे गिरफ्तार है। शायद उसकी ख़ातिर पानी चाहता है। ग़रज़ बुढ़िया को लिए हुए वह कुत्ता कुएं के मुंह पर आया। औरत ने लोटा पानी से भरकर रस्सी से लटकाया। मैंने वह बासन ले लिया और रोटी का टुकड़ा खाया। दो-तीन घूंट पानी पिया। इस तरह कुत्ते को राज़ी किया। ख़ुदा का शुक्र करके एक किनारे बैठा और ख़ुदा की मेहरबानी का इन्तज़ार करने लगा कि देखिये अब क्या होता है? यह बेज़बान जानवर इसी तरह रोटी ले आता और बुढ़िया के हाथ पानी पिलवाता।

जब भटियारों ने देखा कि कुत्ता हमेशा रोटी ले जाता है तो तरस खाकर मुक़र्रर किया कि जब उसको देखते, एक रोटी उसके आगे फेंक देते। अगर वह औरत पानी न लाती तो यह उसके बासन फोड़ डालता। लाचार वह भी एक सुराही पानी की दे जाती। मेरे इस साथी ने इस तरह रोटी-पानी से मेरी ख़ातिरजमा की और आप कुएं के मुंह पर पड़ा रहता। इस तरह छः महीने गुज़रे, लेकिन जो आदमी ऐसे कुएं में रहे कि दुनिया की हवा उसको न लगे, उसका क्या होगा? निरा हड्डी-चमड़ा मुझमें बाक़ी रहा। ज़िन्दगी वबाल हुई, जी में आवे कि या इलाही! यह दम निकल जावे तो बेहतर है।

एक रोज़, रात को वे दोनों सोए थे कि मेरा दिल उमड़ आया, बेअख्तियार रोने लगा और ख़ुदा की दर्गाह में नकधिसनी करने लगा। पिछले पहर क्या देखता हूँ कि ख़ुदा की क़ुदरत से एक रस्सी कुएं में लटकी और एक आवाज़ मैंने सुन कि 'ऐ कमबख्त, डोर का सिरा अपने हाथ में मज़बूती से बाँध और यहाँ से निकल।'

मैंने सुनकर दिल में ख़याल किया कि आख़िर भाई लहू के जोश से मुझ पर मेहरबान होकर ख़ुद ही निकालने आए। ख़ुशी से उस रस्सी को कमर में ख़ूब कसा। किसी ने मुझे ऊपर खींचा। रात ऐसी अंधेरी थी कि जिसने मुझे निकाला, उसको मैंने न पहचाना कि कौन है? जब मैं बाहर आया तब उसने कहा, 'जल्द आ, यहाँ खड़े होने की जगह नहीं।' मुझ में ताक़त तो न थी पर मारे डर के लुढ़कता गिरता-पड़ता पहाड़ से नीचे आया। देखा तो दो घोड़े ज़ीन बँधे हुए खड़े हैं। उस शख्स ने एक पर मुझे सवार किया और एक पर आप चढ़ लिया और आगे हो गया। जाते-जाते दरिया के किनारे पर जा पहुँचा।

सुबह हो गई, उस शहर से दस-बारह कोस निकल आए। उस जवान को देखा कि ओपची बना हुआ ज़रह बख्तर पहने, चार आईना बाँधे, घोड़े पर पाखर डाले, मेरी तरफ़ ग़ुस्से की नज़रों से घूरकर देखा और अपना हाथ दाँतों से काटकर, उसने तलवार मियान से खींची और घोड़े को जस्त करके मुझ पर चलाई। मैंने अपने को घोड़े से नीचे गिरा दिया और घिघियाने लगा कि, 'मैं बेक़सूर हूँ। मुझे क्यों क़त्ल करता है? ऐ मुख्वतदार! इतने ख़तरनाक कुएँ से और ऐसी बुरी क़ैद से तूने मुझे निकाला। अब यह बेमुरव्वती क्या है?'

उसने कहा, 'सच कह, तू कौन है?' मैंने जवाब दिया कि, 'मुसाफ़िर हूँ। नाहक़ की बला में गिरफ्तार हो गया था। तुम्हारे सदक़े से बारे जीता निकला हूँ।' और भी बहुत सी बातें ख़ुशामद की कहीं।

ख़ैर ख़ुदा ने उसके दिल में रहम दिया। तलवार को मियान में

डाला और बोला, 'ख़ैर, ख़ुदा जो चाहे सो करे। जा, तेरी जान बख़शी की। जल्द सवार हो जा। यहां ठहरने का मौक़ा नहीं।' घोड़े को तेज़ किया और हम चले।

वह रात में अफ़सोस करता और पछताता जाता था। ज़ुहर के वक्त तक हम एक टापू में जा पहुँचे। वहाँ वह घोड़े से उतरा और मुझे भी उतारा। ज़ीन और दूसरा सामान घोड़ों की पीठ से खोला और चरने को छोड़ दिया। अपनी कमर से भी हथियार खोल डाले और बैठ गया। मुझसे बोला, 'ऐ बदनसीब! अब अपना हाल कह तो मालूम हो कि तू कौन है?' मैंने अपना नाम-निशान और जो-जो कुछ विपता बीती थी, उससे शुरू से आख़िर तक कही।

उस जवान ने जब मेरा सब हाल सुना तो रोने लगा और मुख़ातिब हुआ कि, 'ऐ जवान! अब मेरा हाल सुन। मैं 'ज़ेरबाद' देश के राजा की कन्या हूँ और वह जवान जो कुएँ में क़ैद है उसका नाम 'बहरामन्द' है। वह मेरे पिता के मंत्री का बेटा है। एक दिन महाराज ने आज्ञा दी कि जितने कुँवर और राजा हैं झरोखे के नीचे मैदान में निकलकर, तीरअन्दाज़ी और चौगानबाज़ी करें तो घुड़चढ़ी और हर-एक का करतब-कमाल ज़ाहिर हो। मैं रानी के नज़दीक, जो मेरी माता थीं, अटारी में ओझल बैठी थी। दाइयां और सहेलियाँ हाज़िर थीं। मैं वहां से तमाशा देखती थी। यह दीवान का बेटा सब में सुन्दर था और घोड़े को कावे देकर करतब कर रहा था। मुझको वह भाया और दिल से उस पर रीझी और मुद्दत तलक यह बात गुप्त रखी।

आख़िर जब बहुत व्याकुल हुई, तब दाई से कहा और हेर सा इन-आम दिया। वह उस जवान को किसी न किसी ढब से, चोरी-चोरी मेरे बराबर में ले आई। तब यह भी मुझे चाहने लगा। बहुत दिन इस इश्क़-मिश्क में कटे। एक रोज़ चौकीदारों ने उसे आधी रात को हथियार बांधे और महल में आते देखकर उसे पकड़ा और राजा से जाकर कहा। राजा ने उसे क़त्ल कर देने का हुक्म दिया। लेकिन सब दरबारियों ने

कह-सुनकर उसकी जानबख्शी कराई। तब राजा ने कहा कि, 'इसको ज़िन्दाने सुलैमान में डाल दो।' दूसरा जवान जो उसके साथ क़ैद है, उसका भाई है। उस रैन को वह भी उसके साथ था। दोनों को उस कुएँ में छोड़ दिया गया। आज तीन बरस हुए कि वे वहीं फँसे हैं। पर किसी ने यह नहीं पूछा कि यह जवान राजा के घर क्यों आया था। भगवान ने मेरी पत रखी। इसके शुक्राने में मैंने अपने ऊपर यह ज़िम्मेदारी ली है कि अन्न जल उनको पहुँचाया करूँ। तब से अठवारे में एक दिन आती हूँ और आठ दिन की रोज़ी इकट्ठा दे जाती हूँ।

'कल की रात सपने में देखा कि कोई मुझसे कहता है कि, 'जल्द उठ और घोड़ा-जोड़ा और कमन्द और कुछ नक़द ख़र्च के वास्ते लेकर, उस कुएँ पर जा और बेचारे को वहां से निकाल।' यह सुनकर मैं चौंक पड़ी और मगन होकर मर्दाना भेस धारण किया और सन्दूक़चा अशर्फ़ी और जवाहिरात से भर लिया और यह घोड़ा और कपड़ा लेकर वहाँ गई कि कमन्द से उसे खींचूं। पर करम में तेरे था कि वैसी क़ैद से इस तरह छुटकारा पावे। नहीं तो मेरे इस कर्तब और काम का जानने वाला कोई नहीं। शायद वह कोई देवता था, जिसने तुझे छुड़ाने के लिये मुझे भिजवाया। खैर, जो मेरे भाग्य में था सो हुआ।'

यह कथा कहकर पूरी-कचड़ी, और मांस का सालन उसने अंगौछे से खोला। पहले मिस्री निकालकर उसे एक कटोरे में घोला और अर्क़ बेद-मिश्क़ का उसमें डालकर मुझे दिया। मैंने उसके हाथ से लेकर पिया। फिर थोड़ा सा नाश्ता किया। एक घड़ी के बाद मुझे लुंगी बँधवाकर दरिया में ले गई। क़ैंची से मेरे सर के बाल कतरे, नाख़ून काटे। नहला-धुलाकर कपड़े पहनाए। नए सिरे से आदमी बनाया। मैं दो रकात शुक्राने की नमाज़ काबे की तरफ़ मुँह करके पढ़ने लगा और वह नाज़-नीन मेरी इस हरकत को देखती रही।

जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ, वह पूछने लगी कि, 'यह तूने क्या काम किया?' मैंने कहा कि जिस विधाता ने सारे संसार को पैदा किया

और तुझ-सी महबूबा से मेरी सेवा करवाई और तेरे दिल को मेहरबान किया और वैसे क़ैदख़ाने और अंधेरे कुएँ से छुड़ाया, उसकी ज़ात में कोई शरीक नहीं। उसकी मैंने इबादत (आराधना) की, बन्दगी बजा लाया और उसी का शुक्र अदा किया।' यह बात सुनकर कहने लगी, 'तुम मुसलमान हो?' मैंने कहा, 'ख़ुदा का शुक्र है।' बोली, 'मेरा दिल तुम्हारी बातों से ख़ुश हुआ, मुझे भी सिखाओ और कलमा पढ़ाओ।' मैंने दिल में कहा, 'ख़ुदा का शुक्र है। यह हमारे मज़हब में शरीक हुई।' ग़रज़ मैंने कलमा (ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मद रसूलिल्लाह) पढ़ा और उससे पढ़वाया। फिर वहाँ से घोड़ों पर सवार होकर हम दोनों चले। रात को उतरते तो वह धर्म-ईमान का चर्चा करती, सुनती और ख़ुश होती। इसी तरह दो महीने तलक लगातार रात-दिन चलते चले गए।

आख़िर एक मुल्क में पहुँचे। यह मुल्क ज़ेरबाद और सरअन्दीप की सरहद के बीच था। वहां एक शहर नज़र आया जो आबादी में इस्त-बोल से बड़ा था और वहां की आबोहवा बहुत अच्छी और मुवाफ़िक थी। वहां का बादशाह इन्साफ़ में ज़्यादा मुंसिफ़ और रिआया का ख़्याल रखने वाला था। मेरा दिल वहां पहुँचकर बहुत ख़ुश हुआ। एक हवेली ख़रीदकर वहां रहने लगा। जब कुछ दिनों में सफ़र की तकलीफ़ दूर हुई तो कुछ ज़रूरी असबाब दुरुस्त करके उस बीबी से इस्लामी तरीक़े से निकाह किया और रहने लगा। तीन साल में वहाँ के बड़ों और छोटों से मिल-जुलकर एतबार पैदा किया, साख बनाई और तिजारत का ठाट फैलाया। आख़िर वहां के सब सौदागरों से बाज़ी ले गया।

एक दिन वज़ीर आज़म (महामंत्री) की ख़िदमत में सलाम के लिए चला। एक मैदान में लोगों की भीड़ जमा देखकर, किसी से पूछा कि 'यहां क्यों इतनी भीड़ है?' मालूम हुआ कि दो आदमियों को ज़िना और चोरी करते हुये पकड़ा गया और उन्होंने शायद ख़ून भी किया है। उनको पत्थर मारकर मारने के लिये लाए हैं।

मुझे यह सुनते ही अपना हाल याद आ गया कि एक दिन मुझे भी इसी तरह सूली चढ़ाने ले गये थे, ख़ुदा ने बचा लिया। पता नहीं ये कौन होंगे कि ऐसी बला में गिरफ़्तार हुए हैं? भीड़ को चीरकर अन्दर घुसा। देखा कि यही मेरे दोनों भाई हैं, जिनको हथकड़ियां कसे नंगे सर, नंगे पांव लिये जाते हैं। इनकी सूरत देखते ही ख़ून ने जोश किया और कलेजा जला। सिपाहियों को एक मुट्ठी अशर्फ़ियां दीं और कहा, 'एक घड़ी ठहरो' और वहां से घोड़े को सरपट फेंककर, हाकिम के घर गया। एक दाना याक़ूत का जो बेहद क़ीमती था भेंट किया और अपने भाइयों की सिफ़ारिश की। हाकिम ने कहा, 'एक शख़्स उनके ख़िलाफ़ दावेदार है और उनके गुनाह साबित हो चुके हैं और बादशाह का हुक्म हो चुका है, मैं लाचार हूँ।'

बारे, बहुत मिन्नत-ख़ुशामद और रोने धोने से हाकिम ने मुद्दई को बुलवाकर पाँच हज़ार रुपये पर राज़ी किया कि वह ख़ून का दावा माफ़ करे। मैंने रुपये गिन दिये और 'लादावा' लिखवा कर ऐसी बला से छुटकारा दिलवाया। 'जहाँपनाह! इनसे पूछिये कि सच्च कहता हूँ या झूठ बकता हूँ'।

वे दोनों भाई सर नीचे किये शर्मिन्दा से खड़े थे। ख़ैर, इनको छुड़वाकर घर में लाया। हम्माम करवा कर लिबास पहनवाया। दीवान-खाने में मकान रहने को दिया। इस बार अपनी बीवी को इनके सामने न किया। पर मैं इनकी ख़िदमत में हाज़िर रहता। इनके साथ खाना खाता। सिर्फ़ सोने के वक़्त घर में जाता। तीन बरस इनकी ख़ातिरदारी में गुज़रे और इनसे भी कोई ऐसी बुरी हरकत न हुई जो दुःख या रंज का कारण बने। जब मैं सवार होकर कहीं जाता तो ये घर में रहते।

इत्तफ़ाक से एक दिन वह नेकबख़्त बीवी हम्माम को गई थी। जब दीवानख़ाने में आई और कोई मर्द नज़र न पड़ा तो उसने बुर्क़ा उतारा। शायद यह मँझला भाई लेटा हुआ जागता था। देखते ही आशिक़ हुआ। बड़े भाई से कहा। दोनों ने मेरे मार डालने की आपस में सलाह

की। मैं इस हरकत की बिलकुल ख़बर न रखता था, बल्कि दिल में कहता था कि ख़ुदा का शुक्र है इस मर्तबा इन्होंने कोई ऐसी बात नहीं की। अब ये ठीक रास्ते पर आ गए। शायद इनको कुछ ग़ैरत आ गई।

एक दिन खाने के बाद बड़े भाई साहब आँख में आँसू भर लाये और अपने वतन की तारीफ़ और ईरान की अच्छाइयाँ बयान करने लगे। यह सुनकर दूसरे भी बिसूरने लगे। मैंने कहा, 'अगर वतन चलने का इरादा है, तो मैं आपकी मर्ज़ी का ताबेदार हूँ, मेरी भी यही ख्वाहिश है। अब इंशाअल्लाह मैं भी आपके साथ चलता हूँ।' उस बीवी से दोनों भाइयों की उदासी का ज़िक्र किया और अपना इरादा भी बताया। वह अक्लमन्द बोली कि 'तुम जानो, लेकिन फिर कुछ दग़ा किया चाहते हैं। ये तुम्हारी जान के दुश्मन हैं। तुमने आस्तीन के साँप पाले हैं और तुम उनकी दोस्ती का भरोसा रखते हो! जो जी चाहे सो करो। लेकिन इन दुष्टों से सावधान रहो।'

पर जो तक़दीर में था वह हुआ। थोड़े अर्से में सफ़र की तैयारी करके मैदान में ख़ेमा खड़ा करवा दिया। बड़ा क़ाफ़िला जमा हुआ और मेरी सरदारी में क़ाफ़िला ले चलने पर सब राज़ी हुए। अच्छी घड़ी देखकर क़ाफ़िला रवाना हुआ। लेकिन इनकी तरफ़ से मैं हुशियार रहता और हर तरह से इनका कहना मानता और इनको ख़ुश रखने की कोशिश करता।

एक रोज़, एक मंज़िल में, मँझले भाई ने ज़िक्र किया कि 'यहां से तीन मील की दूरी पर एक चश्मा जारी है, जो स्वर्ग के सोते 'सलसबील' के मानिन्द मीठा, नर्म और ख़ुश ज़ायक़ा है और मैदान में कोसों तलक ख़ुदरव, लाला, नाफ़र्मान, नर्गिस और गुलाब के फूल फूले हुये हैं। वाक़ई, सैर के लिए बड़ी ख़ूबसूरत जगह है। अगर अपना अख्तियार होता तो कल वहाँ जाकर तफ़रीह करते और थकन दूर होती।'

मैंने कहा, 'आप को अख्तियार है, कहो तो कल ठहर जायँ और वहाँ चलकर सैर करें।' ये लोग बोले, 'इससे अच्छी बात क्या हो सकती

है ?' मैंने हुक्म दिया कि सारे क़ाफ़िले में पुकार दो कि कल पड़ाव है और बावर्ची से कहा कि 'क़िस्म-क़िस्म के खाने तैयार करो, कल सैर को चलेंगे।'

जब सुबह हुई, इन दोनों भाइयों ने कपड़े पहनकर, कमर बाँधकर मुझे याद दिलाया कि, 'जल्द ठंढे-ठंढे चलिये और सैर कीजिए।' मैंने सवारी माँगी। इन्होंने कहा कि, 'पैदल सैर में जो मज़ा है वह सवारी में कहाँ ? नौकरों से कह दो, दो घंड़े दौड़ाकर ले आवें।'

दोनों ग़ुलामों ने क़लियान और क़हवादान ले लिया और साथ हो लिये। हम लोग राह में तीर चलाते हुए चले जाते थे। जब क़ाफ़िले से दूर निकल गए, एक ग़ुलाम को उन्होंने किसी काम से भेजा। थोड़ी दूर आगे बढ़कर दूसरे को भी उसे बुलाने के लिए रुख़सत किया। मेरी कम-बख़्ती जो आई तो ऐसा लगता था कि मेरे मुँह पर किसी ने मुहर लगा दी। जो वे चाहते थे सो करते थे और मुझे बातों में उलझाए लिये जाते थे। पर यह कुत्ता मेरे साथ रह गया।

हम बहुत दूर निकल गये। न चश्मा नज़र आया, न गुलज़ार; बल्कि एक काँटों भरा मैदान था। वहाँ मुझे पेशाब लगा। मैं पेशाब करने बैठा तो अपने पीछे तलवार की सी चमक देखी। मुड़कर देखा तो मझले भाई साहब ने मुझ पर ऐसी तलवार मारी कि सर दो टुकड़े हो गया। जब तलक कुछ बोलूँ कि 'ऐ ज़ालिम मुझे क्यों मारता है ?' बड़े भाई ने कन्धे पर तलवार मारी, दोनों ज़ख्म कारी लगे। तेवराकर मैं गिर पड़ा। तब इन दोनों बेरहमों ने अपने इतमीनान के लिए मुझे चूर ज़ख्मी किया और लहूलोहान कर दिया। यह कुत्ता मेरा हाल देखकर उन पर झपटा। उसको भी इन्होंने घायल किया। उसके बाद अपने हाथों से अपने बदनों पर ज़ख्मों के निशान किये और नंगे सर नंगे पांव क़ाफ़िले में गए और ज़ाहिर किया कि, 'हरामियों ने मैदान में हमारे भाई को शहीद किया और हम भी लड़-भिड़कर ज़ख्मी हुए। जल्दी रवाना हो जाओ, नहीं तो अब क़ाफ़िले पर टूट कर सब को नंगा कर देंगे।' क़ाफ़िले के लोगों ने जब

बहुओं का नाम सुना तो सुनते ही बदहवास हुए और घबराकर क़ूच किया और चल निकले।

मेरी बीबी ने इनका सुलूक और इनके कर्तूत के बारे में सुन रखा था। वह जानती थी कि क्या-क्या फ़रेब और दग़ा इन्होंने मेरे साथ किया था। इन झूठों के मुँह से इस वारदात का हाल सुनकर जल्दी से खंजर से उसने अपने को ख़त्म कर दिया और अपने प्राण त्याग दिये।

ऐ दर्वेशो! उस ख्वाजा सगपरस्त ने जब अपनी हालत और मुसीबत इस तरह से यहां तलक कही, तो सुनते ही मुझे बेअख्तियार रोना आया।

वह सौदागर कहने लगा कि, 'क़िबलए आलम! अगर बेअदबी न होती तो मैं कपड़े उतारकर अपना सारा बदन दिखाता।' इस पर भी अपने बयान की सच्चाई ज़ाहिर करने के लिए गरीबान मोंढे तलक चीरकर दिखलाया। वाक़ई उसका तन चार अंगुल बराबर ज़ख़्म के साबित न था। फिर मेरे सामने उसने पगड़ी सर से उतारी। खोपड़ी में ऐसा बड़ा गढ़ा पड़ा था कि एक समूचा अनार उसमें समा जाये। उस वक्त दरबार में जितने अमीर हाज़िर थे, सबने अपनी आँखें बन्द कर लीं, देखने की ताक़त न रही।

फिर सौदागर बोला कि, 'बादशाह सलामत! जब ये भाई अपनी समझ में मेरा काम तमाम करके चले गए, एक तरफ़ मैं और एक तरफ़ मेरे नज़दीक यह कुत्ता ज़ख्मी पड़ा था। लहू बदन से इतना निकल गया था कि ज़रा होश न था और ताक़त भी बिलकुल न रह गई थी। ख़ुदा जाने, दम कहां अटका रहा कि जी रहा था। जिस जगह मैं पड़ा था वह मुल्क 'सरअन्दीप' की सरहद थी और एक बहुत आबाद शहर उसके क़रीब था। उस शहर में एक बहुत बड़ा मन्दिर था और वहां के बादशाह की एक बेटी थी, बहुत खूबसूरत और रूपवती।'

कई बादशाह और शाहज़ादे उसके इश्क़ में ख़राब थे। वहाँ पर्दे की रस्म बिलकुल न थी, इसलिए वह लड़की सारे दिन अपनी हमजोलियों के साथ सैर-शिकार करती फिरती।

जहां हम पड़े थे वहां से नज़दीक एक बादशाही बाग़ था। उस रोज़ वह बादशाह से इजाज़त लेकर उस बाग़ में आई थी। सैर की ख़ातिर उस मैदान में घूमती फिरती आ निकली। कई ख़ासें भी साथ सवार थीं और जहां मैं पड़ा वहां आईं। मेरा कराहना सुनकर पास खड़ी हुईं। मुझे इस हालत में देखकर वे भागीं और राजकुमारी से कहा कि 'एक मर्द बा और एक कुत्ता लहू में शराबोर पड़े हैं।' उनसे यह बात सुनकर मल्का ख़ुद मेरे सर के पास आई और अफ़सोस करके कहा, 'देखो तो कुछ जान बाक़ी है?' दो-चार दाइयों ने झुककर देखा और अर्ज़ किया कि, 'अब तलक तो जीता है।' तुरन्त हुक्म दिया कि, 'ग़लीचे पर लिटाकर बाग़ में ले चलो।'

वहां लेजाकर सरकारी जर्राह को बुलाकर मेरे और मेरे कुत्ते के इलाज की ख़ातिर बहुत ताक़ीद की और बहुत इनआम और बख़शीश का वायदा किया। उस हज्जाम ने मेरा सारा बदन पोंछ-पांछकर, ख़ाक-ख़ून से पाक किया और शराब से धो-धोकर ज़ख्मों को टांके, मरहम लगाया और बेदमिश्क का अर्क़ पानी के बदले मेरे हलक़ में चुवाया। मल्का ख़ुद मेरे सिरहाने बैठी रहती और मेरी ख़िदमत करवाती और रात-दिन में दो-चार बार कुछ शोर्बा या शर्बत अपने हाथ से पिलाती।

बारे मुझे होश आया तो देखा कि मल्का बहुत अफ़सोस से कहती है, 'किस ज़ालिम ख़ूंख़्वार ने तुझ पर यह ज़ुल्म किया। बड़े बुत से भी नहीं डरा।' दस दिन के बाद, अर्क़, शर्बत और माजूनों की ताक़त से मैंने आंख खोली। देखा तो इन्दर का अखाड़ा मेरे आस-पास जमा है। राजकुमारी सिरहाने खड़ी है। मैंने एक आह भरी और चाहा कि कुछ हरकत करूँ, पर ताक़त न पाई। राजकुमारी मेहरबानी से बोली कि 'ऐ अज़मी! कुढ़ मत, ख़ातिरज़मा रख। अगरचे किसी ज़ालिम ने तेरा यह हाल किया लेकिन बड़े बुत ने मुझको तुझ पर मेहरबान किया है, अब तू चंगा हो जायेगा।'

क़सम उस ख़ुदा की जो एक है और जिसकी ज़ात में कोई शरीक

नहीं, मैं उसे देखकर फिर बेहोश गया। मल्का भी इस बात को समझ गई और गुलाब पाश से गुलाब अपने हाथ से छिड़का। बीस दिन के अर्से में ज़ख्म भर आये और अंगूर कर लाए। राजकुमारी हमेशा रात को जब सब सो जाते तो मेरे पास आती और खिला-पिला जाती। ग़रज़ चालीस दिन में मैंने सेहत का ग़ुस्ल किया। राजकुमारी बहुत खुश हुई। हज्जाम को बहुत सा इनआम दिया और मुझको नई पोशाक पहनवाई। खुदा की मेहरबानी से और राजकुमारी की खबरगीरी और कोशिश से मैं बहुत चौकस, तन्दुरुस्त और हट्टा-कट्टा हो गया। बदन बहुत तैतोर निकला और कुत्ता भी मोटा हो गया। वह रोज़ मुझे शराब पिलाती और बातें सुनती और खुश होती। मैं भी एकआध नक़ल या अनूठी कहानी कहकर उसके दिल को बहलाता।

एक दिन पूछने लगी कि, 'अपना हाल तो बयान करो कि तुम कौन हो और यह वारदात तुम पर क्योंकर हुई?' मैंने अपना सारा हाल शुरू से आखिर तक कह सुनाया। सुनकर वह रोने लगी और बोली कि 'अब मैं तुझसे ऐसा सुलूक करूँगी कि अपनी सारी मुसीबत भूल जाएगा।' मैंने कहा, 'खुदा तुझे सलामत रखे। तुमने नए सिरे से मेरी जांबख्शी की है। अब मैं तुम्हारा हो चुका हूँ। खुदा के वास्ते इसी तरह हमेशा मुझपर अपनी मेहरबानी की नज़र रखियो।' ग़रज़ सारी रात अकेली मेरे पास बैठी रहती। बाज़े दिन उसकी दाई भी साथ रहती और हर तरह का ज़िक्र, चर्चा सुनती और कहती। जब राजकुमारी उठ जाती और मैं अकेला होता तो पाक होकर किसी कोने में छुपकर नमाज़ पढ़ लेता।

एक बार ऐसा इत्तफ़ाक़ हुआ कि राजकुमारी अपने बाप के पास गई थी। मैं खातिरजमा होकर वज़ू करके नमाज़ पढ़ रहा था कि अचानक राजकुमारी दाई से बोलती हुई आई कि 'देखें अज़मी इस वक़्त क्या करता है, सोता है, या जागता है!' मुझे जो अपनी जगह पर न देखा, उसे बड़ा ताज्जुब हुआ कि, 'ऐं! यह कहां गया है? किसी से कोई लगा

तो नहीं लगाया।' कोना-खुतरा देखने लगी और तलाश करने लगी। आखिर जहां मैं नमाज़ पढ़ रहा था वहाँ आ निकली। उस लड़की ने कभी नमाज़ काहे को देखी थी। चुपकी खड़ी देखा की। जब मैंने नमाज़ करके दुआ के लिये हाथ उठाया और सिजदे में गया तो वह बेअख़्तियार खिलखिलाकर हँसी और बोली, 'क्या यह आदमी पागल हो गया? यह कैसी कैसी हरकतें कर रहा है?'

मैं हँसने की आवाज़ सुनकर दिल में डरा। राजकुमारी आगे आकर पूछने लगी कि, 'ऐ अज़मी! यह तू क्या करता था?' मैं कुछ जवाब न दे सका। इतने में दाई बोली, 'मैं तेरी बलाएँ लूँ। तेरे सदक़े गई। मुझे यूँ मालूम होता है कि यह शख़्श मुसलमान है और लात-मनात का दुश्मन है। अनदेखे ख़ुदा को पूजता है।' राजकुमारी ने यह सुनते ही हाथ पर हाथ मारा। बहुत ग़ुस्सा हुई। कहने लगी, 'मैं क्या जानती थी कि यह तुर्क है और हमारे देवताओं से इन्कार करने वाला है, तभी तो हमारे बुत के ग़ुस्से में पड़ा था। मैंने नाहक़ इसकी परवरिश की और इसे अपने घर में रखा।' यह कहती हुई वह चली गई। मैं यह सुनते ही बदहवास हुआ कि देखिये अब क्या सुलूक करे? मारे डर के नींद उचाट हो गई। सुबह तक बेअख़्तियार रोया किया और आंसुओं से मुँह धोया किया।

तीन दिन-रात इसी डर-खटके में रोते गुज़रे। हर्गिज़ आंख न झपकी। तीसरी रात को राजकुमारी शराब के नशे में मस्त और दाई को साथ लिये मेरे मकान पर आई। ग़ुस्से में भरी हुई और तीर-कमान हाथ में लिये बाहर चमन के किनारे बैठी। दाई से शराब का प्याला मांगा। पीकर कहा, 'दैया! वह अज़मी जो हमारे बड़े बुत के ग़ुस्से में गिरफ़्तार है, मरा या अबतक जीता है?' दाई ने कहा कि, 'बलैया लूँ, कुछ दम बाक़ी है।'

बोली कि, 'अब वह हमारी नज़रों से गिर गया है। लेकिन कह दे कि बाहर आवे।' दाई ने मुझे पुकारा। मैं दौड़ा तो देखा कि राजकुमारी

का चेहरा गुस्से के मारे तमतमा रहा है और सुर्ख़ हो गया है। जान तन में न रही। सलाम किया, हाथ बांधकर खड़ा हुआ। गुस्से की निगाह से मुझे देखकर दाई से बोली कि, 'अगर मैं इस धर्म के दुश्मन को तीर से मार दूँ तो मेरा क़सूर बड़ा बुत माफ़ करेगा या नहीं? यह मुझसे बड़ा गुनाह हुआ है कि मैंने इसे अपने घर में रखकर ख़ातिरदारी की।'

दाई ने कहा, 'राजकुमारी की इस में क्या ग़लती है? तुमने उसे दुश्मन जानकर तो नहीं रखा। तुमने उस पर तरस खाया। तुमको नेकी के बदले नेकी मिलेगी। यह अपने बुरे का फल बड़े बुत से पाएगा।' यह सुनकर कहा, 'दाई! इससे बैठने को कहो।' दाई ने मुझे इशारा किया कि 'बैठ जा।' मैं बैठ गया। मल्का ने एक और शराब का जाम पिया और दाई से कहा कि 'इस कमबख़्त को भी एक प्याला दे तो आसानी से मारा जाय।' दाई ने मुझे जाम दिया। मैंने बेउज़्र पिया और सलाम किया। पर उसने हर्गिज़ मेरी तरफ़ निगाह न की। मगर कनखियों से चोरी-चोरी देखती थी। जब मुझे आनन्द आया मैं शेर पढ़ने लगा। उन सब अशआर में एक शेर यह भी था—

क़ाबू में हूँ मैं तेरे गो अब जिया तो फिर क्या?
ख़ंजर तले किसू ने टुक दम लिया तो फिर क्या?

सुनकर मुसकराई और दाई की तरफ़ देखकर बोली, 'क्या तुझे नींद आती है?' दाई ने मर्ज़ी पाकर कहा, 'हाँ, मुझपर तो नींद ने क़ाबू पा लिया।' वह तो रुख़सत होकर वहाँ से चली गई।

कुछ देर बाद राजकुमारी ने प्याला मुझसे माँगा। मैं जल्दी से भर कर उसके सामने ले गया। एक अदा से मेरे हाथ से लेकर पी लिया। तब मैं क़दमों पर गिरा। राजकुमारी ने हाथ मुझ पर झाड़ा और कहने लगी, 'ऐ जाहिल! हमारे बड़े बुत में क्या बुराई देखी जो अनदेखे ख़ुदा की पूजा करने लगा?'

मैंने कहा, 'इंसाफ़ शर्त है। ज़रा ग़ौर फ़रमाइये कि बन्दगी के

लायक़ वह ख़ुदा है जिसने एक क़तरे पानी से तुम-सा महबूब पैदा किया और यह रूप और यह सुन्दरता दी कि एक क्षण में हज़ारों इंसानों के दिल को दीवाना कर डालो। बुत क्या चीज़ है कि कोई उसकी पूजा करे? एक पत्थर से संगतराशों ने गढ़कर एक सूरत बनाई और बेवक़ूफ़ों के वास्ते जाल फैलाया। वे बनाई हुई चीज़ को बनाने वाला समझते हैं। जिसे अपने हाथों से बनाते हैं, उसके आगे सर झुकाते हैं। हम मुसलमान हैं, जिसने हमें बनाया है, हम उसे मानते हैं। उसने उनके वास्ते दोज़ख़, हमारे वास्ते बहिश्त बनाया है। अगर राजकुमारी ख़ुदा पर ईमान लावे तो मज़ा उसका पावे और सत्य और असत्य में फ़र्क करे, अपने विश्वास को ग़लत समझे।'

बारे ऐसी-ऐसी नसीहतें सुनकर उस पत्थर-दिल का दिल मुलायम हुआ और ख़ुदा की मेहरबानी से रोने लगी और बोली, 'अच्छा मुझे भी अपना दीन सिखाओ।' मैंने कलमा पढ़ाया समझाया। उसने सच्चे दिल से पढ़ा और तौबा इस्तग़फ़ार करके मुसलमान हुई। तब मैं उसके पाँव पड़ा। फिर कहने लगी, 'भला मैंने तो तुम्हारा दीन क़ुबूल किया, लेकिन माँ-बाप काफ़िर हैं, उनका क्या इलाज?' मैंने कहा, 'तुम्हारी बला से। जो जैसा करेगा, वैसा पावेगा।' बोली कि, 'चचा के बेटे से मेरी बात पक्की की है। और वह बुत-परस्त है। कल ख़ुदा न करे व्याह हो, वह मुझसे मिले और उस से पेट हो जाय तो बड़ी क़बाहत है। इसकी फ़िक्र अभी से किया चाहिये कि इस बला से छुटकारा पाऊ।' मैंने कहा, 'तुम बात तो माक़ूल कहती हो। जो मिज़ाज में आवे, सो करो।' बोली कि, 'मैं अब यहाँ न रहूँगी, कहीं निकल जाऊँगी।' मैंने पूछा, 'किस सूरत से भागने पाओगी और कहाँ जाओगी?' जवाब दिया कि, 'पहले तुम मेरे पास से जाओ और मुसलमानों के साथ सराँय में जाकर रहो। सब आदमी सुनें और तुम पर गुमान न ले आने पावें! तुम वहाँ किश्तियों की तलाश में रहो और जो जहाज़ अज़म की तरफ चले, मुझे ख़बर कीजियो। मैं इस वास्ते दाई को तुम्हारे पास अक्सर भेजा करूँगी।

जब तुम कहला भेजोगे, मैं निकल कर आऊँगी और किश्ती पर सवार होकर चली जाऊंगी और इन कमबख़्तों के हाथ से छुटकारा पाऊँगी।' मैंने कहा, 'मैं तुम्हारे जान-ईमान पर क़ुर्बान हुआ। दाई का क्या करोगी?' बोली, 'इसकी तरकीब आसान है। एक प्याले में क़ातिल ज़हर पिला दूँगी।' यही सलाह तै हुई।

जब दिन हुआ मैं सराँय में गया। एक कोठरी किराये पर ली और वहाँ रहने लगा। इस वियोग में केवल मिलन की आशा पर जीता था। जब दो महीने में, रूम, शाम, इसफ़हान के सौदागर जमा हुये, उन्होंने तरी की राह से कूच का इरादा किया और अपना-अपना असबाब जहाज़ पर चढ़ाने लगे। एक जगह रहने से उनमें से कई-एक से जान-पहचान और दोस्ती हो गई थी। मुझ से कहने लगे, 'क्यों साहब, तुम भी चलो न? यहाँ अजनबी देश में कब तक रहोगे?'

मैंने जवाब दिया, 'मेरे पास क्या है जो अपने वतन को जाऊँ? यही एक लौंडी, एक कुत्ता, एक सन्दूक़ की बिसात रखता हूँ। अगर थोड़ी-सी जगह बैठ रहने को दो और उसका महसूल मुक़र्रर करो, तो मेरी ख़ातिरजमा हो, मैं भी सवार हो जाऊँ।'

सौदागरों ने एक कोठरी मेरे सिपुर्द की। मैंने उसके महसूल का रुपया भरा और इत्मीनान करके दाई के घर गया और कहा कि 'ऐ माँ! तुझसे रुख़सत होने आया हूँ। अब वतन को जाता हूं। अगर तेरी तवज्जुह से एक नज़र राजकुमारी को देख लूँ तो बड़ी बात है।'

बारे, दाई ने क़ुबूल किया। मैंने कहा कि 'मैं रात को आऊँगा, फ़लाने मकान पर खड़ा रहूंगा।' बोली, 'अच्छा!' मैं यह कहकर सराय में आया, सन्दूक़ और बिछौने उठा कर जहाज़ में लाया और नाख़ुदा को सौंपकर कहा कि, 'कल सवेरे अपनी लौंडी को लेकर आऊँगा।' नाख़ुदा बोला, 'जल्द उठ आइयो, सुबह को हम लंगर उठायेंगे।' मैंने कहा, 'बहुत अच्छा।'

जब रात हुई, उसी मकान पर जहाँ दाई से वायदा किया था जाकर

खड़ा रहा। फिर रात गए महल का दरवाज़ा खुला और राजकुमारी मैले कुचैले कपड़े पहने, एक पेटी जवाहिरात की लिये बाहर निकली। वह पिटारी मेरे हवाले की और साथ चली। सुबह होते-होते हम दरिया के किनारे पहुँचे। एक छोटी किश्ती पर सवार होकर जहाज़ में जा उतरे। यह वफ़ादार कुत्ता भी साथ था। जब सुबह खूब रौशन हुई जहाज़ ने लंगर उठाया। रवाना हुये और इत्मीनान से चले जाते थे कि एक बंदरगाह से कई तोपों के एक साथ छूटने की आवाज़ आई। सब हैरान और परेशान हुये। जहाज़ का लंगर गिरा दिया गया और आपस में चर्चा होने लगी कि बंदरगाह का राजा कुछ दग़ा करेगा, तोप छोड़ने का सबब क्या है?

इत्तफ़ाक़ से सब सौदागरों के पास खूबसूरत लौंडियां थीं। इस डर से कि कहीं बंदरगाह का राजा उन्हें छीन न ले, सबने लौंडियों को सन्दूक में बिठाकर ताला लगा दिया। इसी अर्से में बन्दरगाह का राजा एक किश्ती में अपने नौकर-चाकर के साथ बैठा हुआ नज़र आया। आते-आते जहाज़ पर आ चढ़ा। शायद उसके आने का सबब यह था कि जब बादशाह को दाई के मरने और राजकुमारी के ग़ायब होने की खबर मालूम हुई, मारे लाज के इसका नाम तो न लिया, पर बंदरगाह के राजा को हुक्म दिया कि, 'मैंने सुना है कि अज़मी सौदागरों के पास बड़ी खूबसूरत लौंडियाँ हैं। उन्हें मैं राजकुमारी के वास्ते लेना चाहता हूँ। तुम उनको रोककर जितनी लौंडियां जहाज़ में हों, मेरे हुज़ूर में हाज़िर करोगे। उन्हें देखकर जो पसन्द आयेंगी, उनकी क़ीमत दी जाएगी, नहीं तो वापस होंगी।'

बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ बन्दरगाह का राजा इसीलिए खुद जहाज़ पर आया। मेरे नज़दीक एक शख्स था। उसके पास भी एक खूबसूरत बाँदी सन्दूक में बन्द थी। बन्दरगाह का राजा उसी सन्दूक पर आकर बैठा और लौंडियों को निकलवाने लगा। मैंने खुदा का शुक्र किया कि राजकुमारी की कोई चर्चा नहीं। गरज़ जितनी लौंडियाँ पाईं,

बन्दरगाह के राजा ने नाव पर चढ़ाई और ख़ुद वह जिस सन्दूक़ पर बैठा था, उसके मालिक से भी हँसते-हँसते पूछा कि, 'तेरे पास भी तो लौंडी थी !'

उस बेवक़ूफ़ ने कहा, 'आपके क़दमों की क़सम, सिर्फ़ मैंने ही यह कर्म नहीं किया। सभी ने लौंडियाँ तुम्हारे डर से सन्दूक़ों में छुपाई हैं। बन्दरगाह के राजा ने यह बात सुनकर सब सन्दूक़ों का झाड़ा लेना शुरू कर दिया। मेरा भी सन्दूक़ खोला और राजकुमारी को निकालकर सबके साथ ले गया। अजब तरह की मायूसी हुई कि यह ऐसी हरकत हुई कि मेरी जान तो मुफ़्त गई और राजकुमारी से देखिए क्या सुलूक करे।

उसकी फ़िक्र में अपनी जान का डर भी भूल गया। सारे दिन-रात ख़ुदा से दुआ मांगता रहा। जब सवेरा हुआ, सब लौंडियों को किश्ती पर सवार करके लाये। सौदागर ख़ुश हुये। अपनी-अपनी बाँदियाँ सबने लीं। सब आईं, मगर एक राजकुमारी उनमें न थी। मैंने पूछा कि, 'मेरी लौंडी नहीं आई, इसका क्या सबब है ?' उन्होंने जवाब दिया, 'हम कुछ नहीं जानते, शायद बादशाह ने पसन्द की होगी।' सब सौदागर मुझे तसल्ली और दिलासा देने लगे कि, 'ख़ैर जो हुआ सो हुआ, तू कुढ़ मत। उसकी क़ीमत हम सब मिलकर तुझे देंगे।'

मेरे होश-उड़ गये। मैंने कहा कि 'अब मैं अज़म नहीं जाने का।' किश्ती वालों से कहा, 'यारो मुझे भी अपने साथ किनारे ले चलो। किनारे पर उतार दीजो।' वे राज़ी हुये। मैं जहाज़ से उतर कर किश्ती में आ बैठा। यह कुत्ता भी मेरे साथ चला आया।

जब मैं बन्दरगाह में पहुँचा तो एक सन्दूक़चा जवाहिरात का, जो राजकुमारी अपने साथ लाई थी, उसे तो रख लिया और बाक़ी सब असबाब बन्दरगाह के राजा के नौकरों को दे दिया। मैं हर जगह जासूसी के लिये फिरने लगा कि शायद कहीं राजकुमारी की ख़बर पाऊँ। लेकिन हरगिज़ कुछ निशान न मिला और न इस बात का पता पाया।

एक रात को किसी बहाने से बादशाह के महल में भी गया और ढूँढ़ा लेकिन कुछ खबर न मिली। एक महीने के क़रीब शहर के कूचे और मुहल्ले छान मारे और उसके ग़म से अपने को मौत के क़रीब पहुँचाया और पागलों सा फिरने लगा। आखिर अपने दिल में खयाल किया कि मुमकिन है कि बन्दरगाह के राजा के घर में मेरी राजकुमारी हो तो हो, नहीं तो और कहीं नहीं। राजा की हवेली के चारों तरफ़ देखता फिरता था कि कहीं से जाने की राह पाऊं तो अन्दर जाऊं।

एक नाली पर नज़र पड़ी जिसमें से आदमी आ-जा सकता है। पर देखा कि एक लोहे की जाली उसके मुँह पर जड़ी है। यह इरादा किया कि इसी नाली की राह से चलूँ। कपड़े बदन से उतारे और उस नजिस कीचड़ में उतरा। हज़ार मेहनत से उस जाली को तोड़ा और संडास की राह से उस चोर महल में गया। औरतों का सा लिबास बनाकर हर तरफ़ देखने भालने लगा। एक मकान से एक आवाज़ मेरे कान में पड़ी जैसे, कोई मुनाजात (भजन) कर रहा है। आगे जाकर देखा तो राजकुमारी है कि अजब हालत से रोती है और नकधिसनी कर रही है और खुदा से दुआ माँगती है कि, 'अपने रसूल और उसकी पाक औलाद के सदक़े! मुझे यहां से मुक्त कर और जिस शख्स ने मुझे सच्ची राह बतलाई है, उससे एक बार खैरियत से मिल।' मैं देखते ही दौड़कर उसके पाँव पर गिर पड़ा। राजकुमारी ने मुझे गले लगा लिया। हम दोनों पर एकदम बेहोशी का आलम हो गया। जब हवास दुरुस्त हुए, मैंने राजकुमारी से सारा हाल पूछा। बोली, 'जब बन्दरगाह का राजा सब लौंडियों को किनारे पर ले गया, मैं खुदा से यही दुआ मांगती थी कि कहीं मेरा भेद न खुले, मैं पहचानी न जाऊँ और तेरी जान पर आफ़त न आवे। सच, खुदा ने मेरी दुआ सुन ली। हर्गिज़ किसी को यह मालूम न हुआ कि यह राजकुमारी है। बन्दरगाह का राजा हर-एक बांदी को खरीदारी की नज़र से देखता था। जब मेरी बारी आई, मुझे पसन्द करके चुपके से अपने घर में भेज दिया और उसने दूसरी बांदियों को बादशाह के सामने पेश किया।

'मेरे बाप ने जब मुझे उनमें न देखा, सब बांदियों को रुख़सत किया क्योंकि यह सारा पेच मेरे वास्ते किया था। अब उसने यूँ मशहूर किया कि राजकुमारी बहुत बीमार है। अगर मैं ज़ाहिर न हुई तो मेरे मरने की ख़बर सारे मुल्क में उड़ेगी। इस तरह बादशाह की बदनामी न होगी। लेकिन अब मैं इस मुसीबत में हूँ कि बन्दरगाह का राजा कुछ और इरादा मुझसे अपने दिल में रखता है और हमेशा साथ सोने को बुलाता है, मैं राज़ी नहीं होती। वह चाहता हद से ज़्यादा है लेकिन अब तक उसे मेरी रज़ामन्दी नहीं मिली है इसलिए चुप हो रहता है। पर मैं हैरान हूँ कि इस तरह कहाँ तक निभेगी। सो मैंने भी अपने जी में ठान लिया है कि जब मुझसे कुछ और इरादा करेगा तो मैं अपनी जान दूँगी और मर रहूँगी। लेकिन तेरे मिलने से एक तदबीर और दिल में सूझी। ख़ुदा चाहे तो सिवाय इसके कोई दूसरी राह यहाँ से छूटने की नज़र नहीं आती।'

मैंने कहा, 'कहो तो। वह कौन सी तदबीर है?' कहने लगी, 'अगर तू मेहनत और कोशिश करे तो यह काम पूरा हो सके।'

मैंने कहा, 'मैं ताबेदार हूँ, अगर हुक्म दो तो जलती आग में कूद पड़ूँ और सीढ़ी पाऊँ तो तुम्हारी ख़ातिर आसमान पर चला जाऊँ। जो कुछ कहो, कर डालूँ।' राजकुमारी ने कहा कि, 'तू बड़े बुत के बुतख़ाने में जा। जिस जगह जूतियाँ उतारते हैं वहाँ एक काला टाट पड़ा रहता है। इस मुल्क की रस्म यह है कि जो ग़रीब, मुफ़लिस और मुहताज हो जाता है उस जगह वह टाट ओढ़कर बैठता है। यहाँ के लोग जो दर्शन को जाते हैं, अपनी हैसियत के अनुसार उसे देते हैं। जब दो-चार दिन में माल जमा होता है, पण्डे एक ख़िलअत बड़े बुत की सरकार से देकर उसे रुख़सत करते हैं और वह अमीर होकर चला जाता है। कोई यह नहीं पूछता कि यह कौन था? तू भी जाकर उसी जगह बैठ और हाथ मुँह अपना अच्छी तरह छुपा ले और किसी से न बोल। तीन दिन के बाद जब पुजारी तुझे जोड़ा-कपड़ा देकर रुख़सत करे तू वहाँ से हर्गिज़ मत

उठ। जब बहुत मिन्नत -खुशामद करे तब तू बोलियो कि मुझे रुपया-पैसा कुछ न चाहिये। मैं माल का भूखा नहीं, मैं मज़लूम हूँ फ़रियाद को आया हूँ। अगर पुजारी की माता मेरा इन्साफ़ करे तो बेहतर है, नहीं तो बड़ा बुत मेरा इन्साफ़ करेगा और उस ज़ालिम के खिलाफ़ यही बड़ा बुत मेरे इन्साफ़ को पहुँचेगा।' जब तक वह पुजारियों की माता आप तेरे पास न आवे, बहुतेरा कोई मनावे तू राज़ी न हूजियो। आख़िर लाचार होकर यह खुद तेरे पास आयेगी। वह बहुत बूढ़ी है, दो सौ चालीस साल उसकी उम्र है और छत्तीस बेटे उसके जने हुए मन्दिर के सरदार हैं और उसका बड़े बुत के पास बड़ा दर्जा है। इसीलिए उसका हुक्म सब के ऊपर चलता है। जितने छोटे-बड़े इस मुल्क के हैं उसके कहने को अपनी इज्ज़त जानते हैं और जो वह कहती है, उसे सर-आँखों पर मानते हैं। उसका दामन पकड़ कर कहियो 'ऐ माई! अगर तू मुझ मज़लूम मुसाफ़िर का इन्साफ़ ज़ालिम से न करेगी तो मैं बड़े बुत के सामने टक्करें मारूँगा। आख़िर वह रहम खाकर तुझसे मेरी सिफ़ारिश करेगा।'

'उसके बाद वह पुजारी की माता जब तेरा हाल पूछे तो कहियो कि 'मैं अज़म का रहने वाला हूँ, बड़े बुत के दर्शन की खातिर और तुम्हारी अदालत की शोहरत काले कोसों से यहाँ आया हूँ। कई दिनों आराम से रहा। मेरी बीबी भी मेरे साथ आई थी। वह जवान है और सूरत-शकल भी अच्छी है। आँख-नाक से भी दुरुस्त है। मालूम नहीं बन्दरगाह के राजा ने उसे क्योंकर देखा, ज़बरदस्ती मुझसे छीनकर अपने घर में डाल दिया। हम मुसलमानों का यह क़ायदा है कि अगर कोई ग़ैर उनकी औरत को देखे या छीन ले तो वाजिब है कि उसको जिस तरह हो मार डालें और अपनी जोरू को ले लें और नहीं तो खाना-पीना छोड़ दें, क्योंकि जब तलक वह जीता रहे वह औरत अपने शौहर पर हराम है। अब यहाँ लाचार होकर आया हूँ। देखें तुम क्या इंसाफ़ करती हो।' जब राज-कुमारी ने मुझे सब सिखा पढ़ा दिया तो मैं रुखसत होकर उसी नाबदान

की राह से निकला और वह लोहे की जाली फिर लगा दी।

सुबह होते ही मंदिर में गया और वह काला टाट ओढ़कर बैठा। तीन दिन में इतना रुपया, अशर्फी और कपड़ा मेरे नज़दीक जमा हुआ कि ढेर लग गया। चौथे दिन पण्डे भजन करते और गाते-बजाते खिल-अत लिये मेरे पास आए और रुख़सत करने लगे। मैं राज़ी न हुआ और दुहाई बड़े बुत कि मैं भीख माँगने नहीं आया बल्कि इंसाफ़ के लिये बड़े बुत और पुजारी की माता के पास आया हूँ। जब तक मेरे साथ इंसाफ़ न होगा, यहाँ से न जाऊँगा। वे सुनकर बुढ़िया के पास गए और मेरा हाल बयान किया। उसके बाद एक चोबे आया और मुझसे कहने लगा, 'चलो! माता तुम्हें बुलाती है।' मैं उसी वक़्त वह काला टाट सर से पाँव तक ओढ़े हुए घर में गया। वहाँ देखा कि एक जड़ाऊ सिंहासन पर जिसमें लाल, जवाहिरात, मोती और मूँगा लगा हुआ है, उस पर बड़ा बुत बैठा है और एक सोने की कुर्सी पर जिसपर शानदार फ़र्श बिछा है, उस पर शान-शौकत और ठाठ से एक बुढ़िया काले कपड़े पहने हुये मसनद और तकिया लगाए बैठी है और दो लड़के दस-बारह के, एक दाहने और एक बायें बैठे हैं। मुझे आगे बुलाया। मैं अदब से आगे गया और तख़्त के एक पाए को चूमा, फिर उसका दामन पकड़ लिया उसने मेरा हाल पूछा। मैंने उसी तरह, जिस तरह राजकुमारी ने सिखाया था, कहा।

मेरा हाल सुनकर बोली कि, 'क्या मुसलमान अपनी स्त्रियों को पर्दे में रखते हैं?' मैंने कहा, 'हाँ, तुम्हारे बच्चों की ख़ैर हो, यह हमारी पुरानी रसम है।' बोली कि, 'तेरा मज़हब अच्छा है। मैं अभी हुक्म देती हूँ कि बन्दरगाह का राजा तेरी जोरू समेत आकर हाज़िर हो और उस के साथ ऐसी तरकीब करती हूँ कि दोबारा ऐसी हरकत न करे। सब के कान खड़े हों और डरें। अपने लोगों से पूछने लगी कि बन्दरगाह का राजा कौन है? उसकी यह मजाल हुई कि बेगानी स्त्री को ज़बरदस्ती छीन लिया।'

लोगों ने कहा, 'फ़लाना शख्स है।' यह सुनकर अपने दोनों लड़कों से जो पास बैठे थे बोली कि जल्दी इसको साथ लेकर बादशाह के पास जाओ और कहो कि माता कहती हैं कि हुक्म बड़े बुत का यह है कि बन्दरगाह का राजा आदमियों पर जोर-ज्यादती करता है, चुनांचे इस ग़रीब की औरत को छीन लिया है। उसका यह क़ुसूर बहुत बड़ा साबित हुआ। जल्दी से उस पथ-भ्रष्ट का माल-असबाब, जायदाद ज़ब्त करके उस तुर्क के हवाले करो, जो हमारा खास आदमी है। नहीं तो आज रात को तेरा सत्यानाश होगा और हमारे ग़ुस्से में पड़ेगा। वे दोनों लड़के उठकर मण्डल से बाहर आए और सवार हुए, सब पण्डे शंख बजाते और आती गाते जुलूस में हो लिए।

ग़रज़ वहाँ के छोटे-बड़े जहाँ उन लड़कों का पाँव पड़ता था वहाँ की मिट्टी पवित्र जानकर उठा लेते और आँखों से लगाते। उसी तरह बादशाह के क़िले तक गए! बादशाह को खबर हुई तो वह नंगे पाँव स्वागत की ख़ातिर निकल आया और उनको बड़े मान मर्यादा से ले जाकर अपने पास तख्त पर बिठाया और पूछा कि 'आज क्योंकर कष्ट किया?' उन दोनों बच्चों ने माँ की तरफ़ से जो-कुछ सुन आए थे कहा, और बड़े बुत के ग़ुस्से से डराया।

बादशाह ने सुनते ही फ़र्माया, 'बहुत अच्छा!' और अपने नौकरों को हुक्म दिया कि, सिपाही जावें और बन्दरगाह के राजा को उस औरत के साथ बहुत जल्द मेरी सरकार में हाज़िर करें तो मैं उसके अपराध का पता करके उचित दण्ड दूँ।' यह सुनकर मैं अपने दिल में घबराया कि यह बात तो अच्छी नहीं हुई। अगर बन्दरगाह के राजा के साथ लावें तो भेद खुलेगा और मेरा क्या हाल होगा। दिल में बहुत डर गया और खुदा की तरफ़ ध्यान किया। लेकिन मेरे मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगीं और बदन काँपने लगा। लड़कों ने मेरा यह रंग देखकर अनुमान कर लिया कि यह हुक्म मेरी मर्ज़ी के मुवाफ़िक नहीं हुआ। वे उसी वक्त ख़फ़ा होकर उठे और बादशाह से झिड़ककर बोले,

'ऐ आदमी ! तू क्या दीवाना हुआ है जो बड़े बुत की तावेदारी से बाहर निकला और हमारे वचन को झूठ समझा और अब दोनों को बुलवाकर पूछ-गछ करना चाहता है ? अब सावधान ! तू बड़े बुत के ग़ुस्से में पड़ा । हमने तुझे हुक्म पहुँचा दिया । अब तू जान और बड़ा बुत जाने ।'

यह कहने से बादशाह की अजब हालत हुई । वह हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और सर से पाँव तलक काँपने लगा । मिन्नत करके मनाने लगा । ये दोनों हरगिज़ न बैठे और खड़े रहे । इतने में जितने अमीर और दरबारी वहाँ हाज़िर थे, एक मुँह होकर बन्दरगाह के राजा की बुराई करने लगे कि, 'वह ऐसा ही हरामज़ादा, बदचलन और पापी है, ऐसी-ऐसी हरकतें करता है कि बादशाह के हुज़ूर में क्या-क्या अर्ज़ करें ? जो-कुछ पुजारिय की माता ने कहला भेजा है ठीक है । इस वास्ते जो हुक्म बड़े बुत का है झूठ क्योंकर होगा ?'

बादशाह ने जब सबकी ज़बानी एक ही बात सुनी तो अपने कहे पर लज्जित और शर्मिंदा हुआ । फ़ौरन ही एक साफ़-सुथरा जोड़ा मुझे दिया और हुक्मनामा अपने हाथ से लिखकर उस पर अपने हाथ की मुहर लगा कर मेरे हवाले किया और एक रुक्क़ा पुजारियों की माता को लिखा और जवाहिरात और अशर्फ़ियों के थाल लड़कों के सामने भेंट रखकर रुख़सत किया । मैं ख़ुशी-ख़ुशी मंदिर में आया और उस बुढ़िया के पास गया ।

बादशाह का जो ख़त आया, उसमें सम्बोधन और उसके बाद अपनी छोटाई का वर्णन करने के बाद माता के प्रति अपनी भक्ति, श्रद्धा और आदर प्रकट करके लिखा था कि, 'आप के हुक्म के मुताबिक़ इस तुर्क को बन्दरगाह का हाकिम मुक़र्रर किया और शाही जोड़ा दिया गया । अब इसे बन्दरगाह के राजा को क़त्ल करने का हक़ है । सारा माल-धन और जायदाद इस तुर्क की हुई । यह जो चाहे सो करे । प्रार्थी हूँ कि मेरा अपराध क्षमा हो ।' पुजारियों की माता ने कहा कि मन्दिर के नौबतख़ाने में नौबत बजे । पाँच सौ बन्दूक चलाने वाले सिपाही जो बाल-बँधी कौड़ी

मारें, हथियारबन्द मेरे साथ कर दिये और हुक्म दिया कि बन्दरगाह के राजा को गिरफ़्तार करके तुर्क के हवाले करें और जिस तरह से इसका जी चाहे, उसे सज़ा दे। और ख़बरदार! सिवाय इस आदमी के कोई और महल के अन्दर दाखिल न होवे। राजा सब माल, ख़ज़ाने को इसकी अमानत में सुपुर्द करें। जब यह ख़ुशी से इजाज़त दे तो रसीद और माफ़ीनामा इससे लेकर वापस आवें। इसके बाद एक और जोड़ा बड़े बुत की सरकार से मुझे देकर, सवार करवाकर विदा किया।

जब मैं बन्दरगाह में पहुँचा एक आदमी ने बढ़कर बन्दरगाह के राजा को ख़बर की। वह हैरान-सा बैठा था कि मैं वहाँ जा पहुँचा। ग़ुस्सा तो दिल में भर ही रहा था। देखते ही उसे तलवार खींचकर ऐसी गर्दन में लगाई कि उसका सर अलग भुट्टा सा उड़ गया। वहाँ के गुमाश्ते, ख़ज़ांची, कारिन्दों और दारोगों को पकड़वाकर सबके दफ्तर ज़ब्त किये। इसके बाद मैं महल में दाखिल हुआ। राजकुमारी से मुलाक़ात की। आपस में गले लगकर रोए और ख़ुदा का शुक्र किया। मैंने उसके, उसने मेरे आँसू पोंछे। फिर बाहर मसनद पर बैठकर अहलकारों को जोड़े दिये और अपनी-अपनी नौकरियों पर सबको बहाल किया। नौकर और ग़ुलामों को इनआम और इज्ज़त दी। वे लोग जो मंडप से मेरे साथ मुक़र्रर हुए थे, हर-एक को इनाम, बख्शीश देकर और उनके जमादार और रिसालेदार को जोड़े पहनाकर रुख़सत किया और क़ीमती जवाहिरात, नूरबाफ़ी थान और शालबाफ़ी, ज़रदोज़ी और हर-एक मुल्क की जिन्स और तोहफ़े, इसके अलावा बहुत-सा नक़द बादशाह की भेंट की ख़ातिर और हर-एक अमीर और दरबारी के लिये उसके दर्जे के अनुसार और पुरोहितों के लिये और पंडों में बाँटने की ख़ातिर, अपने साथ लेकर एक हफ्ते के बाद मंदिर में आया और उसे माता जी के आगे भेंट रखा।

उसने एक और इज्ज़त का जोड़ा मुझे दिया और उपाधि दी। फिर बादशाह के दरबार में जाकर भेंट दी और जो-जो ज़ुल्म और फ़साद बन्दरगाह के पिछले राजा ने किये थे, उसे बन्द कर देने की ख़ातिर अर्ज़

किया। इस वजह से बादशाह, अमीर और सौदागर सब मुझसे राज़ी हुए। बादशाह ने बड़ी मेहरबानी मुझ पर दिखाई और जोड़ा और घोड़ा देकर जागीर, पद, इज़्ज़त और सम्मान मुझे दिया। जब बादशाह के हुज़ूर से आया, शागिद पेशा और अहलकारों को इतना-कुछ देकर राज़ी किया कि सब मेरी तारीफ़ करते नहीं थकते थे। ग़रज़ कि मैं बहुत ख़ुश-हाल हो गया और बहुत चैन आराम से उस मुल्क में राजकुमारी से शादी करके रहने लगा और ख़ुदा की बन्दगी करने लगा। मेरे इन्साफ़ के कारण रैयत, प्रजा सभी ख़ुश थे। महीने में एक बार मंदिर में और बादशाह के हुज़ूर में आता जाता और दिन-ब-दिन बादशाह के हुज़ूर में इज़्ज़त और सम्मान पाता।

आख़िर बादशाह ने मुझे अपने ख़ास दरबारियों में दाख़िल किया और बग़ैर मेरी सलाह के कोई काम न करता। निहायत बेफ़िक्री से ज़िन्दगी गुज़रने लगी। मगर ख़ुदा ही जानता है, कभी-कभी इन दोनों भाइयों का ख़याल दिल में आता कि वे कहाँ होंगे और किस तरह होंगे? दो बरस की मुद्दत के बाद मुल्क 'ज़ेरबाद' से सौदागरों का एक क़ाफ़िला उस बन्दरगाह में आया। सब अज़म जाने का इरादा रखते थे। उन्होंने यह चाहा कि दरिया की राह से अपने मुल्क को जावें। वहाँ का क़ायदा यह था कि जो क़ाफ़िला आता उसका सरदार सौग़ात और तोहफ़ा हर-एक मुल्क का मेरे लिये लाता और नज़र पेश करता। दूसरे दिन मैं उसके मकान पर जाता और उसके माल का महसूल लेकर जाने की इजाज़त देता। इसी तरह 'ज़ेरबाद' के वे सौदागर भी मुझसे मुलाक़ात को आए और बहुत क़ीमती तोहफ़े और सौग़ात लाए। दूसरे दिन मैं उनके ख़ेमे में आ गया। देखा तो दो आदमी फटे-पुराने कपड़े पहने गठरी बक़्ची सर पर उठाकर मेरे सामने लाते हैं और जब मैं देख-भाल लेता हूँ फिर उठा ले जाते हैं और बड़ी मेहनत और ख़िदमत कर रहे हैं।

मैंने जब अच्छी तरह ग़ौर करके देखा तो पता चला कि यह मेरे दोनों भाई ही हैं। उस वक्त ग़ैरत और मुरव्वत ने यह न चाहा कि

इनको इस तरह की नौकरी करते देखूँ। जब मैं अपने घर को चला तो आदमियों से कहा कि 'इन दोनों आदमियों को साथ लिये आओ।' इनको लाए, फिर लिबास और पोशाक बनवा दी और अपने पास रखा। इन बदज़ातों ने फिर मेरे मारने का इरादा किया। एक दिन, आधी रात को, सबको सोता पाकर, चोट्टों की तरह ये मेरे सिरहाने आ पहुँचे। मैंने अपनी जान के डर से चौकीदारों को दरवाज़े पर रखा था और यह वफ़ादार कुत्ता मेरी चारपाई की पट्टी तले सोता था। जैसे ही इन्होंने तलवारें मियान से खींची, पहले कुत्ते ने भूँककर उन पर हमला किया। उसकी आवाज़ से सब जाग पड़े। मैं भी हलबलाकर चौंका। आदमियों ने इनको पकड़ा। मालूम हुआ कि आप ही हैं। सब लानतियाँ देने लगे कि इतनी खातिरदारी के बावजूद इन्होंने यह क्या हरकत की।

बादशाह सलामत! तब तो मैं भी डरा। मसल मशहूर है कि, 'एक ख़ता दो ख़ता तीसरी ख़ता, मादर बख़ता।' दिल में यही सलाह ठहरी कि अब इनको क़ैद करूँ। लेकिन अगर क़ैदखाने में रखूँ तो कौन इनकी खैर-खबर लेगा? भूख-प्यास से मर जाएँगे या कोई और स्वाँग की तैयारी करेंगे। इस वास्ते इन्हें पिंजरे में रखा है कि हमेशा मेरी नज़रों तले रहे तो मुझे इतमीनान रहे। नहीं तो आँखों से ओझल होकर कुछ और करें। इस कुत्ते की यह इज़्ज़त और यह खातिरदारी इसकी वफ़ादारी और नमकहलाली के कारण है। सुबहानअल्लाह! बेवफ़ा आदमी वफ़ादार जानवर से बदतर है। मेरा यह हाल था, जो आपके हुज़ूर में अर्ज़ किया। अब चाहे क़त्ल का हुक्म फ़रमाइये या जाँबख्शी कीजिये, जो हुक्म बादशाह का हो।'

मैंने सुनकर उस जवान, ईमान वाले को शाबाशी दी और कहा, तेरी मुरव्वत में कोई शक नहीं और इनकी बेहयाई और हरामज़दगी में हर्गिज़ शुबह भी नहीं! सच है, कुत्ते की दुम को बारह बरस गाड़ो तो भी टेढ़ी रहे।

उसके बाद मैंने उन बारहों लाल की हक़ीक़त पूछी जो उस कुत्ते के

पट्टे में थे। सौदागर बोला कि, 'बादशाह की उम्र एक सौ बीस साल की हो। उसी बन्दरगाह में जहाँ मैं हाकिम था, तीन-चार साल के बाद, एक रोज़ महल के कोठे पर जो बहुत ऊँचा था, जंगल और दरिया के सैर तमाशे के लिये बैठा था। मैं हर तरफ़ देखता था कि अचानक एक तरफ़ जंगल में, जहाँ कोई रास्ता न था, दो आदमियों की तस्वीर सी नज़र आई जो चले जाते थे। दूरबीन लेकर देखा तो अजब सूरत-शक्ल के आदमी दिखाई दिये। चोबदारों को उनके बुलाने के वास्ते दौड़ाया।

जब वे आए, मालूम हुआ कि एक औरत और एक मर्द है। औरत को महल के अन्दर राजकुमारी के पास भेज दिया और मर्द को सामने बुलाया। देखा तो एक जवान बीस-बाइस का, डाढ़ी-मूँछ निकल रही है, लेकिन धूप की गर्मी से, उसके चेहरे का रंग काला तवे सा हो रहा है और सर के बाल और हाथों के नाखून बढ़कर बनमानुस की सूरत बन रहा है। एक लड़का तीन-चार बरस का काँधे पर लिये हुए और कुत्ते की दो आस्तीनें भरी हुई तौक़ की तरह गले में डाले, अजब सूरत और अजब वज़ा देखी। मैंने निहायत हैरान होकर पूछा कि, 'ऐ अज़ीज़ तू कौन है और किस मुल्क का बाशिन्दा है और यह क्या तेरी हालत है?' वह जवान बेअख़्तियार रोने लगा। और वह हिमयानी खोलकर मेरे आगे ज़मीन पर रखी और बोला, 'ख़ुदा के वास्ते कुछ खाने को दो। मुद्दत से घास और वनस्पतियाँ खाता चला आता हूँ। ज़रा भी ताक़त मुझमें बाक़ी नहीं रही।' उसी वक़्त मैंने रोटी, कबाब और शराब मँगवादी। वह खाने लगा।

इतने में ख़वाजासरा महल से उनकी बीवी के पास से कई और थैलियाँ ले आया। मैंने उन सबको खुलवाया। हर एक क़िस्म के जवाहिरात देखे जिनमें से एक-एक दाना क़ीमत में बादशाहत के बराबर था। एक से एक अनमोल, जौहर में और तौल में और आबदारी में ऐसे कि उनकी छूट पड़ने से सारा मकान रौशन हो गया। जब उसने टुकड़ा खाया और एक जाम दारू का पिया, हवास दुरुस्त हुए, तब मैंने पूछा,

'यह पत्थर तेरे हाथ कहाँ लगे ?' जवाब दिया, 'मेरा वतन आज़रबाइजान है। लड़कपन में घर-बार, माँ-बाप से जुदा होकर बड़ी मुसीबतें उठाईं और एक मुद्दत तलक ज़िन्दा-दर-गोर था और कई बार मौत के पंजे से बचा हूँ।' मैंने कहा, 'ऐ मर्द आदमी ! अपना पूरा हाल कह तो मालूम हो।' तब वह अपना हाल बयान करने लगा कि 'मेरा बाप सौदागर-पेशा था। हमेशा चीन, हिन्दुस्तान, रूस और विलायत का सफ़र किया करता था। जब मैं दस बरस का हुआ, बाप हिन्दुस्तान को चला और मुझे अपने साथ ले जाना चाहा। बहुतेरा माँ ने और खाला, ममानी और फूफी ने कहा कि, 'अभी यह लड़का है, सफ़र लायक़ नहीं हुआ ? पर बाप ने न माना और कहा कि, 'मैं बूढ़ा हो चुका अगर यह मेरे साथ तबियत नहीं पाएगा तो मैं यह हसरत क़ब्र में ले जाऊँगा। मर्द-बच्चा अब न सीखेगा तो कब सीखेगा ?'

यह कहकर मुझे ख्वाह-मख्वाह साथ लिया और रवाना हुआ। खैरो-आफ़ियत से राह कटी। जब हिन्दुस्तान में पहुँचे, कुछ जिन्स वहाँ पहुँची और वहाँ की सौग़ात लेकर 'ज़ेरबाद' के मुल्क को गए। वहाँ से भी खरीद-फ़रोख्त करके जहाज़ पर सवार हुए कि जल्द वतन पहुँचें। एक महीने के बाद एक रोज़ आँधी और तूफ़ान आया और मूसलाधार बारिश होने लगी। सारा ज़मीनो-आसमान धुआँधार हो गया और जहाज़ की पतवार टूट गई। मल्लाह और जहाज़ चलाने वाले अपना सर पीटने लगे। दस दिन तलक हवा की मौज जिधर चाहती थी, ले जाती थी। ग्यारहवें रोज़ एक पहाड़ से टकरकर खाके जहाज़ पुर्ज़े पुर्ज़े हो गया। यह न मालूम हुआ कि बाप और नौकर-चाकर और अस्बाब कहाँ गया।

मैंने अपने को एक तख्ते पर देखा। तीन दिन तीन रात वह बेड़ा बेअख्तियार चला किया और चौथे दिन किनारे पर जा लगा। उस पर से उतरकर, घुटनियों चलकर बारे किसी न किसी तरह ज़मीन पर पहुँचा। दूर से खेत नज़र आए और बहुत से आदमी वहाँ जमा थे, लेकिन सब काले और मादरज़ाद नंगे थे ! मुझ से कुछ बोले लेकिन मैंने उनकी

ज़बान बिलकुल न समझी। वह खेत चने का था। वह आग का अलाव लगाकर बूटों के होले करते थे। कई दिन बाद एक घर भी वहाँ नज़र आया। शायद उनकी ख़ूराक यही थी और वे वहीं बसते थे। मुझे भी इशारा करने लगे कि तू भी खा, मैंने भी एक मुट्ठी उखाड़ कर भूने और फाँकने लगा। थोड़ा सा पानी पीकर एक कोने में सो रहा।

कुछ देर के बाद जब जागा, उन में से एक शख़्स मेरे नज़दीक आया और मुझे राह दिखाने लगा। मैंने थोड़े से चने उखाड़ लिये और उसी राह पर चला। एक चटियल साफ मैदान था, बहुत लम्बा चौड़ा जिसे क़यामत का मैदान कहा चाहिये। यही बूट खाता हुआ चला जाता था। चार दिन बाद एक क़िला नज़र आया। जब पास गया तो एक कोट देखा, बहुत ऊँचा तमाम पत्थर का और हर-एक तरफ़ से दो-दो कोस का। एक दरवाज़ा पत्थर से तराशा हुआ जिसमें एक बड़ा सा ताला जड़ा था, लेकिन वहाँ इन्सान का निशान नज़र न पड़ा। वहाँ से आगे चला तो एक टीला देखा, जिसकी खाक सुर्मे के रंग स्याह थी। जब उस टीले के पार हुआ तो एक बहुत बड़ा शहर नज़र पड़ा। शहर के चारों तरफ़ दीवारें खिंची हुई थीं और जगह-जगह पर बुर्ज बने हुए थे। शहर के एक तरफ़ बहुत बड़े पाट का दरिया था। जाते-जाते दरवाज़े पर गया और बिस्मिल्लाह कहकर क़दम अन्दर रखा। एक शख़्स को देखा कि अँग्रेज़ों की सी पोशाक पहने हुए कुर्सी पर बैठा है। जैसे ही उसने मुझ अजनबी मुसाफ़िर को देखा और मेरे मुँह से बिस्मिल्लाह सुनी, पुकारा, 'आगे आओ।' मैंने जाकर सलाम किया। निहायत मेहरबानी से सलाम का जवाब दिया। तुरन्त मेज़ पर पावरोटी, मस्का और मुर्ग़ का कबाब और शराब रखकर कहा, 'पेट भरकर खाओ'। मैंने थोड़ा सा खाया और बेखबर होकर सोया। जब रात हो गई तब आँख खुली, हाथ-मुँह धोया। फिर मुझे खाना खिलाया और कहा कि, 'ऐ बेटा! अपना हाल कह!' जो कुछ मुझ पर गुज़रा था कह सुनाया। तब बोला कि, 'यहाँ

तू क्यों आया ?' मैंने दिक होकर कहा, 'शायद तू दीवाना है ! मुद्दत तक मुसीबत उठाने के बाद मैंने अब बस्ती की सूरत देखी है। खुदा ने यहां तलक पहुँचाया और तू कहता है, क्यों आया ?' कहने लगा, 'अब तू आराम कर, कल जो कहना होगा कहूँगा।'

जब सुबह हुई बोला, 'कोठरी में फावड़ा, छलनी और तोबड़ा है। बाहर ले आ।' मैंने दिल में कहा कि खुदा जाने रोटी खिलाकर क्या मेहनत मुझसे करवाएगा। लाचार वह सब निकालकर उसके सामने लाया। तब उसने कहा कि, 'उस टीले पर जा और गज़ के माफ़िक गढ़ा खोद। वहाँ से जो कुछ निकले इस छलनी में छान। जो न छन सके, इस तोबड़े में भरकर मेरे पास ला।' मैं वह सब चीज़ें लेकर वहाँ गया और इतना ही खोदकर छान-छूनकर तोबड़े में डाला। देखा तो सब रंग-बिरंग के जवाहिरात थे। उनकी ज्योति से आँखें चौंधिया गईं। उसी तरह थैली को मुँहामुँह भरकर उस अज़ीज़ के पास ले गया। देखकर बोला कि, जो इसमें भरा है, तू ले और यहाँ से जा। इस शहर में तेरा रहना अच्छा नहीं।' मैंने जवाब दिया कि, 'साहब ने अपनी तरफ़ से बड़ी मेहरबानी की जो इतना-कुछ कंकर-पत्थर दिया। लेकिन मेरे किस काम का ? जब भूखा रहूँगा तो न इनको चबा सकूँगा, न पेट भरेगा। इसलिये अगर और भी दो तो वह मेरे किस काम आएँगे ?'

वह मर्द हँसा और कहने लगा कि, 'मुझको तुझ पर अफ़सोस आता है क्योंकि तू भी हमारी तरह मुल्क अज़म का रहने वाला है। इसलिए मैं मना करता हूँ। नहीं तो तू जान। अगर तेरा यही इरादा है कि शहर में जाऊँ तो मेरी अंगूठी लेता जा। जब बाज़ार के चौक में जाय तो वहाँ एक सफ़ेद दाढ़ी वाला आदमी बैठा मिलेगा उसकी सूरत-शकल मुझ से बहुत मिलती-जुलती है। वह मेरा बड़ा भाई है। उसको यह निशानी दीजियो तो वह तेरी खबरगीरी करेगा और जो कुछ वह कहे उसी माफ़िक काम कीजियो, नहीं तो मुफ्त मारा जाएगा। मेरा हुक्म यहीं तलक है। शहर में मेरा दखल नहीं।'

तब मैंने वह अंगूठी उससे ली और सलाम करके रुख़सत हुआ। शहर में गया, अच्छा-ख़ासा शहर देखा। कूचे, बाज़ार साफ़ और औरत-मर्द बेहिजाब आपस में ख़रीद-फ़रोख़्त कर रहे थे। सब अच्छे कपड़े पहने हुए थे। मैं सैर करता और तमाशा देखता जब चौक के चौराहे पर पहुंचा, ऐसी भीड़ थी कि थाली, फेंकिये तो आदमियों के सर ही चली जाए। आदमियों का ऐसा ठाट बँध रहा था कि आदमी को राह चलना मुशकिल था। जब कुछ भीड़ छटी, तो मैं भी धक्कम-धुक्का करता हुआ आगे गया। बारे उस अर्ज़ीज़ को देखा कि एक चौकी पर बैठा है और एक जड़ाऊ लोहे का गदा सामने धरा है। मैंने जाकर सलाम किया और वह अंगूठी दी। ग़ुस्से की नज़र से मेरी तरफ़ देखा और बोला, 'तू क्यों यहाँ आया और अपने को बला में डाला? क्या मेरे बेवक़ूफ़ भाई ने तुझको मना नहीं किया था?'

मैंने कहा कि, 'उन्होंने तो कहा था लेकिन मैंने नहीं माना।' और सारा हाल शुरू से आख़िर तक कह सुनाया। वह शख़्स उठा और मुझे साथ लेकर अपने घर की तरफ़ चला। उसका मकान बादशाहों सा देखने में आया। बहुत से नौकर-चाकर उसके पास थे। जब एकान्त में जाकर बैठा तब मुलायमियत से बोला कि, 'ऐ बेटे! यह क्या तू ने बेवक़ूफ़ी की कि अपने पाँव से क़ब्र में आया? कोई भी इस कमबख़्त तिलिस्माती शहर में आता है?' मैंने कहा, 'मैं अपना हाल पहले ही कह चुका हूँ। अब तो क़िस्मत ले आई। लेकिन मेहरबानी फ़रमाकर यहाँ की राह-रस्म बता दीजिए ताकि यह मालूम हो कि किस वास्ते तुमने और तुम्हारे भाई ने मना किया।' तब वह जवाँमर्द बोला कि, 'इस शहर का बादशाह और सारे अमीर इन सब पर एक विचित्र शाप है। अजब तरह का इनका रवैया और मज़हब है। यहाँ के मन्दिर में एक मूर्ति है जिसके पेट में से शैतान हर किसी का नाम, ज़ात और धर्म बयान करता है। इसलिये जब कोई ग़रीब मुसाफ़िर आता है, बादशाह को ख़बर होती है, उसे मण्डप में ले जाता है और मूर्ति को सिजदा करवाता है। अगर

दण्डवत् की तो बेहतर, नहीं तो बेचारे को दरिया में डुबवा देता है। अगर वह चाहे कि दरिया से निकल भागे तो उसको रोग हो जाता है, ऐसा कि ज़मीन पर घसीटता फिरे। ऐसा तिलिस्म इस शहर में बनाया है। मुझको तेरी जवानी पर रहम आता है। पर तेरी ख़ातिर एक उपाय करता हूँ कि भला कुछ दिन तो जीता रहे और इस कष्ट से बचे।'

मैंने पूछा कि, 'वह क्या सूरत तजवीज़ की है? इर्शाद हो।' कहने लगा, 'तेरी शादी करा दूँ और वज़ीर की लड़की तुझे ब्याह लाऊँ।' मैं ने जवाब दिया कि, 'वज़ीर अपनी बेटी मुझ से मुफ़लिस को कब देगा? इसी समय, जब मैं उसके धर्म को स्वीकार करूँ? सो यह मुझसे न हो सकेगा।' कहने लगा कि, 'इस शहर की यह रस्म है कि जो कोई उस मूर्ति को सिजदा करे तो अगर फ़क़ीर हो और बादशाह की बेटी माँगे तो उसकी ख़ुशी की ख़ातिर हवाले करे और उसे रंजीदा न करे। यहाँ का बादशाह मुझ पर विश्वास रखता है और बहुत अर्ज़ीज़ रखता है। इस लिए यहाँ के सब अमीर और बड़े लोग मेरी क़द्र करते हैं। हफ़्ते में दो दिन यहाँ के लोग मन्दिर में पूजा के लिए जाते हैं। चुनानचे कल सब जमा होवेंगे। मैं तुझे ले जाऊँगा।' यह कहकर खिला-पिलाकर सुला रखा। सुबह हुई तो मुझे साथ लेकर मन्दिर की तरफ़ चला। वहां जाकर जो देखा तो आदमी आते-जाते हैं और पूजा करते हैं।

बादशाह और अमीर मूर्ति के सामने, पण्डितों के पास सर नंगे किये, अदब से घुटने मोड़े बैठे थे और ख़ूबसूरत कुँवारी लड़कियां और लड़के, जैसे स्वर्ग के बासी हैं, चारों तरफ़ क़तार बाँधे खड़े थे। तब वह अर्ज़ीज़ मुझ से मुख़ातिब हुआ कि, 'अब जो मैं कहूँ सो कर।' मैंने क़ुबूल किया कि 'जो कहो सो करूँ।' वह बोला कि, 'पहले बादशाह के हाथ-पाँव को चूम और उसके बाद वज़ीर का दामन पकड़।' मैंने वैसा ही किया। बादशाह ने पूछा कि, 'यह कौन है, और क्या कहता है?' उस आदमी ने कहा कि, 'यह जवान मेरा रिश्तेदार है और बादशाह की क़दम बोसी करने के लिए बहुत दूर से आया है, इस आशा पर कि

वज़ीर उसको अपनी ग़ुलामी में लेकर इज़्ज़त दे अगर बड़े देवता का हुक्म और आप की मर्ज़ी होवे। बादशाह ने पूछा कि, 'अगर हमारा धर्म, मज़हब और क़ानून क़ुबूल करेगा तो मुबारक है।' उसी वक़्त मंदिर का नक्क़ारखाना बजने लगा और भारी जोड़ा मुझे पहनवाया गया और एक काली रस्सी गले में डालकर खींचते हुये मूर्ति के सिंहासन के आगे लेजाकर सिजदा करवाकर खड़ा किया गया।

मूर्ति से आवाज़ निकली कि, 'ऐ सौदागर-बच्चे, तू हमारी बन्दगी में आया। अब हमारी मेहरबानी और कृपा का उम्मीदवार रहा।' यह सुनकर सब लोगों ने मूर्ति को सिजदा किया और ज़मीन पर लौटने लगे और पुकारे, 'धन्य है, क्यों न हो, तुम ऐसे ही ठाकुर हो!'

जब शाम हुई, बादशाह और वज़ीर सवार होकर वज़ीर के महल में दाख़िल हुये और वज़ीर की बेटी को अपनी रीति-रस्म करके मेरे हवाले किया और बहुत सा दान-दहेज़ दिया और बड़े कृतज्ञ होकर कहा कि 'बड़े देवता के आदेशानुसार हमने उसे तुम्हारी सेवा में दिया।' एक मकान में हम दोनों को रखा। उस नाज़नीन को जब मैंने देखा तो वाक़ई उसका आलम परी का सा था। नख-सिख से दुरुस्त! जो-जो ख़ूबियाँ पद्मिनी की सुनी जाती हैं सो सब उसमें मौजूद थीं। मैंने बहुत इत्मीनान से उसे स्वीकार किया। सुबह को स्नान करके बादशाह के सामने हाज़िर हुआ। बादशाह ने दामादी का जोड़ा दिया और यह हुक्म दिया कि हमेशा दरबार में हाज़िर रहा करूँ। आख़िर को चन्द दिनों के बाद बादशाह के ख़ास दरबारियों में दाख़िल हुआ।

बादशाह मेरी संगत से बहुत ख़ुश होते और अक्सर जोड़े और इनआम मुझे दिया करते। दुनिया के माल से मैं धनी था, इस वास्ते कि मेरी बीबी के पास इतना नक़द, जिन्स और जवाहिरात थे जिसकी हद और गिनती न थी। दो साल तक बहुत ऐश-आराम से गुज़री। इत्तफ़ाक़ से वज़ीरज़ादी को पेट रहा। जब सतवाँसा हुआ और अनगिना

महीना गुज़र कर पूरे दिन हुए, पीड़ा लगी, दाई-जनाई आयीं तो मरा लड़का पेट से निकला। उसका विष ज़च्चा को चढ़ा। वह भी मर गई। मैं मारे ग़म के दीवाना हो गया कि यह क्या आफ़त टूटी। उसके सिरहाने बैठा रोता था। एक बारगी रोने की आवाज़ सारे महल में बलन्द हुई और चारों तरफ़ से औरतें आने लगीं। जो आती थी एक दोहत्तड़ मेरे सर पर मारती और रोना शुरू करती। इतनी औरतें इकट्ठी हुईं कि मैं उनके बीच में छुप गया। नज़दीक था कि जान निकल जाय।

इतने में किसी ने पीछे से मेरा गरीबान खींचकर घसीटा। देखा तो वह 'अज़मों' मर्द है जिसने मुझे बियाहा था। कहने लगा कि, 'बेवक़ूफ़ तू क्यों रोता है?' मैंने कहा कि, 'ज़ालिम तू ने यह क्या बात कही? मेरी बादशाहत लुट गई, घरदारी का आराम गया गुज़रा और तू कहता है, क्यों ग़म करता है?' वह अज़ीज़ मुस्कराकर बोला कि, 'अब अपनी मौत की खातिर रो। मैंने पहले ही तुझ से कहा था कि शायद इस शहर में तेरी अजल ले आई है, सो वही हुआ। अब सिवाय मरने के तेरी रिहाई नहीं।' आखिर लोग मुझे पकड़ कर मन्दिर में ले गए। देखा तो बादशाह, अमीर और छत्तीसों ज़ात प्रजा रैयत वहाँ सब जमा हैं और बज़ीरज़ादी का सब माल-मिलकियत वहाँ रखी है। जो चीज़ जिसका जी चाहता है, लेता है और उसकी क़ीमत के रुपये वहाँ धर देता है।

ग़रज़ सब असबाब के नक़द रुपये जमा हुये। उन रुपयों के जवाहिरात खरीदे गए और उनको एक सन्दूक़ में बन्द किया गया और एक दूसरे सन्दूक़ में, रोटी, हल्वा, गोश्त के कबाब और सूखा और तर मेवा और दूसरी खाने की चीज़ें लेकर भरीं और उस बीबी की लाश एक सन्दूक़ में रखकर खाने की चीज़ों का सन्दूक़ एक ऊँट पर लदवा दिया और मुझे सवार किया और जवाहिरात का सन्दूकचा मेरी बग़ल दिया। बहुत से पुजारी आगे-आगे भजन गाते, शंख बजाते चले और पीछे जन समूह मुबारकबादी कहता हुआ साथ हो लिया। इसी तरह उसी दरवाज़े जिससे

मैं पहले रोज़ आया था, शहर के बाहर निकला। जैसे ही दारोग़ा की निगाह मुझ पर पड़ी रोने लगा, और बोला कि 'ऐ कमबख़्त! मौत के मारे! मेरी बात न सुनी और उस शहर में जाकर मुफ़्त अपनी जान दी। मेरा क़ुसूर नहीं, मैंने मना किया था।' उसने यह बात कही, लेकिन मैं तो हक्का-बक्का हो रहा था। ज़बान से बोली न निकलती थी कि जवाब दूँ। न होश ठीक थे कि देखिये अंजाम मेरा क्या होता है?

आख़िर उसी क़िले के पास ले गए जिसका दरवाज़ा मैंने पहले रोज़ बन्द देखा था और बहुत से आदमियों ने मिलकर ताला खोला और ताबूत और सन्दूक़ को अन्दर ले चले। एक पण्डित मेरे नज़दीक आया और समझाने लगा कि, 'मनुष्य एक दिन जन्म पाता है और एक रोज़ नाश होता है। संसार का यही नियम है। अब यह तेरी स्त्री, पूत और धन चालीस दिन के भोजन का सामान यहां मौजूद है। इसको ले और यहाँ रह जब तलक बड़ा देवता तुझ पर मेहरबान न होवे।' ग़ुस्से से मैंने चाहा कि उस देवता पर और वहाँ के रहने वालों पर और उस रीति-रस्म पर लानत कहूँ और इस पुजारी को धूल-धक्कड़ करूँ। वही 'अज़मी' मर्द अपनी ज़बान में मना करने लगा कि, 'ख़बरदार! हरगिज़ दम मत मार। अगर कुछ भी बोला तो इसी वक़्त तुझे जला देंगे। ख़ैर, जो तेरी क़िस्मत में था, सो हुआ। अब ख़ुदा की मेहरबानी पर उम्मीद रख। शायद अल्लाह तुझे यहाँ से जीता निकाले।'

आख़िर सब मुझे तन-तनहा छोड़कर उस क़िले से बाहर निकले और दरवाज़े पर फिर ताला लगा दिया। उस वक़्त मैं अपनी बेबसी और तनहाई पर बेअख़्तियार रोया और उस औरत की लोथ पर लातें मारने लगा कि, 'ऐ मुरदार, अगर तुझे बच्चा जनते ही मर जाना था तो ब्याह काहे को किया था, और पेट से क्यों हुई थी?' उसे मार-मूर कर फिर चुपका हो बैठा। इतने में दिन चढ़ा और धूप गर्म हुई। सर का भेजा पकने लगा और बदबू के मारे रूह निकलने लगी। जिधर

देखता हूँ मुर्दों की हड्डियाँ और जवाहिरात के सन्दूक़ के ढेर लगे हैं। तब कई सन्दूक़ पुराने लेकर नीचे-ऊपर रखे ताकि दिन को धूप से और रात को ओस से बचाव हो। अब पानी की तलाश करने लगा। एक तरफ़ झरना सा देखा कि क़िले की दीवार में पत्थर से तराशा हुआ घड़े के मुँह के मुवाफ़िक़ है। बारे कई दिन उस पानी और खाने से ज़िन्दगी चली।

आख़िर खाने का सामान ख़त्म हुआ और ख़ुदा के हुज़ूर में फ़रियाद की। वह ऐसा मेहरबान है कि अचानक क़िले का दरवाज़ा खुला और लोग एक मुर्दे को लाये। उसके साथ एक बूढ़ा आदमी आया। जब उसे भी छोड़कर चले गए, यह दिल में आया कि इस बूढ़े को मारकर उसके खाने का सन्दूक़ सबका सब ले लें। एक सन्दूक़ पाया। हाथ में लेकर उसके पास गया। वह बेचारा सर ज़ानू पर धरे हैरान बैठा था। मैंने पीछे से आकर उसके सर में ऐसा मारा कि सर फटकर भेजे का गूदा निकल पड़ा और उसी वक़्त उसका दम निकल गया। उसका खाना लेकर मैं खाने लगा। मुद्दत तलक यही मेरा काम था कि जो ज़िन्दा मुर्दे के साथ आता, उसे मैं मार डालता और खाने का सामान लेकर इत्मीनान से खाता।

कितनी मुद्दत के बाद एक मर्तबा एक ताबूत के साथ एक लड़की आई। बहुत-खूबसूरत। मेरा दिल न चाहा कि उसे भी मारूँ। उसने मुझे देखा और डर के मारे बेहोश हो गई। मैं उसका भी खाना उठाकर अपने पास ले आया। लेकिन अकेला न खाता! जब भूख लगती उसके नज़दीक ले जाता और साथ मिलकर खाता। जब उस औरत ने देखा कि मुझे यह शख़्स नहीं सताता तो दिन-ब-दिन उसकी वहशत कम हुई और आराम होती गई। वह मेरे मकान में आने लगी। एक रोज़ मैंने उसका हाल पूछा कि 'तू कौन है?' उसने जवाब दिया कि, 'मैं बादशाह के ख़ास वकील की बेटी हूँ। अपने चचा के बेटे से ब्याही गई थी। सोहाग रात को उसे क़ौलंज हुआ। ऐसा दर्द से तड़पने

लगा कि आन की आन में मर गया। मुझे उसके ताबूत के साथ यहाँ छोड़ गए।' तब उसने मेरा हाल पूछा और मैंने भी अपना पूरा हाल बयान किया और कहा, 'ख़ुदा ने तुझे मेरी ख़ातिर यहाँ भेजा है।' वह मुस्कराकर चुपकी हो रही।

इसी तरह कई दिन में आपस में मुहब्बत ज़्यादा हो गई। बाद में एक बेटा पैदा हुआ। तीन बरस के क़रीब इसी सूरत से गुज़री, तब लड़के का दूध पड़ाया। एक रोज़ बीबी से कहा कि, 'यहाँ कब तलक रहेंगे और किस तरह से यहाँ से निकलेंगे?' वह बोली, 'ख़ुदा निकाले तो निकलें, नहीं तो एक रोज़ यूँही मर जायेंगे।' मुझे उसके कहने पर और अपने इस हाल में रहने पर बहुत रोना आया; रोते-रोते सो गया। एक शख़्स को ख़्वाब में देखा कि कहता है कि, 'परनाले की राह से निकलना है तो निकल।' मैं मारे ख़ुशी के चौंक पड़ा और ज़ोर से कहा कि, 'लोहे की मेख़ें और सीख़ें जो पुराने सन्दूक़ों में हैं, जमा करके ले आओ तो मैं इस मोरी को चौड़ा करूँ।' ग़रज़ मैं उस मोरी के मुँह पर मेख़ रखकर पत्थरों से ऐसा ठोंकता कि थक जाता। एक बरस की मेहनत के बाद यह सूराख़ इतना बड़ा हुआ कि आदमी निकल सके।

उसके बाद मुर्दों की आस्तीनों में अच्छे-अच्छे जवाहिरात चुनकर भरे और साथ लेकर उसी राह से हम तीनों बाहर निकले। ख़ुदा का शुक्र किया और बेटे को काँधे पर बिठा लिया। एक महीना हुआ है कि आम रास्ता छोड़कर मारे डर के जंगल पहाड़ों की राह से चला आता हूँ। जब भूख लगती है, घास-पात खाता हूँ। बात कहने की ताक़त मुझ में नहीं। यह मेरी हक़ीक़त है, जो तुम ने सुनी।'

बादशाह सलामत! मैंने उसकी हालत पर तरस खाया और हम्माम करवाकर अच्छा लिबास पहनवाया और अपना सहायक बनाया। मेरे घर में मल्का से कई लड़के पैदा हुये लेकिन छोटी उम्र में ही मर गये। एक

पाँच बरस का होकर मरा। उसके ग़म में मल्का की मौत हुई। मुझे बहुत ग़म हुआ और वह मुल्क उसके बग़ैर काटने लगा। दिल उदास हो गया और अज़्म चलने का इरादा किया। बादशाह से अर्ज़ करके, बन्दरगाह के राजा का पद उस जवान को दिलवा दिया। इस अर्से में बादशाह भी मर गया। मैं उस वफ़ादार कुत्ते को और सब माल ख़ज़ाना जवाहिरात साथ लेकर नेशापूर में आ रहा। इस वास्ते कि कोई मेरे भाइयों के हाल से वाक़िफ़ न होवे, मैं ख्वाजा सगपरस्त मशहूर हुआ और इस बदनामी के कारण आज तक दुगुना महसूल ईरान के बादशाह की सरकार में भरता हूँ।

इत्तफ़ाक़ से यह सौदागर-बच्चा वहाँ गया। इसके ज़रिये जहाँपनाह की क़दमबोसी की इज़्ज़त मिली।

मैंने पूछा, 'क्या यह तुम्हारा बेटा नहीं?' ख्वाजा ने जवाब दिया कि, 'क़िबलए आलम! यह मेरा बेटा नहीं, आप ही के रैयत है। लेकिन अब मेरा मालिक और वारिस जो भी कहिये, सो यही है।'

यह सुनकर मैंने सौदागर बच्चे से मैंने पूछा कि, 'तू किस ताजिर का लड़का है और तेरे माँ-बाप कहाँ रहते हैं?' उस लड़के ने ज़मीन चूमी और जान की अमाँ माँगी और बोला कि, 'यह लौंडी, सरकार के वज़ीर की बेटी है। मेरा बाप इस सौदागर के लालों के कारण हुज़ूर के ग़ुस्से में पड़ा और हुक्म यह हुआ कि अगर एक साल के अन्दर उसकी बात सही साबित न होगी तो जान से मारा जाएगा। मैंने यह सुनकर एक भेस बनाया और अपने को नेशापूर पहुँचाया। खुदा ने इस सौदागर को इसके कुत्ते और लालों के साथ हुज़ूर में हाज़िर कर दिया। आपने सारा हाल सुन लिया, अब उम्मीदवार हूँ कि मेरे बूढ़े बाप को छोड़ दिया जाय।'

यह बयान वज़ीर की बेटी से सुनकर सौदागर ने एक आह की और बेअख्तियार गिर पड़ा। जब उस पर गुलाब छिड़का गया तब होश में

आया और बोला कि, 'हाय कमबख्ती ! इतनी दूर से इतनी मुसीबत और तकलीफ़ उठाकर इस उम्मीद पर आया था कि इस सौदागर-बच्चे को अपना बेटा बनाऊँगा और अपने माल और अपनी जायदाद का हेबा नामा इसके नाम लिख दूँगा तो मेरा नाम रहेगा और सारा आलम इसे 'ख्वाजाज़ादा' कहेगा। पर मेरा ख़याल ख़ाम हुआ और उल्टा काम हुआ। इसने औरत होकर मुझ बूढ़े आदमी को ख़राब किया। मैं औरत के चरित्र में पड़ा। अब मेरी वह कहावत हो गई, 'घर में रहे न तीरथ गये, मूँड़-मुँड़ा फ़ज़ीहत भए।'

क़िस्सा यह कि मुझे उसकी बेक़रारी और रोने धोने पर रहम आया। सौदागर को नज़दीक बुलाया और उसके कान में इस बात की खुश-ख़बरी सुनाई कि ग़मगीन मत हो तेरी शादी इसी से कर देंगे। इस खुशख़बरी के सुनने से उसे बड़ी तसल्ली हुई। तब मैंने कहा, 'वज़ीर-ज़ादी को महल में ले जाओ, वज़ीर को क़ैदख़ाने से ले आओ, हम्माम में उसे नहलाओ, इज़्ज़त का जोड़ा पहनाओ और जल्दी मेरे पास लाओ।'

जिस वक्त वज़ीर मेरे पास आया, फ़र्श के किनारे तक आकर मैंने उसका स्वागत किया और अपना बुज़ुर्ग जानकर गले लगाया और नये सिरे से वज़ारत का क़लमदान दिया। सौदागर को भी जागीर और पद दिया और अच्छी घड़ी देखकर वज़ीरज़ादी से निकाह पढ़वाकर उससे शादी कर दी।

कई साल में दो बेटे और एक बेटी उसके घर पैदा हुई। चुनानचे बड़ा बेटा अब सौदागरों का सरदार है और छोटा हमारी सरकार का मुख्तार है। ऐ फ़क़ीरो ! मैंने इसीलिये यह क़िस्सा तुम्हारे सामने कहा कि कल रात दो फ़क़ीरों का हाल मैंने सुना था। अब तुम दोनों भी जो बाक़ी रहे हो यह समझो कि हम उसी मकान में बैठे हैं और मुझे अपना

नौकर और इस घर को अपना तकिया जानो। बेखटके अपनी-अपनी सैर का हाल कहो और कुछ दिन मेरे पास रहो।

जब फ़क़ीरों ने बादशाह की तरफ़ से बहुत ख़ातिरदारी देखी तो कहने लगे, 'ख़ैर, जब तुम ने हम फ़क़ीरों पर यह मेहरबानी की तो हम दोनों भी अपना हाल बयान करते हैं।'

सैर तीसरे दर्वेश की

तीसरा दर्वेश कोट बाँधकर बैठा और अपनी सैर का बयान इस तरह से करने लगा---

अहवाल इस फ़क़ीर का ऐ दोस्ताँ सुनो,
यानी जो मुझ पर बीती है वह दास्ताँ सुनो।
जो कुछ कि शाहे-इश्क़ ने मुझ से किया सुलूक,
तफ़सीलवार करता हूँ उसका बयाँ सुनो।

कि यह कमतरीन अज़म का राजकुमार है। मेरे बाप वहाँ के बादशाह थे और सिवाय मेरे कोई बेटा न रखते थे। मैं जवानी के आलम में दोस्तों के साथ चौपड़, गंजीफ़ा, शतरंज और दूसरे खेल खेला करता या सवार होकर सैर-शिकार में मशग़ूल रहता। एक दिन का क़िस्सा यह है कि सवारी तैयार करवाकर और सब यार दोस्तों को लेकर मैदान की तरफ़ निकला, बाज़ बहरी सुर्ख़ाब और तीतरों पर उड़ाता हुआ दूर निकल गया। अजब तरह का एक टुकड़ा बहार का नज़र आया कि जिधर निगाह जाती थी, कोसों तलक सब्ज़ और फूलों से लाल ज़मीन नज़र आती थी। यह समाँ देखकर घोड़ों की बागें डाल दीं और क़दम-क़दम सैर करते हुए चले जाते थे। अचानक उस जंगल में देखा कि एक काला हिरन, उस पर ज़रबफ्त की झूल और सुनहरी जड़ाऊ भँवरकली और ज़र्दोज़ी के पट्टे में सोने के घुँघरू टँके गले में पड़े हुए, इत्मीनान से ऐसे मैदान में चरता-फिरता है जहाँ इंसान का दख़ल नहीं और परिन्दा पर नहीं मारता। हमारे घोड़ों की टापों की आहट पाकर चौकन्ना हुआ और सर उठाकर देखा और धीरे-धीरे चला।

मुझे उसके देखने से यह शौक़ हुआ कि दोस्तों से कहा कि, 'तुम यहीं खड़े रहो, मैं उसे जीता पकड़ूँगा। ख़बरदार! तुम क़दम आगे न बढ़ाइयो और मेरे पीछे न आइयो।' घोड़ा मेरी रानों तले ऐसा परिन्दा था कि बारहा हिरनों के ऊपर दौड़ाकर उनकी करछालों को भुलाकर हाथों से पकड़-पकड़ किये था। मैंने उस दिन भी घोड़ा उसके पीछे दौड़ाया। वह देखकर छलाँगे भरने लगा और हवा हुआ। घोड़ा भी हवा से बातें करता था लेकिन उसकी धूल को न पहुँचा। वह घोड़ा भी पसीने-पसीने हो गया और मेरी जीभ भी मारे प्यास के चटखने लगी। पर कुछ बस न चला। शाम होने लगी और मैं क्या जाने कहाँ से कहाँ निकल आया? लाचार होकर उसे भुलावा दिया और तर्कश से तीर निकालकर और कमान संभालकर और चिल्ले में जोड़कर कान तलक खींचकर उसकी रान को ताककर 'अल्लाह अकबर' कहकर मारा। बारे पहला ही तीर उसके पाँव में तराज़ू हुआ। तब लंगड़ाता हुआ पहाड़ की तराई की तरफ़ चला। मैं भी घोड़े पर से उतर पड़ा और पैदल उसके पीछे लगा। उसने पहाड़ की तरफ़ जाने का इरादा किया और मैंने भी उसका साथ दिया। कई उतार-चढ़ाव के बाद एक गुंबद दिखाई दिया। जब पास पहुँचा, एक बाग़ीचा और चश्मा देखा। वह हिरन तो नज़रों से छलावा हो गया। मैं बहुत थका था, हाथ-पाँव धोने लगा।

एक चारगी उस बुर्ज के अन्दर से रोने की आवाज़ मेरे कान में आई, जैसे कोई कहता है कि, 'ऐ बच्चे! जिसने तुझे तीर मारा, मेरी आह का तीर उसके कलेजे में लगे और वह अपनी जवानी का फल न पावे और ख़ुदा उसको मेरा सा दुखिया बनादे। मैं यह सुनकर वहाँ पहुँचा, देखा तो एक बूढ़ा सफ़ेद दाढ़ी रखे, अच्छे कपड़े पहने एक मसनद पर बैठा है और हिरन आगे लेटा है। बूढ़ा उसकी जाँघ से तीर खींचता है और बददुआ देता है।

मैंने सलाम किया और हाथ जोड़कर कहा, 'हज़रत सलामत! यह

गुनाह अनजाने में इस ग़ुलाम से हुआ। मैं यह न जानता था। ख़ुदा के वास्ते माफ़ करो।'

बोला कि. 'बेज़बान को तू ने सताया है। अगर अनजान में यह हरकत तुझ से हुई तो अल्लाह माफ़ करेगा।' मैं पास जा बैठा और तीर निकालने में उसका साथ देने लगा। बड़ी मुशकिल से तीर को निकाला और ज़ख्म में मरहम भरके छोड़ दिया। फिर हाथ धोकर उस बूढ़े ने जो-कुछ उस वक्त मौजूद था मुझे खिलाया। मैंने खा-पीकर एक चारपाई पर लम्बी तानी।

थकावट के सबब खूब पेट भरकर सोया। उस नींद में आवाज़ रोने-धोने की कान में आई। आँखें मलकर जो देखता हूँ तो उस मकान में न वह बूढ़ा है न कोई और है। अकेला मैं पलंग पर लेटा हूँ और वह दालान खाली पड़ा है। चारों तरफ़ हैरान होकर देखने लगा। एक कोने में पर्दा पड़ा दिखाई दिया। वहाँ जाकर उसे उठाया, देखा तो एक तख्त बिछा है और उस पर एक परी जैसी औरत बरस चौदह-एक की, चाँद की सी सूरत, चोटियां दोनों तरफ़ छूटी हुई, हँसता चेहरा, अंग्रेज़ी कपड़े पहने हुए, अजब अदा से देखती है और बैठी है और वह बूढ़ा अपना सर उसके पाँव पर धरे फूट-फूट कर रो रहा है और होश-हवास खो रहा है। मैं उस बूढ़े का यह हाल और नाज़नीन का रंग-रूप देखकर मुर्झा गया और मुर्दे की तरह बेजान होकर गिर पड़ा। वह बूढ़ा मेरा यह हाल देखकर मुर्झा गया। शीशी गुलाब की ले आया और मुझ पर छिड़कने लगा। जब जीता उठकर माशूक़ के आगे जाकर सलाम किया तो उसने न हर्गिज़ हाथ उठाए और न होंठ हिलाया। मैंने कहा 'ऐ गुलबदन, इतना ग़ुरूर करना और सलाम का जवाब न देना किस मज़हब में दुरुस्त है?

कम बोलना अदा है हरचन्द पर न इतना,
मुँह जाय चश्मे-आशिक़ तो भी वह मुँह न खोले।

'उस ख़ुदा के वास्ते जिसने तुझे बनाया है, कुछ तो मुँह से बोल। हम भी इत्तफ़ाक़ से यहां आ निकले हैं। मेहमान की खातिर ज़रूरी है।' मैंने बहुतेरी बातें बनाईं, लेकिन कुछ काम न आईं। वह चुपकी बुत की तरह बैठी सुना की। तब मैंने भी आगे बढ़कर अपना हाथ पाँव पर चलाया। जब पाँव को छेड़ा तो सख्त मालूम हुआ। आखिर यह जाना कि पत्थर से इस लाल को तराशा है और अज़र ने इस बुत को बनाया है। तब उस बुत पूजने वाले बूढ़े से पूछा कि, 'मैंने तेरे हिरन की टांग में तीर मारा है। तूने इस इश्क़ के तीर से मेरा कलेजा छेदकर आर-पार किया। तेरी दुआ क़ुबूल हुई। अब साफ़-साफ़ बता कि यह तिलिस्म क्यों बनाया है और तूने बस्ती को छोड़कर जंगल-पहाड़ क्यों बसाया है। तुझ पर जो-कुछ बीता है मुझ से कह।'

जब मैं उसके बहुत पीछे पड़ा तब उसने जवाब दिया कि, 'इस बात ने मुझे तो खराब किया। क्या तू भी सुनकर मरना चाहता है? मैंने कहा, 'लो, अब बहुत मक्कर-चक्कर किया। मतलब की बात कहो, नहीं तो मार डालूँगा।'

मेरा हटधर्मी देखकर बोला, 'ऐ जवान! ख़ुदा हर आदमी को इश्क़ की आँच से बचाए रखे। देख तो इस इश्क़ ने क्या आफ़तें ढाई हैं। इश्क़ ही के मारे औरत शौहर के साथ सती होती है और अपनी जान खोती है। फरहाद और मजनूँ का क़िस्सा सब को मालूम है। उसके सुनने से क्या से पावेगा? नाहक़ घर-बार दुनिया की दौलत छोड़-छाड़कर निकल जावेगा?'

मैंने जवाब दिया, 'बस अपनी दोस्ती तह कर रखो। इस वक़्त मुझे अपना दुश्मन समझो। अगर जान प्यारी है तो साफ़ कहो।'

लाचार होकर आँसू भर लाया और कहने लगा कि—मुझ खाना खराब की यह हक़ीक़त है कि बन्दे का नाम नोमान सैयाह है। मैं बड़ा सौदागर था। इस उम्र में तिजारत की वजह से सारी दुनिया की सैर की और सब बादशाहों के दरबार में हाज़िरी दी।

एक बार यह ख़याल जी में आया कि चारों तरफ़ तो मुल्कों में घूमता फिरा लेकिन विलायत के टापू की तरफ़ न गया और वहां के बादशाह को और रैयत, सिपाहियों को न देखा और न वहाँ की राह-रसम का कुछ पता चला। एक बार वहाँ भी चलना चाहिये। दोस्तों और साथियों से सलाह लेकर पूरा और मज़बूत इरादा किया। तुहफ़े सौग़ात जहाँ-तहाँ का जो वहां के लायक़ था और एक क़ाफ़िला सौदागरों का इकट्ठा करके जहाज़ पर सवार होकर रवाना हो हुआ। हवा जो मुवाफ़िक़ पाई गई, तो महीनों में उस मुल्क में जा दाख़िल हुआ और शहर में डेरा किया। अजब शहर देखा कि कोई शहर उस शहर की ख़ूबी को नहीं पहुँचता। हर-एक बाज़ार और कूचे में पक्की सड़कें बनी हुई और छिड़काव किया हुआ। सफ़ाई ऐसी कि एक तिनका कहीं पड़ा नज़र न आया, कूड़े का तो क्या ज़िक्र है! इमारतें रंग-बिरंग की और रात को रास्तों पर क़दम-क़दम दो तरफ़ा रोशनी और शहर के बाग़ात कि जिनमें अजायब, गुल-बूटे और मेवे नज़र आए जो शायद सिवाय स्वर्ग के कहीं और न होंगे। जो वहाँ की तारीफ़ करूँ सो बजा है।

ग़रज़ सौदागरों के आने का चर्चा हुआ। एक मोतबर ख़्वाजासरा होकर और कई नौकर साथ लेकर क़ाफ़िले में आया और व्यापारियों से पूछा कि, 'तुम्हारा सरदार कौन सा है?' सभों ने मेरी तरफ़ इशारा किया और वह ख़्वाजासरा मेरे मकान में आया। मैंने उसका आदर सत्कार किया। एक ने दूसरे को सलाम किया। उसको कथरी पर बिठाया। तकिये से तवाज़ो की। उसके बाद मैंने पूछा कि, 'साहब के तशरीफ़ लाने का क्या सबब है? फरमाइये।' उसने जवाब दिया कि, 'राजकुमारी ने सुना है कि सौदागर आये हैं और बहुत जिन्स लाए हैं। इसलिये मुझको हुक्म दिया दिया कि जाकर उनको हुज़ूर में लाओ। तो अब तुम जो कुछ असबाब, बादशाहों की सरकार के लायक़ हो साथ लेकर चलो और उनकी चौखट चूमने की इज़्ज़त हासिल करो।'

मैंने जवाब दिया कि, 'आज तो थकन के कारण मजबूर हूँ कल जानो-नाल से हाज़िर हूँ। जो-कुछ इस नाचीज़ के पास मौजूद है, भेंट करूँगा। जो पसन्द आवे माल सरकार का है। यह वादा करके और ख्वाजा को इत्र-पान देकर रुखसत किया और सब सौदागरों को अपने पास बुलाकर जो-जो तुहफ़ा जिसके पास था लेकर जमा किया। जो मेरे घर में था, वह भी ले लिया। सुबह के वक्त बादशाही महल के दरवाज़े पर हाज़िर हुआ। बारे दरबान ने मेरे आने की खबर अर्ज़ की। हुक्म हुआ कि 'हुज़ूर में लाओ।' वही ख्वाजासरा निकला और मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर दोस्तों की तरह बातें करता हुआ ले चला। पहले एक आलीशान मकान में ले गया। ऐ अज़ीज़! तू यक़ीन न करेगा यह आलम नज़र आया, गोया पर काटकर परियों को छोड़ दिया है। जिस तरफ़ देखता था, निगाह गड़ जाती थी, पाँव ज़मीन से उखड़े जाते। कोशिश करके अपने को सँभालता हुआ सामने पहुँचा। जैसे बादशाहज़ादी पर नज़र पड़ी, ग़श की नौबत हुई और हाथ पाँव में कपकंपी आ गई।

किसी तरह सलाम किया। दोनों तरफ़, दाहनी तरफ़ और बाईं तरफ़ परी-सूरत नाज़नीनों की क़तारें हाथ बाँधे खड़ी थीं। मैं जो कुछ जवाहिरात, कपड़े, पोशाक और तोहफ़े साथ ले गया था उनकी कई कश्तियाँ हुज़ूर में चुनी गईं। बात यह थी कि हर चीज़ पसन्द के लायक़ थी। खुश होकर खानसामां के हवाले की गईं और फ़र्माया कि इसकी क़ीमत सूची के अनुसार कल दी जाएगी। मैंने सलाम किया और दिल में खुश हुआ कि इसी बहाने से भला कल भी आना होगा।

जब रुखसत होकर बाहर आया तो पागलों की तरह कहता कुछ था और मुँह से निकलता कुछ था। उसी तरह सराय में आया लेकिन हवास बजा न थे। सब दोस्त-आशना पूछने लगे कि, 'यह तुम्हारी क्या हालत है?' मैंने कहा, 'इतना आने-जाने से दिमाग़ पर गर्मी चढ़ गई है?'

ग़रज़ वह रात तड़पते काटी। सवेरे फिर जाकर हाज़िर हुआ और उसी ख्वाजा के साथ फिर महल में पहुँचा। वही आलम जो कल देखा था देखा। राजकुमारी ने मुझे देखा और हर एक को अपने-अपने काम पर रुख़सत किया। जब अकेला हुआ तो अपने ख़ास कमरे में उठ गईं और तलब किया। जब मैं वहाँ गया, बैठने का हुक्म किया। मैं आदाब बजा लाकर बैठा।

राजकुमारी ने फ़रमाया कि, 'यहाँ जो तू आया और यह असबाब लाया उसमें सुनाफ़ा कितना मंजूर है?'

मैंने अर्ज़ किया कि, 'आप के क़दम देखने की बड़ी ख्वाहिश थी, सो ख़ुदा ने मयस्सर की। अब मैंने सब-कुछ भर पाया और दोनों जहान की इज़्ज़त हासिल हुई। क़ीमत जो कुछ सूची में है, आधे की ख़रीद है और आधा नफ़ा है।'

फ़रमाया, 'नहीं, जो क़ीमत तू ने लिखी है वही इनायत होगी, बल्कि और भी इनाम दिया जायेगा। शर्त यह कि एक काम तुझ से हो सके तो तो हुक्म करूँ?'

मैंने कहा कि, 'ग़ुलाम का जानो-माल अगर सरकार के काम आवे तो मैं अपनी क़िस्मत की ख़ूबी समझूँ और सर आँखों से करूँ।' यह सुनकर क़लमदान मँगवाया और एक रुक्क़ा लिखा। उसे मोतियों की थैली में रखकर एक रूमाल शबनम का ऊपर लपेटकर मेरे हवाले किया। एक अँगूठी निशान के वास्ते उँगली से उतार दी और कहा कि, 'उस तरफ़ को एक बड़ा बाग़ है, दिलकुशा उसका नाम है जिसका दारोग़ा एक शख़्स कैख़ुसरू नाम का है। वहाँ तू जाकर उसके हाथ में यह अंगूठी दीजियो। हमारी तरफ़ से दुआ कहियो और इस रुक्क़े का जवाब माँगियो। लेकिन जल्द आइयो। अगर खाना वहाँ खाइयो तो पानी यहाँ पीजियो। इस काम का इनआम तुझे ऐसा दूँगी कि तू देखेगा।'

मैं रुख़सत हुआ और पूछता-पूछता चला। क़रीब दो कोस के जब गया, वह बाग़ नज़र पड़ा। जब पास पहुँचा एक हथियारबन्द सिपाही

मुझको पकड़ के बाग़ में ले गया। देखा तो एक जवान, शेर की सूरत, सोने की कुर्सी पर ज़रह-बख्तर पहने चार-आईना बाँधे फ़ौलादी ख़ोद सर पर धरे, निहायत शान-शौक़त से बैठा है और पाँच सौ जवान तैयार, ढाल-तलवार हाथ में लिये, कमान कसे, क़तार बाँधे खड़े हैं।

मैंने सलाम किया। मुझे पास बुलाया। मैंने वह अंगूठी दी और ख़ुशामद की बातें करके, वह रूमाल दिखाया और रुक्के के लाने का भी हाल कहा। उसने सुनते ही उँगली दाँतों से काटी और सर धुनकर बोला कि, 'शायद तेरी मौत तुझको ले आई है। ख़ैर, बाग़ के अन्दर जा। सरो के दरख़्त में एक लोहे का पिंजरा लटकता है। उसमें एक जवान क़ैद है। उसको यह ख़त देकर जवाब लेकर जल्दी वापस आ।'

मैं जल्दी बाग़ में घुसा। बाग़ क्या था, गोया जीते जी स्वर्ग में गया। एक-एक चमन रंग-बिरंग का फूल रहा था और फ़व्वारे छूट रहे थे। चिड़ियाँ चहचहा रही थीं।

मैं सीधा चला गया और उस दरख़्त में वह पिंजरा देखा। उसमें एक हसीन जवान नज़र आया। मैंने अदब से सर झुकाया और सलाम किया और वह मुहर-बन्द थैली पिंजरे की तीलियों की राह से दी। वह अज़ीज़ रुक्का खोलकर पढ़ने लगा और मुझ से बेअख़्तियार हाल राज-कुमारी का पूछने लगा।

अभी बातें चल ही रही थीं कि एक फ़ौज हब्शियों की आई और चारों तरफ़ से मुझ पर टूट पड़ी और बेतहाशा बरछी और तलवार मारने लगी। एक निहत्थे आदमी की बिसात ही क्या? एकदम में चूर और ज़ख्मी कर दिया। मुझे अपनी कुछ सुध-बुध न रही। फिर जो होश आया, अपने को चारपाई पर पाया जिसे दो सिपाही उठाये लिये जाते हैं और आपस में बतियाते हैं।

एक ने कहा, 'इस मुर्दे की लोथ को मैदान में फेंक दो, कुत्ते कौवे खाएँगे।'

दूसरा बोला, 'अगर बादशाह पूछ-गछ करे और यह हाल खुले तो जीता गड़वा दे और बाल बच्चों को कोल्हू में पेलवा दे। क्या हमें अपनी जान भारी पड़ा है, जो ऐसी बेवकूफ़ी की हरकत करें ?'

मैंने यह बातचीत सुनकर दोनों से कहा, 'खुदा के वास्ते मुझ पर रहम करो। अभी मुझमें ज़रा जान बाक़ी है। जब मर जाऊँगा जो तुम्हारा जी चाहेगा, सो करना। लेकिन यह तो कहो कि मुझ पर यह क्या बीती ? मुझे क्यों मारा ? तुम कौन हो, भला इतना तो कह सुनाओ !'

तब उन्होंने रहम खाकर कहा कि, 'वह जवान जो पिंजरे में बन्द है, इस बादशाह का भतीजा है। पहले इसका बाप बादशाह था। मरते वक्त अपने भाई को यह वसीयत की कि 'अभी मेरा बेटा जो इस बादशाहत का वारिस है, लड़का और नासमझ है। इसलिए बादशाहत का इन्तज़ाम खैरख्वाही और होशियारी के साथ तुम करना। जब यह बालिग़ हो, अपनी बेटी से शादी इसकी कर देना और इसे मुख्तार तमाम मुल्क और खज़ाने का कर देना।' यह कह कर वह तो चलते हुये और बादशाहत की बागडोर छोटे भाई के हाथ में आई। उसने वसीयत का पास न किया बल्कि इसे दीवाना और पागल मशहूर करके पिंजरे में डाल दिया। इतना कड़ा पहरा बाग़ के चारों तरफ़ रखा कि परिन्दा पर नहीं मार सकता। इसे कई बार ज़हर दिया गया, लेकिन इसकी ज़िन्दगी ज़बरदस्त थी, असर नहीं किया। अब वह शाहज़ादी और यह शाहज़ादा दोनों आशिक़ और माशूक़ बन रहे हैं। वह घर में तड़पे है और यह पिंजरे में तड़पे है। तेरे हाथ जो रुक्का उसने भेजा, यह खबर हरकारों ने बादशाह को पहुँचाई। उसने हब्शियों की फ़ौज भेजी जिसने तेरा यह हाल किया। उसने उस जवान के क़त्ल की तदबीर वज़ीर से पूछी। उस नमकहराम ने राजकुमारी को राज़ी किया है कि उस बेगुनाह को बादशाह के सामने अपने हाथ से क़ैदी मार डालें।'

मैंने कहा, चलो, मरते-मरते यह तमाशा भी देख लें। आखिर

राज़ी होकर वे दोनों और मैं ज़ख्मी चुपके एक कोने में जाकर खड़े हुये। देखा तो तख्त पर बादशाह बैठा है और राजकुमारी के हाथ में नंगी तलवार है और राजकुमार का पिंजरे से बाहर निकालकर खड़ा किया गया है। राजकुमारी जल्लाद बनकर नंगी तलवार लिये हुये अपने आशिक़ को क़त्ल करने को आई। जब नज़दीक पहुँची, तलवार फेंक दी और उसके गले में चिमट गई।

तब वह आशिक़ बोला, 'ऐसे मरने पर मैं राज़ी हूँ। यहाँ भी तेरी आर्ज़ू है, वहाँ भी तेरी तमन्ना रहेगी।'

राजकुमारी बोली कि, 'मैं इसी बहाने से तुझे देखने को आई थी।'

बादशाह को यह हरकत देखकर बहुत ग़ुस्सा आया और वज़ीर को डाँटा कि, 'तू यही तमाशा मुझे दिखाने को लाया था?' नौकर राजकुमारी को अलग करके महल में ले गए और वज़ीर ने ख़फ़ा होकर तलवार उठाई और राजकुमार के ऊपर दौड़ा कि एक ही वार में काम उस बेचारे का तमाम करे। जैसे ही वह चाहता था कि तलवार चलावे, ग़ैब से अचानक एक तीर ऐसा उसके माथे पर बैठा कि आर-पार हो गया और वह गिर पड़ा।

बादशाह यह वारदात देखकर महल में घुस गये। जवान को फिर पिंजरे में बन्द करके बाग़ में ले गए। मैं भी वहाँ से निकला। राह से एक आदमी मुझे बुलाकर राजकुमारी के हुज़ूर में ले गया। उसने मुझे घायल देखकर एक जर्राह को बुलवाया और निहायत ताक़ीद से कहा कि, 'इस जवान को जल्द चंगा करके, सेहत का ग़ुस्ल दे। यही तेरा इम्तहान है। इसके ऊपर तू जितनी मेहनत करेगा उतना ही इनआम और इज्जत पाएगा।'

ग़रज़ वह जर्राह राजकुमारी के कहने के अनुसार मेहनत दौड़-धूप करके चालीस दिन में नहला-धुलाकर मुझे राजकुमारी के सामने ले गया।

राजकुमारी ने पूछा, 'अब तो कुछ कसर बाक़ी नहीं रही ?' मैंने कहा, 'आप की तवज्जुह से अब हट्टा-कट्टा हूँ।' तब मल्का ने एक शाही जोड़ा और बहुत से रुपये जो कहे थे, बल्कि उससे भी दो-गुने दिये और रुख़सत किया।

मैं वहां से सब साथियों और नौकरों चाकरों को लेकर चल पड़ा। जब इस मुक़ाम पर पहुँचा तो सबसे कहा, 'तुम अपने वतन को जाओ और मैं इस पहाड़ पर यह मकान और उसकी मूरत बनवाकर रहने लगा। नौकरों और ग़ुलामों को हर-एक की क़द्र के रुपये देकर आज़ाद किया और यह कह दिया कि, 'जब तलक मैं जीता रहूँ मेरी हालत की खोज-ख़बर लेना तुम्हारे लिये ज़रूरी है, आगे तुम मालिक हो।' अब वही नमकहलाली से मेरे खाने की ख़बर लेते हैं और मैं इत्मीनान से इस मूर्ति की पूजा करता हूँ। जब तलक जीता हूँ मेरा यही काम है। यही मेरा हाल है जो तूने सुना।

ऐ फ़कीरो, मैंने इस क़िस्से को सुनते ही कफ़नी गले में डाली और फ़क़ीरों का लिबास किया और उस देश को देखने के शौक़ में चल पड़ा। बहुत समय तक जंगलों-पहाड़ों की सैर करता हुआ मजनूँ और फ़रहाद की सूरत बन गया।

आख़िर मेरे शौक़ ने उस शहर तलक पहुँचाया। गली कूचे में बावला सा फिरने लगा। अक्सर राजकुमारी के महल के आस-पास रहा करता। लेकिन कोई दर ऐसा न होता, जो वहाँ तलक पहुँच हो। अजब परेशानी थी कि जिस वास्ते इतनी मुसीबत उठाकर गया, वह मतलब हाथ न आया।

एक दिन बाज़ार में खड़ा था कि एकबारगी आदमी भागने लगे और दुकानदार दुकानें बन्द करके चले गए। या वह रौनक़ थी या सुनसान हो गया! एक तरफ़ से एक जवान रुस्तम सा, कल्ला-जबड़ा शेर की तरह गूँजता और दो दस्ती तलवार झाड़ता हुआ, ज़ेरह-बख्तर गले में और

टोप झल्लम का सर पर और तमंचे की जोड़ी कमर में, पागलों की तरह बकता-झकता नज़र आया। उसके पीछे दो ग़ुलाम नबात की पोशाक पहने, एक मख़मल का ताबूत शाफ़ी से मढ़ा हुआ सर पर लिये चले आते हैं।

मैंने यह तमाशा देखकर साथ चलने का इरादा किया। जो कोई आदमी मेरी नज़र पड़ता, मुझे मना करता। लेकिन मैं कब सुनता हूँ? धीरे-धीरे वह जवाँमर्द एक आलीशान मकान में चला। मैं भी साथ हुआ। उसने पलटकर चाहा कि एक हाथ मारे और मेरे दो टुकड़े करे।

मैंने उसे क़सम दी कि, 'मैं भी यही चाहता हूँ। मैंने अपना ख़ून माफ़ किया। किसी तरह मुझे इस ज़िन्दगी के अज़ाब से छुड़ा दे। मैं बहुत तंग आ चुका हूँ और मैं जान-बूझकर तेरे सामने आया हूँ। देर मत कर।'

मुझे मरने पर साबित-क़दम देखकर, ख़ुदा ने उसके दिल में रहम डाला और उसका ग़ुस्सा भी ठंडा हुआ। बहुत तवज्जुह और मेहरबानी से पूछा कि, 'तू कौन है और क्यों अपनी ज़िन्दगी से बेज़ार हुआ है?'

मैंने कहा, 'ज़रा बैठिये तो कहूँ। मेरा क़िस्सा बहुत लम्बा-चौड़ा है। मैं इश्क़ के पंजे में गिरफ्तार हूँ। इस सबब से लाचार हूँ।' यह सुनकर उसने अपनी कमर खोली और हाथ-मुँह धो-धाकर कुछ नाश्ता किया। मुझे भी खिलाया। जब फ़राग़त होकर बैठा तो बोला कि, 'तुझ पर क्या गुज़री?' मैंने सारी वारदात उस बूढ़े आदमी की और राजकुमारी की और अपने वहाँ जाने की कह सुनाई। पहले सुनकर रोया और यह कहा कि, 'इस कमबख़्त इश्क़ ने किस-किस का घर तबाह किया! लेकिन तेरा इलाज मेरे हाथ में है। मुमकिन है कि इस पापी के कारण तू अपने मतलब तक पहुँचे। तू खटका न कर और इतमीनान रख।' हज्जाम से कहा कि, 'इसकी हजामत बनाकर, इसको हम्माम में नहला दे।' एक जोड़ा कपड़ा उसके ग़ुलाम ने लाकर पहनाया। तब मुझसे कहने लगा कि, 'यह ताबूत

जो तूने देखा उसी मरहूम शहज़ादे का है जो पिंजरे में क़ैद था। उसको दूसरे वज़ीर ने आख़िर मक्कर से मारा। उसकी तो मुक्ति हुई, पर बेगुनाह मारा गया। मैं उसका कोका हूँ। मैंने भी उस वज़ीर को तलवार से मारा और बादशाह को मारने का इरादा किया। बादशाह गिड़गिड़ाया और क़सम खाने लगा कि मैं बेगुनाह हूँ। मैंने उसे नामर्द जानकर छोड़ दिया। तब से मेरा काम यही है कि हर महीने की नौचन्दी जुमेरात को मैं इसी ताबूत को लिये इसी शहर में फिरता हूँ और उसका मातम करता हूँ।'

उसकी ज़बानी यह हाल सुनने में मुझे तसल्ली हुई कि अगर यह चाहेगा तो मेरा मतलब पूरा होगा। खुदा ने बड़ा एहसान किया जो ऐसे पागल को मुझ पर मेहरबान किया। सच है खुदा मेहरबान तो कुल मेहरबान। जब शाम हुई और सूरज डूबा, उस जवान ने ताबूत को निकाला और एक ग़ुलाम की जगह वह ताबूत मेरे सर पर धरा और अपने साथ लेकर चला। कहने लगा कि, 'राजकुमारी के पास जाता हूँ और जहाँ तक हो सकेगा तेरी सिफ़ारिश करूँगा। तू हर्गिज़ दम मत मारना, चुपका बैठा सुना करना।'

मैंने कहा, 'जो-कुछ साहब फ़रमाते हैं वही करूँगा। खुदा तुमको सलामत रखे, जो मेरे हाल पर तरस खाते हो।' उस जवान ने बादशाही बाग़ चलने का इरादा किया। जब अन्दर दाखिल हुआ, संगमरमर के एक चबूतरे पर जो बाग़ के सहन में था, एक सफ़ेद कपड़ा तना हुआ था और मोतियों की झालर लगी हुई थी। वह पत्थर के खम्भों पर खड़ा था और एक सुनहरा काम बनी हुई मसनद बिछी हुई थी। तकियागाव और बरालीतकिये ज़रबफ्त के लगे हुए थे। वह ताबूत उस जवान ने रखवाया और हम दोनों से कहा कि, 'उस दरख्त के पास जाकर बैठो।'

एक घड़ी के बाद मशाल की रोशनी नज़र आई। मल्का खुद और उसके साथ कई ख्वासें आगे-पीछे तशरीफ़ ले आईं। लेकिन उदासी

और ग़ुस्सा चेहरे से ज़ाहिर था। आकर मसनद पर बैठीं। यह कोका अदब से हाथ बाँधे खड़ा रहा। फिर अदब से दूर फ़र्श के किनारे जा बैठा, फ़ातेहा पढ़ी और कुछ बातें करने लगा। मैं कान लगाए सुन रहा था। आखिर उस जवान ने कहा कि, 'मल्कए-जहाँ सलामत! अज़म का शाहज़ादा आपकी खूबियाँ लोगों से सुनकर अपनी बादशाहत को छोड़कर और फ़क़ीर बनकर, इब्राहीम अधम की तरह, तबाह हुआ और बड़ी मुसीबत उठाकर यहाँ तलक आ पहुँचा। साईं ने तेरे कारण शहर बलख छोड़ा और इस शहर में बहुत दिनों से हैरान, परीशान फिरता है। आखिर वह इरादा मरने का करके मेरे साथ लग चला। मैंने तलवार से डराया, उसने गर्दन आगे धर दी और क़सम दी कि, 'अब मैं यही चाहता हूँ, देर मत कर।' ग़रज़ तुम्हारे इश्क़ में सच्चा है। मैंने खूब अज़माया, सब तरह पूरा पाया। इस सबब से उसकी बात छेड़ी। अगर आप उसके हाल पर, मुसाफ़िर जानकर मेहरबानी करें तो बहुत अच्छा है।'

यह सब राजकुमारी ने सुनकर फ़रमाया, 'कहाँ है, अगर शाहज़ादा है तो क्या हर्ज?' वह कोका वहाँ से उठकर आया और मुझे साथ लेकर गया। मैं राजकुमारी को देखकर बहुत खुश हुआ। लेकिन अक्ल और होश जाते रहे। चुप रह गया। यह हिम्मत न पड़ी कि कुछ कहूँ। कुछ ही देर में राजकुमारी सिधारी और कोका अपने मकान को चला। घर आकर बोला कि, 'मैंने तेरा सब हाल कह सुनाया और सिफ़ारिश भी की। अब तू रोज़ रात को जाया कर और ऐश-खुशी मनाया कर।'

मैं उनके क़दम पर गिर पड़ा। उसने गले लगा लिया। सारे दिन घड़ियाँ गिनता रहा कि कब साँझ हो जो मैं जाऊँ। जब रात हुई मैं उस जवान से रुखसत होकर चला और बाग़ में राजकुमारी के चबूतरे पर तकिया लगाकर जा बैठा।

एक घड़ी के बाद राजकुमारी अकेले, एक ख़वास को साथ लेकर धीरे-धीरे आकर मसनद पर बैठी। खुशक़िस्मती से यह दिन मयस्सर

हुआ। मैंने पाँव चूमे। उन्होंने मेरा सर उठा लिया और गले से लगा लिया और बोली, 'इस मौक़े को ग़नीमत जान और मेरा कहा मान। मुझे यहाँ से ले निकाल, किसी और मुल्क को चल।' मैंने कहा, 'चलिये।' यह कहकर हम दोनों बाग़ के बाहर तो हुए, पर हैरत से और ख़ुशी से हाथ-पाँव फूल गए और राह भूल गए। एक तरफ़ को चले जाते थे, पर कुछ ठिकाना नहीं पाते थे। राजकुमारी बिगड़कर बोली कि, 'अब मैं थक गई। तेरा मकान कहाँ है, जल्द चलकर पहुँच, नहीं तो क्या किया चाहता है, मेरे पाँव में फफोले पड़ गये हैं, रास्ते में कहीं बैठ जाऊँगी।'

मैंने कहा, 'तेरे ग़ुलाम की हवेली नज़दीक है। अब आ पहुँचे, इतमीनान रखो और क़दम उठाओ।' झूठ तो बोला पर दिल में हैरान था कि कहाँ ले जाऊँ? रास्ते में ही एक दरवाज़ा ताला लगा नज़र पड़ा जल्दी से ताला तोड़ मकान के भीतर गए। अच्छी हवेली, फ़र्श बिछा हुआ, शराब के शीशे भरे हुए, क़रीने से ताक़ में धरे और बावर्चीख़ाने में नानकबाब तैयार थे। थकन बहुत थी, एक-एक गुलाबी शराब पुर्तगाली की, उस ग़ज़क के साथ ली और सारी रात ख़ुशी मनाई। जब इस चैन से सुबह हुई, शहर में ग़ुल मचा कि राजकुमारी ग़ायब हुई। मुहल्ला-मुहल्ला गली-गली मुनादी फिरने लगी और कुटनियाँ और हरकारे छूटे कि जहाँ से भी हाथ आवे पैदा करें। शहर के सब दरवाज़ों पर बादशाही ग़ुलामों की चौकी आ बैठी। दरबानों को हुक्म हुआ कि बग़ैर इजाज़त चूँटी भी शहर के बाहर न निकल सके। जो कोई राजकुमारी का पता चलायेगा, हज़ार अशरफ़ी और शाही जोड़ा इनआम पावेगा। तमाम शहर में कुटनियाँ फिरने और घर-घर में घुसने लगीं।

मुझे जो कमबख्ती लगी, दरवाज़ा बन्द न किया। एक बुढ़िया, (शैतान की ख़ाला, उसका ख़ुदा करे मुँह काला!) हाथ में तस्बीह लटकाए, बुर्क़ा ओढ़े दरवाज़ा खुला पाकर बेधड़क चली आई और सामने खड़ी होकर हाथ उठाकर दुआ देने लगी कि, 'इलाही! तेरी सुहाग की नथ

और जोड़ी सलामत रहे और कमाऊ की पगड़ी क़ायम रहे। मैं ग़रीब राँड़ फ़क़ीरनी हूँ। एक बेटी मेरी है कि वह पेट में बच्चा होने से दर्द के मारे मरती है और मेरे पास इतनी समाई नहीं कि अद्धी का तेल चिराग़ में जलाऊँ। खाने-पीने को कहाँ से लाऊँ? अगर मर गई तो कफ़न-दफ़न कैसे करूँगी और दाई-जनाई को क्या दूँगी और ज़च्चा को सठौरा, अलूवानी कहाँ से पिलाऊँगी? आज दो दिन हुए हैं कि भूखी-प्यासी पड़ी है। ऐ साहबज़ादी! अपनी ख़ैर कुछ टुकड़ा-पारचा दिला, तो उसको पानी पीने का आसरा हो।'

राजकुमारी ने तरस खाकर, उसे अपने नज़दीक बुलाकर चार नान और कबाब और एक अंगूठी छंगुलिया से उतारकर हवाले की कि, 'इसको बेच-बाचकर गहना-पाता बना लेना और इत्मीनान से गुज़र करना और कभी-कभी आया करना। यह तेरा घर है।' उसने अपने दिल का मतलब जिसकी तलाश में आई थी, यहाँ आकर पाया। खुशी से दुआएँ देती और बलाएँ लेती चली गई। डेवढ़ी में नान, कबाब फेंक दिया, मगर अंगूठी को मुट्ठी में ले लिया कि राजकुमारी का पता मेरे हाथ आया।

ख़ुदा जिसे आफ़त से बचाया चाहे बचा लेता है। उस मकान का मालिक जवाँमर्द सिपाही घोड़े पर चढ़ा, भाला हाथ में लिये, शिकारबन्द से एक हिरन लटकाए आ पहुँचा। अपनी हवेली का ताला टूटा और किवाड़ खुले पाए। उस कुटनी को निकलते देखा, ग़ुस्से के मारे एक हाथ से उसका झोंटा पकड़कर लटका लिया और घर में आया। उसके दोनों पाँव में रस्सी बांधकर एक दरख्त की टहनी में लटकाया। सर नीचे और पाँव ऊपर किया। ज़रा सी देर में तड़प-तड़पकर वह मर गई।

उस मर्द की सूरत देखकर यह डर समाया कि हवाइयाँ उड़ने लगीं और कलेजा काँपने लगा। उसने हम दोनों को बदहवास देखकर तसल्ली दी और कहा कि, 'बड़ी नादानी तुमने की जो ऐसा काम किया और दरवाज़ा खोल दिया।'

राजकुमारी ने मुस्कराकर फ़रमाया कि, 'शाहज़ादा अपने गुलाम की हवेली कहकर मुझे ले आया और मुझे फुसलाया।' उसने कहा कि, 'शहज़ादे ने जो कुछ कहा सच कहा। जितने लोग हैं, बादशाहों के लौंडी-गुलाम हैं। उन्हीं की मेहरबानी और दया से सब की परवरिश और निबाह है। यह गुलाम बेदाम तुम्हारे हाथ बिका हुआ है। लेकिन भेद छुपाना अक्ल से दूर है। ऐ शहज़ादे, तुम्हारा और राजकुमारी का इस ग़रीबख़ाने में तशरीफ़ लाना और यह मेहरबानी करना, मेरी बहुत बड़ी इज़्ज़त है। मैं निछावर होने को तैयार हूँ। किसी सूरत से, जान-माल से पीछे नहीं हटूँगा। आप आराम फ़रमाइये। अब कौड़ी-भर ख़तरा नहीं। यह बदमाश कुट्टनी अगर सलामत जाती तो आफ़त लाती। अब जब तलक मिज़ाजे-शरीफ़ चाहे, बैठे रहिये और जो-कुछ ज़रूरत हो इस ग़ुलाम से कहिये। सब हाज़िर करेगा। बादशाह तो क्या चीज़ है, तुम्हारी ख़बर फ़रिश्तों को भी न होगी।'

उस जवाँमर्द ने ऐसी-ऐसी बातें तसल्ली की कहीं कि डर जाता रहा। तब मैंने कहा, 'शाबाश, तुम बड़े मर्द हो। इस सुलूक का बदला हमसे भी जब हो सकेगा तब देंगे। तुम्हारा नाम क्या है?'

उसने कहा, 'ग़ुलाम का नाम बहज़ाद ख़ाँ है।' ग़रज़ छः महीने तक जितनी ख़िदमत हो सकती थी, जी-जान से करता रहा। ख़ूब आराम से गुज़री।

एक दिन मुझे अपना मुल्क और माँ-बाप याद आए। इसलिए बेचैन बैठा था। मेरा चेहरा उदास देखकर बहज़ाद ख़ाँ सामने हाथ बाँधकर खड़ा हुआ और कहने लगा, 'इस ग़ुलाम से अगर कोई ग़लती हुई हो तो कह डालिए।' मैंने कहा, 'ख़ुदा के लिए, यह क्या कह रहे हो? तुम ने ऐसा सुलूक किया कि इस शहर में ऐसे आराम से रहे, जैसे कोई अपनी माँ के पेट में रहता है। नहीं तो यह ऐसी हरकत हमसे हुई थी कि तिनका-तिनका हमारा दुश्मन था। ऐसा दोस्त हमारा कौन था कि

ज़रा दम लेने देता ! ख़ुदा तुम्हें ख़ुश रखे, बड़े मर्द हो ।' तब उसने कहा, 'अगर यहाँ से दिल उचाट हुआ हो तो जहाँ हुक्म हो सही सलामत पहुँचा दूँ ।' मैंने कहा कि, 'अगर अपने वतन तक पहुँचू तो माँ-बाप को देखू । मेरी तो यह सूरत हुई, ख़ुदा जाने उन पर क्या गुज़री । मैंने जिस वास्ते वतन छोड़ा था, मेरी तो आर्ज़ू पूरी हुई अब । उन्हें भी देखना ज़रूरी है । मेरी ख़बर उनको कुछ नहीं कि मरा या जीता है । उनके दिल पर क्या बीती होगी ?' वह जबाँमर्द बोला, 'बहुत अच्छा ख़याल है चलिये ।' यह कहकर घोड़ा तुर्की सौ कोस चलनेवाला और एक घोड़ी सधी राजकुमारी के वास्ते लाया और हम दोनों को सवार करवाया । फिर ज़ेरहबख्तर पहन, हथियार बाँध, सिपाही बन, अपने घोड़े पर सवार हुआ और कहने लगा, 'ग़ुलाम आगे हो लेता है । साहब इत्मीनान के साथ घोड़ा दबाए हुये चले आवें ।'

जब शहर के दरवाज़े पर आया, एक नारा मारा और एक तबर से ताले को तोड़ा और दरबानों को डाँट-डपटकर ललकारा, 'बदमाशो ! अपने मालिक से जाकर कहो कि बहज़ाद खाँ राजकुमारी और शहज़ादे को जो तुम्हारा दामाद है, अपने साथ लिये जाता है । अगर हिम्मत है और मर्दानगी का कुछ नशा है तो बाहर निकलो और राजकुमारी को छीन लो । यह न कहना कि चुपचाप ले गया । नहीं तो, क़िले में बैठे आराम किया करो ।' यह ख़बर बादशाह को जल्द जा पहुँची । वज़ीर और मीर बख्शी को हुक्म हुआ कि 'उन तीनों बदज़ात बदमाशों को बाँधकर लाओ, या उनके सर काटकर हुज़ूर में पहुँचाओ ।' कुछ देर के बाद फ़ौज बाहर निकल आई और तमाम ज़मीन-आसमान धूल से भर गया । बहज़ाद खाँ ने राजकुमारी को और मुझे एक पुल के दर में जो बारह पुली और जौनपुर के पुल के बराबर था, खड़ा किया और आप घोड़े को मोड़कर उस फ़ौज की तरफ़ फिरा और शेर की तरह डपटकर और घोड़े को चमकाकर फ़ौज के बीच घुसा । सारा लश्कर काई-सा फट गया और वह दोनों सरदारों तलक जा पहुँचा । दोनों के सर काट लिए । जब सरदार मारे गए,

लश्कर तितिर-बितिर हो गई। वह कहावत है सर से सरवाह, जब बेल फूटी राई-राई हो गई। वैसे ही बादशाह खुद कितनी फ़ौज बख्तरपोशों को साथ लेकर मदद को आये। उनकी भी लड़ाई इस अकेले जवान ने मार दी और बादशाह ने शिकस्त फ़ाश खाई।

बादशाह पस्पा हुए। सच है फ़तेह देनेवाला अल्लाह है। लेकिन बहज़ाद खाँ ने ऐसी जवाँमर्दी दिखाई जो शायद रुस्तम से भी न हो सकती। जब बहज़ाद खाँ ने देखा कि मामला साफ़ हुआ, अब कौन बाक़ी रहा है जो हमारा पीछा करेगा, बेखटके होकर और इत्मीनान करके, जहाँ हम खड़े थे, वहाँ आया और राजकुमारी को और मुझको साथ लेकर चला।

सफ़र की उम्र छोटी होती है। थोड़े ही समय में अपने मुल्क की सरहद में जा पहुँचे। एक अर्ज़ी अपने सही-सलामत आने की अपने बाप बादशाह सलामत को लिखकर रवाना की। जहाँपनाह पढ़कर बहुत खुश हुये। दो रकात नमाज़ शुक्र की पढ़ी, जैसे सूखे धान में पानी पड़े। खुश होकर सब अमीरों को साथ लेकर इस नाचीज़ के स्वागत के लिये दरिया के किनारे आ खड़े हुए। कश्तियों के दरोग़ा को रस्सियों के वास्ते हुक्म हुआ। मैंने दूसरे किनारे पर बादशाह की सवारी खड़ी देखी। उनके क़दम चूमने की आर्ज़ू में घोड़े को दरिया में डाल दिया। हेला मारकर हुज़ूर में हज़िर हुआ। मुझे मारे शौक़ के कलेजे से लगा लिया।

अब और एक आफ़त आई कि जिस घोड़े पर मैं सवार था, शायद बच्चा उसी घोड़ी का था जिस पर राजकुमारी सवार थी या मेरे घोड़े को देखकर घोड़ी ने भी जल्दी करके अपने को राजकुमारी समेत दरिया में गिराया और पैरने लगी। राजकुमारी ने घबराकर बाग खींची। वह मुँह की नर्म थी, उलट गई। राजकुमारी ग़ोते खाकर घोड़ी के साथ दरिया में बह गई। फिर उन दोनों का निशान नज़र न आया।

बहज़ाद ख़ाँ ने यह हालत देखकर अपने को घोड़े समेत राजकुमारी की मदद के लिये दरिया में पहुँचाया। वह भी इस भँवर में आ गया, फिर निकल न सका। बहुतेरे हाथ-पाँव मारे, कुछ बस न चला, डूब गया।

जहाँपनाह ने यह वारदात देखकर बड़ा जाल मंगवाकर फेंकवाया और मल्लाहों और ग़ोतख़ोरों से कहा। उन्होंने सारा दरिया छान मारा, यहाँ तक कि मिट्टी तक ले-ले आए। पर वे दोनों हाथ न आए।

ऐ फ़क़ीरो! यह घटना ऐसी हुई कि मैं पागल और दीवाना हो गया और फ़क़ीर बनकर यही कहता फिरता था, 'इन नैनों का यही विसेख, वह भी देखा, यह भी देखा।' अगर राजकुमारी कहीं ग़ायब हो जाती या मर जाती तो दिल को तसल्ली आती। फिर तलाश को निकलता या सब्र करता। लेकिन जब नज़रों के सामने डूब गई तो कुछ बस न चला। आख़िर जी में यही लहर आई कि दरिया में डूब जाऊँ, शायद मरकर अपने महबूब को पाऊं। एक रोज़ रात को उसी दरिया में पैठा और डूबने का इरादा करके, गले तक पानी में गया। चाहता था कि आगे पाँव रखूं और ग़ोता खाऊँ कि वही बुर्कापोश सवार, जिन्होंने तुम को ख़बर दी थी, आया, मेरा हाथ पकड़ लिया और दिलासा दिया कि, 'इतमीनान रख, मल्का और बहज़ाद ख़ाँ जीते हैं। तू क्यों मुफ्त में अपनी जान खोता है? दुनियां में ऐसा भी होता है। ख़ुदा की दरगाह से मायूस मत हो। अगर जीता रहेगा तो तेरी मुलाक़ात उन-दोनों से एक रोज़ होकर रहेगी। अब तू रूम की तरफ़ जा और भी दो ज़ख्मी दिल फ़क़ीर वहाँ गए हैं उनसे तू जब मिलेगा, अपनी मुराद को पहुँचेगा।'

ऐ फ़क़ीरो! उस बुज़ुर्ग के हुक्म पर मैं भी आपकी ख़िदमत में आ पहुँचा। उम्मीद यही है कि हर-एक अपने-अपने मंजिल को पहुँचेगा। इस टुकड़गदे का यही हाल था जो पूरा-पूरा कह सुनाया।

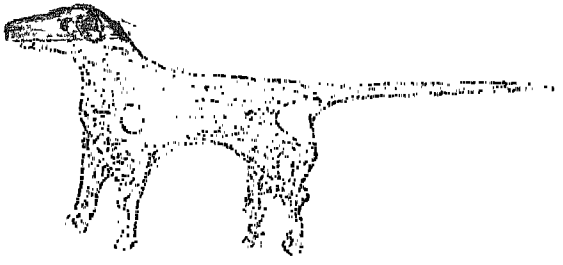

सैर चौथे दर्वेश की

चौथा फ़क़ीर अपनी सैर का हाल रो-रोकर इस तरह दुहराने लगा—

क़िस्सा हमारी बेसरो-पाई का अब सुनो,
टुक अपना ध्यान रखके मेरा हाल सब सुनो।
किस वास्ते मैं आया हूँ यां तक तबाह हो,
सारा बयान करता हूँ, उसका वह सब सुनो॥

ऐ फ़क़ीरो! ज़रा तवज्जुह करो। यह फ़क़ीर जो इस हालत में गिरफ़्तार है, चीन के बादशाह का बेटा है। नाज़ो नेमत से परवरिश पाई और बहुत अच्छी तरह तर्बियत हुई। ज़माने के भले-बुरे से कुछ वाक़िफ़ न था। जानता था कि यूँही हमेशा निभेगी। पर उसी बेफ़िक्री के आलम में यह हादिसा हुआ कि बादशाह सलामत जो इस यतीम के बाप थे, परलोक सिधारे और दम निकलते वक़्त अपने छोटे भाई को जो मेरे चचा हैं बुलाया और कहा कि, 'हमने तो सब माल-मुल्क छोड़कर सफ़र का इरादा किया, लेकिन मेरी यह वसीयत तुम पूरी करना और अपने बड़े होने का पूरी तरह लिहाज़ रखना। जब तलक शहज़ादा जो इस तख़्त और छत्र का मालिक है जवान हो, होश सँभाले और अपना घर देखे-भाले, तुम इसकी जगह बादशाहत का इन्तज़ाम करना

और सिपाहियों और रिआया को ख़राब न होने देना। जब यह बालिग़ हो तो समझा-बुझाकर तख़्त हवाले करना और रौशन अख़्तर जो तुम्हारी बेटी है, उससे मेरे शहज़ादे की शादी करके तुम बादशाहत से किनारा पकड़ना। इस सुलूक से बादशाहत हमारे ख़ानदान में क़ायम रहेगी और कोई गड़बड़ी न पैदा होगी।'

यह कहकर उन्होंने तो प्राण त्याग दिये और चचा बादशाह हुआ। वह मुल्क का बन्दोबस्त करने लगा। मुझे हुक्म हुआ कि ज़नाने महल में रहा करे और जब तलक जवान न हो बाहर न निकले। मैं चौदह बरस की उम्र तक बेगमों और ख़वासों में पला किया और खेला-कूदा किया। चचा की बेटी से शादी की ख़बर सुनकर ख़ुश था और इस उम्मीद पर बेफ़िक्र रहता और दिल में कहता कि कुछ ही दिनों में शादी भी होगी और बादशाहत भी हाथ लगेगी। दुनिया उम्मीद पर क़ायम है।

मुबारक नाम का मेरा एक हब्शी था, जो वालिद मरहूम के ज़माना से ही यहां था। उसका बड़ा एतबार था। वह बड़ा समझदार और नमक हलाल था। मैं अक्सर उसके नज़दीक जा बैठता। वह भी मुझे बहुत प्यार करता और मेरी जवानी देखकर ख़ुश होता और कहता कि, 'ख़ुदा का शुक्र है ऐ शहज़ादे! अब तुम जवान हुए। ख़ुदा ने चाहा, बहुत जल्द तुम्हारा चचा तुम्हारे बाप की वसीयत पर अमल करेगा अपनी बेटी और तुम्हारे बाप का तख़्त तुम्हें देगा।'

एक रोज़ यह इत्तफ़ाक़ हुआ कि एक मामूली सहेली ने बेगुनाह मुझे ऐसा तमाचा खींच मारा कि मेरे गाल पर पांचों उंगलियों का निशान उखड़ आया। मैं रोता हुआ मुबारक के पास गया। उसने मुझे गले से लगा लिया और आंसू आस्तीन से पोंछे और कहा कि, 'चलो आज तुम्हें बादशाह के पास ले चलूं। शायद देखकर मेहरबान हो और लायक़ समझकर तुम्हारा हक़ तुम्हें दे।' उसी वक़्त चचा के हुज़ूर में ले गया। चचा ने दरबार में बहुत मेहरबानी की और पूछा कि, 'क्यों उदास हो और आज यहाँ कैसे आये?'

मुबारक बोला, 'कुछ अर्ज़ करने आए हैं।' यह सुनकर ख़ुद-बख़ुद कहने लगा कि, 'अब मियां का ब्याह करना है।'

मुबारक ने कहा, 'बहुत मुबारक है।' उसी वक़्त नजूमी और रम्मालों को सामने तलब किया और ऊपरी दिल से पूछा कि, 'इस साल कौन सा महीना और कौन सा दिन और मुहूर्त मुबारक है कि शादी का इन्तज़ाम करूँ?'

उन्होंने मर्ज़ी पाकर गिन-गिनाकर अर्ज़ किया कि, 'ख़िलए आलम! यह सारा साल मनहूस है। किसी चांद में कोई तारीख़ अच्छी नहीं ठहरती। अगर यह साल सारा असल-ख़ैरियत से कटे तो अगला बरस इस शुभ काम के लिए बेहतर है।'

बादशाह ने मुबारक की तरफ़ देखा और कहा कि, 'शहज़ादे को महल में ले जा। ख़ुदा चाहे तो इस साल के गुज़रते उसकी अमानत उसके हवाले करूंगा। इतमीनान रखे और पढ़े लिखे।' मुबारक ने सलाम किया और मुझे साथ लिया। महल में पहुँचा दिया। दो-तीन दिन के बाद मैं मुबारक के पास गया। मुझे देखते ही वह रोने लगा। मैं हैरान हुआ कि, 'दादा! ख़ैर तो है, तुम्हारे रोने का क्या सबब है?' तब यह ख़ैरख्वाह जो मुझे दिलो-जान से चाहता था, बोला कि, 'मैं उस रोज़ तुम्हें उस ज़ालिम के पास ले गया। काश यह जानता तो न ले जाता!'

मैंने कहा, 'मेरे जाने में ऐसी क्या क़बाहत हुई? कहो तो सही।'

तब उसने कहा, 'सब अमीर, वज़ीर, दरबारी, छोटे-बड़े, तुम्हारे बाप के वक़्त के, तुम्हें देखकर ख़ुश हुए और ख़ुदा का शुक्र करने लगे कि अब हमारा शहज़ादा जवान हुआ और बादशाहत के लायक़ हुआ। अब कुछ ही दिनों में हक़ हक़दार को मिलेगा। तब हमारी क़द्रदानी करेगा और अपने बाप के वक़्त के ग़ुलामों और नौकरों की क़द्र समझेगा।' यह ख़बर उस बेईमान को पहुँची। उसकी छाती पर साँप फिर गया। मुझे अकेले में बुलाकर कहा कि, 'ऐ मुबारक! अब ऐसा काम

कर कि शाहज़ादे को किसी फ़रेब से मार डाल और उसका ख़तरा मेरे जी से निकाल, तब मुझे इत्मीनान हो। यह सुनकर मैं बदहवास हो रहा हूँ कि तेरा चचा तेरी जान का दुश्मन हुआ।'

जैसे ही मुबारक से यह नामुबारक ख़बर मैंने सुनी, बग़ैर मारे मर गया और जान के डर से उसके पाँव पर गिर पड़ा कि, 'ख़ुदा के वास्ते मैंने बादशाहत से हाथ खींचा, किसी तरह मेरी जान बचे।'

उस वफ़ादार ग़ुलाम ने मेरा सर उठाकर छाती से लगा लिया और जवाब दिया कि, 'कुछ ख़तरा नहीं। एक तदबीर मुझे सूझी है। अगर काम आ गई तो कुछ चिन्ता नहीं। ज़िन्दगी है तो सब कुछ है। मुमकिन है कि इस फ़िक्र से तेरी जान भी बचे और अपने मतलब में भी कामयाब हो।'

यह भरोसा देकर, मुझे साथ लेकर उस जगह गया, जहाँ मेरे बाप सोते बैठते थे। उसने मुझे बहुत इत्मीनान दिलाया। वहाँ एक कुर्सी बिछी थी, एक तरफ़ मुझे बैठने को कहा और एक तरफ़ आप पकड़ कर कुर्सी को खिसकाया। कुर्सी के तले का फ़र्श उठाया और ज़मीन को खोदने लगा। एक बारगी एक खिड़की नज़र आई, जिसमें जंजीर और ताला लगा था। मुझे बुलाया। मैं अपने दिल में यह समझा कि यक़ीनन मुझे मार देने और गाड़ देने को यह गढ़ा उसने खोदा है। मौत आँखों के आगे फिर गई। लाचार चुपके-चुपके कलमा पढ़ता हुआ नज़दीक गया। देखता हूँ तो उस खिड़की के अन्दर इमारत है और चार मकान हैं और हर-एक दालान में दस-दस गोलियाँ सोने की जंजीरों में जकड़ी हुयी लटकती हैं और हर-एक गोली के मुँह पर एक सोने की ईंट और एक जड़ाऊ बन्दर बना हुआ बैठा है। उन्तालीस गोलियाँ चारों मकानों में गिनीं और एक मटके में देखा कि मुँहामुँह अशर्फ़ियों से भरा है। उस पर न बन्दर है, न ईंट है। एक हौज़ जवाहिरात से लबालब भरा हुआ देखा। मैंने मुबारक से पूछा कि, 'ऐ दादा! यह क्या तिलिस्म है? किसका मकान है और यह किस काम के हैं?'

बोला कि, 'यह बन्दर जो देखते हो, उनकी यह हक़ीक़त है कि तुम्हारे बाप ने जवानी के ज़माने में मलिक सादिक़, जो जिन्नों का बादशाह है, उसके साथ दोस्ती की और आना-जाना शुरू किया था।' चुनानचे हर साल में कई बार कई तरह की ख़ुशबूएँ और इस मुल्क की सौग़ातें ले जाते और एक महीने के क़रीब उसकी ख़िदमत में रहते। जब जाने लगते तो मलिक सादिक़ बादशाह को ज़मुर्रद का एक बन्दर देता। हमारा बादशाह उसे लाकर इस तहख़ाने में रखता। इस बात से सिवाय मेरे और कोई वाक़िफ़ न था। एक बार ग़ुलाम ने अर्ज़ किया कि, 'जहाँपनाह! लाखों रुपये के तोहफ़े ले जाते हैं और वहाँ से एक पत्थर का मुर्दा बन्दर आप ले आते हैं। इसका आख़िर फ़ायदा क्या है?' मेरी इस बात का मुस्कराकर जवाब दिया, 'ख़बरदार! कहीं ज़ाहिर न करना लेकिन बता देना ज़रूरी है। यह एक-एक बन्दर जो तू देखता है, हर एक के हज़ार देव ज़बरदस्त ताबेदार हैं और हुक्म मानने वाले हैं। लेकिन जब तलक मेरे पास चालीसों बन्दर पूरे जमा न हों तब तक ये सब निकम्मे हैं। कुछ काम न आएँगे।, सो एक बन्दर की कमी थी कि उसी बरस बादशाह की मौत हुई। इतनी मेहनत कुछ काम न आई, उसका फ़ायदा ज़ाहिर न हुआ। ऐ शहज़ादे! तेरी यह हालत बेकसी को देखकर तुझे मलिक सादिक़ के पास ले चलूँ और तेरे चचा का ज़ुल्म बयान करूँ। उम्मीद यही है कि तुम्हारे बाप की दोस्ती याद करके एक बन्दर जो बाकी है तुझे दे। तब उनकी मदद से तेरा मुल्क तेरे हाथ आवे और चीन की बादशाहत तुझे मिले। अगर और कुछ न हुआ तो तेरी जान बचती है। इस ज़ालिम के हाथ से सिवाय इसके कोई सूरत बचाव की नज़र नहीं आती।'

मैंने उससे यह सब हाल सुनकर कहा, 'दादा जान, अब तू मेरी जान का मालिक है। जो मेरे लिये भला हो, सो कर।' मुझे तसल्ली देकर वह ख़ुद इत्र और जो कुछ ले जाने की ख़ातिर मुनासिब जाना, ख़रीदने बाज़ार गया।

दूसरे दिन उस ज़ालिम चचा के पास गया और कहा, 'जहाँपनाह ! शहज़ादे को मार डालने की एक सूरत मैंने सोची है। अगर हुक्म हो तो अर्ज़ करूँ ?'

वह कमबख्त खुश होकर बोला, 'वह क्या तरकीब है ?,

तब मुबारक ने कहा, 'उसको मार डालने में सब तरह आपकी बदनामी है। अगर मैं उसे बाहर जंगल में ले जाकर ठिकाने लगाऊँ और गाड़-दबाकर चला आऊँ तो हरगिज़ कोई न जानेगा कि क्या हुआ।'

मुबारक से यह सुनकर बोला, 'बहुत अच्छा, मैं यह चाहता हूँ कि वह बाक़ी न रहे। उसका खटका मेरे दिल में है। अगर मुझे इस फ़िक्र से छुड़ावेगा तो इस खिदमत के बदले बहुत कुछ पावेगा। जहाँ तेरा जी चाहे ले जावे और खपावे। मुझे सिर्फ़ यह खुशखबरी लावे।'

मुबारक ने बादशाह की तरफ़ से इतमीनान करके मुझे साथ लिया और वह तोहफ़ा साथ लेकर आधी रात को शहर से चल पड़ा। वह उत्तर की तरफ़ चला। एक महीने तक हम दोनों लगातार चलते रहे। एक रात को चले जाते थे कि मुबारक बोला, 'शुक्र खुदा का ! अब अपनी मंज़िल पर पहुँचे।'

मैंने सुनकर कहा, 'दादा ! यह तूने क्या कहा ?'

कहने लगा, 'ऐ शहज़ादे, जिन्नों का लश्कर क्या नहीं देखता ?'

मैंने कहा, 'मुझे तेरे सिवा और कुछ दिखाई नहीं देता।' मुबारक ने एक सुर्मेदानी निकालकर सुलेमानी सुर्मे की सलाइयाँ मेरी दोनों आँखों में फेर दी। उसके बाद जिन्नों का समूह और लश्कर के तम्बू-क़नात नज़र आने लगे। वे सब खूबसूरत थे और अच्छे कपड़े पहने हुए थे। मुबारक को पहचान कर हर एक गले मिलता और मज़ाक़ करता।

आखिर जाते-जाते शाही महल के नज़दीक पहुँचे और दरबार में दाखिल हुए। देखता हूँ तो रोशनी हो रही है। दोनों तरफ़ तरह-तरह

की कुर्सियाँ बिछी हुई हैं। आलिम-फ़ाज़िल, फ़कीर और अमीर, वज़ीर, दीवान, उन पर बैठे हैं और सिपाही हाथ-बाँधे खड़े हैं। बीच में एक जड़ाऊ तख्त बिछा है। उस पर मलिक सादिक ताज और मोतियों की लड़ियां पहने हुए, मसनद पर, तकिये लगाए, बड़ी शान-शौकत से बैठा है। मैंने नज़दीक जाकर सलाम किया। मुहब्बत के साथ उसने बैठने को कहा। फिर खाना आया। खाने के बाद, मुबारक से मेरा हाल पूछा। मुबारक ने कहा, 'अब इनके बाप की जगह पर इनका चचा बादशाहत करता है और इनका जानी दुश्मन हुआ है। इसलिये मैं इनको वहाँ से लेकर भागा। आपकी खिदमत में आया हूँ कि यह यतीम हैं और बादशाहत पर इनका हक़ है। लेकिन बिना किसी सहारे के कुछ नहीं हो सकता। हुज़ूर की मदद से इस सताये हुए लड़के की परवरिश हो सकती है। इसके बाप की खिदमत का हक़ याद करके इसकी मदद फ़रमाइये और वह चालीसवाँ बन्दर दीजिये, ताकि चालीस पूरे हों और यह अपना हक़ पाकर आपके जानो-माल को दुआ दे। सिवाय आपकी मदद के इसका ठिकाना नज़र नहीं आता।'

यह सारा हाल सुनकर, सादिक़ ने ज़रा देर रुक कर कहा, 'वाक़ई इसके बाप की खिदमत और दोस्ती का हक़ हमारे ऊपर बहुत है। यह बेचारा तबाह होकर अपनी बादशाहत छोड़कर यहाँ तलक आया है। हमारी छाया में पनाह ली है। जहाँ तक हमसे हो सकेगा कमी न होगी। लेकिन एक काम हमारा है। अगर वह इससे हो सका, बेईमानी न की, अच्छी तरह पूरा किया और इस इम्तहान में पूरा उतरा तो मैं वादा करता हूँ कि बादशाह से ज्यादा सुलूक करूँगा और जो यह चाहेगा सो दूँगा।'

मैंने हाथ बाँधकर कहा, 'इस गुलाम से जहाँ तक खिदमत सरकार की हो सकेगी, जानो-दिल से करता रहेगा और उसको खूबी, ईमानदारी और होशियारी से करेगा और अपने लिये मुबारक जानेगा।'

सादिक़ ने कहा, 'तू अभी लड़का है, इसलिये बार-बार कहता हूँ कि कहीं ऐसा न हो कि बेईमानी करे और आफ़त में पड़े।'

मैंने कहा, 'खुदा आपके इक़बाल से यह मुशकिल आसान करेगा और जहाँ तक मुझसे हो सकेगा कोशिश करूँगा और अमानत हुज़ूर तक ले आऊँगा।'

यह सुनकर मलिक सादिक़ ने मुझको क़रीब बुलाया और काग़ज़ निकालकर मुझे दिखलाया और कहा, 'यह जिस शख्स की तस्वीर है, उसे जहाँ से भी हो तलाश करके मेरे पास ला। और जिस घड़ी तू इसका नाम और निशान पावे और सामने जावे, मेरी तरफ़ से बहुत शौक़ ज़ाहिर कीजो। अगर यह ख़िदमत तुझसे हो सकी तो जो कुछ तू चाहता है, उससे ज़्यादा मदद की जायेगी और अगर नहीं तो जैसा करेगा वैसा पायेगा।'

मैंने उस काग़ज़ को जो देखा, एक तस्वीर दिखाई दी और मुझे ग़श सा आने लगा। मारे डर के अपने आपको सँभाला और कहा, 'बहुत अच्छा, मैं चलता हूँ। अगर खुदा को मेरा भला करना है तो जो कुछ आपने कहा है पूरा होगा।'

यह कहकर, मुबारक को साथ लेकर जंगल की राह ली। गाँव-गाँव, बस्ती-बस्ती, शहर-शहर, मुल्क-मुल्क फिरने लगा और हर एक से उसका नामो-निशान पूछने लगा। किसी ने न कहा, 'हाँ, मैं जानता हूँ या किसी से सुना है।' सात बरस तक इसी तरह हैरानी और परेशानी सहता हुआ एक नगर में जा पहुँचा। शहर आबाद था। लेकिन वहाँ का हर आदमी, इस्मे आज़म पढ़ता था और खुदा की बन्दगी करता था।

एक अन्धा हिन्दुस्तानी फ़क़ीर भीख माँगता नज़र आया। लेकिन किसी ने एक कौड़ी या एक निवाला न दिया। मुझे ताज्जुब हुआ और उसके ऊपर रहम खाया। जेब में से एक अशर्फ़ी निकालकर उसके हाथ में दी। वह लेकर बोला, 'ऐ दाता, खुदा तेरा भला करे! तू शायद मुसाफ़िर है। इस शहर का रहने वाला नहीं है।' मैंने कहा, 'सच कहता है।

सात बरस से मैं तबाह हुआ हूँ, जिस काम से निकला हूँ उसका पता नहीं मिलता। आज इस शहर में आ पहुँचा हूँ।' वह बूढ़ा दुआए देकर चला। मैं उसके पीछे लग लिया। शहर के बाहर, एक आलीशान मकान नज़र आया और वह उसके अन्दर गया। मैं भी चला। देखा तो जा-बजा से मकान गिर पड़ा है और बेमरम्मत हो रहा है।

मैंने दिल में कहा, यह महल बादशाहों के लायक है। जिस वक्त तैयारी इसकी हुई होगी, कैसा खूबसूरत, अच्छा और शानदार मकान बना होगा और अब तो वीरानी से क्या हालत हो रही है। यह मालूम नहीं कि उजाड़ क्यों पड़ा है और यह अन्धा इस महल में क्यों रहता है? वह अन्धा लाठी टेकता हुआ चला जाता था कि एक आवाज़ आई जैसे कोई कहता कि, 'ऐ बाप! खैर तो है? आज सवेरे क्यों वापस चले आते हो।'

बूढ़े ने सुनकर जवाब दिया, 'बेटी! खुदा ने एक जवान मुसाफ़िर को मेरे हाल पर मेहरबान किया। उसने एक अशर्फ़ी मुझको दी। बहुत दिनों से पेट भरकर अच्छा खाना न खाया था, सो गोश्त, मसाला, घी, तेल आटा नून मोल लिया और तेरे लिये जो कपड़ा ज़रूरी था, खरीदा। अब उसको काट और सीकर पहन और खाना पका तो खा-पीकर उस सखी के हक़ में दुआ दें। अभरचे उसके दिल का मतलब मालूम नहीं, पर खुदा अक्ल वाला और आँख वाला है। शायद हम बेकसों की दुआ क़ुबूल करे।'

मैंने जब उसके फ़ाकों का हाल सुना, बेअख्तियार जो में आया कि बीस अशर्फ़ियाँ और उसको दूँ। लेकिन आवाज़ की तरफ़ जो ध्यान गया तो एक औरत देखी कि ठीक वह तस्वीर उसी माशूक़ की थी। तस्वीर को निकालकर मुक़ाबला किया। बाल बराबर फ़र्क़ न देखा। एक नारा दिल से निकला और बेहोश हुआ! मुबारक मुझे बग़ल में लेकर बैठा और पंखा करने लगा। मुझमें ज़रा सा होश आया, उसी की तरफ़ ताक रहा

था कि मुबारक ने पूछा कि, 'तुमको क्या हो गया ?' अभी जवाब मुँह से नहीं निकला था कि वह नाज़नीन बोली, 'ऐ जवान, खुदा से डर और बेगानी स्त्री पर निगाह मत कर। हया और शर्म सब को ज़रूरी है।'

इस लियाक़त से उसने बातचीत की कि मैं उसकी सूरत और सीरत पर फ़रेफ्ता हो गया। मुबारक मेरी बहुत खातिरदारी करने लगा। लेकिन दिल की हालत की उसको क्या खबर थी ? लाचार होकर मैंने पुकारा कि, 'ऐ खुदा के बन्दो और इस मकान के रहने वालो ! मैं ग़रीब मुसाफ़िर हूँ। अगर अपने पास मुझे बुलाओ और रहने की जगह दो तो बड़ी बात है।, उस अन्धे ने नज़दीक बुलाया और आवाज़ पहचान कर गले लगाया। फिर जहाँ वह गुलबदन बैठी थी, उस मकान में मुझे ले गया। वह एक कोने में छुप गई।

उस बूढ़े ने मुझसे पूछा कि, 'अपना हाल कह कि क्यों घर-बार छोड़कर अकेला मारा-मारा फिरता है ? तुझे किसकी तलाश है ?' मैंने 'मलिक सादिक़' का नाम न लिया और वहाँ का कुछ ज़िक्र-चर्चा न किया। उससे इस तरह कहा कि, 'यह बेकस चीन का शहज़ादा है। मेरे बाप अब भी बादशाह हैं। इसलिये एक सौदागर से लाखों रुपये देकर यह तस्वीर मोल ली थी। इसके देखते सब होश-आराम जाता रहा और फ़क़ीर का भेस करके सारी दुनिया छान मारी। अब यहाँ मेरा मतलब मिला है, सो तुम्हारा अख्तियार है।'

यह सुनकर अन्धे ने एक आह भरी और बोला, 'ऐ अज़ीज़, मेरी लड़की बड़ी मुसीबत में गिरफ्तार है। किसी आदमी की मजाल नहीं कि इससे शादी करे और फल पावे।'

मैंने कहा, ' मैं उम्मीदवार हूँ। पूरा-पूरा हाल बयान करो।'

तब उस आज़मी ने अपना हाल इस तरह से बयान करना शुरू किया कि, 'सुन ऐ बादशाहज़ादे ! मैं इस शहर का रईस और यहाँ के बड़े लोगों में से हूँ। मेरे पुरखे बड़े आली खानदान और नाम वाले थे।

खुदा ने मुझे यह बेटी दी। जब बालिग़ हुई तो उसकी खूबसूरती, नज़ाकत और सलीके का शोर हुआ और सारे मुल्क में यह मशहूर हुआ कि फ़लाने के घर में ऐसी लड़की है कि जिसके रूप के सामने अप्सरा और परी शर्मिन्दा हों, इन्सान का तो क्या मुँह है कि बराबरी करे? यह तारीफ़ इस शहर के शहज़ादे ने सुनी और बिना देखे-भाले आशिक़ हुआ। खाना-पीना छोड़ दिया। अटवाटी-खटवाटी लेकर पड़ा।

आखिर बादशाह को यह बात मालूम हुई। मुझे रात को अकेले में बुलाया और इस बात का ज़िक्र किया। मुझे बातों में फुसलाया। यहाँ तक कि निस्बत-नाता करने पर राज़ी किया। मैंने भी समझा कि जब घर में पैदा हुई है तो किसी न किसी से ब्याही ही जाएगी। इससे अच्छी बात क्या हो सकती है कि बादशाहज़ादे से ब्याही जाय? इसमें बादशाह भी एहसान मानता है। मैं बात पक्की करके रुखसत हुआ। उसी दिन से दोनों तरफ़ ब्याह की तैयारी होने लगी। एक रोज़ अच्छी घड़ी देखकर, क़ाज़ी, मुफ़्ती, आलिम, फ़ाज़िल और शहर के बड़े आदमी जमा हुए। निकाह हुआ। महर बाँधा गया। दुल्हन को बड़ी धूम-धाम से ले गए। सब रीति-रस्म करके फ़ारिग़ हुए। दूल्हा ने रात को दुल्हन के पास जाने का इरादा किया। उस मकान में शोर-गुल ऐसा हुआ कि जो लोग बाहर चौकी में थे, हैरान हुए। दरवाज़ा कोठरी का खोलकर चाहा देखें यह क्या आफ़त है? दरवाज़ा अन्दर से ऐसा बन्द था कि किवाड़ खोल न सके। कुछ देर में वह रोने की आवाज़ भी कम हुई। पट की चूल उखाड़कर देखा तो दूल्हा का सर कटा हुआ तड़पता है। दुल्हन के मुँह से कफ़ चला जाता है और वह उसी मिट्टी-लहू में लुथड़ी हुई बदहवास पड़ी लोटती है।

यह क़यामत देखकर सब के होश जाते रहे। ऐसी खुशी में यह ग़म ज़ाहिर हुआ। बदशाह को यह खबर पहुँची। सर पीटता हुआ दौड़ा। सब अमीर और दरबारी जमा हुए पर किसी की अक्ल काम

नहीं करती थी कि इस मामले की हक़ीक़त को पहुँचे। बादशाह ने बड़े क़लक़ और ग़म की हालत में यह हुक्म किया कि, 'इस कमबख्त भाँड़ पैरी दुल्हन का सर भी काट लो।' यह बात जैसे ही बादशाह की ज़बान से निकली, फिर वैसा ही हंगामा हो गया। बादशाह डरा और अपनी जान के डर से निकल भागा और फ़र्माया कि इसे महल से बाहर निकाल दो। कनीज़ों ने इस लड़की को मेरे घर पहुंचा दिया। यह चर्चा दुनिया में मशहूर हुआ। जिस ने सुना, हैरान हुआ। शाहज़ादे के मारे जाने के सबब से ख़ुद बादशाह और जितने रहने वाले इस शहर के हैं; सब मेरे जानी दुश्मन हुए।

जब मातमदारी से फ़राग़त हुई और चालीसवाँ हो चुका, बादशाह ने वज़ीरों और अमीरों से सलाह पूछी कि, 'अब क्या करना चाहिये?' सभों ने कहा, 'और कुछ तो हो नहीं सकता। पर ज़ाहिर में दिल की तसल्ली और सब्र के वास्ते उस लड़की को उसके बाप समेत मरवा डालिये और घर-बार ज़ब्त कर लीजिये।'

जब मेरी यह सज़ा तै हुई और कोतवाल को हुक्म हुआ तो उसने आकर चारों तरफ़ से मेरी हवेली को घेर लिया। उसने नरसिंहा दरवाज़े पर बजाया और चाहा कि अन्दर घुसे और बादशाह का हुक्म पूरा करे। अचानक ऊपर से ईंट-पत्थर ऐसे बरसने लगे कि सारी फ़ौज ताब न ला सकी। अपना सर-मुंह बचा कर जिधर-तिधर भागी और एक आवाज़ डरावनी बादशाह ने महल में अपने कानों में सुनी कि, 'क्यों कमबख्ती आई है कि शैतान लगा है। भला चाहता है, तो उस नाज़नीन को अपने हाल पर छोड़ दे। नहीं तो जो तेरे बेटे ने उससे शादी करके देखा, तू भी उसकी दुश्मनी से देखेगा। अब अगर तू उसको सतावेगा तो सज़ा पावेगा।'

बादशाह को दहशत के मारे बुख़ार चढ़ा। उसी वक्त हुक्म दिया कि, 'इन बदबख्तों को इनके हाल पर छोड़ दो। कुछ कहो न

सुनो। हवेली में पड़ा रहने दो। ज़ोर-जुल्म इन पर मत करो।' उस दिन से आमिल, बाद-बतास जानकर दुआ-ताबीज़ और सयाने जंत्र-मंत्र करते हैं और यहाँ के सब रहने वाले 'इस्मे आज़म' और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हैं। मुद्दत से यह तमाशा हो रहा है। लेकिन अब तक कुछ भेद नहीं खुलता और मुझे भी हर्गिज़ कोई ख़बर नहीं। मगर उस लड़की से एक बार पूछा कि 'तू ने अपनी आँखों से क्या देखा था?' तो वह बोली कि, 'और तो मैं कुछ नहीं जानती लेकिन यह दिखाई दिया कि जिस वक्त मेरे शौहर ने संभोग का इरादा किया, छत फटकर एक सोना का जड़ाऊ तख्त निकला। उस पर एक खूबसूरत जवान शाहाना लिबास पहने बैठा था। उसके साथ बहुत से आदमी उस मकान में आए और शहज़ादे को क़त्ल करने को तैयार हुए। वह शख्स सरदार मेरे नज़दीक आया और कहा, 'क्यों जानी, अब हम से कहाँ भागोगी?' उनकी सूरतें आदमी की सी थीं, लेकिन पाँव बकरियों के से नज़र आए। मेरा कलेजा धड़कने लगा और डर के मारे गश में आगई। फिर मुझे कुछ सुध नहीं कि आख़िर क्या हुआ?'

'तब से मेरा हाल यह है कि इस टूटे फूटे मकान में हम दोनों पड़े रहते हैं, बादशाह के ग़ुस्से की वजह से सब अलग हो गए और मैं भीख माँगने निकलता हूँ तो कोई कौड़ी नहीं देता बल्कि दूकान पर खड़ा भी नहीं रहने देता। इस कमबख्त लड़की के बदन पर लत्ता नहीं कि सर छुपाए और खाने को पास नहीं जो पेट भर खावे। खुदा से यह चाहता हूँ कि मौत हमारी आवे या ज़मीन फटे और यह कमबख्त समावे। इस जीने से मरना भला। खुदा ने शायद हमारे ही वास्ते भेजा है जो तूने रहम खाकर एक अशर्फ़ी दी। खाना भी मज़ेदार पकाकर खाया और बेटी की खातिर कपड़ा भी बनाया। खुदा का शुक्र किया और तुझे दुआ दी! इस पर जिन या परी का साया न होता तो तेरी खिदमत में लौंडी की जगह देता। तू इस फेर में मत पड़ और यह इरादा मत कर।'

यह सब हाल सुनकर मैंने बहुत रो-धोकर खुशामद की कि मुझे अपना दामाद बना लें, जो मेरी क़िस्मत में बदा होगा, सो होगा। पर वह बूढ़ा हर्गिज़ राज़ी न हुआ। शाम तब हुई, उससे रूख़सत होकर सराय में आया। मुबारक ने कहा, 'लो, शहज़ादे मुबारक हो, खुदा ने मौक़ा तो दिया है, बारे यह मेहनत अकारथ न गई।'

मैंने कहा, 'आज कितनी खुशामद की, पर वह अन्धा बेईमान राज़ी नहीं होता। खुदा जाने देवेगा या नहीं!' पर मेरे दिल की यह हालत थी कि रात काटनी मुश्किल हुई कि कब फिर सुबह हो और फिर जाकर हाज़िर हूँ। कभी यह ख़याल आता था कि अगर वह मेहरबान हो और क़ुबूल करे तो मुबारक मलिक सादिक़ की ख़ातिर ले जाएगा। फिर कहता थोड़ी देर मुबारक को मनाकर मैं ऐश करूँगा। फिर जी में यह ख़तरा आता कि मुबारक भी मान जाय तो जिनों के हाथ से वही हालत मेरी होगी जो बादशाहज़ादे की हुई और इस शहर का बादशाह, कब चाहेगा कि उसका बेटा मारा जाय और दूसरा खुशी मनाए?

सारी रात नींद उचाट हो गई और उसी उलझन में कटी। जब दिन हुआ तो मैं चला। चौक में से अच्छे-अच्छे थान कपड़ों के गोटा-किनारी और मेवे ख़रीद के उस बूढ़े की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। बहुत खुश होकर बोला कि, 'सब को अपनी जान से ज्यादा कुछ प्यारी नहीं, पर अगर मेरी जान भी तेरे काम आवे तो इन्कार न करूं और अपनी बेटी तेरे हवाले करूं। लेकिन यही डर लगता है कि तेरी जान का ख़तरा न हो कि क़यामत तक यह लानत का दाग़ मेरे ऊपर रहे।'

मैंने कहा, 'मैं इस बस्ती में बेआसरा हूँ और अब तुम मेरे दीन दुनिया के बाप हो। मैं इस उम्मीद में एक ज़माने से हूँ। क्या-क्या परेशानी और तबाही उठाता हुआ और कैसे-कैसे सदमे झेलता हुआ यहाँ तक आया। और मतलब का भी पता पाया खुदा ने तुम्हें भी

मेहरबान किया, जो अपनी लड़की ब्याह देने पर राज़ी हुए। लेकिन मेरे वास्ते आगा-पीछा करते हो। ज़रा मुंसिफ़ होकर ग़ौर करो तो कि इश्क़ की तलवार से सर बचाना और अपनी जान को छुपाना किस मज़हब में दुरुस्त है? ख़ैर जो हुआ सो हुआ। मैंने सब तरह अपने को बर्बाद किया है। अपने मरने जीने की मुझे कुछ पर्वाह नहीं। बल्कि अगर नाउम्मीद रहूँगा तो बिना मौत ही मर जाऊंगा और तुम्हारा दामन क़यामत के दिन पकड़ूँगा।'

ग़रज़ इस बातचीत और 'हाँ', 'ना' में एक महीने के आस-निरास में गुज़रे। हर रोज़ उस बूढ़े की ख़िदमत में दौड़ा जाता और उसकी ख़ुशामद करता। इत्तफ़ाक़ से वह बूढ़ा बीमार हुआ। मैं उसकी बीमारी में हाज़िर रहा। हमेशा क़ारूरा हकीम के पास ले जाता। वह जो नुस्खा लिख देता, उसे बनाकर पिलाता और उसका खाना अपने हाथ से पकाकर निवाला खिलाता। एक दिन मेहरबान होकर कहने लगा, 'ऐ जवान! तू बड़ा ज़िद्दी है। मैंने सारी मुश्किलें कह सुनाईं और मना करता हूँ कि इस ख़याल को छोड़ा दे। जान है तो जहान है। मेरा कहा नहीं मानता और कुएँ में गिरना चाहता है। अच्छा! आज अपनी लड़की से तेरे बारे में बात करूँगा। देखूं वह क्या कहती है।'

ऐ फ़क़ीरो, यह खुशख़बरी सुनकर मैं ऐसा फूला कि कपड़ों में न समाया। आदाब बजा लाया और कहा कि, 'आप ने मेरे जीने की फ़िक्र की।' रुख़सत होकर मकान पर आया और सारी रात मुबारक से यही ज़िक्र और चर्चा रहा। कहाँ की नींद और कहाँ की भूख! सुबह को सूरज निकलते ही, फिर जाकर मौजूद हुआ। सलाम किया। बूढ़े ने कहा, 'लो अपनी बेटी हमने तुमको दी। ख़ुदा मुबारक करे। तुम दोनों को ख़ुदा की हिफ़ाज़त में सौंपा। जब तलक मेरे दम में दम है, मेरी आंखों के सामने रहो। जब मेरी आंख बन्द हो जाएगी, जो तुम्हारे जी में आए सो करना।'

कितने दिन पीछे उस बूढ़े आदमी का इन्तक़ाल हुआ। रो-पीटकर कफ़न-दफ़न किया। तीजे के बाद मुबारक उस नाज़नीन का डोला लेकर कारवाँ सराय में ले आया और मुझसे कहा कि, 'यह मलिक सादिक़ की अमानत है। ख़बरदार बेईमानी मत करना और यह मेहनत-मशक़्क़त बर्बाद मत करना!'

मैंने कहा, 'ऐ काका! मलिक सादिक़ यहाँ कहाँ है? दिल नहीं मानता, मैं कैसे सब्र करूँ? जो-कुछ हो सो हो, जिऊं या मरूँ, अब तो ऐश कर लूं।'

मुबारक ने दिक़ होकर डाँटा कि, 'लड़कपन मत करो। अभी एक दम में कुछ का कुछ हो जाता है। मलिक सादिक़ को दूर जानते हो जो उसका फ़रमान नहीं मानते हो? उसने चलते वक्त बहुत ऊंच-नीच सब समझा दी है। अगर उसके कहने पर रहोगे और सही-सलामत उसको वहाँ तक ले चलोगे, तो वह भी बादशाह है, शायद तुम्हारी मेहनत का ख़याल करके तुम्हीं को बख्श दे तो क्या अच्छी बात होवे। प्रीत की प्रीत रहे और मीत का मीत हाथ लगे।'

बारे उसके डराने और समझाने से मैं हैरान होकर चुपका हो रहा। दो सांडनियाँ ख़रीदीं और कजावों पर सवार होकर मलिक सादिक़ के मुल्क की राह ली। चलते-चलते एक मैदान में गुल-शोर की आवाज़ आने लगी। मुबारक ने कहा, 'शुक्र ख़ुदा का, तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी। यह लश्कर जिनों का आ पहुँचा।' बारे मुबारक ने उनसे मिल-जुल कर पूछा कि, 'कहाँ का इरादा किया है?' वे बोले कि, 'बादशाह ने तुम्हारे स्वागत के वास्ते हमें भेजा है, अब तुम्हारे हुक्म का इन्तज़ार है। अगर कहो तो दम के दम में बादशाह के सामने ले चलें।' मुबारक ने कहा, 'देखो तो किस-किस मेहनतों से ख़ुदा ने बादशाह के हुज़ूर में हमें सुर्ख़रू किया। अब जल्दी की क्या ज़रूरत है? ख़ुदा न करे, अगर कोई ऐसी वैसी बात हो गई तो हमारी मेहनत बेकार जाएगी और जहाँपनाह

के गुस्से में पड़ेंगे।' सभों ने कहा कि, 'यह तुम्हारी मर्ज़ी पर है। जिस तरह जी चाहे चलो।' अगरचे सब तरह का आराम था पर रात-दिन चलने से काम था।

जब नज़दीक जा पहुँचे, मैंने मुबारक को सोता देखकर, उस नाज़-नीन के क़दमों पर सर रख दिया। अपने दिल की बेक़रारी और मलिक सादिक़ के सबब अपनी लाचारी, बहुत रो-धोकर बयान की। मैं कहने लगा कि, 'जिस रोज़ से तुम्हारी तस्वीर देखी है, खाना-पीना, सोना और आराम अपने ऊपर हराम किया। अब जो खुदा ने यह दिन दिखाया, तो तुम छूट रही हो।'

कहने लगी कि, 'मेरा भी दिल तुम्हारी तरफ़ खिंचता है। तुमने मेरे लिये क्या-क्या तकलीफ़ें उठाई हैं और कैसे-कैसे दुःख झेलकर ले आए हो। खुदा को याद करो और मुझे भूल मत जाना। देखो तक़दीर क्या गुल खिलाती है!' यह कहकर ऐसी फूट-फूटकर रोई कि हिचकी बँध गई। इधर मेरा यह हाल, उधर उसका वह हाल। इतने में मुबारक की नींद टूट गई। वह हम दोनों मुहब्बत करने वालों का रोना देखकर रोने लगा और बोला, 'इत्मीनान रखो, एक तेल मेरे पास है, उस गुलबदन के बदन में मल दूँगा। उसकी बू से मलिक सादिक़ का जी हट जाएगा, हो सकता है तुम्हीं को बख्श दे।'

मुबारक से यह तदबीर सुनकर दिल को ढाढ़स हो गई। उसके गले से लाड किया और कहा, 'ऐ दादा! अब तू मेरे बाप की जगह है। तेरी वजह से मेरी जान बची। अब भी ऐसा काम कर जिससे मेरी ज़िन्दगी हो। नहीं तो इस ग़म में मर जाऊँगा।' उसने ढेर सी तसल्ली दी। जब दिन हुआ, आवाज़ जिन्नों की मालूम होने लगी। देखा तो कई नौकर मलिक सादिक़ के आए हैं और दो भारी शाही जोड़े मेरे लिये आए हैं। एक चौडोल मोतियों की झालर पड़ी हुई उनके साथ है। मुबारक ने उस नाज़नीन को वह तेल मल दिया। उसे पोशाक पहनाकर बनाव-सिंगार

करवाकर मलिक सादिक़ के पास ले चला। बादशाह ने देखकर शाबाशी दी और मुझे इज़्ज़त के साथ बिठाया। कहने लगा कि, 'मैं तुझसे ऐसा सुलूक करूँगा कि किसी ने आज तक किसी से न किया होगा। बादशाहत तो तेरे बाप की मौजूद है। इसके अलावा तू अब मेरे बेटे की जगह हुआ।' यह मेहरबानी की बातें कर रहा था, इतने में वह नाज़नीन भी सामने आई। उस तेल की बू से एक-न-एक दिमाग़ परागन्दा हो गया और हाल बेहाल हो गया। उस बात की ताब न ला सका। उठकर बाहर चला गया। उसने हम दोनों को बुलवाया और मुबारक को मुख़ातिब करके कहा, 'क्यों जी, ख़ूब शर्त पूरी की!' मैंने ख़बरदार कर दिया था कि अगर बेईमानी करोगे तो मेरे ग़ुस्से में पड़ोगे। यह बू कैसी है? अब देखो, तुम्हारा क्या हाल करता हूँ?' वह बहुत ग़ुस्सा हुआ। मुबारक ने मारे डर के कहा कि, 'बादशाह सलामत! जब हुज़ूर के हुक्म से इस काम के लिये हम गए थे, ग़ुलाम ने पहले ही अपनी निशानी काटकर डिबिया में बन्द करके और मुहर लगाकर के ख़ज़ान्ची को दे दी थी।' मुबारक से यह जवाब सुनकर मेरी तरफ़ आँखें निकालकर घूरा और कहने लगा, 'तो फिर यह तेरा काम है?' और ग़ुस्से में आकर मुँह से बुरा भला बकने लगा। उस वक्त उसकी बातचीत से यूँ मालूम होता था कि शायद जान से मुझे मरवा डालेगा। जब मैंने उसके चेहरे से यह मालूम किया तो अपनी जान से हाथ धोकर और जी खोकर छुरी मुबारक की कमर से खींचकर मलिक सादिक़ की तोंद में मारी। छुरी के लगते ही वह झुका और झूमा। मैंने हैरान होकर जाना कि यह ज़रूर मर गया। फिर अपने दिल में ख़याल किया कि ज़ख्म तो ऐसा करारा नहीं लगा। फिर यह क्या बात हुई?

मैं खड़ा देखता रहा कि वह ज़मीन पर लोट-लाट गेंद की सूरत बनकर आसमान की तरफ़ उड़ गया। ऐसा ऊँचा हुआ कि आख़िर नज़रों से ग़ायब हो गया। फिर एक पल के बाद बिजली की तरह कड़कता और

गुस्से में कुछ ऑल-फ़ौल बकता हुआ नीचे आया और मुझे एक लात ऐसी मारी कि मैं तेवराकर चित गिर पड़ा और जी डूब गया। खुदा जाने कितनी देर में होश आया। आँखें खोलकर जो देखा तो एक ऐसे जंगल में पड़ा हूँ कि जहाँ सिवाय केकड़ टेंटनी और झड़बेरी के दरख़्तों के कुछ और नज़र नहीं आता। अब इस घड़ी अक्ल कुछ काम नहीं करती कि क्या करूँ कहाँ जाऊँ। नाउम्मीदी से एक आह भरकर एक तरफ़ की राह ली। अगर कहीं कोई आदमी की सूरत नज़र पड़ती तो मलिक सादिक़ का नाम पूछता। वह दीवाना जानकर जवाब देता कि, 'हमने तो उसका नाम भी नहीं सुना।'

एक रोज़ पहाड़ पर जाकर मैंने यही इरादा किया कि अपने को ख़त्म कर दूँ। जैसे ही गिरने को तैयार हुआ वही बुर्क़ापोश सवार आ पहुँचा और बोला कि, 'क्यों तू अपनी जान खोता है? आदमी पर दुःख दर्द सब होता है। अब तेरे बुरे दिन गए और भले दिन आए। जल्द रूम को जा। तीन शख्स ऐसे ही वहाँ पहले से गए हैं। उनसे मुलाक़ात कर और वहाँ के सुल्तान से मिल। तुम पाँचों का मतलब एक ही जगह मिलेगा।' इस फ़क़ीर की सैर का हाल यही है जो अर्ज़ किया। अपने मौला मुश्किल कुशा के खबर देने से आपके हुज़ूर में आ पहुँचा हूँ और बादशाह के भी दर्शन हुए। अब चाहिये कि सब को इत्मीनान हासिल हो।

यह बातें चार दर्वेश और बादशाह आज़ादबख़्त में हो ही रही थीं कि इतने में एक ख्वजासरा बादशाह के महल में से दौड़ा हुआ आया और मुबारकबाद की तस्लीमें बादशाह के हुज़ूर में बजा लाया और अर्ज़ किया कि, 'इस वक्त ऐसा शहज़ादा पैदा हुआ है कि चाँद और सूरज उसकी खूबसूरती देखकर शर्माते हैं।'

बादशाह ने ताज्जुब से पूछा कि, 'ज़ाहिर में तो किसी को पेट न था, यह सूरज कहाँ से उदय हुआ?'

उसने कहा कि, 'माहरू ख्वास जो बहुत दिनों से बादशाही गुस्से में पड़ी थी, बेकसों की तरह एक कोने में रहती थी और डर के मारे न कोई उसके पास जाता था, न हाल पूछता था। उसी पर ख़ुदा की की यह मेहरबानी हुई कि चाँद सा बेटा उसके पेट से पैदा हुआ।'

बादशाह को ऐसी ख़ुशी हासिल हुई कि मारे ख़ुशी के मौत न हो जाय! चारों फ़क़ीरों ने भी दुआ दी कि, 'भला बाबा, तेरा घर आबाद रहे और उसका क़दम मुबारक हो। तेरे साए तले पोढ़-बढ़ा हो।'

बादशाह ने कहा, 'यह तुम्हारे क़दम की बरकत है, वरना अपने सान गुमान में भी यह बात न थी। इजाज़त हो तो जाकर देखूँ?'

दर्वेशों ने कहा, 'अल्लाह का नाम लेकर सिधारिये।'

बादशाह महल में तशरीफ़ ले गए। शाहज़ादे को गोद में लिया और ख़ुदा का शुक्र किया। कलेजा ठंडा हुआ। वैसे ही छाती से लगाए हुए लाकर फ़क़ीर के क़दमों पर डाला। दर्वेशों ने दुआएँ पढ़कर झाड़-फूँक दिया! बादशाह ने जश्न की। तैयारी की दुहरी नौबतें झड़ने लगीं। ख़ज़ाने का मुँह खोल दिया। दान बख्शीश से एक कौड़ी के मुहताज को लखपती कर दिया और अमीर और दरबारी जितने थे सब दुगनी जागीर और पहले से बड़ा पद दिया गया, जितना लश्कर था, उसे पाँच बरस की तलब इनआम हुई। फ़क़ीरों और अल्लाह वालों को माली मदद और रक़म दी गई। बेकसों के मीते और टुकड़-गदाओं के चमले अशर्फ़ी और रुपयों की खिचड़ी से भर दिये और तीन बरस का लगान रिआया को माफ़ किया कि जो कुछ बोएँ जोतें दोनों हिस्से अपने घर उठा ले जांय।

सारे शहर में हज़ारी बज़ारी के घरों में जहां देखो वहां थेई-थेई नाच हो रहा है। मारे ख़ुशी के हर अमीर ग़रीब बादशाह बन बैठा। उसी ख़ुशी के आलम में एक बारगी महल के अन्दर से रोने-पीटने का ग़ुल उठा। ख्वासें, तुर्किनियाँ, सिपाही औरतें, ख्वाजासरा, और ग़ुलाम सब

मैं ख़ाक डालते हुए बाहर निकल आए और बादशाह से कहा कि, 'जिस वक़्त शहज़ादे को नहला-धुलाकर दाई की गोद में दिया, बादल का एक टुकड़ा आया और दाई को घेर लिया। ज़रा देर बाद देखा तो दाई बेहोश पड़ी है और शहज़ादा ग़ायब हो गया। यह क्या क़यामत टूटी है!' बादशाह भी यह अजीब बात सुनकर हैरान हो रहा और सारे मुल्क में वावैला पड़ी। दो दिन किसी के घर में हाँडी न चढ़ी, शहज़ादे का ग़म खाते और अपना लहू पीते थे।

ग़रज़ ज़िन्दगानी से लाचर थे, जो इस तरह जीते थे। जब तीसरा दिन आया, वही बादल फिर आया और पालना, जड़ाऊ मोतियों की तोड़ पड़ी हुई लाया। उसे महल में रखकर आप हवा हुआ। लोगों ने शहज़ादे को उसमें अंगूठा चूसते हुए पाया। बादशाह बेगम ने जल्दी बलायें लेकर हाथों में उठाकर छाती से लगा लिया। देखा तो आबेरवाँ का कुर्त्ता, मोतियों का दुर दामन टँका हुआ गले में है और उस पर सलूका तमामी का पहने हुए है और हाथ-पाँव में जड़ाऊ खड़वे और गले में नौरत्न की हैकल पड़ी है और झुनझुना, चुसनी, चट्टे-बट्टे जड़ाऊ धरे हैं। सब मारे खुशी के वारी-फेरी होने लगीं और दुआएँ देने लगीं कि, 'तेरी माँ का पेट ठंडा रहे और तू बड़ा-बूढ़ा हो!'

बादशाह ने एक बड़ा महल नया बनवाकर और उसमें फ़र्श बिछवाकर, वहाँ दर्वेशों को रखा। जब बादशाहत के काम से फ़ुर्सत होती, तब वहाँ आ बैठते, सब तरह से उनकी सेवा करते और उनका ख़याल रखते। लेकिन हर चाँद की नौचन्दी जुमेरात को वही बादल का टुकड़ा आता और शहज़ादे को ले जाता। दो दिन के बाद तोहफ़े, खिलौने और हर एक मुल्क की सौग़ातें हर एक क़िस्म की शहज़ादे के साथ ले आता जिनको देखने से इंसान की अक्ल हैरान हो जाती।

इसी क़ायदे से बादशाहज़ादे ने ख़ैरियत से सातवें बरस में पाँव दिया। सालगिरह के दिन बादशाह आज़ादबख़्त ने फ़क़ीरों से कहा,

'भाई अल्लाह ! कुछ मालूम नहीं होता कि शहज़ादे को कौन ले जाता है और फिर दे जाता है। बड़ा ताज्जुब है ! देखिये अंजाम इसका क्या होता है ?'

दर्वेशों ने कहा, 'एक काम करो ! एक शौक़िया रुक्क़ा इस मज़मून का लिखकर शहज़ादे के पालने में रख दो कि तुम्हारी मेहरबानी और मुहब्बत देखकर अपना दिल मुलाक़ात को बहुत चाहता है। अगर दोस्ती की राह से अपने हाल की ख़बर दो, तो इत्मीनान हो और हैरानी दूर हो।' बादशाह ने दर्वेशों की सलाह मानकर उसी मज़मून का एक रुक्क़ा सुनहरे क़ाग़ज़ पर लिखकर शहज़ादे के सोने के पालने में रख दिया।

शहज़ादा फिर पुराने क़ायदे के अनुसार ग़ायब हुआ। जब शाम हुई, आज़ादबख्त दर्वेशों के बिस्तरों पर आ बैठे और बातचीत होने लगी कि एक काग़ज़ लिपटा हुआ, बादशाह के पास आ पड़ा। खोलकर पढ़ा तो जवाब उसी रुक्क़े का था। यही दो सतरें लिखी थीं कि, 'हम जानिये कि हमें भी आपसे मिलने का बहुत शौक़ है। सवारी के लिये तख्त जाता है। इस वक्त अगर तशरीफ़ लाइये तो बेहतर है। एक दूसरे से मुलाक़ात हो। यहाँ सब ऐश और ख़ुशी का सामान तैयार है। सिर्फ़ साहब ही की जगह ख़ाली है।'

बादशाह आज़ादबख्त दर्वेशों को साथ लेकर तख्त हज़रत सुलेमान के तख्त की तरह हवा पर चला। चलते-चलते एक ऐसी जगह पर जा उतरे जहाँ एक आलीशान इमारत और तैयारी का सामान नज़र आता है, लेकिन यह नहीं मालूम होता कि यहाँ कोई है या नहीं। इतने में किसी ने एक सलाई सुलेमानी सुर्मे की इन पाँचों की आँखों में फेर दी। दो-दो आँसू की बूँदें टपक पड़ीं। परियों का अखाड़ा देखा कि स्वागत की ख़ातिर गुलाबपाश लिये हुए और रंग-बिरंग के जोड़े पहने हुए खड़ा है।

आज़ादबख्त आगे चले, तो देखा कि दोनों तरफ़ हज़ारों परियाँ

क़तार बाँधे अदब से खड़ी हैं और बीच में, ख़ास जगह पर एक ज़मुर्रद का तख़्त धरा है। उस पर मलिक शहबाल, शाह रुख़ का बेटा तकिया लगाये बड़ी शान से बैठा है और एक परीज़ाद लड़की सामने बैठी शहज़ादा बख़्तियार से खेल रही है। दोनों तरफ़ कुर्सियाँ और सन्दलियाँ क़रीने से बिछी हैं। उन पर ख़ूबसूरत परीज़ाद बैठे हैं। मलिक शहबाल बादशाह को देखते ही अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और तख़्त से उतर कर गले मिला और हाथ में हाथ पकड़े अपने बराबर तख़्त पर लाकर बिठाया। बड़े तपाक और गर्मजोशी से आपस में बातचीत होने लगी। सारा दिन हँसी-ख़ुशी, खाने और मेवे और ख़ुशबुओं की दावत रही और राग-रंग सुना किये। दूसरे दिन जब फिर दोनों बादशाह जमा हुए मलिक शहबाल ने बादशाह से दर्वेशों के साथ लाने का हाल पूछा।

बादशाह ने चारों फ़क़ीरों का जो हाल सुना था पूरा-पूरा बयान किया, सिफ़ारिश की और मदद चाही कि, 'इन्होंने इतनी मेहनत की है और इतनी मुसीबत उठाई है। अब अगर आपकी ज़रा सी मेहरबानी से अपने-अपने मक़सद को पहुँचे तो बड़ा अच्छा होगा और मैं भी सारी उम्र शुक्रगुज़ार रहूँगा। आपकी एक मेहरबानी की नज़र से उनका बेड़ा पार होता है।'

मलिक शहबाल ने सुनकर कहा कि, 'आपका कहना सर आँखों पर। मैं आपके हुक्म से बाहर नहीं। यह कहकर मेहरबानी की नज़र से देवों और परियों की तरफ़ देखा। बड़े-बड़े जिन जो जहाँ सरदार थे, उनको ख़त लिखे कि, 'इस हुक्मनामे को देखते ही अपने को मेरे सामने हाज़िर करो।' अगर किसी के आने में देर होगी तो सज़ा पायेगा और पकड़ा हुआ आयेगा। और, आदमी चाहे औरत हो या मर्द जिसके पास हो उसे अपने साथ लिये आवे। अगर कोई छुपाकर रखेगा और बाद में उसका पता चलेगा, तो उसके बीवी-बच्चे कोल्हू में पेरे जायेंगे। उसका नामो-निशान बाक़ी न रहेगा।

यह हुक्मनामा लेकर देव चारों तरफ़ भेजे गए और उसके बाद दोनों बादशाहों में महफ़िल गर्म हुई और मेल मुहब्बत की बातें होने लगीं। इतने में मलिक शहबाल दर्वेशों से मुख़ातिब होकर बोला कि, 'मुझे भी लड़का होने का बड़ा अरमान था। दिल में यह अहद किया था कि अगर ख़ुदा बेटा दे या बेटी, तो उसकी शादी किसी इन्सानों के बादशाह के यहाँ जो लड़का या लड़की होगा उससे करूँगा। ऐसी नीयत करने के बाद मालूम हुआ कि बादशाह बेगम पेट से हैं। बारे दिन और घड़ियाँ और महीने गिनते-गिनते पूरे दिन हुए और यह लड़की पैदा हुई। अपने वादे के अनुसार मैंने सब जिनों, परियों और देवों को हुक्म दिया कि चारों तरफ़ तलाश करो। जिस बादशाह या शहंशाह के यहाँ बेटा पैदा हुआ हो, उसे बहुत सम्भाल कर उठा लाओ।' उसी वक्त परीज़ाद मेरे हुक्म के मुताबिक़ चारों तरफ़ बिखर गए। कुछ देर के बाद इस शहज़ादे को मेरे पास ले आये।

'मैंने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और इसे अपनी गोद में ले लिया। अपनी बेटी से ज्यादा इसकी मुहब्बत दिल में पैदा हुई। जी नहीं चाहता कि एक पल भी अपनी नज़रों से इसे दूर करूँ। लेकिन इसलिये भेज देता हूँ कि अगर इसके माँ-बाप न देखेंगे तो उनका क्या हाल होगा? इसलिये हर महीने में एक बार मंगा लेता हूँ। कई दिन अपने पास रख कर भेज देता हूँ। इंशाअल्लाह! अब हमारी तुम्हारी मुलाक़ात हुई। उसकी शादी कर देता हूँ। मौत ज़िन्दगी सब को लगी पड़ी है। अच्छा है जीते जी उनका सेहरा देख लें।'

बादशाह आज़ादबख्त मलिक शहबाल की यह बातें सुनकर और उसकी ख़ूबियाँ देखकर बहुत ख़ुश हुए और बोले, 'पहले शहज़ादे के ग़ायब हो जाने और वापस आने से हमारे दिल में अजब-अजब तरह के खतरे आते थे। लेकिन अब आपकी बातें सुनकर दिल को तसल्ली हुई। यह बेटा अब तुम्हारा है। जिसमें तुम्हारी ख़ुशी हो सो कीजिए।'

ग़रज़ दोनों बादशाह एक दूसरे की सुहबत में शीरो-शकर की तरह रहते और ऐश करते। पाँच दिन के समय में बड़े-बड़े बादशाह, बाग़ों, पहाड़ों और टापुओं के जिनको तलब करने के लिये परीज़ाद भेजे गये थे सब आकर हुज़ूर में हाज़िर हुए। सबसे पहले मलिक सादिक़ से फ़र्माया कि, 'तेरे पास जो आदमी है, उसे हाज़िर कर।' उसने बहुत राम और ग़ुस्सा खाकर लाचार उस खूबसूरत लड़की को हाज़िर किया जिसके लिये चीन का शहज़ादा तबाह हुआ था। उसके बाद अम्मान के बादशाह से जिन की शहज़ादी माँगी जिसके लिये नीमरोज़ का शहज़ादा बैल पर सवार होकर पागल बना था। उसने भी बहुत हीले-बहाने और उज्र-माज़रत करके हाज़िर की। जब विलायत के बादशाह की बेटी और बहज़ाद खाँ को तलब किया, सब इन्कार करने लगे और हज़रत सुलेमान की क़सम खाने लगे।

आख़िर जब समुन्दरों के बादशाह से पूछने की नौबत आई, तो वह सर नीचा करके चुप हो रहा। मलिक शहबाल ने उसकी ख़ातिर की, क़सम दी, इज्ज़त देने की उम्मीद दिलाई और कुछ धौंस-धड़का भी दिया। तब वह भी हाथ जोड़कर अर्ज़ करने लगा कि, 'बादशाह सलामत! यह हक़ीकत है कि जब बादशाह अपने बेटे के स्वागत की ख़ातिर दरिया पर आया और शहज़ादे ने जल्दी के मारे घोड़ा दरिया में डाला, इत्तफ़ाक से मैं उस रोज सैर-शिकार के लिये निकला था। उस जगह मे मेरा गुज़र हुआ। सवारी खड़ी करके यह तमाशा देख रहा था। इतने में शहज़ादी भी अपनी घोड़ी दरिया में ले गई। निगाह जो उस पर पड़ी दिल बेअख़्तियार हुआ। परीज़ादों को हुक्म किया कि शहज़ादी को घोड़ी समेत ले आओ। उसके पीछे बहज़ाद खाँ ने घोड़ा फेंका, जब वह भी ग़ोते खाने लगा, उसकी बहादुरी और दिलावरी मुझे बहुत पसन्द आई। उसे भी हाथों-हाथ पकड़ लिया। उन दोनों के लेवार मैंने सवारी फेरी। सो वे दोनों सही सलामत मेरे पास मौजूद हैं।'

यह हाल कहकर दोनों को सामने बुलाया। तब शाम की शहज़ादी की तलाश बहुत की और सभों से सख्ती और नर्मी से पूछा। लेकिन किसी ने हामी न भरी और न नाम-निशान बताया। तब मलिक शहबाल ने फ़र्माया कि, 'कोई बादशाह या सरदार ग़ैरहाज़िर भी है या सब आ चुके?' जिन्नों ने अर्ज़ किया कि, 'जहाँपनाह! सब हुज़ूर में आए हैं। मगर एक जादूगर जिसने क़ाफ़ के पहाड़ के अन्दर एक क़िला जादू के इल्म से बनाया है, वह अपने घमंड से नहीं आया है और हम ग़ुलामों में इतनी ताक़त नहीं, जो ज़बर्दस्ती उसको पकड़ लावें। वह बड़ा मज़बूत मकान है और वह खुद भी बड़ा शैतान है।'

यह सुनकर मलिक शहबाल को ग़ुस्सा आया और जिन्नों, भूतों और परीज़ादों की लड़ाकी फ़ौज को बुलाकर हुक्म दिया कि, 'अगर सीधे-सीधे वह शहज़ादी को साथ लेकर हाज़िर हो तो बहुत अच्छा है। वरना ज़बरदस्ती, उसको बाँधकर ले आओ और उसके गढ़ और मुल्क को नेस्त-नाबूद करके गदहे का हल फेरवा दो।'

यह हुक्म होते ही, ऐसी कितनी फ़ौज रवाना हुई कि एक आध दिन के समय में उस जोश-ख़रोश वाले सर्कश को ग़ुलाम की तरह बाँधकर पकड़ लाये और बादशाह के सामने हाथ बाँधे खड़ा किया। मलिक शह-बाल ने बहुतेरा सख्ती करके पूछा पर उस घमंडी ने सिवाय 'ना' करने के 'हाँ' नहीं किया। बहुत ग़ुस्सा होकर बादशाह ने कहा कि, 'इस बद-माश का अंग-अंग अलग करो और खाल खींचकर भुस भरो।' परीज़ादों के लश्कर को हुक्म दिया कि, क़ाफ़ के पहाड़ में जाकर ढूँढ-ढाँढकर शह-ज़ादी को लाओ।' वह लश्कर जिसके ज़िम्मे यह काम हुआ था, वह शहज़ादी को भी तलाश करके ले आया। उन सब बन्दियों ने और चारों फ़क़ीरों ने मलिक शहबाल का हुक्म और इन्साफ़ देखकर दुआएँ दीं और खुश हुए। बादशाह आज़ादबख्त भी बहुत खुश हुआ। तब मलिक शहबाल ने कहा कि, 'मर्दों को दीवाने-ख़ास में और औरतों को शाही

महल में दाख़िल करो और शहर की सजावट का हुक्म दो और शादी की तैयारी जल्दी करो।' बस हुक्म की देर थी।

एक दिन अच्छी घड़ी और मुबारक महूरत देखकर शहज़ादा बख्त-यार का निकाह अपनी बेटी रोशन अख्तर से कर दिया और यमन के सौदागर के लड़के को दमिश्क़ की शहज़ादी से ब्याहा और ईरान के शहज़ादे का निकाह बसरे की शहज़ादी से कर दिया, अज़म के राजकुमार को विलायत की राजकुमारी से ब्याहा, नीमरोज़ के बादशाह की बेटी को बहज़ाद ख़ाँ को दिया, नीमरोज़ के राजकुमार को जिन्न की शहज़ादी हवाले की और चीन के शहज़ादे को बूढ़े अज़मी की बेटी दी जो पहले मलिक सादिक के क़ब्ज़े में थी। हर एक नामुराद मलिक शहबाल की मदद से अपने-अपने मक़सद और मुराद को पहुँचा। उसके बाद चालीस दिन तक जश्न फ़रमाया और ऐश-इशरत में रात-दिन डूबे रहे।

आख़िर मलिक शहबाल ने हर-एक राजकुमार को तोहफ़े और सौग़ातें और माल-असबाब दे-देकर अपने-अपने वतन को रुख़सत किया। सब ख़ुशी और इत्मीनान से खाना हुए और ख़ैरियत से अपने-अपने मुल्क को जा पहुँचे और बादशाहत करने लगे। सिर्फ़ एक बहज़ाद ख़ाँ और यमन के सौदागर का लड़का अपनी-अपनी ख़ुशी बादशाह आज़ाद-बख्त के साथ रहे। आख़िर सौदागर को शहज़ादे का ख़ान सामाँ और बहज़ाद ख़ाँ को शहज़ादे की फ़ौज का बख्शी किया। जब तलक जीते रहे ऐश करते रहे।

इलाही! जिस तरह ये चारों दर्वेश और पाँचवाँ बादशाह आज़ाद-बख्त अपनी-अपनी मुराद को पहुँचे, इसी तरह से, ख़ुदा करे हर नामुराद के दिल का मक़सद और मतलब पूरा हो।

यह हाल कहकर दोनों को सामने बुलाया। तब शाम की शहज़ादी की तलाश बहुत की और सभों से सख्ती और नर्मी से पूछा। लेकिन किसी ने हामी न भरी और न नाम-निशान बताया। तब मलिक शहबाल ने फ़र्माया कि, 'कोई बादशाह या सरदार गैरहाज़िर भी है या सब आ चुके?' जिन्नों ने अर्ज़ किया कि, 'जहाँपनाह! सब हुज़ूर में आए हैं। मगर एक जादूगर जिसने क़ाफ़ के पहाड़ के अन्दर एक क़िला जादू के इल्म से बनाया है, वह अपने घमंड से नहीं आया है और हम गुलामों में इतनी ताक़त नहीं, जो ज़बर्दस्ती उसको पकड़ लावें। वह बड़ा मज़बूत मकान है और वह खुद भी बड़ा शैतान है।'

यह सुनकर मलिक शहबाल को गुस्सा आया और जिन्नों, भूतों और परीज़ादों की लड़ाकी फ़ौज को बुलाकर हुक्म दिया कि, 'अगर सीधे-सीधे वह शहज़ादी को साथ लेकर हाज़िर हो तो बहुत अच्छा है। वरना ज़बरदस्ती, उसको बाँधकर ले आओ और उसके गढ़ और मुल्क को नेस्त-नाबूद करके गदहे का हल फेरवा दो।'

यह हुक्म होते ही, ऐसी कितनी फ़ौज रवाना हुई कि एक आध दिन के समय में उस जोश-खरोश वाले सर्कश को गुलाम की तरह बाँधकर पकड़ लाये और बादशाह के सामने हाथ बाँधे खड़ा किया। मलिक शह-बाल ने बहुतेरा सख्ती करके पूछा पर उस घमंडी ने सिवाय 'ना' करने के 'हाँ' नहीं किया। बहुत गुस्सा होकर बादशाह ने कहा कि, 'इस बद-माश का अंग-अंग अलग करो और खाल खींचकर भुस भरो।' परीज़ादों के लश्कर को हुक्म दिया कि, क़ाफ़ के पहाड़ में जाकर ढूँढ-ढाँढकर शह-ज़ादी को लाओ।' वह लश्कर जिसके ज़िम्मे यह काम हुआ था, वह शहज़ादी को भी तलाश करके ले आया। उन सब बन्दियों ने और चारों फ़क़ीरों ने मलिक शहबाल का हुक्म और इन्साफ़ देखकर दुआएँ दीं और खुश हुए। बादशाह आज़ादबख्त भी बहुत खुश हुआ। तब मलिक शहबाल ने कहा कि, 'मर्दों को दीवाने-खास में और औरतों को शाही

महल में दाखिल करो और शहर की सजावट का हुक्म दो और शादी की तैयारी जल्दी करो।' बस हुक्म की देर थी।

एक दिन अच्छी घड़ी और मुबारक महूरत देखकर शहज़ादा बख्त-यार का निकाह अपनी बेटी रोशन अख्तर से कर दिया और यमन के सौदागर के लड़के को दमिश्क़ की शहज़ादी से ब्याहा और ईरान के शहज़ादे का निकाह बसरे की शहज़ादी से कर दिया, अज़म के राजकुमार को विलायत की राजकुमारी से ब्याहा, नीमरोज़ के बादशाह की बेटी को बहज़ाद खाँ को दिया, नीमरोज़ के राजकुमार को जिन्न की शहज़ादी हवाले की और चीन के शहज़ादे को बूढ़े अज़मी की बेटी दी जो पहले मलिक सादिक के क़ब्ज़े में थी। हर एक नामुराद मलिक शहबाल की मदद से अपने-अपने मक़सद और मुराद को पहुँचा। उसके बाद चालीस दिन तक जश्न फ़रमाया और ऐश-इशरत में रात-दिन डूबे रहे।

आख़िर मलिक शहबाल ने हर-एक राजकुमार को तोहफ़े और सौग़ातें और माल-असबाब दे-देकर अपने-अपने वतन को रुख़सत किया। सब ख़ुशी और इत्मीनान से खाना हुए और ख़ैरियत से अपने-अपने मुल्क को जा पहुँचे और बादशाहत करने लगे। सिर्फ़ एक बहज़ाद खाँ और यमन के सौदागर का लड़का अपनी-अपनी ख़ुशी बादशाह आज़ाद-बख्त के साथ रहे। आख़िर सौदागर को शहज़ादे का खान सामाँ और बहज़ाद खाँ को शहज़ादे की फ़ौज का बख्शी किया। जब तलक जीते रहे ऐश करते रहे।

इलाही! जिस तरह ये चारों दर्वेश और पाँचवाँ बादशाह आज़ाद-बख्त अपनी-अपनी मुराद को पहुँचे, इसी तरह से, ख़ुदा करे हर नामुराद के दिल का मक़सद और मतलब पूरा हो।

Durga Sah
Municipal Library
NAINITAL